

श्रद्धाञ्जली

इच्छा हो वा कि अनिच्छा हो, हो प्रेम कि इस से द्वेष तुम्हें,
है जीना तो सुनना होगा, नूतन—युग का "संदेश" तुम्हें।

जतीन्द्रनाथ

वर्ष १ } अजमेर आश्विन कृष्णा ४ सम्वत् १९८६, रविवार २७ सितम्बर १९२९ ईस्वी [illegible] १९

कराँची : जहाज में बोल्शेविक

[illegible] केस

कराची—वे गुलाम मुहम्मद नामक एक २६ वर्ष का मल्लाह पकड़ा गया है। यह एक जर्मन जहाज पर आया था, जहाज पर एक वक्त में ऐम० एन. राय० की लिखी "कन्फ्यूशियस से सनयातसेन तक का और भावी चीन" नामक पुस्तिका के टाइप किये हुए १७ अध्याय निकले हैं, जिन में क्रांति करने के उपाय भी बताए गए हैं। पुलिस का कहना है कि यह मल्लाह गांव [illegible] जा सामग्री ला २ कर यह प्रचार करता है। अभियुक्त वकील का प्रबन्ध नहीं बताता।

ईजिप्ट : सरवपाशा वफद पार्टी के

विधान की संधि पर बादशाह के सामने हस्ताक्षर करने को चले जेंडिया जा रहे हैं। ऐसा कहा जाता है कि वे स्वास्थ्य सुधारने जा रहे हैं। कारण, वास्तव यही है कि ब्रिटिश सरकार सुधार के पहले वफद पार्टी को राज्य जानेना चाहती है।

कूच बीर इंग्लैण्ड में १८ ता० को भयानक तूफान आया, तो मल्लाहों सिपाही लोग डर और कूद घबराये हुए।

एक नया षड्यन्त्र

बेलिया (कनाडा) में एक और [illegible] शुरू होने वाला है। यह वहीं के मालीनया मालक गांव में पड़े डाके के सम्बन्ध में चलेगा। कहा जाता है कि इस मामले में [illegible] केस का मनोहर [illegible] गवाह बना है। उसने कहा है कि उस डकैती की योजना मैंने बनाई था,

ओह सरकारि गुलाह

की देखा [illegible] सरकारी गवाह बनने [illegible] को माफी दे दी गई [illegible] मामले पर सवाल [illegible] है।

[illegible] मजदूरदल के मि० मैक्सटन को उनके प्रतिगामी विचारों के कारण संघ से अलग कर दिया है।

जतीन

आयरलैण्ड से श्रीमती मेपे

राजस्थानी युवकों से अपील

हम अन्यत्र प्रकाशित [illegible] ओर राजस्थानी युवकों का ध्यान [illegible] से आकर्षित करते हैं। राजस्थान वीर भूमि है। यहां के युवा वीर पूजा [illegible] जानते हैं। ऐसी दशा में क्या वे जतीन्द्र जैसे वीर और [illegible] पर अपने युवा के प्रति अपनी श्रद्धा दिखाने में पीछे रहेंगे?

हम समझते हैं [illegible] के उदाहरण और महान् बलिदान के सामने रहते हुये [illegible] लिखने की आवश्यकता नहीं है। इतना ही प्रत्येक वीरत्व [illegible] ओर [illegible] का अपने पर पूर्ण उस वीर की स्मृति [illegible] है कि उसकी [illegible] ओर [illegible] लिये?

विनीत
विजयसिंह पथिक

शोक-सभा

[illegible] ने लि० सेन गुप्त मेयर के नाम निम्नलिखित सन्देश भेजा है :—

"बंगवासी का कुटुम्ब जतीन्द्र नाथ दास की मृत्यु के अवसर पर देश भर अपनी के साथ सहवेदना प्रकट करता है और इसके लिये शोक-प्रकट है। स्वतन्त्रता प्राप्त होगी।"

नए अनशनी

१९ मार्च के परेडों के [illegible] [illegible] रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि जतीन्द्रदास की मृत्यु के कारण [illegible] कार का अपेक्षा [illegible] [illegible] काकोरी के ४ कैदियों ने अनशन शुरू कर दिया है।

केपटाउन के हिन्दुस्थानियों ने अपनी भाइयों पर से अफ्रिका में प्रवेश सम्बन्धी निषेध आज्ञा उठा लेने का प्रस्ताव पास किया है और वहां के मिनिस्टर से इस पर पुनः विचार करने की प्रार्थना की है।

इंदौर राज्य विद्रोह केस

१८ सितंबर को मुकदमे की पेशी फिर हुई। अभियुक्त ने ३९ गवाहों के नाम पेश किये जिनमें से १८ ब्रिटिश भारत और दूसरे देशी राज्यों के निवासी हैं। इस सूची पर पहला नाम भूतपूर्व दि० हो० महाराजा तुकोजीराव होल्कर का था [illegible] [illegible] नाम समन जारी करने की [illegible] भेजा कारण सहित दी। कोर्ट ने कहा कि [illegible] की गवाह अदालत के अधिकार और इंदौर राज्य के बाहर रहते हैं और ऐसे [illegible] उनको हाजिर करने का प्रबन्ध नहीं हो सकता। उनको उपस्थिति का प्रबन्ध करने में मुकदमे में बहुत देर लगेगी। [illegible] अथवा उसका एजेंट यह [illegible] पूर्व न बताता है कि किस बात को सबूत करने के लिये इन [illegible]

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

राजस्थानी प्रगतियां

रायपुर का दान

श्रीमान् रायपुराधीश ठाकुर सा० गोविन्दसिंहजी राघणा राजपूत सभा व विद्यालय से पूर्ण सहानुभूति रखते

को पेश किया जा रहा है। इन कारणों से अदालत ने फैसला किया कि अभियुक्त का उद्देश्य मुकदमे में विलम्ब करने का है और न्याय के उद्देश्य में इस प्रकार विघ्न डालने की आज्ञा नहीं दी जा सकती। उसी समय यह आज्ञा सुनाई गई, अभियुक्त ने अपनी जेब से निकाल कर अरजी पेश की जिसमें लिखा हुआ था कि या तो सब गवाह बुलाए जाएं, या [illegible] नहीं। इस पर अदालत ने मि० डांग्रे (अभियुक्त के वकील) से पूछा कि "इस संबन्ध में आप क्या कहना चाहते हैं? मि० डांग्रे ने कहा—"मैं [illegible] करता हूं कि अदालत और अभियुक्त के [illegible] कारण एक कानूनी [illegible] दृष्टि से पड़ गया है। मैं अपने मुवक्किल की इच्छा के विरुद्ध [illegible] नहीं कर सकता।" [illegible] सफाई के [illegible] मि० अम्बालाल, कन्हैयालाल [illegible] वकील को छुट्टी दे दी गई।

मि० डांग्रे के संकेत पर [illegible] के लिये [illegible] की तारीख पड़ी, यद्यपि अभियुक्त ने कह दिया कि [illegible] को [illegible] के हुक्म के [illegible] वकील की जरूरत [illegible]

कांग्रेस की तयारी

[illegible] में कांग्रेस को [illegible] हैं, फिर भी कांग्रेस की तैयारी जोरों से हो रही है। कांग्रेस के साथ एक स्वदेशी प्रदर्शनी [illegible] की प्रदर्शनी भी होगी।

[illegible] की [illegible] अफसर ने [illegible] इतना [illegible] दिया है कि [illegible] में बैठक [illegible] किया गया है।

[illegible] के संचित्र [illegible] छोड़ दिये गये हैं।

मास्टर मोतीसिंह को दो भाषणों [illegible] की सजा हुई है।

[illegible] स्टेट ने जैनों के रथ-[illegible] का जलूस रोक दिया।

हैं। समय २ पर आप सुधि लेते रहते हैं और ३०) मासिक सहायता विद्यालय व सभा को देते हैं। विद्यालय में छात्रों को भरती कराने का भी पूर्ण उद्योग कर रहे हैं। आपका विद्या—प्रेम प्रशंसनीय है।

मन्त्री मिट्ठनलाल धीरावत
राघणा राजपूत सभा—अजमेर

नन्दवाई (होलकर-स्टेट)

गत वर्ष के अनुसार इस वर्ष भी पुण्यश्लोक देवी अहिल्या बाई होलकर की पुण्य तिथि ता० २-१२१ ई० सोमवार को महल कचहरी हाल में यहां की जनता और सरकारी मंडली ने बड़ी ही सज धज के साथ मनाई।

रींगस में खादी प्रदर्शनी

रींगस में ता० १५-१-२१ को मैत्री के जेले के अवसर पर खादी आश्रम रींगस की ओर से एक वृहद् गृह उद्योग प्रदर्शनी की गई थी। निम्न कार्यवाही हुई:-

(१) तम्बू में हाथ के बने हुए चित्रों से यह [illegible] गया कि जो किसान अपने [illegible] घर में तोड़ कर, [illegible] कर कपड़े [illegible] के [illegible] कपास [illegible] कम २१) की [illegible] है।

(२) दूसरे तम्बू में कपास तोड़ने, पींजने और कातने की क्रियायें दिखलाई गई थीं। अच्छी पूणी और बारीक सूत के कुछ नमूने भी दिखाए गए थे।

(३) तीसरे तम्बू में खादी सम्बन्धी भजन और व्याख्यानों का प्रबन्ध था। साथ में शिक्षा और सुधार के [illegible] भी होते थे।

[illegible] में सभी प्रकार के ४०-५० हजार मनुष्यों की उपस्थिति हुई थी। प्रायः सभी ने चर्खे का सन्देश ले प्रोत्साहन प्राप्त किया।

—मूलचन्द अग्रवाल

बड़ौदा प्रजा मण्डल की तरफ

[illegible] को अभिनन्दन अर्पित किया गया। शनिवार को कालेज के और सोमवार को हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने हड़ताल रक्खी। अनेक विद्यार्थियों ने उपवास भी किया। यह पूना और मालवा के राज्यों ने क्या किया?

हैदराबाद आगामी दिसम्बर में वायसराय आने वाले हैं। राज्य की ओर से सभी एक स्वागत समिति बन गई है।

स्थानिक और प्रादेशिक

मेहतर यूनियन

भाई नृसिंहदास जी अग्रवाल के उद्योग से यहां एक 'मेहतर यूनियन' की स्थापना हुई है। इस यूनियन का उद्देश्य है :—

१—मेहतर जाति में परस्पर एकता व मित्रता के भाव जागृत करना।

२—मेहतर समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक उन्नति के लिये प्रयत्न करना।

३—मेहतरों की मजदूरी आदि सम्बन्धी उचित शिकायतें शान्ति पूर्वक एवं समस्त उपायों द्वारा म्यूनिसिपैलिटी तथा घर मालिकों तक पहुंचाना।

४—जहां आवश्यकता हो यूनियन की शाखा खोलना, काम लेने वाले और काम करने वालों में अच्छा बर्ताव और सद्भाव पैदा करना।

निम्न पदाधिकारी चुने गए हैं :—
सभापति—पं० जियालालजी
उपसभापति—पं० नानूजी
प्रधान मन्त्री—श्री नृसिंहदासजी
मन्त्री—सोनीरामजी बाबूरामजी
" जुम्मा
कोषाध्यक्ष—कन्हाईराम
१४ सदस्यों की कार्यकारिणी समिति बनी है। मन्त्री

दीवान पद के लिये महाराजा किशन प्रसाद की अवधि और दो साल बढ़ गई है।

जोधपुर में हलचल

जोधपुर की प्रायः १५०० जनता की उपस्थिति में एक विराट सभा [illegible] श्री० नथनूराम भट्ट सभापति थे। श्री. आनन्दराज सुराना और जयनारायण जी व्यास ने मारवाड़ राजा परिषद् के रोके जाने और उस के लिये फोड़तोड़ के उपाय काम में लाने वाले अधिकारियों को कड़ी आलोचना की एवम् नव स्थापित [illegible] पाशय समझाया। अन्त में इस विषय में जोधपुर नरेश का फिर ध्यान आकर्षित करना तय हुआ।

रा. बा. ज्वालासहाय रेवेन्यू मेम्बर के प्रति, जो अधिकारियों की कुचालों के कारण राज्य सेवा से हट रहे हैं, सहानुभूति प्रदर्शित की गई। एक दरख्वास्त पर भी सैकड़ों प्रजाजनों के हस्ताक्षर हो रहे हैं जिसमें ज्वालासहाय जी को अपने पद पर रखने या [illegible] पत्र स्वीकार करने की इजाजत देने की मांग की गई है। सम्वाददाता

[हम जोधपुर के युवकों को उनके इस सत्साहस पर बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि महाराजा साहब अधिकारियों की भूल को सुधार कर उनका सन्ताप करेंगे। सं.]

प्राकृतिक गतिविधि

१८ सितम्बर पूना का समाचार है कि कल दक्षिण की साधारण घटा अरब समुद्र की ओर हट गई और अब कोकण तट से कुछ दूर छा रही है। इसके कारण कहीं २ दक्षिण में अधिक वृष्टि हुई है। मध्य प्रदेश और मद्रास में भी दूर २ तक [illegible] दक्षिण बंगाल और बिहार व उड़ीसा में खासी तीव्र है। पश्चिमी हिमालय में कुछ कड़े बीछार पड़े। लोअर बरमा उड़ीसा, कुमाऊं हिल, पूर्वीय मध्य प्रदेश, मैसोर, दक्षिण पूर्व मद्रास किनारा में कहीं २ वृष्टि हुई। शेष अन्य स्थानों में कम वृष्टि हुई।

बसीन और नागपुर में १॥, कलकत्ता, सम्भलपुर, चांदा और [illegible] में १, बीजापुर में ४ और मदुरा में १.२ इन्च वृष्टि हुई।

भावीअनुमान

दक्षिणी बंगाल, छोटा नागपुर, प्रायद्वीपके भीतरी भाग और पश्चिमी हिमालय के किनारे २ वृष्टि में कमी होने की संभावना है सम्भव है कि पश्चिमी तट पर इसमें वृद्धि हो।

अजमेर का रेलवे टाइम

अजमेर से

	आदीकुई की ओर,	आबू की ओर,	बिजोड़िया की ओर
डाक	२१—५१	८—४१	
एक्सप्रेस	६—४२	२२—२५	८—४० / १७—२०
पैसेन्जर	१७—३०	१०—२५	२२—३०
स्पेशल	१३—५५	५—५०	
रवित	१५—३०	१७—३५	

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

राजस्थान संदेश

वह राष्ट्र नहीं उठता, रहता,
उसका जगमें यश शेष नहीं।
जो स्वतन्त्रता का द्रोही हो,
सुनता नवयुग 'सन्देश' नहीं।

रविवार आश्विन कृष्णा ४ वि. सं १९८६

स्वर्गीय जतीन्द्र

जतीन्द्रनाथदास का स्वर्गवास हो गया। न उसकी दृढ़ता को अधिकारियों का बल तोड़ सका न जेल के कष्ट। न उसे जबर्दस्त बृटिश सरकार की जबर्दस्ती झुका सकी न मृत्यु की विभीषिका। उसकी मुट्ठी भर हड्डियां अजेय रहीं। विरोधियों ने उन्हें कष्ट दिये, प्रलोभन दिये, आराम से रखने के वचन दिये, छोड़ देने का लालच दिया, चालें चलीं, सब कुछ किया, पर बाहरे जतीन, वह जितेन्द्रिय ही नहीं, सर्व जित रहा। भले ही सरकार के पिट्ठू उसे अपराधी बताते रहें। उसकी निर्दोषिता को स्वीकार करने का साहस न करें। पर जतीन्द्र ने अपनी निर्दोषिता प्रमाणित कर दी। उनकी निर्दोषिता जगत भर पर प्रमाणित हो गई। न केवल इस लिये कि आज तक उनके विरुद्ध एक भी अपराध का प्रमाण नहीं लाया जा सका, प्रत्युत इस लिये भी कि किसी अपराधी आत्मा में इतनी दृढ़ता नहीं हो सकती। पापी मृत्यु का इस प्रकार आह्वान नहीं कर सकता। दोषी हृदय इस प्रकार एक २ बूंद रक्त सुखा कर, एक २ स्नायु शक्ति खो कर, महीनों तक मृत्यु को सामने खड़ी रख कर, भूख-प्यास ही नहीं, जीने की इच्छा तक को दुकरा कर आत्म-बलिदान नहीं कर सकता। पचास वर्ष की युवा अवस्था में, आशाओं से भरे संसार और जीवन के आगे रहते यदि किसी युवा को ऐसे कठोर तप के लिये कोई वस्तु आमादा कर सकती है तो वह आजादी की उत्कट आकांक्षा ही, अन्याय के प्रति घोर घृणा हो, एक एक भारतीय के अपमान में भारत भर का अपमान अनुभव करने की सच्ची वेदना ही और परतन्त्र जीवन को मृत्यु से भी बुरा समझने की सच्ची जलन ही। जो दिन रात गुलामी कर के ही गुलछर्रे उड़ाते हैं। हां में हां मिला कर ही हाकिम बने हैं। नित्य अनुचित अपमान और गोरे काले का भेद भाव देख कर भी अपने राष्ट्र का अपमान अनुभव नहीं करते। दो पैसे मिलते ही फिसल पड़ते हैं। ठोकर खा कर भी गम खाना ही बड़ी बात समझते हैं। वे बिचारे उस उच्चात्मा को उच्च भावनाओं को क्या समझ सकते हैं?

आज कौन है जो चार दिन जेल जा आने पर अपने को पूजने का अधिकारी नहीं मान बैठता? कौन है जो थोड़ा सा त्याग करने पर अपने को महान आत्मा गिनाने को तत्पर नहीं होता? पर वास्तविक-महानता क्या है? उसे किस प्रकार प्रमाणित किया जाता है? ये बातें जतीन्द्र के सिवाय किसने प्रत्यक्ष कर दिखाने की चेष्टा की है? इस देश में तो किसी ने नहीं की। विदेश में भी एक आयरिश वीर मैकस्विनी का ही नाम सामने आता है।

ऐसी अवस्था में यह स्वाभाविक ही है कि हम जतीन के बलिदान में देश का गौरव मानते हैं। उसे अभिमान की वस्तु समझते हैं वह हमारे लिये एक अलभ्य लाभ हुआ है। पर क्या हानि कुछ नहीं हुई है? जिस आत्मा में इतना साहस था, इतनी दृढ़ता थी, इतना तप-शक्ति थी, उसका कितना मूल्य हो सकता है? यदि आज भारत स्वतन्त्र होता या जतीन के जीवन में स्वतन्त्र हो जाता, तो उसकी आत्मा से देश को कितनी बड़ी सेवा होती? कभी देश को स्वतन्त्र करने के या उसकी स्वतन्त्रता-रक्षण के संग्राम में ऐसा वीर पुरुष कितनी मूल्यवान सेवा करता? क्या उस मूल्य की पूर्ति उस गौरव और गर्व मात्र से हो सकती है?

और हमारे ऐसे लाल की, इस घोर पीड़ा के साथ मृत्यु के लिये जिम्मेदार कौन है? क्या केवल अनशन? क्या अनशन से ही फेफड़ों और छाती में भी दर्द होने लगता है? क्या अनशन से ही खून की उलटी होने लगती है? क्या इस मृत्यु के लिये जेल के वे अत्याचार बिलकुल जिम्मेदार नहीं हो सकते जो जबर्दस्ती खाना खिलाने के नाम पर उन पर किये गए थे? जिनके विरोध में ही उन्हें इतनी भीषण प्रतिज्ञा करनी पड़ी थी?

यदि हां, तो ऐसी अवस्था में हमारा- विशेषत: युवाओं का-जिनका एक युवा वीर बलिदान हुआ है-क्या कर्तव्य है? वे खुशी मनावें या रोवें? गौरव को प्रधान स्थान दें या हानि को? क्या इनमें से कोई भी बात करने से जतीन का बदला चुक जायगा? नहीं! फिर? फिर हमारी समझ से हमारे सामने एक ही कर्तव्य रह जाता है और वह है मि. जे. एम. सेन गुप्ता के शब्दों में-अर्जुन का। जब अभिमन्यु का अत्याचारियों ने चक्रव्यूह में घेर कर अन्याय पूर्वक वध किया था, तब न अर्जुन उसके गौरव के गुण गाने बैठा था न १२ दिन तक उसका शोक मनाने न वह उसका इतिहास लिखने बैठा था न उसकी तस्वीर छापने। उसने एक ही काम किया था। वह था, उन अन्यायों को मिटा देने का प्रण! आज हमारे पास न अर्जुन के बाण हैं न उनके लिये अवकाश पर उस भावना के लिये अवकाश भी है और उसकी आवश्यकता भी। यदि हम वास्तव में जतीन्द्र के बलिदान का मूल्य समझते हैं, यदि वास्तव में हम यह प्रमाणित कर देना चाहते हैं कि भारतीय युवा अपने एक भाई की इस तरह की मृत्यु को क्षमा नहीं कर सकते, तो हमारा एक ही कर्तव्य हो सकता है। वह यह कि हम और सब बातें छोड़ कर जतीन का बदला लें। तुच्छ द्वेषात्मक बदला नहीं। किसी व्यक्ति वा व्यक्तियों से नहीं। द्वेषपूर्ण और दूषित उपायों से नहीं। ऐसा करना तो जतीन के बलिदान के ही महत्व को नष्ट करना होगा। अपने प्रण को लजाना होगा। बदला लें उन प्रथाओं से, उस व्यवस्था से और उन अत्याचारों से, जिन के कारण ऐसे अनर्थ होते हैं। वैसे ही अस्त्रों से, जो इस पवित्र बलिदान के लिये जिम्मेवार हैं। हम उन अत्याचारों को समूल नष्ट कर देने का प्रण ठान लें जिनके कारण जतीन्द्र का मरना पड़ा। हम निश्चय करलें कि हमारे साथी का छोड़ा हुआ काम अधूरा न रहेगा। उसका खून निरर्थक न जायगा। जब तक उसका छेड़ा काम पूरा न होगा न भारतीय युवा स्वयम् सुख की नींद सोवेंगे न सरकार को सोने देंगे। अपने शान्त उपायों और बलिदानों द्वारा ही वे अपने अभिमन्यु का बदला लेंगे पर लेंगे अवश्य।

राजस्थान सन्देश

का युवकांक पढ़िये।
विशेष विवरण चौथे पृष्ठ में
देखिये।

सामयिक समस्याएं

'साम्राज्यवाद का क्षय

उस दिन भाई राजतजी ने युवकों को सी. आई. डी. वाले मित्रों(!) के हथकंडों से सावधान हो कर बढ़ने की चेतावनी दी थी। निःसन्देह सी आई० डी० के मित्र जिस ढंग से नेताओं और युवकों में मिल कर उन्हें पथ भ्रष्ट करने या उन से कुछ का कुछ करा लेने की चेष्टा करते हैं, उसकी दृष्टि से उस समय असामयिक होते भी वह अनावश्यक न थी।

किन्तु इससे किसी के सहमने की आवश्यकता नहीं। उनका यह काम ही है, और हमारा भी, उन की चालों का सामना करते हुए बढ़ते जाना काम ही है। आवश्यकता इतनी ही है कि जिन बातों के बोलने और करने में युवक अपने मित्रों और विश्वस्त सहायकों का सलाह लेना आवश्यक समझें, उसे ले कर काम किया करें और फिर बिना सोचे समझे इधर उधर न हुआ करें। साथ ही वे दी हुई सलाहों और दूसरों की चालों पर भी विचार किया करें। कारण, स्वतन्त्र विचार ही युवकान्दोलन का ध्येय है। अन्धश्रद्धा और सम्हल कर चलने इतना सम्हल कर चलने कि सम्हलने और कार्यरत्ना में कोई भेद ही न रह जाय-का विरोध करने के लिये ही इस प्रगति का जन्म हुआ है।

यह हमें इसलिये कहने की आवश्यकता प्रतीत हुई है कि बहुत से लोगों ने 'साम्राज्यवाद का क्षय-वा नाश हो' के जयघोष को भी भयानक समझ लिया है। पर यह भूल है। साम्राज्यवाद का अर्थ विशेषरूप से कानून द्वारा स्थापित सरकार नहीं है। उस का अर्थ केवल उस भावना से है, जिससे प्रेरित हो कर सबल वा शासक गरीबों को लूट २ मोटे होते हैं। दूसरों को लूट कर बड़े बनने के लिये ही दूसरों को अपने आधीन और विवश रखते हैं। आज संसार में जितने अनर्थ होते हैं, वे इसी भावना की प्रधानता के कारण। अतः न तो उक्त जयघोष कोई जुर्म है न भयानक वस्तु। यदि वह भयानक है तो साम्राज्यवादियों के लिये हो।

ऐंग्लोइंडियन मनोवृत्ति

यह कुछ आश्चर्य की बात नहीं कि प्रायः सारे ऐंग्लो इण्डियन पत्र जतीन्द्र की मृत्यु पर दुःख प्रकट करते हुए भी असेम्बली में सरकार पर

यह खून शहीदों का निरर्थक न जायगा !

निन्दात्मक प्रस्ताव की न्याय्यता नहीं समझ सके हैं। उन की यह चाल कुछ काम भी कर जाती। परन्तु जेल कमेटी ने सारा मजा किरकिरा कर दिया। उसने स्पष्ट कर दिया है कि जतीन्द्र को जमानत पर छोड़ने की जिद सरकार की थी, न कि कमेटी की और इसीलिये वही जतीन्द्र की मृत्यु के लिये दायी हो सकती है। इसके उत्तर में शायद ये बुद्धिमान चुप्पी साधेंगे।

जतींद्र के बाद सतींद्र

जतीन के बाद शायद बरीसाल जेल में सतीन का नम्बर आवेगा। उनकी स्थिति बहुत चिन्ताजनक हो रही है। सरकार फिर वही बिल्ली चूहा-कानून काम में लाने के प्रयत्न में है। पर हमारी समझ से यह केवल मूर्खता को दुहराना है और यदि इसका परिणाम भी वही होगा जो पहली मूर्खता का हुआ है, तो हम समझते हैं कि सरकार उन बातों की भी न्यायता सिद्ध कर देगी, जिन की न्यायता में अभी बहुतों को सन्देह है।

बम्बई का पूंजीवाद

बम्बई का पूंजीवाद और बम्बई सरकार एक अर्से से गरीबों के जीवन के साथ खेल खेल रहे हैं। उस दिन पण्डित जवाहिरलालजी ने बतलाया था कि देशी मिलों की कठिनाइयों का कारण मजदूरी की अधिकता नहीं, रुपे की दर नियत होना है। पर सरकार से कौन भिड़े? भारतीय तो अपनों ही के लिये वीर हैं। यही हो रहा है। दंगा जांच कमेटी ने सिफारिश की है कि बम्बई में शान्ति स्थापित करने के लिये यह आवश्यक है कि कम्यूनिज्म का अन्त कर दिया जाय और पठानों को (जो हड़ताल तोड़ने में मदद देते हैं) प्रोत्साहन दिया जाय। तब तो कम्यूनिस्टों का पूंजीवाद को मिटा देने की आवश्यकता बताना भी कैसे बुरा कहा जा सकता है? पर वास्तव में तो ऐसा प्रतीत होता है कि कमेटी का काम बम्बई सरकार का समर्थन करना मात्र था।

शाबास मेरठी अभियुक्त

हम मेरठ के अभियुक्तों को उन की जतीन्द्र के प्रति दिखाई सच्ची श्रद्धा के लिये शाबासी दिये बिना नहीं रह सकते। जिन्होंने केवल जतीन्द्र के प्रति आदर न दिखा कर उसके शेष काम को पूरा करने का बीड़ा उठाया है। वास्तव में यही सच्ची श्रद्धा दिखाने का ढंग है।

अजमेर का कर्तव्य !

अजमेर के 'राजस्थान युवक संघ' ने भी इस दिशा में अपना कर्तव्य पालन करना निश्चय किया है। हम अजमेर निवासियों का ध्यान उसकी ओर विशेष रूप से आकर्षित करते हैं और आशा करते हैं कि वे समय की आवश्यकता के अनुसार ही ऊंचे उठकर अपने शहीद के प्रति अपना आदर प्रकट करेंगे।

सैनिक शिक्षा

उस दिन डा० मुंजे के भारतीयों को सैनिक शिक्षा देने के लिये नये सैनिक विद्यालय खोखने व झेलम और जालन्धर के विद्यालयों को सार्वजनिक बना देने के प्रस्ताव का विरोध आर्मी सेक्रेटरी ने बड़ी बज़ना दलील के साथ किया। आप ने कहा, ये विद्यालय राजाओं के दिये रु० से मृत सैनिकों की यादगार में, फौजी अफसरों के बच्चों की शिक्षा के लिये बने हैं। ठीक है मरे साधारण जनता में से गए सिपाही, रुपे राजाओं ने उनकी स्मृति में दिये और उनके फल पर अधिकार रहा केवल अफसरों का। कितनी बढ़िया दलील है। पर बात तो यह है कि भारतीयों को सैनिक नहीं बनाना है। ऐसी दशा में नये विद्यालय बनाने के बहाने ही जो दिन टलें सो टलें।

जोधपुर

जोधपुरसे मारवाड़ प्रजा परिषद् के बारे में जो सम्वाद आए हैं और जिन्हें हम प्रकाशित कर रहे हैं, उन्हें देख कर हमें बहुत आश्चर्य हुआ। वास्तव में जोधपुर जैसे राज्य से, जो उन्नत होने का दावा करता है और जिसके नरेश विदेशों में भी जा आये हैं किसी को ऐसी नासमझी का आशा न थी, विशेषत: इस लिये कि इस समय प्रजा की अपेक्षा राज्यों का भाग्य ही अधिक कड़ा कसौटी पर चढ़ा हुआ है इस समय की हुई उनकी प्रत्येक गलती उनके भविष्य पर असर डाले बिना नहीं रह सकती।

फिर जिन आधारों पर परिषद् रोकी गई है वे इतने हाथसे स्यास्पद हैं। क्योंकि उनके लिखने वाले पर दया आती है। वास्तव में मारवाड़ हितकारिणी ने बाहर के आदमी न बुलाने की अनुचित आज्ञा को मानने के बाद इस फ़ैसले को अत्याचार के अतिरिक्त और कोई नाम ही नहीं दिया जा सकता। हम नहीं समझते कि जिन लोगों की चमड़ी इतनी कमजोर है और जो नजा के मनुष्यों की तरह आचरण करने से इतना डरते हैं, उनका मनुष्यों पर शासन करनेका दावा अधिक टिक सकेगा। यद्यपि इसका उत्तर कुछ और ही होना चाहिये, फिर भी हम जोधपुर नरेशका ही ध्यान उनके अधिकारियों की इस कृतिकी ओर आकर्षित करते हैं और आशा करते हैं। कि यदि इसके परिणामों की दृष्टि से नहीं तो कम से कम अपनी नेक नामी की दृष्टि से ही वे इस अन्याय को दूर करेंगे।

राजस्थान सन्देश का "युवकांक"

नवयुवकों को नवीन उपहार : शहीद जतींद्र की स्मृति में

'सन्देश' के पाठकों को यह सुनकर हर्ष होगा कि भारतीय नवयुवकों में वीराग्रणी शहीद जतीन्द्रनाथदास की पवित्र स्मृति में दीपमालिका पर 'राजस्थान युवक संघ' की ओर से, राजस्थान सन्देश का एक विशेष अंक निकलेगा। यह 'युवकांक' होगा।

सोचा यह गया है कि राजपूताने का 'जतीन्द्र' का स्मारक केवल दर्शन या स्मृति दिलाने की वस्तु न हो, प्रत्युत युवकों का सच्चा पथ दर्शक हो। इसीलिये 'युवकांक' निकालने की कल्पना सब मित्रों ने पसन्द की है। युवकों को इसकी आवश्यकता भी है। उनके पास बहुत अनुभव और साधन सामग्री न होते भी उनके ऊपर क्रान्ति करने और बिलकुल ऐसी अवस्था में परम्परापन्थीदल तो विरोध करे ही, पर प्रश्न यह है कि ऐसी अवस्था में भारत क्यों राष्ट्र संघ के खर्च का बोझ ढोवे।

फिर विशेषाधिकार

पाठकों को मालूम है कि चीनी साम्यवादी दल के जोर के सामने विदेशी सत्ताओं को चीन में विशेषाधिकार त्यागने को बाध्य होना पड़ा था। पर नई सरकार योरोपीय राष्ट्रों की कूट-नीति में फंस गई। एक ओर उसने घर में सनयात सेन दलको अपना विरोधी बना लिया और दूसरी ओर रूस को। कहना व्यर्थ है कि पहले भी चीन के साथ रूस का बल होने के कारण ही विदेशियों को घुटने टेकने पड़े थे। अब इस प्रकार चीन को निर्बल बना कर ये मित्र फिर अपने विशेषाधिकार मांगने लगे हैं। पता नहीं, चीन इस अनुभव से कुछ सीखेगा या नहीं, पर दूसरे परतन्त्र राष्ट्र इन बातों से काफी शिक्षा ले सकते हैं।

रूस की राजनीति

नि:सन्देह अफगानिस्तान में वहां की विशेष स्थिति के कारण रूस को पीछे पैर हटाना पड़ा था, पर दूसरी दिशाओं में वह योरोपीयन राष्ट्रोंको काफी नाकों चने चबाता है। यह तो कहना कठिन है कि पहली बार इंग्लेण्ड के रूस से बात चीत बन्द करने की स्थिति का भी चीन के झगड़े से कुछ सम्बन्ध था। हां, यह निश्चित है कि दोनों ही बातों में रूस ने अपने विरोधियों का नीचा दिखाया है। चीन को भी अन्त में योरोप की मदद रहते भी रूस की शर्तें माननी पड़ीं और अब बृटिश सरकार को भी अपनी ही ओर से फिर बातचीत करने की दरख्वास्त करनी पड़ी है।

वैदेशिक समस्याएं

आखिर सत्य प्रकट हुआ

आखिर 'टाइम्स' ही नहीं ऐम ब्राइंड आदि जैसे भी यह स्पष्ट कहने लगे कि राष्ट्रसंघ मतलब साधने का एक जरिया है। यह भी पुरानी संधियों की तरह समय पर एक ओर रख दिया जा सकता है। यह भी कि वह केवल योरोपीय राष्ट्रों के आर्थिक ऐक्य (दुनिया का धन लूटने की एकता) के लिये है। पर यह सत्य प्रकट हुआ है तब, जब उस में लड़ाई के लिये मजबूर किये जाने वाले राष्ट्रों को आर्थिक सहायता देने का प्रश्न उठा। कारण स्पष्ट है। ऐसी सहायता की आवश्यकता कमजोर और छोटे राष्ट्रों को ही पड़ सकती है।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

आता है वक्त जब वो करिश्मा दिखायगा !

देश व्यापी राष्ट्रीय हलचलें

कार्पोरेशन की श्रद्धान्जलि

ज्यों ही जतीन्द्र की मृत्यु के सम्वाद पहुंचे कि, कार्पोरेशन के सदस्य हाल में एकत्र हुए। कार्पोरेशन का काम स्थगित कर दिया गया। हिन्दूसभा आदि दूसरी संस्थाओं के भी दफ्तर बन्द हो गए। सब राष्ट्रीय कार्यालयों पर राष्ट्रीय झण्डे फहराए गए।

मेयर मि० जे० एम० सेन गुप्ताने कहा—

जिस जतीन्द्र को बहुत कम लोग जानते थे, आज से वह बंगाल का वीर शहीद और सारे भारत का पूज्य व्यक्ति हो गया। वह जिस कार्य के लिये मरा है वह अवश्य सफल होगा। वह एक भयङ्कर आरोप पर पकड़ा गया था। लेकिन उसके सम्बन्ध में चाहे जो धारणायें रखते हों, पर बंगाल में और देश में यह सर्वमान्य बात है कि जतीन्द्र चुपचाप काम करने वाला वीर था और उसका आरोपित अपराध से कोई सम्बन्ध न था। उसने मैकस्विनी की तरह प्रमाणित कर दिया है कि जेलें देशभक्तों की हिम्मत नहीं तोड़ सकतीं। अन्त में जतीन्द्र के कुटुम्बियों के प्रति समवेदना का प्रस्ताव खड़े हो कर पास किया।

खबर मिलते ही 'लिबर्टी, अमृत बाज़ार पत्रिका आदि प्रमुख पत्रों ने जतीन्द्र की स्मृति में अपने विशेषांक निकाले। बाजार और स्कूल बन्द हो गए।

ता० १५ को एक विराट सभा हुई। जिस में सब जातियों और दलों ने एकत्र हो कर जतीन्द्र को अपनी श्रद्धांजलि अर्पण की। कलकत्ता में खुले मैदान में सभाएं करने की मनाई है। पर यह सभा खुले मैदान में हुई। मि० सेन गुप्ता ने पुलिस को चैलेंज दिया और लोगों से कहा कि सब खुले मैदान में सभाएं करें और पुलिस को जो वह चाहे करने दें।

आगरे की श्रद्धाञ्जलि

जतीन्द्र की लाश ले जाने वाली गाड़ी १४ ता० को प्रायः ६ बजे रात को आगरा पहुँची। फिर भी पाँच हजार से अधिक मनुष्य एकत्र हो गए। इधर गार्ड को न जाने क्या सूझी कि वह गाड़ी बढ़ाए ही चला गया। लोगों को सन्देह हुआ कि शायद गाड़ी बिलकुल न रोकी जायगी। अतः हजारों आदमी लाहन में खुले मैदान में सभाएं करने की मनाई है। पर यह सभा खुले मैदान में हुई। मि० सेन गुप्ता ने पुलिस को चैलेंज दिया और लोगों से कहा कि सब खुले मैदान में सभाएं करें और पुलिस को जो वह चाहे करने दें।

आगरे की श्रद्धाञ्जलि

जतीन्द्र की लाश ले जाने वाली गाड़ी १४ ता० को प्रायः ६ बजे रात को आगरा पहुँची। फिर भी पाँच हजार से अधिक मनुष्य एकत्र हो गए। इधर गार्ड को न जाने क्या सूझी कि वह गाड़ी बढ़ाए ही चला गया। लोगों को सन्देह हुआ कि शायद गाड़ी बिलकुल न रोकी जायगी। अतः हजारों आदमी लाहन पर लेट गए। इस पर गाड़ी धीमी तो पड़ी, पर रुकी नहीं। लाचार किरणदास गाड़ी से कूदे और ट्रेन रुकवाई। उन्हों ने प्रत्येक को जतीन्द्र के अन्तिम दर्शन कराए। इसके लिये गाड़ी एक घंटा रुकी रही। अन्त में आँसुओं और जय घोषों के साथ आगरा वासियों ने जतीन्द्र के शव को विदा दी।

अलीगढ़ में युवकों ने अपने २ स्कूलों और कालेजों के अधिकारियों पर दबाव डालकर छुट्टी करवाई। काले झण्डों का जलूस निकाला। उपवास किया और सभा कर जतीन्द्र को श्रद्धाञ्जलि अर्पण की।

बम्बई के युवकों ने विराट जलूस निकाला।

१७ को एक सभा में -जितेन्द्र लाल बनर्जी ने कहा कि आज का प्रश्न यह है कि जबरदस्ती का जबरदस्ती से और हिंसा का हिंसा से कैसे सामना किया जाय और व्यवस्थित एवं कानूनी ढंग से जेलों में की जाने वाली हत्याओं के शमनार्थ क्या किया जाय।

१४ सितम्बर को कलकत्ता में स्कूल और कालिजों के समस्त लड़के पढ़ने नहीं गए।

मि० जे. एम. सेन गुप्ताने अपनी सम्मति प्रकट की है कि महात्मा गाँधी, स्वर्गीय सी. आर. दास और अन्य महानुभावों के आन्दोलन द्वारा गत वर्षों में भारत के कोने २ में हल चल मच गई थी। आज जतीन्द्रनाथ दास ने अपने व्यवहार और बलिदान द्वारा व्यावहारिक अहिंसात्मक असहयोग का दूसरा अध्याय आरम्भ कर दिया है। उन्होंने इस दृढ़ धारणा के साथ, कि ज्यों ही भारतीय भाव इंग्लैण्ड की इच्छा के विरुद्ध जाग उठेगा त्यों ही भारतीय परतन्त्रता का अन्त हो जायगा, हंसते हुए स्वेच्छा पूर्वक मृत्यु का आलिंगन किया है।

जतीन्द्रदास की दाह क्रिया के समय उनके पिता का निम्न वक्तव्य पढ़ा गया:-

"प्रभो! मैं अपने पूर्वजों के उस देश द्रोह के प्रायश्चित स्वरूप जो उन्होंने बंगाल ही नहीं सारे भारत को, नवाब के साथ विश्वासघात कर अंग्रेजों के हाथों में सौंप कर किया था, अपने प्यारे बच्चे खेंदू (जतीनका लाड़का नाम) को तुम्हारे चरणों में अपने अश्रुओं की श्रद्धांजलि सहित अर्पित करता हूं। आप कृपा करिये कि इस पवित्र आत्म-परिताप के फल से भारत जग उठे!

१५ सितम्बर को लखनऊ के नागरिकों की महती सभा श्री मती सरोजनी की अध्यक्षता में हुई। जतीन दास की मृत्यु पर शोक प्रस्ताव पास किया गया। और उन के अद्वितीय बलिदान के लिये उन्हें बधाई दी गई।

१४ सितम्बर को मेरठ में बृहत जलूस निकला। हड़ताल भी मनाई गई। मेरठ षड्यंत्र केस में अभियुक्तों

कलकत्ता में जतीन्द्र

नरमुण्डों का समुद्र

सेन गुप्ता का पुलिस को चेलेंज

१६ ता० को जतीन्द्र का शव कलकत्ता पहुंचा! सूर्योदय के बहुत पहले ही लाखों का जन समूह एकत्र हो गया, जिनके कारण जलूस ७-२० के पहले न निकल सका। निकलता भी कैसे? दो मील तक नंगे नरमुण्डों के अतिरिक्त कुछ दिखाई ही न देता था।

७-२० पर टाउन हाल में से जतीन्द्र का शव फूलों से सजा हुआ बाहर लाया गया। जलूस में सब से आगे, दो बड़े राष्ट्रीय झण्डे थे। उनके पीछे किसान मजदूर संघ के दल अपने घोड़े और झण्डे लिये चल रहे थे, जिन पर लिखा था, "क्रान्ति चिरजीवी हो।" इनके बाद बंगाली स्वयं सेवकों का अभ्यारोही दल था। चौथी श्रेणी पैदल स्त्री स्वयं सेविकाओं की थी। पांचवीं बाजे वालों की। छठी चिकित्सक स्वयं सेवक दल की। सातवीं श्रेणी घायल उठाने वाली गाड़ियों की थी। आठवीं श्रेणी राष्ट्रीय नेताओं की थी, जिस के साथ जतीन्द्र की शववाहक गाड़ी थी। पीछे कलकत्ते की भिन्न २ संस्थाओं के स्वयं सेवक दल थे।

नए मार्ग से क्रान्ति करने का दायित्व आ पड़ा है। ऐसी अवस्था में प्रत्येक युवकान्दोलन के नए सिपाही को यह जानने की उत्सुकता होती है कि उसका लक्ष्य क्या है? उसे किस मार्ग से आगे बढ़ना है? किस प्रकार सफलता प्राप्त हो सकती है?

आज अधिकांश युवक नीचे लिखे प्रश्न करते हैं:—

१—युवकान्दोलन और दूसरे आन्दोलनों में क्या अन्तर है?

२—उसका ध्येय क्या है?

३—उसकी विशेषतायें क्या हैं?

४—युवकान्दोलन में भाग लेने वालों में क्या योग्यतायें होनी चाहियें?

५—युवकों के मार्ग में खतरे क्या हैं?

और भी बहुत से प्रश्न हैं जिनके सम्बन्ध में युवकों को ज्ञान होना आवश्यक है।

हम कोशिश कर रहे हैं कि इन सब प्रश्नों का उत्तर देने वाले लेखों का संग्रह इस अंक में हो और यह अंक प्रत्येक युवक के लिये एक सच्चा साथी प्रमाणित हो।

अंक मासिक पत्रों के आकार का उसी प्रकार कटा सिला होगा। सर्व साधारण के लिये इसका मूल्य १) रु० होगा। विद्यार्थियों के लिये ॥) होगा और "राजस्थान सन्देश" के ग्राहकों को मुफ्त मिलेगा।

लेखकों और कवियों से

श्री निवेदन है कि वे विशेषांक के लिये अपनी २ सुन्दर से सुन्दर रचनायें, जो युवकों का उत्साह बढ़ाने वाली हों, भेज कर इस पवित्र कार्य में हमारा हाथ बटावें।

वि. सि. पथिक

जुल्मों की नाव डूबती दीखेगी पलक में,

के वकील मि. डी. डी. चटर्जी जतीन दास की स्मृति में आदर प्रदर्शन करने को आज मुकदमें की पैरवी करने अदालत नहीं गए।

१६ सितम्बर को मद्रास में बड़ी भारी सभा हुई। मि मुदालियर (कांग्रेस प्रेसिडेन्ट) द्वारा उपस्थित प्रस्ताव पास हुआ। मि. सत्यमूर्ति ने जतीन दास के प्रति श्रद्धांजली भेंट की और भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी से अपील की कि जतीन दिन मनाने का समस्त भारत में प्रबन्ध करे।

मि. अभ्यंकर ने नागपुर में छात्रों से मातृभूमि की निस्वार्थ सेवा करने की अपील की।

१६ सितम्बर को जतीन दास की स्मृति में अहमदाबाद के म्युनिसिपल बोर्ड ने अपनी सभा की कार्यवाही स्थगित कर दी।

सतीन सेन की अवस्था अनशन के कारण भयानक हो गई है। रिपोर्ट से ज्ञात हुआ है कि उनके निचले शरीर के भाग में लकवा का असर हो गया है। वे न तो हिल सकते हैं, न बोल।

१३ सितम्बर को बरीसाल में [illegible] प्रार्थना करते हुए जतीन्द्र दिन मनाने का प्रस्ताव पास किया। अहमदाबाद के स्कूलों के छात्रों ने आज स्कूल जाना बन्द रक्खा। गुजरात कालिज के विद्यार्थियों ने सभा करके शोक प्रस्ताव पास किया।

—१४ सितम्बर को देहरादून में जतीन्द्रदास का मृत्यु सम्वाद पहुंचते ही चारों ओर शोक छा गया। डी. ए. वी. कालिज तथा हिन्दू नेशनल स्कूल में छुट्टी कर दी गई। दास के चित्र की रथों के साथ जलूस निकला जिसमें सहस्रों मनुष्य नंगे सर पर सम्मिलित थे। जय-ध्वनि हो रही थी। श्रीमती त्यागी की अध्यक्षता में सभा हुई। नेताओं के भाषण हुए। जनता में अपूर्व उत्साह था।

१६ सितम्बर को अमृतसर के म्युनिसिपल बोर्ड में जतीन्द्रदास की मृत्यु के कारण बैठक स्थगित करने का प्रस्ताव जी हुजूरों के कारण पास न हो सका। पक्ष में ७ और विपक्ष में ६ वोट आए।

मुरादाबाद में १६ सितम्बर को जतीन्द्रदास के मृत्यु-दिवस के उपलक्ष में भाषण करते हुए मि. अब्दुस्सलाम ने कहा कि मैं किसी भी विदेशी राज्य की अपेक्षा हिन्दू राज्य को अधिक पसन्द करता हूं।

मेरठ के कैदियों की श्रद्धाञ्जली

मेरठ केस के अधिकांश अभियुक्त १४ ता० को जोर से "गोरे दमन का क्षय हो" और बृटिश सरकार का क्षय हो" आदि के नारे लगाते हुए अदालत में प्रविष्ट हुए। सब से आगे सहगल थे। सब के बैठने पर श्री शौकत उस्मानी ने खड़े होकर कहा:-

"बन्धुओ! जतीन्द्रदास बलि हो गया है। उसने देश की वेदी पर अपने प्राणों की भेट चढ़ादी है। हमें उस देश भक्त को अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करनी है। हमें नंगे सिर "रक्त संगीत" गाना चाहिये।"

तत्पश्चात सब ने खड़े होकर नंगे सिर लाल झण्डे का गान आरम्भ किया। अन्त में जोर से "जतीन्द्रदास अमर हो"—जतीन्द्र की जय समस्त राजनैतिक अभियुक्तों की जय-के घोष किये।

यह सब होते समय मानो सारी अदालत में शोक उमड़ पड़ा। कई लोग सिसकियां लेने लगे। कुछ [illegible]

जयघोष के बाद मि० उस्मानी ने अदालत से दरख्वास्त की कि जतीन्द्रदास साम्राज्यवाद के विरुद्ध हमारे युद्ध में हमारा साथी था, अतः आज उसकी स्मृति में अदालत बन्द रहे। सफाई के वकील मि० चक्रवर्ती ने जतीन के त्याग की प्रशंसा करते हुए इसका समर्थन किया मि० निम्बकर ने भी अनुमोदन किया।

मि० डांगे ने कहा कि १५ दिन हुए हमने वायसराय को दरख्वास्त दी थी कि लाहौर के अभियुक्तों की मांगों का हम समर्थन करते हैं, वे स्वीकार की जांय। जेल कमेटियां सन १९१९ से बनती आ रही हैं, पर इन्हों ने किया कुछ नहीं। सरकारी सहकारी पैरोकार ने विरोध किया। इसने कहा मेरी कितनी ही इस मामले से सहानुभूति हो, यहां मुझे अपना सरकारी कर्तव्य पालन करना है।

मजिस्ट्रेट मि० मिलनर व्हाइट ने कहा निःसन्देह यह एक महान त्याग था। और बातों में मतभेद भले हो हो जतीन के उद्देश्य के बारे में मत भेद नहीं हो सकता। मुझे सच्चाई की दृष्टि से स्पष्ट कहना चाहिये कि अदालत के बन्द किये जाने से गलतफहमी पैदा होगी। मैं यहां एक साम्राज्यवादी सरकार के न्याय और शान्ति विभाग का प्रतिनिधि हूं। मुझे जतीन्द्र के संग्राम से सम्बन्ध नहीं। अपने विश्वासों के साथ लड़ने वाले किसी व्यक्ति के बारे में मैं कुछ नहीं कहता। पर यह ऐसा मामला नहीं है जिस पर अदालत बन्द की जाय।

इस पर अभियुक्तों ने घोषणा की कि हम आज के लिये अपने वकीलों से अपनी पैरवी करने का अधिकार वापिस लेते हैं। फलतः लाचार होकर मजिस्ट्रेट को मुकद्दमा स्थगित कर देना पड़ा।

मेरठ केस के २५ अभियुक्तों ने वायसराय को एक मेमोरियल भेजा है। लिखा है कि भगतसिंह और दत्तकी नाजुक स्थिति को ध्यान में रख कर हमारी निम्न उचित मांगे तत्काल स्वीकार की जांय:—

१—राजनैतिक या मजदूरान्दोलन के इरादे से किये कामों के कैदी और अभियुक्त, (डकैती और हत्या

(शेष पृष्ठ ११ वें में)

अजमेर वासियो राजस्थानियो!

अमर शहीद जतीन्द्र के प्रति अपनी श्रद्धा दिखाओ!!

बन्धुवर,

जतीन्द्र ने अपने अपूर्व आत्म-बलिदान से जिस प्रकार भारतीय युवकों का गौरव बढ़ाया है, उस पर कुछ लिखना पिष्टपेषण मात्र होगा। आज प्रत्येक हृदय उसका अनुभव कर रहा है। ऐसी अवस्था में यह उचित ही है कि देश भर की ओर से उनका एक स्मारक स्थापित करने और उनके छेड़े हुए संग्राम को जारी रखने का प्रयत्न हो रहा है।

'राजस्थान युवक संघ' ने भी अपनी १९ ता० की बैठक में निश्चय किया है कि वह राजस्थानी युवकों और राजस्थानियों का नाम भी इस कर्तव्य की दौड़ में सब की बराबर रखने का प्रयत्न करे। इसके लिये अजमेर में तो धन संग्रहार्थ नगर के युवकों और कार्यकर्ताओं के दल रविवार को घूमेंगे ही, बाहर वालों [illegible] भाग लेना चाहिये। वे अपने पत्र पुष्प वैद्यराज रामचन्द्रजी कोषाध्यक्ष राजस्थान युवक संघ, पुरानी मण्डी के पते पर भेजें।

इस सम्बन्ध में हमारा-राजस्थानी युवकों का कर्तव्य क्या है, इस पर हम अपनी ओर से कुछ न कह कर केवल युवकश्रेष्ठ जवाहिर लालजी नेहरू के शब्द उद्धृत कर देते हैं। उन्होंने जतीन्द्र की प्रशंसा करते हुए कहा है:-

किन्तु हमारा—जिन के लिये जतीन्द्र ने अपने प्राण दिये हैं, क्या कर्तव्य है? क्या हम बैठे २ आंसू टपकावेंगे, प्रस्ताव पास करेंगे और बातों से विरोध करके अपने धन्धे में लग जांयगे? इसके बाद उस कष्ट को भूल जांयगे, जो जतीन्द्र ने सहा? उसके बलिदान को भूल जांयगे? इस भूमि की दरिद्रता और दुर्दशा भूल जांयगे? यह भूल जांयगे कि हम पर विदेशी शासन कर रहे हैं और लोहे के डंडे से शासन कर रहे हैं? क्या हम इस लाखों की लूट को भूल जांयगे? केवल अपनी मातृभूमि को प्यार करने के कारण जेलों में पड़े और अमानुषिक व्यवहार पाने वाले युवकों को भूल जांयगे?

नहीं, कभी नहीं! बन्धुओ, हमारे कष्टों का प्याला भर चुका है। हमारे अपमान की सीमा हो चुकी है। हमारी सहन शक्ति थक गई है। अतः आइये, हम कमर बांध कर खड़े हो जांय और यह निश्चय करें कि आज से हमारा सर्वस्व देश को आज़ाद करने और जतीन्द्र की स्मृति को क़ायम रखने के लिये है। अब हम इन अत्याचारों का अन्त करके ही दम लेंगे। ध्यान रखिये कि शब्द हम चाहे जैसे चमत्कारिक और बड़े ढूंढ लावें, वे जतीन्द्र के महान्-अति महान् बलिदान के सामने तुच्छ हैं। अतः आइये, हम उस महानता के सामने नम्रता और श्रद्धा पूर्वक सिर झुकावें और प्रार्थना करें कि हमें इस संग्राम को अन्त तक जारी रखने की शक्ति प्राप्त हो!"

विनीत—

रामचन्द्र वैद्य, गोविन्द प्रसाद बैरिस्टर, लक्ष्मीनारायण वैद्य लक्ष्मीनारायण हेड मास्टर दाणी स्कूल, मोतीसिंह कोठारी, हरिश्चन्द्र वैद्य, हमीरमल लूनिया, कृष्ण गोपाल गर्ग, नरसिंहदास अग्रवाल, विजयसिंह पथिक

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

हां, मुल्क में यह ख़ून वह तूफां उठायगा !

जतीन्द्रको श्रद्धाञ्जली

(मत रविवार के भाषणों से)

आज का दिन खुशी का है या शोक मनाने का ? निस्सन्देह ऐसे वीर युवक की मृत्यु से देश की हानि हुई है। एक महान् आत्मा उठ गई। पर उसकी मृत्यु कैसी हुई है ? कौन है जो ऐसा मौत न चाहेगा ? वैसे दुनियां में कौन नहीं मरता ? कौन अमर होकर आया है ? मैं तो अपनी श्रद्धाञ्जलि यही अर्पण करता हूँ कि ईश्वर यदि मुझे उठावे, तो इसी तरह उठावे ! यदि मैं मरूं, तो इसी तरह मरूं ! चारपाई पर बीमार पड़ कर कुत्ते की मौत न मरूं ! इसी प्रकार देश के लिये, आज़ादी के लिये अपने को उत्सर्ग करूं।

जतीन्द्र की मौत कहने सुनने की नहीं, समझने की वस्तु है। दिन, महीने गुज़र जाते हैं, और कही सुनी बातें भुला दी जाती हैं। इसा लिये इसे समझने की जरूरत है, ताकि हम इसे भूलें नहीं। गोली खा कर मर जाना सरल है। बम से मरना सहज है। तोप से मरना आसान है। पर अपने उच्च ध्येय के लिये, अपने भाइयों की तकलीफें दूर कराने के लिये, आज़ादी के लिये, जेल की सख्तियां सहते २, भूखों मरते मरते, प्रति क्षण मौत के दर्शन करते हुए उसे हृदय से लगाना, सोचो, क्या आसान काम है ! इसी लिये ऐसी मृत्यु वाञ्छनीय है। आदरणीय है। इसी लिये वह समझने की चीज़ है।

× + ×

प्लेग, हैजा आदि से मरने की अपेक्षा ऐसा मरना कितना अच्छा और सुन्दर है ? वास्तव में जतीन्द्र नाथ ने हमें मरने का तरीका बतलाया है। धीरे धीरे मरने में क्या आनन्द है, यह दिखलाया है। इस संसार में आने का उद्देश्य वीर-गति प्राप्ति है। यों तो कौन नहीं मरता। पर हमारे हृदय में यह लालसा हो, यह उत्कण्ठा हो और यह बेचैनी हो, कि संसार में मरना तो सभी को है, पर हम इस तरह मरें ! कुछ कर के मरें ! तभी वह मौत २ है। यही नहीं, वह मौत ही ज़िन्दगी है !

× × ×

(शेष चौथे कालम में)

विदग्ध पुष्प का प्रवास

[लेखक:—श्री० 'राष्ट्राय पथिक']

अरे वारिद ! मत रोओ, नहीं, रहे अब रोने के दिन रात !
"प्रतिः शोधोहि मे व्रतम्" रटो, यही कहती है भग्नावात !

(२)

पूर्व खिलने के देना बाँध, आह, निज नीच स्वार्थ के लिये !
बरसते हो तुम औ हम जन्म—भला लेते हैं क्या इस लिये ?

अतः—

सलिल रहने दो, छोड़ो रौप्य बदलियों का भी सुन्दर रूप !
बरसने दो बिजली का नेह, बना दो अग को अग्नि-स्तूप !

नहीं है अब जीने की साध,
हृदय है गया खेल से ऊब !
बोल दो रे, इस या उस पार,
तरें या जायें सारे डूब !

अरे ओ दास्तक ! सम्हल !!

[रचयिता—श्री० अचलेश्वर शर्मा 'विशेष']

तबाही से पहले ओ अधम ! बता क्या थी मेरी ? क्या कहूँ ?
नाचती थी मस्ती से 'शम' छटे सुनता था यद्यपि सिन्दूर !

छलकता था यौवन का पात्र,
दमकता था चहरे से शौर्य !
अजब था यह सतीत्व आलोक,
सराधम सके न जिसको देख।

शक्ति थी मुझ में अकथ अपार,
नाद था मेरा रण—रणिणी।
जगा जाती थी मारू राग,
दहलते थे सुन कायर हृदय !

अनेकों थे अरि-गढ़—दुर्ग,
भरी थी जिनमें मुझा गर्व।
शिवा थे, थे प्रताप से रत्न,
जिन्होंने किया दस्यु दल ध्वंस !

किन्तु हा, कहते फटता हृदय,
आगमन अब से तेरा हुआ !
लुट गए मेरे सब मणि रत्न,
हृदय-वन पर पाला पड़ गया !

प्रलोभन दे दे झूठे सदा, किये मतमाने अत्याचार।
किया मुझ को तन धन से हीन, कहूँ भी कैसे वह अघ-कथा ?

लाल दिन जलियां वाले के,
बरेली का वह हत्याकाण्ड,
अभी लौं स्मर्ण कराते मुझे,
विगत सत्तावन के सब दृश्य !

किन्तु ओ मतवाले मदअन्ध !
अनय की भी होती है हदद।
सहन बल भी है सीमाबद्ध,
सोच ले इसे, बढ़ा फिर पैर ॥

कहे देती हूं अब भी, सम्हल !
मुझे है तेरी तनिक न चाह।
निकल हो शीघ्र यहाँ से दूर,
अन्यथा होगा यहीं तबाह !

उठेगी भभक हृदय की ज्वाल, रोष का उमड़ेगा बारीश।
प्रलय सम भरता रण हुंकार, जग उठा जो विद्रोह अदम्य !

दिल्ली की श्रद्धाञ्जली

शाम को जतीन्द्र का शव ले जाने वाली गाड़ी दिल्ली पहुंची। गाड़ी के घंटों पहले ही से स्टेशन पर अपार भीड़ जमा थी। रेलवे अधिकारियों ने व्यवस्था करने की बहुत कोशिश की, पर बेकार। कई आदमी कुचले गये। बहुतों को तो अगले स्टेशनों पर ही जाने से जतीन्द्र के अन्तिम दर्शन मिले। फूलों से तो प्रायः सारी गाड़ी ही लद गई।

(पहले कालम का शेष)

जतीन्द्र की मौत का यही सन्देश है, कि मरना सीखो ! मरो ! हिन्दू—मुसलमान साथ २ मरो ! किसी काम के लिये मरो ! यही आवाज़ भारत के आकाश में गूंज रही है !

तोप, बम की ज़रूरत नहीं। मरना सीख लेने की ज़रूरत है। मरने की तरकीब समझ लेने की ज़रूरत है। ज़िन्दगी को भी समझने की ज़रूरत है। जतीन्द्र ने इन दोनों को समझा था। उसने मौत से ज़िन्दगी लेना सीखा था। तुम भी मौत से ज़िन्दगी लेना सीखो। जब सीख जाओगे, तभी भारत का उद्धार हो जायगा ! 'राहतजी'

जतीन्द्र का सन्देश यही है कि जो सफल होना चाहे, वह अपने आदर्श के पीछे पागल होकर चले। आदर्श स्थिर करे समझ कर और उसे व्यवहारिक रूप दे उन्मत्त हो कर। हानि लाभ की चिन्ता न करके।

जतीन्द्र का सिद्धान्त था, माता के लिये जीवन अर्पण करना। वही उसने कर दिखाया। वह सदा यही सोचता था और यही करता था। हमें भी यही करना चाहिये। समझना सोचना बुरा नहीं है, पर जो समझना सोचना, विघ्न बाधाओं से डरावे, उसकी हमें ज़रूरत नहीं है। जतीन्द्र की मृत्यु का यही संदेश है कि जो कर्त्तव्य पथ और कार्यक्रम निश्चय कर लो, फिर उस पर जान लड़ा दो। विघ्नों की चिन्ता न करो। कठिनाइयों से न डरो। परिणाम की चिन्ता मत करो। दुनियां साथ न आवे, न सही। हँसे तो हँसे। अपने कर्त्तव्य पर डटे रहो और उसी पर मिट जाओ। वह मिटना ही तुम्हें अमर बनावेगा ! 'सुमनजी'

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

अभिमन्यु से बच्चों की मौत देख इस तरह

शहीद जतीन्द्रनाथ दास को अजमेर की श्रद्धाञ्जली

[निज सम्वाददाता द्वारा]

अजमेर के बरफ की तरह ठण्डे बने हुए रक्त को भी नौकरशाही के अत्याचारों और जतीन्द्र के विशुद्ध बलिदान ने खौला दिया। वह पहला ही अवसर था जब यहां के विद्यार्थियों और युवकों में असहयोग के बाद इतना जोश देखा गया। युवक संघ के अधिकारी तो विचार कर ही रहे थे कि युवकों और विद्यार्थियों की ओर से पत्र आने शुरू होगए। प्रत्येक यह जानने को उत्सुक था कि "क्या किया जायगा ?"

काम भी वैसे ही उत्साह से हुआ। जिस ३ बजे की धूप में अजमेर के आरामतलब नागरिक बाहर निकलना पाप समझते हैं. उसी में फूल से विद्यार्थियों और युवकों के झुण्ड युवक संघ कार्यालय के बाहर आ आ कर एकत्र होने लगे। ठीक समय पर काले झण्डों और उत्साह वर्द्धक वाक्य लिखित पट्टों के साथ नंगे सिर जलूस रवाना हुआ। प्रत्येक दल जतीन्द्र बाबू की शहादत के बारे में बने हुए पद्य गाता हुआ जाता था। "साम्राज्यवाद का क्षय, क्रान्ति चिरजीवी हो, जतीन्द्र नाथ की जय, भारत के शहीदों की जय, आदि के जय घोषों से बाजार गूंजने लगे। देखते २ भीड़ बढ़ने लगी। यहां तक कि नए बाजार से निकलने पर तो जलूस का पार कर के किसी का निकल जाना असम्भव हो गया। निस्सन्देह इस सफलता को श्रेय अनेक युवकों को ही दिया जा सकता है।

कुछ त्रुटियां भी थीं, जिन्हे युवक और नागरिकों के लाभ के लिये यहां लिख देना अनुचित न होगा। पहली बात तो यह है कि श्रेणियां प्रायः अव्यवस्थित हो जाती थीं, यद्यपि उन्हें ठीक करने का बार २ प्रयत्न किया जाता था। इसमें गौण कारण तो हमारा किसी काम को सैनिक व्यवस्था के साथ न करने का स्वभाव था और प्रधान कारण था गाना सुनने और उसमें सहयोग देने की इच्छा पर इससे जलूस की जो व्यवस्था बिगड़ती थी, उससे उसके उद्देश्य को काफी हानि पहुंचती थी। फिर युवकों का तो प्रत्येक कार्य सैनिकों की तरह सुव्यवस्थित होना चाहिये। इसके लिये आवश्यक व्यवस्थाएं पहले ही से कर लेनी चाहियें।

प्लेकार्ड्स और झण्डियों की भी व्यवस्था ठीक न रहती थी। कभी वे सब एक जगह एकत्र दिखाई देते थे, कभी बिखरे हुए। दलोंका भी यही हाल था। कभी एक दल से दूसरा दल बहुत पीछे रह जाता था तो कभी जरा सीढ़ी जगह मिलते ही सब श्रेणियां टूट करएक भीड़ बना लेती थीं। आने जाने वालों के लिये जगह ही न छूटती थी। मैं इन सब बातों को इस लिये लिख रहा हूं कि अभी हमारे युवकों को बड़े २ कार्य करने हैं और अगर ऐसी त्रुटियां बनी रहें तो उससे काफी परिश्रम करके भी उसका आधा फल खो सकते हैं। साथ ही इस लिये भी कि दूसरों को हमारे युवकों की समालोचना करने का अवसर न मिले।

नागरिकों की भी कुछ बातें उल्लेखनीय हैं। निःसन्देह बहुतसे नागरिक जलूस देख अपनी सवारियों आदि से उतर पड़ते थे और सिर नंगा कर कम से कम कुछ दूर तक साथ चलते थे। यह उनके लिये शोभा और उनके राष्ट्राभिमान की द्योतक बात थी, पर दूकानदारों और मुसलमान भाइयों से और तो क्या, यह भी न होता था कि वे शोक जलूस के निकलने तक अपनी दूकानों पर नंगे सिर खड़े भी होजाते। हम यह तो नहीं मानते कि वीर जतीन्द्र जैसे देश पर मरने वाले व्यक्ति के बलिदान का महत्व वे सभी न समझते थे। सम्भव है कुछ को पता न रहा हो। पर यह उनके लिये शोभा की बात न थी हमें यह आशा करना चाहिये कि आगे इन बातों पर ध्यान रक्खा जायगा। कारण इन्हीं बातों से राष्ट्र के जीवन और आत्म-सम्मान का प्रमाण मिलता है। अस्तु

जलूस अपनी उसी धूम धाम से सारे खास २ बाजारों में घूमा। छतों पर जगह २ पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की भीड़ थी। कितने ही लोग जतीन्द्र की स्मृति से द्रवित दिखाई देते थे। कई मुसलमान भाई भी गाने और जलूस में साथ दे रहे थे। भाई हरिभाऊजी उपाध्याय डा० अम्बालालजी जीयालालजी विद्यारामजी आदि भी आ पहुंचे थे, ठीक ६ बजे जलूस घण्टा घर पर पहुँचा। उसी समय सभा की गई। यहां भी खूब भीड़ हो गई थी। से. जमनालालजी बजाज ने सभापति का आसन ग्रहण किया। आपने कहा कि जतीन्द्र की मृत्यु का दिन भारत में एक ऐतिहासिक दिन गिना जायगा।। वैसे हमारे युवकों में देश भक्ति की कमी नहीं है, परन्तु जतीन्द्र जैसे युवक बिरले ही होते हैं। वैसे तो देश में लोग नित्य मरते हैं, पर जो देश के लिये मरते हैं उन्हीं का मरना सार्थक है। आज यह प्रश्न नहीं है कि उनके सत्याग्रह के बारे में मेरे क्या विचार हैं। आज तो प्रश्न उस वीर के बलिदान पर अपने भाव प्रकट करना है। मैं जतीन्द्र की इस लिये इज्जत करता हूं कि वह केवल जोशीला युवक न था, जो जोश में आ कर काम तो शुरू कर देता है पर उस पर दृढ़ नहीं रहता। जतीन्द्र में जोश भी था और दृढ़ता भी थी। उसने जो अनशन शुरू किया था उसे मृत्यु तक निभाया। यदि जतीन्द्र ने गोली से आत्महत्या की होती तो मैं उसकी प्रशंसा न करता। वह बड़ी वीरता न होती। पर उसने शान्ति पूर्वक कष्ट सहकर और असहयोग करके मृत्यु का आलिंगन किया। यह सच्ची वीरता थी।

सभापति के बाद पं० गौरीशंकर जी ने भाषण दिया और युवकों से जतीन्द्र के बलिदान से शिक्षा ले देश के लिये कुर्बानी करने को तयार होने का आग्रह किया।

तत्पश्चात श्री क्षेमानन्दजी राहत ने निम्न प्रस्ताव रक्खा:—

"अजमेर के नागरिकों और युवकों को यह सभा लाहौर जेल के बहादुर शहीद श्री. जतीन्द्रनाथ दास की गौरवमयी और स्फूर्तिदायिनी मृत्यु पर गर्व करती है और वीर प्रसू भारतभूमि और श्री दास के सौभाग्य शाली परिवार को बधाई देती है। साथ ही पञ्जाब सरकार ने अपने व्यवहार में जिस हृदय-हीनता का परिचय दिया है, उसके प्रति अपनी आन्तरिक अरुचि प्रकट करती है। इस सभा का विश्वास है कि जतीन्द्र की बहादुराना मौत ने देश को आजादी की ओर अवश्य ही एक कदम आगे बढ़ा दिया है।"

प्रस्ताव को रखते हुए राहत जी ने युवकों को (सी० आई० डी०) की चालों से सावधान होते हुए आगे बढ़ने की चेतावनी दे कर अपने ओजस्वी उद्गार प्रकट किये, जिनका मुख्यभाग अन्यत्र दिया गयाहै। आपका समर्थन श्री० रामनाथलालजी सुमन

राजपूताने के जी हुजूरा

बिड़ला जी और हरविलास जी शारदा!

जिस दिन श्री० जतीन्द्रनाथ दास का शरीरान्त हुआ, उसी दिन मि० शुस्टर की धर्मपत्नी की ओर से शिमला में एक गार्डन पार्टी थी। इस में असेम्बली के बहुत से सदस्य जाने वाले थे। पर ज्यों ही जतीन्द्र के बलिदान की खबर पहुंची कि राष्ट्रीय दल के सारे सदस्यों ने उक्त भोज में न जाना निश्चय कर लिया। पर राजपुताने के राजभक्त-रत्न श्री० हरविलास जी शारदा और देश भक्त घनश्यामदास जी बिड़ला ऐसी कठोरता कैसे धारण कर सकते थे? इन्हों ने जाना ही तय किया। देश जतीन्द्र के वियोग से जल रहा था और ये राजपूताने के प्रतिनिधि गार्डन पार्टी की दावत में मनोरञ्जन कर रहे थे!

पागल बनाये दिल ही कयामत मचायगा !

जतीन्द्र कौन है ?

श्री० जतीन्द्रनाथदास के पिता का नाम बंकिम बिहारी दास था। इनके दादा महेन्द्र नाथ दास बंगाल में मुंसिफ़ थे। जतीन्द्र का जन्म १९०४ में हुआ था। उनके दादा-दादी का देहान्त उनकी बाल्यावस्था में ही हो गया था। वे भवानीपुर-कलकत्ता के मित्र-इंस्टिट्यूशन में पढ़ते थे। १९२० में वे मैट्रेक पास हुए। १९२१ के असहयोग में उन्होंने पढ़ना छोड़ दिया और दक्षिणी-कलकत्ता कांग्रेस कमेटी के काम में जुट गए।

इसी बीच बंगाल में भयंकर बाढ़ आई। जतीन्द्र अपना दल लेकर पीड़ितों की सहायता में जा जुटे। उनकी सेवा देख कर लोग उसी समय समझ गए कि जतीन्द्र एक असाधारण युवक है। इधर ज्योंही वे लौटे कि विनय अवज्ञा की प्रगति चल पड़ी। ये भी भिड़ गए और फलतः गिरिफ्तार हो गए। पर चार दिन बाद ही वे छोड़ दिये गए।

छः साथियों सहित पकड़े गए। इस बार उन्हें तीन मास की सज़ा हुई और वे हुगली जेल में रक्खे गए। यहां उनका स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया। कदाचित् उन्हें कष्ट भी काफ़ी दिया गया था। इसीलिये जब वे छूट कर आए तब उनके शरीर में केवल हड्डियां रह गई थीं। वे कोई काम न कर सकते थे। इसीलिये छूटने पर भी वे प्रायः डेढ़ मास बिस्तर पर पड़े रहे। उसी समय उनके पिता ने उन्हें फिर घर बुला लिया। कर्तव्यनिष्ठता और अपत्यस्नेह ने मतभेद पर विजय प्राप्त की।

१९२२ में कुछ स्वस्थ होकर वे आशुतोष कालेज में भरती हुए। किंतु इसका यह अर्थ नहीं कि उन्होंने

खून का प्यासा दमन-खड्ग



गोरे (अंङ्गरेज़ी) जेल-कानून की लीला !

त्या० भू० की कृपा से

पर कठिनाइयों से पूरा छुटकारा फिर भी नहीं मिला। इसी समय उनका अपने पिता से कुछ मतभेद होगया। अन्त में उन्होंने घर छोड़ दिया। पिता और घर को छोड़ दिया पर अपने हृदय के प्रतिकूल चलना स्वीकार न किया।

१९२१ के अन्त में वे फिर सविनय अवज्ञा करते हुए पकड़े गये। इस बार एक मास की सज़ा हुई। देखते २ जतीन्द्र इस सज़ा को पूरी कर आए और फिर उसी जोश के साथ काम पर जुट गये। फलतः १९२२ में जब वे बड़ा बाज़ार में पिकेटिंग कर रहे थे, फिर अपने काम छोड़ दिया। नहीं, वे एक ओर कालेज में अपने साथियों को देश भक्त बनाते और कालेज के घण्टों के बाद अपनी मातृभूमि के उद्धार के दूसरे कामों में भाग लेते। इसके फल से वे युवकों और कार्यकर्ताओं में अधिकाधिक ही लोकप्रिय होते गए और १९२४ में दक्षिणी कलकत्ता की कांग्रेस कमेटी के सहकारी मन्त्री चुने गये। इधर उनकी कार्य-शक्ति भी बढ़ती ही गई। उन्होंने थोड़े ही दिनों में अपने साथियों में बिजली भर दी।

उसी वर्ष, जतीन्द्र के ही पौरुष और उद्योग से 'तरुण समिति' स्थापित हुई। इस समिति का उद्देश्य ग़रीबों, विधवाओं, अंगहीनों और अन्य सहायता के पात्र व्यक्तियों को मदद देना था। इस समिति के कार्यकर्ता दक्षिणी कलकत्ता में घर २ घूम कर प्रति रविवार को सहायता एकत्र करते थे। इस समिति का एक पुस्तकालय था और समय २ पर उसकी ओर से युवकों को मर्दाने खेल सिखाने की भी योजना होती थी।

१९२५ में वे कांग्रेस कमेटी के तो फिर सहकारी मन्त्री चुने ही गए, 'तरुण समिति' के भी सहकारी मंत्री चुने गए। इस प्रकार वे अपने जीवन का प्रतिक्षण मातृभूमि की सेवा में लगा रहे थे जब कि १९२५ की ५ नवम्बर की आधी रात को पुलिस ने उन्हें 'बंगाल आर्डिनेन्स' के अनुसार पकड़ लिया। पकड़ने के बाद, पहले वे कलकत्ता प्रेसिडेंसी जेल में रक्खे गए और फिर मिदनापुर सेंट्रल जेल को बदल दिये गए। वहाँ गरमी कड़ी थी। अतः आपको लू लग गई और आप इसके फल से मृत्यु के किनारे पर आ पहुंचे। दुर्बल तो थे ही। किंतु ठीक समय पर कुछ मित्रों की सहायता मिल गई और वे बच गए।

पर उन्हें अच्छी तरह आराम भी न हुआ था कि वे ढाका सेण्ट्रल जेल को बदल दिये गए। कारण यह बताया गया कि सी. आई. डी. का एक खास सुपरिन्टेन्डेन्ट जेल में मार डाला गया था। इसके कुछ दिन बाद ही वे मैमनसिंह सेण्ट्रल जेल को बदल दिये गए। यहां उनके साथ दुर्व्यवहार शुरू हुआ। यहाँ तक कि एक दिन उनकी सुपरिन्टेन्डेन्ट जेल से हाथापाई हो गई। बदले में उन्हें खूब मारा गया। इस झगड़े का कारण यह था कि सुपरिन्टेन्डेन्ट ने जतीन्द्र को गन्दी गाली दी थी। अन्त में इस झगड़े के लिये जतीन्द्र पर मारपीट और दुर्व्यवहार का मुक़द्दमा चला। इस पर जतींद्र ने अनशन शुरू कर दिया। यह अनशन २३ दिन तक चला। फल यह हुआ कि बंगाल सर्कार ने हस्तक्षेप किया। सुपरिन्टेन्डेन्ट को जतीन्द्र से माफी मांगनी पड़ी और जतीन्द्र की सब शिकायतें दूर की गईं।

पर अधिकारियों ने चाल खेली इस प्रकार अनशन तुड़ाकर दिया और फिर उन्हें मियांवाली जेल को

ने किया। अन्त में श्री० हरिकृष्णजी प्रेमी ने ज़ोरदार शब्दों में प्रस्ताव का पक्ष लेते हुए युवकों से जतीन्द्र का बाकी रहा हुआ काम पूरा करने की अपील की और नौकरशाही को चेता दी कि यदि उसका दुराग्रह इसी प्रकार जारी रहा तो भारतीय युवक अपने बलिदानों से साधारण गगन से भी अधिक अपनी माता की गोद को लाल करने को तयार है।

इस के बाद जब सभापति सभा सहित खड़े हो कर प्रस्ताव पास करा रहे थे, तब एक सज्जन उस में यह जुड़ाने का अनुरोध करने लगे कि "यह सभा सरकार और कांग्रेस के नेताओं से भी इस ओर ध्यान देने का अनुरोध करती है।" सभापतिने कहा कि "प्रथम तो आपने लिख कर सुधार पेश नहीं किया है, दूसरे कोई इस का समर्थन नहीं करता। फिर जिस सरकार का ध्यान जतीन्द्र जैसे वीर युवा का ६३ दिन का उपवास करते २ मरना, आकर्षित न कर सका, उसका ध्यान हमारे अनुरोध से आकर्षित होगा क्या ? वैसे भी ऐसा करना मृतवीर का अपमान करना है।" तत्पश्चात सारी सभा ने खड़े हो कर गम्भीर शांति के साथ प्रस्ताव स्वीकार किया। अन्त में युवक संघ के प्रधान मन्त्री श्री० नृसिंहदासजी के ओजस्वी भाषण के बाद सभा विसर्जित हुई।

आर्यकुमार सभा और जतींद्र

जतीन्द्र के बलि होने की खबर आते ही स्थानीय आर्यकुमार सभाकी एक खास बैठक हुई। सभा ने जतीन्द्र के बलिदान की प्रशंसा, उनके कुटुम्बियों के साथ सहानुभूति और उन पर हुए अत्याचारों की निन्दा का प्रस्ताव पास किया।

धर्मेन्द्र किशोर मन्त्री

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

बढ़ बढ़ के नौजवान वह हिम्मत दिखांयगे,

बदल दिया। ऐसा होने से वे प्रान्त व इष्ट मित्रों से दूर जा पड़े। उनकी खबर मिलना और तकलीफ पड़ने पर आन्दोलन होना कठिन होगया। पीछे खबर मिली कि वहां जतीन्द्र के साथ काफी दुर्व्यवहार हुआ। उन्हें न ठीक भोजन दिया गया न ठीक स्थान। जतीन्द्र भी विरोध किये बिना न माना और अधिकारी भी अपनी पशुता अधिकाधिक दिखाते गए। इस प्रकार सभ्य कहलाने वाली सरकार के बिना मुकद्दमा चलाए कैद किये जाने के बाद भी किये गए व्यवहारों के कारण जतीन्द्र का स्वास्थ्य बिगड़ चला। यहां तक कि वह बहुत जल्दी मुट्ठी भर हड्डियों का ढेर रह गया। जब कुटुम्बी उनसे मिलने गए तो उन्हें मिलने तक न दिया गया।

इसी बीच में उनकी एक मात्र बहन भयानक रूप से बीमार हुई। उसके बचने की आशा न रहने पर जतीन्द्र ने कई बार उसे देखने और उसकी सेवा करने के लिये इजाजत मांगी, पर नहीं दी गई। नतीजा यह हुआ कि उनकी बहन की उचित शुश्रूषा और चिकित्सा न हो सकी। कारण, उसके दो भाई तो पहले ही पकड़ लिये गए थे। पिता बहुत वृद्ध थे। इजाजत भी मिली तो तब, जब वह मृत्युतट पर पहुंच रही थी। उस समय भी बहन के पास जतीन्द्र कड़े पहरे में बैठ पाते थे। कुछ दिन बाद वे चिट्टागांग के एक ऊजड़ ग्राम में ले जा कर नजरबन्द कर दिये गए। इसके बाद ही उनकी बहन का देहान्त हो गया।

आखिर १९२८ की २६ सितम्बर को जतीन्द्रनाथ दास छोड़े गए। इस समय वे शरीर से बहुत ही कम जोर थे। पर फिर भी वे छूटते ही काम पर जुट पड़े। गत कांग्रेस के समय उन्होंने एक अच्छी सुशिक्षित स्वयं सेवक चमू तयार की। कांग्रेस के बाद उन्होंने दक्षिण-कलकत्ता स्वयंसेवक दल के सेनापति का कार्य किया। कुछ दिन बाद वे बंगवासी कालेज में भरती हुए और बी० ए० की पढ़ाई करने लगे। साथ ही तीसरी बार फिर कांग्रेस कमेटी और तरुण समिति के सहकारी मन्त्री चुने गए। इंडिपेंडेंस लीग और युवक संघ की कार्यकारिणी के भी वे सदस्य चुने गए। उनके स्वयं सेवकों का दल निरन्तर बढ़ता जाता था और एक बार उन्होंने कहा था कि वास्तविक स्वराज्य हमारे हाथ में है। पर ज्यों ही बंगाल का चुनाव समाप्त हुआ कि १४ ता० को वे पकड़ कर लाहौर ले आए गए, जहां से वे नौकरशाही के सारे इन्तजामों के रहते भी १३ ता० को ६३ दिन अनशन कर के सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र हो गए।

असेम्बली में जतीन्द्र

ता० १४ सितम्बर को मि० जिन्ना ने हंगर स्ट्राइक बिल का विरोध करते हुए अन्त में कहा कि अभियुक्तों के साथ अच्छा बर्ताव करो, नहीं तो मुकद्दमा उठा लो। असली कारणों की ओर ध्यान देने की अधिक आवश्यकता है। अन्यथा टैक्स अदा करने वालों का द्रव्य ऐसे लोगों पर मुकद्दमा चलाने में व्यय नहीं किया जा सकेगा, जो अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिये लड़ रहे हैं।

ला मेम्बर सर बी. एल. मित्र ने बिल के कानूनी पहलू पर अपना विचार प्रकट किया। इनके व्याख्यान में बकील मेम्बरों द्वारा कई बार बाधा उपस्थित की गई।

इसके अनन्तर पं० मोतीलाल नेहरू ने कहा कि जब ला मेम्बर बोल रहे थे, तब ऐसा प्रतीत होता था कि मैं ४५ वर्ष पहले किसी क्लास में लेक्चर सुन रहा हूं।

इस पर ला मेम्बर ने कहा कि "इसमें मेरा अपराध नहीं है वरन यह मेरा अभाग्य है।"

पं० मोतीलाल जी ने कहा, "आज के दिन एक अयोग्य अवसर और स्थान का पसन्द करना आप के लिये अभाग्य की बात है। और अपराध यह है कि आप कानून भी नहीं जानते।"

नेहरू जी ने बहस करते हुए कहा कि यह बिल ऐसे आधार पर अवलम्बित है जो संसार भर में किसी भी देश के न्याय विधान द्वारा स्वीकृत नहीं किया गया है। वादी के सामने अभियुक्त को उपस्थित करके ही अदालती कार्यवाही की जा सकती है। सभी मुकद्दमों के आरम्भ और बीच में बर्तने योग्य यही आधार है। अदालतें किसी भगे हुए अभियुक्त के संबंध में ऐसे गवाहों की गवाहियां ले सकती थीं जिनके मर जाने की सम्भावना होती। ऐसी दशा में यही ठीक है कि या तो मुकद्दमा उठा लिया जाय या स्थगित कर दिया जाय। यह मुकद्दमा ऐसे लोगों पर चल रहा है जो अपने को एक उच्च उद्देश्य के लिये बलिदान कर रहे हैं। और चूंकि कानून उन पर शीघ्र प्रभाव प्रकट करने में असमर्थ है, इसलिये आप ऐसा यंत्र तैयार करना चाहते हैं जो उन पर प्रहार कर सके और अभियुक्तों पर किसी वकील का बोझ लादा जा सके।"

ला मेम्बर मि० मित्र ने कहा- "नहीं, अभियुक्तों की स्वेच्छा से नियत वकीलों का मिहनताना चुकाने मात्र का हमारा अभिप्राय है।"

पं० मोतीलाल ने कहा-"तब आप उस पर कौन सी कृपा करते हैं?"

पं. जी ने कहा कि स्वर्गीय मि. सी० आर० दास के शब्दों में यह गैर कानूनी कानून है। इस मुकद्दमे के दूसरे पहलू पर विचार करने पर क्रोध के स्थान में तरस आता है। सरकार कहती है कि हमसे बड़ी भारी भूल हो गई है, इससे हमें बचाओ कारण कि कोई दूसरा मार्ग नहीं है। इसके प्रति हमारा उत्तर है कि इसे उस ने खुद मोल लिया है और उस को इसका सामना करना होगा।

आगे मोतीलाल जी ने अभियुक्तों की मांगें बताते हुए कहा कि उन का काकोरी और गदर से कोई सम्बन्ध न था। उन्होंने अभियुक्तों का भेजा हुआ पत्र पढ़ा, जो सेन्सर होकर आया था। अभियुक्तों ने लिखा था कि:—

क्या अनशन टूटा था?

"हमें पंजाब जेल कमेटी ने स्पष्ट रूप से विश्वास दिलाया था कि उन्होंने वादा करने के पहले पंजाब सर्कार से सलाह कर ली है और यह कि हमारी प्रायः सब मांगें पूरी कर दी जांयगी, भगतसिंह और दत्त दूसरे अभियुक्तों से अलग न रक्खे जांयगे और जतीन्द्र नाथ दास बिना किसी शर्त के छोड़ दिये जांयगे। इस पर हमने अनशन केवल स्थगित किया था, सर्वथा छोड़ा नहीं था। पीछे जब हम ने देखा कि सर्कार कमेटी की ये प्रारम्भिक बातें भी नहीं मान रही है, तब हमने फिर शुरू कर दिया। जतीन्द्र की स्थिति निराशाजनक है किन्तु हम भी उसका साथ देने को तैयार हैं। इसी लिये हम ने दो दल बना लिये हैं। इनमें से एक अनशन जारी रखेगा, दूसरा बन्द कर देगा। ज्योंही अनशन करने वाले में से एक मरेगा। त्योंही दूसरे दल से एक अनशन शुरू कर देगा। इस प्रकार बलिदान का तांता जारी रहेगा। हम अपने आग्रह को सर्वथा उचित समझते हैं और मानते हैं कि हमारे लिये इस उच्च ध्येय के लिए संग्राम करते २ मरने से बढ़कर सम्मान और गौरव की दूसरी बात नहीं हो सकती।"

पत्र पढ़कर पं० जी ने कहा कि सरकार के पास इन मांगों का क्या उत्तर है? सरकार को याद रखना चाहिये कि ये अभियुक्त अपने स्वार्थ के लिये कष्ट नहीं उठा रहे हैं। वे देश के लिये जान पर खेल रहे हैं। सरकार तो जो इनके लिये कहती है वही आयरिश अनशनी सिनफिनरों के लिये कहती थी। वह अभियुक्तों की अनुपस्थिति में मुकद्दमा चलाना चाहती है। पर चूंकि उसने अभियुक्तों की उचित मांगों पर ध्यान नहीं दिया, अतः उसके साथ किसी को सहानूभूति नहीं हो सकती।

इसके बाद दो तीन सरकारी सदस्य बिल के पक्ष में बोले और कहा कि अभियुक्त जान बूझ कर मुकद्दमे में अड़ंगा डाल रहे हैं। मि. केन ने कहा कि मैं माननीय सदस्यों को चेतावनी देता हूं। उन्हें ही आज की सरकार का उत्तराधिकारी होना है और वे ऐसा उदाहरण स्थापित करेंगे तो फिर स्वयम् ही कठिनाई देखेंगे।

इसी समय बार बज गए। अतः बिल की बहस बन्द हुई और पंडित मोतीलालजी नेहरू ने 'लाहौर के अभियुक्तों के साथ किये गए दुर्व्यवहार के लिये सरकार की निन्दा' का प्रस्ताव पेश किया। उन्होंने कहा कि इस मामले में सरकार की मनुष्य जीवन के लिये बेपरवाही देख कर मुझे 'रोम के जलते समय नीरो के बंशी बजाने' की कहावत याद आ

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

ये जुल्म क्या हैं, चर्ख़ तक चक्कर में आ गया !

मेरठ केस

मि. सिन्हाने इस पर अदालत का ध्यान आकर्षित किया कि मजिस्ट्रेट ने मुझे नोटिस भेजा है कि मैं लंदन से मि. ऐम. जी. देसाई के

(६ ठे पृष्ठ का शेष)

के अपराधियों को छोड़ कर) खास कैदी गिने जाँय ।

२—ऐसे प्रत्येक कैदी को ॥) रोजाना की खुराक और अच्छे कपड़े दिये जाँय ।

३—उन्हें लिखने पढ़ने की सुविधा, सामग्री और रोशनी दी जाय ।

४—उन्हें सब प्रकार के अखबार और पुस्तकें दी जाँय ।

५—जिन कामो का उन्हें अभ्यास न हो या जिन से शिक्षादि के कारण अरुचि हो, वे उन्हें न दिये जांय ।

६—राजनैतिक सब कैदी एक जगह रक्खे जाँय ।

७—राजनैतिक अभियुक्त दूसरे प्रान्त में मुकद्दमा होने पर भी फैसले के बाद अपने प्रान्त में भेज दिये जाय ।

यदि हमारी ये मांगे एक सप्ताह में स्वीकृत न हुई तो हम भी भगतसिंह और दत्त का अनुकरण कर राजनैतिक बन्दियों की स्थिति सुधारने के लिये अनशन शुरू करेंगे ।

गई । एक ओर महान् आत्माएं मृत्यु को आलिंगन कर रही थीं और दूसरी ओर सरकार घोषणाएं निकालने और कमेटियां बनाने का खेल कर रही थी । आखिरी सरकार ने अभियुक्तों की जान बचाने को उन्हें छोड़ दिया था, पर यह सरकार इतना भी न कर सकी । फलतः एक मूल्यवान जीवन का अन्त हो चुका है और दूसरे मृत्यु के किनारे हैं । क्या यह सरकार की निन्दा के लिये काफी कारण नहीं है ?

इस पर होम मेम्बर ने अभियुक्तों से सहानुभूति दिखाते हुए कहा कि सरकार ने सब कुछ किया है । जिन बातों पर सरकार अड़ी है वे सिद्धांत की हैं । यदि अनशनी अपने सिद्धान्त पर डटे रहे हैं तो सरकार भी सिद्धांत पर डटी रही है । अभियुक्तों को एक जगह रखना कानून के सिद्धान्त के विरुद्ध है ।

अन्त में प्रस्ताव बहुमत से प्राप्त होगया ।

जून वाले प्राप्त पत्र उनके सामने पेश करूँ । मेरा इस सम्बन्ध में कहना है कि कानून शहादत की दफा ६६ के अनुसार मजिस्ट्रेट को सफाई के वकील को नोटिस देने का कोई अधिकार नहीं है ।

मि. लांग फोर्ड जेम्स और मि. खैरातनबी ने कहा कि सारे हिन्दुस्तान में ऐसा ही रिवाज है ।

मि. सिन्हाने कहा कि यह रिवाज किसी कानून पर निर्भर नहीं है ।

मि. जेम्स ने कहा कि मि. सिन्हा के लिये ऐसे मुकद्दमें को हाथ में लेना वकालत पेशे के उसूल के विरुद्ध है जिसमें अभियुक्तों की प्रगतियों को वे पहिले ही से जानते हों ।

मि. सिन्हा ने कहा कि इस समय इस तरीके पर मेरा ऐतराज है । कारण कि मेरी इच्छा है कि अदालत को ऐसे सारे विवाद से पर रहना चाहिये । मैं मि. लांग फोर्ड जेम्स के वाक्यों का घोर विरोध करता हूं । वाकयात से मेरी जाती जानकारी साबित करने के लिये मैं उन्हें चैलेंज करता हूं ।

ता० १९ की पेशी मनोरञ्जक रही । इस जा कर आप हुए मि. फोरोजुद्दीन मंसूर सहायक सम्पादक 'किरता' अदालत के गवाह के तौर पर पेश हुए ।

मंसूर ने कहा कि मैं मुज़फ़्फ़र और उस्मानी को जानता हूं, वे कम्यूनिस्ट हैं । भारत की कम्यू. पार्टी कम्यू० इण्टरनेशनल की शाखा नहीं है । रूस में लैनिन ने ही सफलता पूर्वक क्रान्ति का नेतृत्व किया था । आज कल रूस का नेता स्टैलिन है । कम्यूनिस्ट पार्टी रूस की शासक नहीं है । हां, उसके सदस्य कैबिनेट में हैं । मैं मौस्को में रहा हूं और ताशकंद में आठ मास पढ़ा हूं । मौस्को में कम्यूनिज्म भी पढ़ाया जाता है । मैंने दो सुल्तियाओं (Dictators) का सिद्धान्त पढ़ा है । कम्यूनिस्टिक सरकार स्थापित करने के मार्ग स्थानीय स्थिति को देख कर निश्चय करने पड़ते हैं । कम्यूनिज्म का शत्रु साम्राज्यवाद है । इंग्लेण्ड, फ्रांस आदि की शासन प्रणाली साम्राज्यवादी है । हमारा ध्येय साम्राज्यवाद का नाश करना है ।

मि. जेम्स—फ्रांस साम्राज्यवादी है तो उसे नष्ट करने को वहां की सरकार नष्ट करनी पड़ेगी ?

मंसूर—यह आवश्यक नहीं ।

जेम्स—तब कैसे होगा ?

मंसूर—यह फ्रांस के लोग ही कह सकते हैं ।

जेम्स—भारत में इसके लिये क्या करना चाहिये ?

मंसूर—मैंने इसपर विचार नहीं किया है ।

जेम्स—क्या पहिले बृटिश सर्कार को नष्ट न करना पड़ेगा ?

मंसूर—बृटिश सरकार दूसरी वस्तु है और साम्राज्यवाद दूसरी । साम्राज्यवाद की नीति के लिये बादशाह जार्ज नहीं, डाउनिंग स्ट्रीट के धनिक ज़िम्मेदार हैं ।

:: ::

भगतसिंह दत्त

पंजाब गवर्नमेण्ट के होम मेम्बर लाला दुलीचन्द को तार दिया है कि सरकार की आज्ञानुसार इंस्पेक्टर जेनरल जेल ने कल भगतसिंह और दत्त को सूचित किया था कि मुकद्दमें की सुनवाई के समय उन्हें कपड़ा के अतिरिक्त अन्य सब सुविधाएं, जिनके लिये पञ्जाब जेल कमेटी ने सिफारिश की है, मिलेंगी । उन्हें सेन्ट्रल जेल में पूर्ववत रहना होगा । परन्तु आपस में उन्हें मिलने की स्वतन्त्रता रहेगी ! मुकद्दमें के सम्बन्ध में सफाई के लिये प्रबन्ध करने तथा वाद विवाद करने के लिये वे बोर्स्टल जेल के अभियुक्तों से उचित रूप में अच्छी तरह मिल सकेंगे । अनशन छोड़ देने पर उनके साथ ऐसा वर्ताव किया जायगा । जेल कमेटी के मेम्बरों को इसकी सूचना दी गई है ।"

:: ::

पीछे मि. जेम्स ने एक लाल 'बिल्ला' निकाला, जिसे देख अभियुक्त चिल्ला उठे-"यह तुम्हें किस ने दिया ? कहां से आया ? अवश्य दीवान चमनलाल ने दिया होगा । चमनलाल को धिक्कार है !" आदि ।

मंसूर—ऐसे बिल्ले कम्यूनिस्ट पहनते हैं ।

जेल कमेटी ने क्या कहा ?

सरदार बहादुर महताबसिंह, लाला दुनीचन्द और रायबहादुर मोहनलाल ने अपने पूर्व वर्णन के अतिरिक्त निम्न लिखित बयान और दिया है :—

इंगर स्ट्राइक सब कमेटी की सिफारिश पर कर्नल बार्कर ने २ सितम्बर के सायंकाल, पंजाब सरकार को सूचित किया था कि जतीन्द्रनाथ शीघ्र मुक्त कर दिये जाँय ।

चूंकि कोई निश्चित उत्तर इसका नहीं मिला, अतः इस कमेटी के चारों मेम्बरों की उपस्थिति में कर्नल बार्कर ने पंजाब गवर्नमेंट के प्रतिनिधि से ३ सितम्बर के प्रातःकाल फोन द्वारा जतीन्द्रदास को छोड़ देने के बारे में बातचीत की । किन्तु सरकार ने उत्तर दिया कि वह केवल जमानत पर छोड़ने के लिये तैयार है यदि इसके लिये दरख्वास्त की जाय ।

इस पर उक्त कमेटी के मेम्बरों ने कर्नल बार्कर के द्वारा पंजाब सरकार पर अपना मत प्रकट किया कि यदि सरकार केवल जमानत पर छोड़ने की जिद करेगी, तो अनशन पुनः प्रारम्भ हो जायगा । इतने पर भी सरकार अपने निर्णय पर अड़ी रही और उसने इस परिस्थिति का सामना करने का साहस किया ।

इसके पश्चात् रा. ब. मोहनलाल ने सरकार से दास के शीघ्र छोड़ देने की कोशिश की, परन्तु वे उसमें असफल रहे । इसके बाद उक्त कमेटी के चारों मेम्बरों ने रा. ब. मोहनलाल के घर पर मिल कर एक साथ बात चातकी और तय किया कि पंजाब गवर्नमेंट को तार भेजा जाय, जो पहले अन्यत्र प्रकाशित हो चुका है ।

उपरोक्त बातों पर पूर्णतया विचार करने से प्रकट होता है कि उक्त कमेटी के चारों मेम्बर सरकार के दास को जमानत पर छोड़ने के निर्णय के विरुद्ध थे ।

सब प्रकार के फेन्सी सामान
बर्तन, फर्निचर, आराशश की सामग्री सस्ती और टिकाऊ लेनी हो तो
हमसे पत्र व्यवहार कीजिये:—
ऐलेन ब्रादर्स, बम्बई नं० २

सब प्रकार की किताबों के लिये
दि बिज़िनेस हाउस ग्रन्थम
को लिखिये
एक बार मंगाने पर फिर आप दूसरे से न मंगायेंगे ।

रह जांयगे हाथियार पड़े मेग़ज़ीन में

दमन

लाहौर-में पुलिस ने लगभग एक दर्जन स्थानों पर तलाशी ली। श्रीमती पार्वतीदेवी के भाई मि. देवचन्द नौरंग गिरफ्तार कर लिये गए। श्री० भगवतीचरण की धर्मपत्नी अपने घर में ताला लगा कर श्री० जतीन्द्रनाथदास की अर्थी के साथ कलकत्ता चली गईं। बाद को इनके घर पर भी मुहर लगा दी गई। श्री० सुखदेव के भाई मि. मथुरादास को लायलपुर में गिरफ्तार किया गया।

लाहौर की पुलिस १४ ता० को कांग्रेस सेवादल की तलाशी लेने लगी। पर वारण्ट में नाम हिन्दुस्थानी सेवादल था। अतः स्वयंसेवकों ने तलाशी नहीं लेने दी।

——सुखदेव का छोटाभाई जो १७ वर्ष का है, लायलपुर में, जालन्धर के मजिस्ट्रेट के वारण्ट पर पकड़ कर जालन्धर ले जाया गया है। कहा जाता है कि एक नया जालन्धर षड्यन्त्र केस चलेगा।

पंजाब कौंसिल की नेशनलिस्ट पार्टी के सदस्यों ने कौंसिल भवन के बाहर जतीन्द्रदास को उनके अद्वितीय बलिदान के लिए बधाई दी और पंजाब सरकार के व्यवहार की निंदा का प्रस्ताव पास किया।

१७ ता० को पं० चम्पाराम बिना वारण्ट जालन्धरमें पकड़ लिये गए।

दिल्ली में लाल चिट्ठी लिखने वालों के मुकदमें की पेशी हुई। एक पिस्तौल रखनेके सम्बन्धमें गवाहियां होने के बाद मामला स्थगित हो गया।

नौजवान भारत सभा के मन्त्री श्री० अहसन इलाही जो जतीन्द्र के शव के साथ गए थे।

ता० १८ को कलकत्ता में जालन्धरके षडयन्त्र के सम्बन्ध में पकड़ कर लाहौर में ले जाए गए हैं।

युवकान्दोलन

दंगपुर में गवर्नर के दौरे के समय जलूस निकालने वाले १६ विद्यार्थियों को दंड देने पर सारे विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी है।

सतीन्द्र को ११० दिन

सर जेम्स के शासने जेल के नियम बदलने के सम्बन्ध में बातचीत करने को पं० मोतीलाल नेहरू को बुलाया है। कांग्रेस पार्टी ने इस बात चीत का परिणाम देखने तक इस सम्बन्ध में अपनी बैठक स्थगित करदी है।

असेम्बली में मालवीय जी सतीन्द्र की नाजुक स्थिति पर बहस करने के लिये अधिवेशन स्थगित कराने को प्रस्ताव करने वाले थे। पर होम मेम्बरने मालवी जी से मिल कर विश्वास दिलाया कि सरकार सतीनके मामले में जतीन की घटना न दुहराई जाने देगी। फलतः मालवी जी ने अपना इरादा स्थगित रक्खा है।

हाई कोर्ट ने सतीन और उनके साथ अनशन करने वाले ११ अभियुक्तों को पांच २ सौ की जमानत पर अस्थायी रूप से छोड़ देने को आज्ञा दी है।

उसी दिन कलकत्ते में एक विराट सभा कर जनता ने उन्हें बिना किसी शर्त के छोड़ने की माँग की।

पंजाब कांग्रेस कमेटीने निश्चय किया है कि जेल कमेटी का वायकाट न किया जाय।

अ० भा० ट्रेड यूनियन कांग्रेस की बैठक में पं० जवाहिरलाल जी नेहरू ने कहा कि मज़दूरों को अपने में से ही नेता पैदा करने चाहियें। व्हिटली कमीशन कुछ न करेगा।

यूनियनने मजदूरों की हालतकी जांच करने को एक समिति नियुक्त की जवाहिरलालजी सभापति चुने गये और पं० हरिनाथ जी शास्त्री सेक्रेटरी।

विवाह-वय-बिल पर दूसरे सब सुधार असेम्बली में अस्वीकृत हो गए हैं अतः १४ वर्ष की आयु मान्य की जायगी।

पंजाब के कलसिया गांव में पुलिस का एक जमादार मार डाला गया है। हत्याकारी लापता हैं।

विवाह-वय-बिल का लखनऊ युवक परिषद्, बम्बई महिला परिषद् और कलकत्ता की मारवाड़ी महिलाओं की एक सभा ने समर्थन किया और शिवपुर के सनातनियों की एक सभा ने विरोध।

शक्कर के उद्योग की जांच कराने को एक कमीशन नियत हुआ है।

१६ को भारी वर्षा होने से मद्रास में एक दीवार गिर पड़ी जिससे दो आदमी मरे।

राजस्थान सन्देश

का नमूना

ग्राहक होने का आमन्त्रण है।

"प्रबन्धक"

अन्तर्राष्ट्रीय शतरंज

काबुल—काबुल की स्थिति फिर पलटा खाने लगी है। दुर्रानियों ने इस बार बिना युद्ध के बच्चा सक्का से कंधार छीन लिया और उस पर शाह अमानुल्ला का झंडा फहरा दिया। दूसरी ओर हाशिम खां भी अपनी फ़ौज लेकर काफ़ी आगे बढ़ गया है। इधर बच्चा ने भी दस हज़ार सुसज्जित सेना जलालाबाद की ओर भेजी है। एक टक्कर उसके साथ हाशिम खां के लश्कर की हो भी चुकी है, जिसमें दोनों पक्षों की गहरी हानि हुई है। लोगों को तअज्जुब है कि सक्का के पास इतना धन और इतने अस्त्र कहां से आगए?

भली अहमद जान को शाह देने से बच्चा के विरुद्ध लोकमत इतना प्रबल है कि अब उसका सिंहासन पर बने रहना असम्भव कहा जा सकता है।

अफ़ग़ानी [illegible] करने की तयारी हो रही है। पर साथ ही यह भी फिकर है कि इस की बदौलत बेकारों की संख्या फिर बढ़ जायगी।

रूस—को चीनस्थ जर्मन राजदूत के बारे में कहा गया है कि वह भरसक रूसी हितों की रक्षार्थ प्रयत्न करता है। फिर भी स्पष्ट आरोप जर्मन राजदूत को भेजे जांय और बदला न लिया जाय तो शायद सुगमता हो सकेगी।

चीन—उधर चीनी बराबर लड़ाई की रिपोर्ट भेज रहे हैं। रोज एक शहर लेने और वापिस छीने जाने की ख़बर आती है।

पूर्व अफ्रिका—में फिर रंगभेद का प्रश्न उठा है। भारतीयों के अच्छी जगह की जमीन खरीदने की रुकावट नहीं हटाई जा रही है। हाल में एक डेप्युटेशन भारतीयों की ओर से वहां के प्रधान मन्त्री से मिला था।

इंग्लैंड—साइमन कमिशन की रिपोर्ट के सम्बन्ध में विलायती पत्र तरह २ के अनुमानिक विवरण निकाल रहे हैं। यह भी कमीशन के किसी सदस्य से कुछ कहला लेने का ढंग है। पर ख़याल यह है कि यह अनुमान बहुत कुछ सच्चा हो निकलेगा। अर्थात् कमीशन प्रांतिक स्वाधीनता पर अधिक जोर देगा। मतभेद मज़दूर और परम्परापन्थी सदस्यों में है। पहले प्रांतिक स्वाधीनता के साथ असेम्बली को अछूती रखने के पक्ष में हैं और दूसरे उसको शक्ति मर्यादित कर देने के। इसी प्रकार न्याय, पुलिस, सेना, रियासतें और विदेशी नीति बृटिश सरकार के हाथ में रहे, इस पर सब की सहमति है। सार यह कि उसमें कुछ भी नहीं है (बूर (भूसी) के लड्डू हैं। खाने वाला भी पछतावेगा ही।

——उधर मि. हेंडरसन ने जेनेवा में कहा था कि बृटेन युद्ध के लिये बाध्य किये जाने वाले राष्ट्रों को आर्थिक सहायता देने की संधि मानने को तयार है। बस इसी को लेकर मि. स्नोडेन ने उनका विरोध शुरू कर दिया है।

पीछे ख़बर आई है कि अभी राष्ट्र संघ ने उपरोक्त प्रश्न को साल भर के लिये स्थगित कर दिया है।

मि. मैकडानल्ड अमेरिका जा रहे हैं।

जापान—ने निःशस्त्रीकरण के सम्बन्ध में सब्मैराइन्स कम किये जाने का विरोध किया है। उसका कहना है कि हमारी जहाजी शक्ति की कमी बेशी बृटेन की शक्ति पर निर्भर है।

मज़दूर

क्या आप मजदूर हैं? यदि हां, तो क्या आप यह जानना चाहते हैं कि आपके क्या २ अधिकार हैं? आप की दशा कैसे सुधर सकती है? यदि जानना चाहते हैं तो आज ही मजदूर के ग्राहक बनिये। मूल्य २) वार्षिक।

पता:—मजदूर कार्यालय कानपुर

खरीदिये

क्या आपने अभी तक श्री पथिकजी लिखित "What are Indian States" नहीं खरीदा? न ली हो तो शीघ्रता कीजिये। प्रबन्धक

राजस्थान प्रकाशन भवन अजमेर

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

बे हरब : मुल्क एक हो जब सर उठायगा !

राजस्थानी डाक का थैला

कोटा की म्युनिस्पल बोर्ड

वर्तमान नरेश के चालीस वर्ष के लम्बे शासन काल में कोटा राज्य तथा प्रजा सम्बन्धी जो २ शुभ कार्य इस राज्य में हुए और उनके द्वारा जो यश और कीर्ति वर्तमान नरेश ने प्राप्त की उन सब का श्रेय एक मात्र स्वर्गीय दीवान बाबे रघुनाथ दास जी को ही दिया जा सकता है। उन्होंने अपना सारा जीवन इस राज्य के हितार्थ ही अर्पण कर दिया था। साधारण राज्य कार्यों में योग देते रहने के सिवाय वह समय की प्रबल गति को अच्छी तरह पहचानते थे और जानते थे इस बातको कि केवल राज्य कोष और सेना में वृद्धि करने अथवा ऊंचे कर्मचारियों का वेतन बढाने मात्र से ही कोई शासक या राजा कीर्ति अर्जित नहीं कर सकता। यही कारण था कि उन्होंने बेगार रूपी अत्याचार के विरुद्ध उठी हुई प्रजा की आवाज का सहर्ष स्वागत कर राजस्थान भर में सर्व प्रथम राक्षसी बेगार की प्रथा को मिटा कर कोटा नरेश के सिर पर यश का तिलक लगवा दिया। किन्तु इससे भी बढ कर शुभ कार्य दीवान साहब ने प्रजा को म्युनिस्पल अधिकार देकर किया कि जिससे कोटा राज्य की कीर्ति देश के कोने २ में फैल गई। क्या कोटा दरबार विचार सकते हैं कि ऐसा करके स्वर्गीय दीवान ने भूल की थी? वह दीवान, जिस का सारा जीवन कोटा की प्रजा में व्यतीत हुआ, जिनको आज के बाल बालक बूढे हो गये, जिन्होंने कोटा राज्य के उतार चढाव अपनी आंखों से देखे, जिनके विचार तथा बुद्धि की थाह लेना बड़े से बड़े नीतिज्ञों के लिये भी कठिन था, वह महान पुरुष म्युनिसिपेलटी जैसे तुच्छ विषय के निर्णय में गलती कर सकता था कोटा की शिक्षित प्रजा की वर्षों की मांगों पर बड़े २ विरोधों की परवाह न कर प्रजा को म्युनिस्पल अधिकार देना ही मुनासिब समझा और इस खुशी में कोटा दरबार को अभिनन्दन पत्र देकर अपने श्रद्धा भाव का परिचय दिया। परन्तु दुर्भाग्य वश उन अधिकारों को उपयोग में लाने का अवसर कार्यकर्ताओं को नहीं दिया गया। स्वर्गीय दीवान के बाद ही पुराने विरोधों ने अपना जोर दिखाया और खेद के साथ लिखना पड़ता है कि महकमा वालों ने भी इस तरफ उदासीनता ही दिखाई। हमारा तो विश्वास है कि स्वर्गीय दीवान ने महाराव कोटा के शुभ नाम को कोटा राज्य के इतिहास रूपी आकाश में पूर्ण चन्द्र के समान प्रकाशित करने का सामान पैदा कर दिया था। पर कोटा के भाग्य में यह बहा हीन था, यह बतानेकी आवश्यकता नहीं, कि शुरू में जहां उन्होंने विरोधों की परवाह नहीं की वहां वह म्युनिस्पल बोर्ड की पूर्ण स्वतन्त्रता के पक्षपाती भी रहे। वह प्राय: आप लोगों से कहा करते थे कि कानूनानुसार म्युनिसपेलटी को पूर्ण अधिकार प्राप्त है। महकमा खास की चिकारी तो आड मात्र है। महकमा खास में जब तक कोई अपील न करे बततक, बोर्ड के कामों में दखल देनेकी कोई जरूरत नहीं किन्तु शोक है कि स्वर्गीय दीवान की छत्र छाया उठ जानेके बाद बोर्ड के साथ सब था इसके विपरीत बर्ताव होगया हमें तो इन झगड़ों का पता स्टेट की वार्षिक रिपोर्ट के इस वाक्य के देखने से लगा कि चेयरमेन सक्रेटरी तथा मेम्बरान के परस्पर झगड़ों के कारण श्री जी दरबार को बोर्ड का नवीन प्रबन्ध करना पड़ा। जब यह वाक्य हमने पढा था तब ही इस विषय पर कुछ लिखने की इच्छा हुई थी, पर लोगों के कहने से कि "यह भी देखा, यह भी देख" के अनुसार इस नवीन प्रबन्ध पर दृष्टि डालना शुरू किया। चूंकि इस नवीन बोर्ड को कार्य करते हुए तो चार वर्ष होगए हैं और पुन: नया चुनाव भी हो रहा है अत: बोर्ड के भूत और भविष्य पर एक दृष्टि डालकर वर्तमान मेम्बरान महकमा खास तथा श्री जी दरबार को वास्तविक परिस्थिति का दिगदर्शन कराना अनावश्यक एवं अनुचित न होगा। अस्तु,

पूर्व इसके कि बोर्ड की वर्तमान परिस्थिति पर विचार किया जाय, पहले महकमा खास के लगाए परस्पर झगड़ों के दोष पर कुछ विचार प्रकट करना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। क्या कोटा राज्य के अन्य महकमों में किसी हाकिम और अहलकारों में झगड़े नहीं हैं? और होने पर क्या उनको पृथक कर दिया जाता है? फिर बोर्ड के साथ यह बर्ताव कैसा? बोर्ड का चेयरमेन महकमा खास का बनाया नहीं था। वह था बोर्ड का और बोर्ड ही उसे पृथक करसकती थी। हां, अगर वह महकमा खास में अपील करता तो महकमा खास को दखल देने की जरूरत थी। किन्तु ऐसा न कर बोर्ड के कान्स्टीट्यूशन को ही तोड देना न्यायोचित तो नहीं कहा जा सकता। उसी समय मेम्बर सा. महकमा खास ने फरमाया था कि आप लोग यह न समझें कि आप के अधिकार छीने जा रहे हैं। उस समय यह इन्तजाम चन्द रोजा बतलाया गया था और बोर्ड की देख भाल कर [illegible] पुरुषोत्तम राव को चेयरमैन बनाया गया था। उन्होंने रिपोर्ट भी की। उन्हीं के द्वारा नया चुनाव भी होगया उसे भी ३ वर्ष हो गये किन्तु महकमा खास ने अभी तक कुछ भी निर्णय नहीं दिया।

जोधपुर

ठिकाना पोकरण का अन्याय

पोकरण रियासत जोधपुर में एक ठिकाना है। इसके पास ही रामदेवरा नामक पवित्र स्थान है, जहां पर कुछ आबादी भी है। इसी जगह तंवर शाखा के क्षत्रियों में से रामदेव जी एक सिद्ध पुरुष हो गए हैं जिनको देश २ के लोग अब भी बहुत पवित्र भाव से मानते हैं। यहां पर हर साल मेला भरता है। दूर २ के यात्री बहुत सा चढ़ाव चढ़ाते हैं। मेले में जो आमदनी होती है वह इन्हीं रामदेवजी के वंशज तंवर (जो यहां आबाद हैं और पुजारी कहलाते हैं) हिस्सा रसद बांट लेते हैं। ज्युडिशियल अख्तियारात सिवाय जोधपुर दरबार के यहां किसी को नहीं हैं। सिर्फ वेक्सीनेशन की लाग है जो यह तंवर लोग महकमा ट्रिब्यूट में भरते हैं और जिसकी रसीदात उनके पास मौजूद हैं। पोकरण के स्वेच्छाचारी चांपावत ठाकुर की यह प्रबल इच्छा है कि जिस तरह से माताजी का चढ़ावा रियासत दांता लेती है उसी तरह से इस मेले की आमदनी को मैं ले लूं। इसी विचार से ५ अथवा ६ सालसे इन तंवरों के साथ कई किस्म की नाजायज और घृणित कार्यवाही वे करते रहे हैं। चूंकि ठा० चैनसिंहजी अंग्रेजी के अच्छे ज्ञाता हैं और अब ज्युडीशियल मेम्बर भी हो गए हैं, इसलिए हाल ही में कदाचित इन्हों ने जोधपुर पुलिस पर दबाव डाल कर ज्युडीशियल सुपरिन्टेन्डेन्ट ठा० हेमसिंहजी के पास (चूंकि यह भी चांपावत शाखा के पोकरण के भाइयों में से ही हैं) रामदेवरे के तंवरों के बरखिलाफ मारवाड़ पि० को. की दफा ३२३ ३५३ २२५ १६७, १४६ के मुताबिक झूठा मुकदमा दायर करवाया और काबिल जमानत लेने पर भी जमानत न लेकर २२ रोज तक सेन्ट्रल जेल जोधपुर में धरा रक्खा और ठिकाने के छोटे मोटे जासूसों के जरिये से धमकियां दिलाई कि [illegible] आबू आमदनी के दस्तखत कर दो, वरना ज्युडीशियल मेम्बर साहब को साढ़े सात२ वर्ष की सजा कर देंगे। यहां तक कि इन बेचारों की पैरोकारी के लिये जो आदमी आया था उसको भी गिरफ्तार करवा दिया।

रणजीतसिंहजी जावरे वाले ने दरख्वास्तें दीं कि मुलजिमों की जमानत ले ली जावे मगर ठा० हेमसिंह जी ने अदालत में कोई हुक्म न देकर उनको मकान पर बुलवा कर कहा कि यह नाकाबिल जमानत हैं। दरख्वास्त पर कोई हुक्म न देकर सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब परवतसर मेले में तशरीफ ले गए और बेचारे तंवरों को जेल में ठूंस गए। बेचारे रणजीतसिंहजी ने चीफ जज टीकनरामजी के पास निगरानी करनी चाही पर वहां पर भी इनके अपने दो रोज तक अर्जी पेश नहीं हो सकी। अन्त में जब कि चीफ जज साहब मोटर पर बैठकर घर जा रहे थे उस वक्त चिल्लाना शुरू किया कि अन्याय हो रहा है। तब एक महाशय ने उनके हाथ से वह अर्जी लेकर सब जज नौरतनमलजी के पास पेश की। पर दो रोज तक कोई सुनवाई नहीं हुई। जब चीफ जज साहब को तीसरे रोज फिर तार दिये गए तो भी मुश्किल से ५००) ५००) की फी शख्श जमानत लेकर छोड़ने का हुक्म ४॥ बजे

मिला। जब वे जेल पर ले जाए गए तब न मालूम जेल-आफिस वालों ने टेलीफोन द्वारा किस से दरयाफ्त किया और वापिस जवाब आया कि आज मत छोड़ो। दूसरे रोज चीफ कोर्ट से दुबारा सीलबन्द हुक्म ले जाने पर मुलजिमों को छोड़ा गया। डा० साहब पौकरण के ज्यूडीशियल मेम्बर होते ही ऐसा जुल्म होने लग गया है और कानून की कोई पर्वाह नहीं की जाती।

इसी तरह इस ठिकाने के और भी कई जुल्म हैं। उदाहरण के लिये ठिकाने में १००० सांड़ियों का टोला है वह अक्सर जराअत में बड़ा भारी नुक्सान करती रहती हैं। सुतबाई नहीं होती रिआया का ज्यादा नुक्सान होता देख कर खुद दरबार साहब ने तो सरकारी टोले को नीलाम कर दिया मगर इन शिक्षित ठाकुर साहब को यह मंजूर नहीं। इस टोले का इस परगने में बड़ा भारी कष्ट है। बहुतों को इसने तबाह कर दिया है। एक दुखी

प्रजा सम्मेलन रोका गया

आज मारवाड़ हितकारिणी सभा के मंत्री के नाम महाराजा के प्राइवेट [illegible] नरपतसिंहजी का पत्र आया है जिसमें लिखा हुआ है कि ११ और १२ तारीख को होने वाला प्रजा सम्मेलन रोक दिया गया है और सम्बन्धित अधिकारियों के पास इस विषय के हुक्म भेज दिये जावेंगे। इस रोक के दो कारण बताए गए हैं। एक तो यह कि स्वागतकारिणी कमेटी की कार्य्य कारिणी के कई सदस्यों ने लिखकर और जुबानी यह सूचना दी है कि उनके नाम बिना पूछे लिख दिये गए और दूसरा यह कि दरबार के पास गावों में गैर जिम्मेवार प्रचार संबंधी रिपोर्ट आई है। बिना पूछे नाम लिखने के सम्बन्ध में किन २ ने हस्ताक्षर किये, यह अधिकारियों ने न लिखित उत्तर में बताया, न श्री० आनन्दराज सुराना और जयनारायण व्यास आदि को जुबानी बताया जो रावराजा नरपतसिंहजी और कर्नल विंढम से मिले थे। हां, श्री नरपतसिंहजी ने यह जुबानी अवश्य कहा था कि कई जागीरदारों ने कृषकों को बहकाने की शिकायत की है। यह आम अफवाह है कि बिना पूछे नाम लिखने के सम्बन्ध में जिन लोगों ने हस्ताक्षर किये हैं उन में रायपुर ठिकाने के वकील श्री बद्रीदानचारण मुखिया हैं। यह मजे की बात है कि श्री चारणजी के स्वागत समिति का सदस्य बनने का आवेदन पत्र उनके हस्ताक्षरों के साथ रिकार्ड में मौजूद है।

ऐसा भी सुनने में आया है कि श्री धनराजजी वकील बेड़ा और बैजदानजी वकील रीयां ने भी अपना स्वागत समिति से सम्बन्ध न होना बताया है, परन्तु दुर्भाग्य से इनके स्वागत सदस्य बनने के आवेदन पत्र भी मौजूद हैं और हस्ताक्षर भी। हां श्री लालचन्दजी अग्रवाल नियमित सदस्य नहीं बने थे और उनसे बात चीत करके ही उनका नाम कार्य्य कारिणी समिति में लिखा गया था।

श्री० नरपतसिंहजी ने पहिले मि. आनन्दराज सुराना से कहा था कि दरबार आज्ञा दे देंगे, परन्तु बाद में लोगों पर दबाव डलवा कर स्वागत कारिणी की कार्यकारिणी के सदस्यों को क्यों फोड़ा गया, यह रहस्य भी है। बात यह है कि जनता की जागृत अवस्था स्वेच्छाचारियों के कार्य में बाधक होती है। श्री० नरपतसिंहजी अब अपनी इकडंडी सर सुखदेव से भी अधिक भयंकर रूप में बजाने को उतारू होगए हैं।

(प्राप्त)

इन्दौर में गोचर भूमि

शहर इन्दौर की व आसपास की मवेशियों को चरने के लिये कोई बड़ा जंगल न था। इस कारण बड़ा कष्ट होता था। इस कष्ट को दूर करने के लिये बापना साहिब ने शहर इन्दौर से थोड़ा दूर के फासिले पर शेरपुर तालाब के पास एक बड़ा भारी बाड़ गोचर भूमि के नाम से हमेशा के लिये कायम कर दिया है, जिसको देखने के लिये आज तारीख ११-९-२९ के रोज स्वयं मि० बापना साहिब उस जंगल में पधारे थे। आपके साथ में इन्दौर सूबा साहिब, अमीन साहिब और शहर के बड़े बड़े सेठ साहूकार भी थे। पटेल व किसान लोग भी हाजिर थे। हजारों गौ माता चर रही थीं। गांव के लोगों ने मि० बापना साहिब तथा अन्य गए हुए सज्जनों का खूब प्रेमपूर्वक स्वागत किया और फूल मालाएं पहिनाईं। बाद में मि. बापना ने किसानों व अन्य सज्जनों को विश्वास दिलाया कि जहां जहां गोचर भूमि की आवश्यकता हो, मुझे सूचना दीजिये। उसकी तजवीज की जावेगी। इस कार्य के लिये हम बापना साहिब को अनेक अनेक धन्यवाद देते हैं। भगवानदास अग्रवाल

आलोट (देवास सीनियर)

(१) यहां एक आर्य भजनोपदेशक आए थे जिनके भजन ४-५-६ (ताराख) तीन दिन तक हुए। लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

(२) यहां एक नवयुवक मण्डल भी कायम हुआ है। इसने हाल में एक लड़का अनाथालय भैंसोदा मंडी को भेजा है। हमें आशा करनी चाहिये कि मण्डल सार्वजनिक जीवन पैदा करने के लिये भी कुछ करेगा।

(३) यहां के कुछ लोगों ने स्मशान घर बनाने के वास्ते चन्दा इकट्ठा किया था, जिसे आज पांच वर्ष हो गये। परन्तु आज तक मकान तैयार नहीं हुआ। क्या चन्दा करने वाले इसका कारण बतावेंगे?

(४) फसल की हालत ठीक है।

संवाददाता

ग्वालियर

तेलियों के मन्दिर का झगड़ा

यह झगड़ा निबटाने व ताला खुलवाने व इसकी जांच का भार जिला व परगना के प्रधान पदाधिकारी सज्जनों व जनता ने निवेदक को प्रदान किया था। अतः सब से पहिले मैं जिला व परगना के उन सज्जनों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने मुझे इसमें सहायता दी है, और फिर तरुण राजस्थान १ जौलाई १९२९ में प्रकाशित 'नीमच के मन्दिर पर हमला' शीर्षक सम्वाद के भ्रम निवारणार्थ अपनी रिपोर्ट पेश करता हूं।

नीमच में गुण्डे शाही का अड्डा चिरकाल से है! आये दिन वह कुछ न कुछ घटना कर ही देता है। मुन्शी नवलकिशोर साहब सब जज्ज के नाम नोटिस चिपकाना, मकान पर पत्थर फेंकना, आर्य्य-समाजियों के साथ बलवा होना, मुहर्रम पर श्री० मांगीलाल राठौड़ के कुवे प्रवेश करने का झगड़ा, फकीरन का क़त्ल होना, इत्यादि घटनाएं लोक विदित हैं। यहां एक सी. आई. डी. विभाग का सब इन्सपेक्टर भी गुप्त तौर से चिरकाल से नियत है। तेलियों के मन्दिर के पास के नीम की जो डाली रास्ते की ओर है भूमि से १८ फीट ऊंची है। इसका स्थायी प्रबन्ध भविष्य की दुर्घटना के रोकनार्थ करना उस समय के तहसीलदार साहब आदि को अनिवार्य जंचा था। किन्तु इस समय तो, टालो, फिर देखा जायगा-कह कर समय निकालते रहे। इसी नीम के दक्षिण में एक सेवक का ढूंढा है। उसके पास के चबूतरे को खोद कर मुहर्रम निकाला गया था। इस वर्ष भी जब मुसलमान जानते थे कि १८ फीट नीम की डाल है तो उन्हें १७ फीट का ताजिया बनाना था। किंतु बनाया २१ फीट। कत्ल की रात को जब माणिकलालजी पंचोली तहसीलदार को ज्ञात हुआ तो हुक्म दे दिया कि दूसरे रास्ते मुहर्रम ले जाया जाय। जमींदार मुसलमानों ने पहिले ही छोटे बनाए थे कि नीम से न अड़ें, अतः वे निकाल लेगए। भूरा का मुहर्रम २१ फिट था। फिर भी वह अन्य मार्ग से नहीं ले गया। पड़ा रक्खा। दूसरे दिन भी जब वह ठण्डे होने की गश्त लगाता है, यही सवाल आगे रहा। इतने में गुण्डे शाही की गप्प उड़ी कि मन्दिर के आस पास हवेलियों पर, तेल गरम करके व कुछ लोग बन्दूकें आदि लेकर बैठे हैं। इधर मुहर्रम गया कि गरम तेल डाल कर व बन्दूकों से मुसलमानों को मार दिया जायगा। इस गप्प ने उधर भी जोर पकड़ा। नीमच, बघाना व छावनी के मुसलमान इकट्ठे होना आरम्भ हो गए। नीमच छावनी के प्रबन्धक पदाधिकारियों को भी सूचना दी गई कि आप छावनी को पब्लिक को नीमच आने से रोकें। तदनुसार प्रयत्न भी हुआ व इन्सपेक्टर स्वतः भी नीमच सिटी में आ गए।

जिन तेलियों का मन्दिर है वे केवल आठ ही हैं। वे घबरा गये कि कहीं यहां खून खराबी हो जावे तो हम ग़रीबों को मुश्किल हो। अतः वे पुलिस में गये और लिख कर दे दिया कि जितनी डाल नीम की अड़े, काट दी जाय। किंतु मुसलमानों ने ताजिये नहीं उठाए। परिस्थिति भयंकर होती जारही थी। बाजार बन्द हो चुका था। अन्त में रहीम बख्श के बीच में पड़ने से यह समझौता तेलियों के व मुसलमानों के बीच हुआ। मुहर्रम उठे। एक तेली ही ने जहां से डाल अड़ती थी, काटी। वह चार गज एक फिट लम्बी व एक फीट दो इञ्च मोटी है। मुहर्रम निकल गए। इस प्रकार जब गुण्डे शाही की दाल नहीं गली तो उसने इस मन्दिर के पुजारी (वैरागी) को बहका कर मन्दिर में ताला लगवा दिया कि मन्दिर अपवित्र होगया। फलतः पूजन बन्द हुआ। फिर दरख्वास्तें तार आदि देना प्रारम्भ कर दिये। इन्चार्ज सूबा साहब मौके पर आए। उनके भी कान भर दिये। पुनः श्री० इंगले साहब सूबे मौके पर आये और वास्तविक स्थिति समझी।

(अगले अंक में समाप्य)

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

18


राजस्थान-सन्देश

प्रति अङ्क -)।

इच्छा हो वा कि अनिच्छा हो, हो प्रेम कि इस से द्वेष तुम्हें,
है जीना तो सुनना होगा, नूतन—युग का "संदेश" तुम्हें !

वार्षिक मूल्य, ३॥)

वर्ष १ ला ❯ अजमेर पौष शुक्ला ९ सम्वत् १९८६ बुद्धवार ८ जनवरी १९३० ईस्वी ❮ अंक ३३ वां

२६ ता. को स्वाधीनता दिवस

कांग्रेस की आज्ञा अनुसार मनाइये !

गत २ जनवरी को कांग्रेस की नई कार्य समिति ने लाहौर में यह तय किया है कि आगामी २६ जनवरी रविवार को तमाम देश में 'स्वतन्त्रता-दिवस' मनाया जाय और उस दिन सभा कर के लोगों को कांग्रेस का लक्ष्य 'पूर्ण-स्वराज्य' समझाया जाय तथा उन से कांग्रेस का यह लक्ष्य मानने की स्वीकृति ले ली जाय। समिति ने यह भी तय किया है कि कार्य समिति के कुछ मेम्बरों की एक कमेटी देश के कोने कोने में कांग्रेस का सन्देश सुनाने के लिये फरवरी के अन्त में दौरा शुरू करे। कौंसिल-मेम्बरों को कौंसिलों से इस्तीफा देने का आदेश देने का कार्य, समिति ने राष्ट्रपति के सुपुर्द किया है। समिति ने यह भी निश्चय किया है कि हर प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी को कांग्रेस के मेम्बर तथा वालन्टिय बनाने का कार्य बहुत ज़ोरों से शीघ्र ही शुरू कर देना चाहिये और अपने २ प्रान्त के मेम्बरों तथा वालन्टियरों की संख्या १० फरवरी तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पास भेज देनी चाहिये, ताकि वह १४ फरवरी को साबरमती में होने वाली कार्य-समिति की बैठक में उसे पेश कर सकें।

—लन्दन के डाक विभाग की सूचना है कि लन्दन और बर्लिन के बीच में ७ जनवरी से तस्वीरें, फोटो और ड्राइंग तार द्वारा भेजी जा सकेगी।

—लन्दन का १ जनवरी का समाचार है कि जनरल स्मट्स अमेरिका प्रेसिडेन्ट हूवर से मिलने गये हैं। वहां आपके व्याख्यान भी होंगे।

—२९ दि० का बैलिंगटन का समाचार है कि एशिया में पुलिस और जनता की मुठ्ठ भेड़ के फलस्वरूप दो सिपाही मारे गए और ३० के लगभग घायल हुए। झगड़े का कारण था पुलिस का कुछ उन लोगों को गिरफ्तार करने की चेष्टा करना, जिन्हों ने देश निकाले से लौटे हुए मि० स्मिथ का जलूस निकाला था।

—मिश्र में आज कल चुनाव की बड़ी धूम-धाम मची हुई है। उस दिन चुनाव के झगड़े में ही दो आदमी जान से मारे गए। यद्यपि अभी चुनाव का फल नहीं प्रकट हुआ है परन्तु आशा की जाती है कि वफदिस्त दल की ही जीत होगी।

—२ जनवरी का हांगकांग का समाचार है कि "चाइना मेल" के सम्पादक और उनकी पत्नी पिस्तौल के घावों से मरे हुए पाये गए।

—ब्रूसेल्स का ३ जनवरी का समाचार है कि बेल्जियम के राजा और रानी के साथ उन की बेटी कुमारी मेरी जोस रोम-नगर के लिये रवाना हो गई। वहां उस का विवाह इटली के राजकुमार के साथ होगा।

३० दिसम्बर को लाहौर में पं० मदनमोहनजी मालवीय के सभापतित्व में अखिल भारतीय विद्यार्थी सम्मेलन हुआ। महात्मा गांधी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, श्री वल्लभ भाई पटेल आदि ने छात्रों को संयमी होने और देश-सेवार्थ स्वार्थ-त्याग के लिये तत्पर रहने का उपदेश दिया। श्रीमती शत्रो देवी का यह प्रस्ताव, कि कोई भी छात्र उस विवाह में सम्मिलित न हो, जिस में लेन-देन हुआ हो, पास हुआ।

—लन्दन में एक सिनेमा घर में आग लग जाने के कारण लग भग ८० प्राणी जल कर भस्म हो गये !

नवयुवकों को महात्माजी का संदेश

गत शनिवार को महात्मा गांधी अजमेर होकर अहमदाबाद पधारे थे। इस्टेशन पर पथिकजी के पूछने पर आपने युवकों के लिए निम्न लिखित सन्देश दिया:-

युवकों को अब डट कर काम करना चाहिये और कांग्रेस जो कुछ आज्ञा दे उसको सभक्ति पालन करना चाहिये।

—२ जनवरी का पैरिस का समाचार है कि ३ एन्टी फैसिस्ट इटैलियनों की गिरफ्तारी से, जिन के घरों में भड़कीले पदार्थ पाये गए थे, भारी सनसनी फैली हुई है। कहा जाता है कि इनकी गिरफ्तारी से एक भारी एन्टी-फैसिस्ट षड्यन्त्र का पता चलेगा।

स्थानिक और प्रादेशिक

मजदूर चार्जमेन और मिस्त्री

वैसे तो विचार पूर्वक देखने से सुपरिण्टेण्डेण्ट फोरमैन, चार्जमैन मिस्त्री और बाबुओं से लेकर एक कुली तक मजदूर ही कहे जाने चाहिये। कारण कि वह सब के सब एक कम्पनी के नौकर हैं और उनको कंपनी का कुछ न कुछ काम करने के बदले जो तनख्वा मिलती है वही उन की मजदूरी है। इस लिये किसी भी अफसर, बाबू और मिस्त्रियों को चाहे कितनी ही तनख्वाह क्यों न मिले उन्हें अपने को एक मजदूर ही समझना चाहिये और मजदूर होने की हैसियत से एक साधारण तनख्वाह पाने वाले मजदूर के साथ उन्हें हमेशा सहानुभूति पूर्ण और बराबरी का बर्ताव रखना चाहिये। लेकिन आज कल होता यह है कि मिस्त्री, चार्जमैन, बाबू और अन्य अफसरगण अपने आप को अपने अधीन में काम करने वाली का मालिक, अन्न-दाता तथा पैदा करने और मारने वाला समझे हुए हैं। उदाहरणार्थ बाबुओं को ले लीजिये। जब किसी साधारण मजदूर को कोई आवश्यक अर्ज़ी देने या छुट्टी-पास लेने की ज़रूरत पड़ती है तो बग़ैर बाबुओं की मिन्नत—आरज़ू किये सुनवाई नहीं होती। और यदि किसी ने ऐसा न किया तो बस समझ लीजिये कि तरक्क़ी की लिस्ट में से उसका नाम नदारद। छुट्टी पास के लिये टक्करें ही खाते फिरो। जवाब मिलेगा कि अभी अर्ज़ी ही मंजूर नहीं हुई, अर्ज़ी खो गई, दूसरी लाओ इत्यादि। इस प्रकार के प्रपंचों द्वारा मजदूरों पर अपना प्रभुत्व जमाने में ही बाबू लोग अपना बड़प्पन समझते हैं।

इसी प्रकार मिस्त्री और चार्जमैनों की जब से बंधी तनख्वाह हुई है तब से इन के दिमाग का ठिकाना ही नहीं रहता। अब वे अपने आप को सब कारखाने का कर्त्ता-धर्त्ता ही समझ बैठे हैं। जो चाहते हैं वही षड्यन्त्र रूपी "कमैटी" द्वारा करा लेते हैं तथा अन्य ऊपर के अफसरों से भी करा लेते हैं। फिर क्यों न वह अपने नीचे काम करने वालों के साथ पशुओं का सा व्यवहार करेंगे? क्योंकि ऊपर के अफसर तो यह चाहते ही हैं कि जैसे भी हो मजदूरों को दबाए रक्खा जाय! इसी लिये वह मिस्त्री चार्जमैनों की उचित-अनुचित सब बातें मान लेते हैं। साधारण मजदूर इन बातों को चुप-चाप सह लेते हैं।

यह क्यों? इसी लिये कि साधारण मजदूर अपने से ऊपर वालों को वास्तव में अपना मालिक, अन्न-दाता इत्यादि समझे हुए हैं। कारण, कि वे समझते हैं कि यदि हमने इन के साथ जरा भी कुछ किया तो कारखानों से निकलवा दिये जावेंगे, या जुर्माना करा दिया जायगा, इत्यादि। यह सब अत्याचार केवल मजदूरों के दब्बूपन के कारण ही होते हैं। यदि मजदूर अपने अधिकारों को समझ लें और उनको प्राप्त करने के लिये सुसंगठित हो कर काम करें तो किसी की मजाल कि वह किसी भी मजदूर के साथ ज़्यादती या अनुचित व्यवहार करने का साहस करे।

इस लिये मजदूरों को चाहिये कि वे अपने हकों को पहिचानें और उनके प्राप्त करने का यत्न करें। तभी वे दुःखों और अपमानों से छुटकारा पा सकेंगे।

"एक मजदूर"

सांच को आंच नहीं

हरिप्रसाद मुखिया ने पं० सोहनलाल शर्मा वग़ैरह पर जो झूठा दावा कर के दफ़ा १०७ के अनुसार मुकद्दमा चलाया था वह अजमेर के मजिस्ट्रेट साहब दर्जा अव्वल ने खारिज कर दिया और कमिश्नर साहब ने निगरानी भी खारिज कर दी। अब सुना है कि कुछ धूर्त लोग जनता में भ्रम फैलाने के लिये नोटिस बाज़ी करने वाले हैं। जनता को चाहिये कि ऐसे लोगों से बहकावे में न आवे। जब कमिश्नर साहब अपने फैसले में यह लिख चुके हैं कि सोहनलाल जैसे व्यक्ति ने यदि ऐसा काम किया होता तो वह अवश्य ही बुरा होता। परन्तु हरिप्रसाद के गवाह सच्चे साबित नहीं हुए इस लिये निगरानी खारिज की जाती है! तब जनता को सच्चाई के लिये इस से अधिक और क्या प्रमाण चाहिये?

भ्रम निवारण

'सन्देश' के गतांक में किन्हीं 'भैय्याजी' नामक सज्जन ने श्री रामायण मण्डल के विषय में भ्रमात्मक बातें छपाई हैं। हम जनता का भ्रम दूर करने के लिये निम्न लिखित पंक्तियां पेश करते हैं। श्रीरामायण मण्डल का जन्म हुए कोई ६० वर्ष हो गए। मण्डल के उत्साही कार्यकर्ताओं के उद्योग से १५-२० वर्ष हो में यह एक लोक प्रिय संस्था बन गई। परन्तु दुर्भाग्य से पिछले कुछ वर्षों से कुछ ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई कि श्री गिरधरलाल दयारामजी जैसे कार्यकर्ताओं को मंडल से पृथक होना पड़ा, फल स्वरूप मंडल की दशा शोचनीय होने लगी। किसी समय जब कि मंडल के ११०० सदस्य थे तो अब मुश्किल से कोई १५० सदस्य रहे होंगे। मंडल का बहुत सा सामान भी इधर-उधर हो गया और उपशाखाओं का कार्य भी शिथिल पड़ गया। उनका सारा सामान भी प्रायः नष्ट-भ्रष्ट हो हो गया। इन वर्षों में यदि कोई कार्य हुआ है तो वह केवल एक मन्दिर का बनना है। यद्यपि आज कल यहां पर अनेक देवालय अत्यन्त बुरी दशा में पाये जाते हैं। यदि यह रकम इन मन्दिरों के जीर्णोद्धार में लगाई जाती तो कितना लाभ होता? या फिर इस रक़म को मंडल की उप-शाखाओं की दशा सुधार ने में [illegible] जाता। पिछले वर्षों में जो लीलाएं हुई हैं, वह भी अधिकारियों की बदइन्तजामी के कारण ठीक नहीं हो पाईं। इन अधिकारियों से यदि कोई नियमित रूप से कार्य करने को कहता है तो इन्हें नहीं भाता। जब व्यवस्था ही ठीक नहीं है तो संस्था की ऐसी शोचनीय दशा हो जाना स्वाभाविक ही है। जब कुछ नव युवकों को यह पता चला कि यह संस्था शीघ्र ही मठ के रूप में परिणित हो जाने वाली है तो वे उस में सम्मिलित हुए। यद्यपि इस समुदाय ने अभी कोई ख़ास काम नहीं किया है। क्योंकि अब तक ये अपना कार्यक्षेत्र तैयार करने में ही जुटे रहे हैं। इसी लिए ये लोग अधिकारियों की आंखों में खटक रहे हैं और उनके विरुद्ध विष उगल रहे हैं। परन्तु इस से सच्चे कार्य कर्त्ता पीछे हटने वाले थोड़े ही हैं और न इनका जनता पर ही कुछ प्रभाव पड़ सकता है।

निवेदक:—

भवानी प्रसाद

राजस्थानीय पुरोहित सम्मेलन

राजस्थानीय पुरोहित सम्मेलन का तृतीय अधिवेशन मारवाड़ जंकशन पर ता. १४-१५-१६ को बड़े समारोह से हुआ। सभापति केसरसिंह जी व अन्य कार्यकर्ताओं ने निमन्त्रण पत्र प्रकाशित कर दिये, परन्तु सभा के लिये किसी प्रकार का प्रबन्ध नहीं किया और न सभा में शरीक ही हुए! बल्कि घर बैठे ही त्याग पत्र भेज दिया! आप ही के कुप्रबन्ध और उदासीनता के कारण सभा को बारह हजार की सम्पत्ति होते हुए भी जोधपुर का बोर्डिंग हाउस टूट गया और सभा का कार्य सर्वथा शिथिल हो गया। मोड़सिंहजी, लालसिंहजी, सूरजलजी आदि अपर आगे न पहुंचते तो सम्मेलन का कुछ भी प्रबन्ध न होता और आने वाले प्रतिनिधियों को खूब कष्ट उठाना पड़ता। ता० १५ को स्वागताध्यक्ष मोड़सिंह जी का भाषण हुआ जिस में आपने जोधपुर में पुरोहित छात्रालय टूट जाने पर खेद प्रकट किया और कहा कि यह सम्मेलन छात्रालय व सभा का कार्य फिर से जारी करने के लिये किया गया है। इस कार्य्य के पश्चात् उस रोज के लिये सभापति सार्दूलसिंहजी चुने गये। तुलसीरामजी पालीवाल व एक पुरोहित ब्रह्मचारी के भाषण हुए। ता० १६ को प्रातःकाल ८ बजे कार्य कारिणी की बैठक हुई जिस में नवीन समिति के सदस्य तथा मन्त्री और प्रधान का चुनाव हुआ। सभा की रक़म व छात्रालय का सामान नवीन कमेटी को सौंप दिया गया। सभापति ने आपने ओजस्वी भाषण में ब्राह्मणों की दुर्दशा और कन्या-विक्रय पर अच्छा प्रकाश डाला जिस का श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा। सभा में उपस्थिति अच्छी थी। एक दिन दूलेचन्दजी खाचीं निवासी ने सभा को भोज दिया।

—रघुनाथसिंह

— लन्दन से वायसराय के बम्ब से बाल २ बच जाने पर बधाई के अनेक सन्देश आये हैं।

— लन्दन में लाहौर कांग्रेस के निर्णय से बड़ी खलबली मच गई है। अंग्रेजी पत्र बुरी तरह बिगड़ पड़े हैं। उन के मत से सर्कार को ही शीघ्र दमन करना चाहिये। मोरनिंग पोस्ट का तो कहना है कि देहली में वायसराय की गड़ी पर जो बंब फैंका गया था, उस की प्रेषक शक्ति कांग्रेस के पूर्ण स्वतन्त्रता वाले प्रस्ताव में मिलती है।

आवश्यक सूचना

हमें खेद है कि 'युवकांक' के निकालने के पहले जिन छोटे अंकों के निकालने का हमारा विचार था, उन्हें हम न निकाल सके। कारण यह था कि एक ओर तो हमारे बहुत से सहायक उस समय कांग्रेस में शामिल होने लाहौर चले गए और दूसरी ओर उसी अवकाश में स्थान परिवर्तन किया गया। अब 'सन्देश' कार्यालय पहले स्थान से हट कर 'केसरगंज' में 'चक्कर बाग' के पास चला आया है। अतः आशा है, पाठक इस विवशता के लिये हमें क्षमा करेंगे।

[२] 'युवकांक' यहां से सब ग्राहकों के नाम भली भांति जांच कर डाक में डाल दिया गया है। जिन मित्रों ने रजिस्ट्री के लिये टिकिट भेजे थे, उन्हें रजिस्ट्री से भेज दिया गया है। अतः अब इस सम्बन्ध में जिस किसी को शिकायत हो वे डाकखाने से ही लिखा पढ़ी करें।

(३) कुछ मित्र अब ग्राहक होने पर 'युवकांक' मांग रहे हैं। वैसे नियमानुसार यह नहीं हो सकता। पर कार्यालय ने निश्चय किया है कि जो थोड़ी सी प्रतियां बची हैं, उन्हें अब से होने वाले एक वर्ष के ग्राहकों को भी ॥) आठ आने अधिक भेजने पर दे दिया जाय। आशा है 'युवकांक' के प्रेमी इस सुविधा से लाभ उठावेंगे। 'प्रबन्धक'

राजस्थान संदेश

यह राष्ट्र नहीं उठता, रहता,
जबतक जगमें यश शेष नहीं।
जो स्वतन्त्रता का द्रोही हो,
सुलझा नवयुग 'सन्देश' नहीं।

बुधवार पौष शुक्ला ६ वि. सं १९८६

पूर्ण स्वतन्त्रता

२६ दिसम्बर का प्रभात भारत के राष्ट्रीय जीवन का एक नया प्रभात था। रणचण्डी उस दिन अपने मुख पर छाए हुए, शोक के मेघों के समान वेश-पाशों को हटा कर मुस्करा उठा। युवकों के हृदयों में जोश का समुद्र लहरा उठा। विषण्ण भारत माता के मुख मंडल पर प्रसन्नता की आभा दमक उठी।

उस दिन सभी बातों में नवीनता थी। कांग्रेस-वही पुरानी कांग्रेस थी। देश भी वही था। देश वासी भी वे ही थे। सामग्री और सजावट भी प्रायः वही थी। फिर भी सब में कुछ नवीनता दिखाई देती थी। ऐसा प्रतीत होता था मानो सब में एक नवीन आत्मा आ पैठी थी। पुराने भाव भी पुराने चेहरों के साथ हृदय पटल पर घेरा डालते थे। पर तत्काल ही कोई नई-अज्ञात शक्ति उन का प्रभाव हटा कर अपना आधिपत्य स्थापित कर लेती थी। इस नई शक्ति का अनुभव तो सब पुराने सब कर रहे थे, पर उसे समझ कोई कोई ही पा रहे थे।

यही दशा कार्य और व्यवहार में रही। सभापति का जुलूस पुराने उत्साह के साथ निकला पर सभापति, गद्दी नशीन होने को जाने वाले राष्ट्रपति की तरह बग्घी या मोटर में नहीं पड़े थे। वे रण-क्षेत्र को जाने वाले सेनापति की तरह घोड़े पर चल रहे थे। भाषणों में भी यही बात थी। दोनों सभापतियों के भाषण निराले थे। दोनों पर नवीनता की स्पष्ट छाप थी। दोनों के पुराने शब्दों में से नवीनता फूटी पड़ती थी। प्रौढ़ डाक्टर किचलू के भाषण में एक युवा हृदय का जोश था और युवा जवाहिर के भाषण में एक नीतिज्ञ की गम्भीरता और प्रौढ़ता थी। बहुतों का खयाल था कि जवाहिरलाल आग उगलेगा। गोलों की बौछार करेगा। बुड्ढों के लिये कांग्रेस में बैठना कठिन हो जायगा। पर भाषण की सौम्यता, गम्भीरता, स्पष्टता और साथ ही मधुर शैली देख कर उन के सैद्धान्तिक विरोधियों तक को उनकी प्रशंसा करनी पड़ी।

बात थी भी ऐसी ही। भाषण जितना संक्षिप्त था, उतना ही सारगर्भित भी था। उसे गागर में सागर भरा हुआ कहा जा सकता है। क्या साहित्यिक दृष्टि से और क्या ज्ञान और नवीनता की दृष्टि से—सभी प्रकार वह अद्वितीय था।

सब से बड़ी विशेषता यह थी कि कांग्रेस के ही नहीं, देश भर के राष्ट्रीय जीवन के इतिहास में कांग्रेस के सभापति के आसन से, पहली बार कांग्रेस के नियमों, उस की गम्भीरता, उसकी प्रतिष्ठा और उस की जिम्मेदारी को स्थिर रखते हुए, उस के पुराने ढर्रे और सनातन धर्म के विरुद्ध एक नई स्वर लहरी गुंजा गई। पहली बार साम्यवाद का आदर्श देश के सामने रक्खा गया। पहली बार यह बताया गया कि युवा भारत जग उठा है। उस ने राष्ट्र के जीवन की बागडोर अपने हाथों में सम्हाल ली है। उस में इस दायित्व को उठा लेने की शक्ति है। पहली बार कांग्रेस की मांग करने और धमकियां देने की नीति को छोड़ कर व्यावहारिक स्वराज्य स्थापित करने की एक नई दिशा सुझाई गई। पहली बार कांग्रेस के एक सभापति ने यह स्पष्ट कहा, कि वर्तमान रूप में बृटिश साम्राज्य, राजे-महाराजे और जमींदार आदि अवांछनीय हैं।

सम्भव है कुछ जातिवाद और धर्मवाद के दीवानों को सभापति के ये उपाय काल्पनिक जान पड़ें, जो उन्होंने जातिगत मत भेदों के दूर करने के लिये बताए हैं। पर जो साम्यवादी स्वराज की कल्पना कर सकते हैं और यह जान सकते हैं कि साम्यवाद मनुष्य में कितना परिवर्तन कर देता है, वे उन की व्यावहारिकता और सच्चाई स्वीकार किये बिना नहीं रह सकते।

कुछ लोगों के लिये महात्माजी जैसे 'जातं दशन विहीनम् तुण्डम्' का जवाहिर जैसे युवा के स्वर से स्वर मिलाना भी एक नवीनता है। परन्तु जो लोग युवा-दल और महात्माजी के तात्विक विचारों से परिचित हैं, वे जानते हैं कि आज भी देश में युवा दल के विचारों में उन से अधिक निकट दूसरा दल नहीं है। वे समझौते की नीति में पुरानों की टक्कर के हो सकते हैं, विचारों में नहीं।

देशी राज्यों के बारे में भी यह पहला ही अवसर था कि सभापति ने स्पष्ट शब्दों में जनता के अधिकारों का ज़ोरों से समर्थन किया।

हां, कुछ अवांछनीय बातें भी हो गई। उन में हम पुराने दलों के लोगों के विरोध की गणना नहीं करते। उन से तो पहले ही यह आशा थी। हां, पूर्ण स्वतन्त्रता वादियों में से ही सुभाष बाबू जैसे कुछ सच्चे कार्यकर्ताओं का रुष्ट हो जाना दुःख की बात अवश्य है। कुछ मित्रों को सभापति के पैतृक सम्पत्ति स्वरूप प्राप्त कड़े शासन की शिकायत अवश्य रही। पर जहां हम उस में महात्माजी की व्यवहार चतुरता और [illegible] णुता के सम्मिलित होने के अभिलाषी हैं, वहां इसे क्षम्य माना जाना भी आवश्यक समझते हैं। कहना व्यर्थ है कि हम एक विकट संग्राम में अवतीर्ण हो रहे हैं जिस के लिये हमें एक सैनिक-प्रकृति राष्ट्रपति की आवश्यकता थी और वही हम ने चुना है। पर साथ ही हमें सैनिकता के साथ लगे अपवादों और सैनिक अनुशासन को भी सामने रखना ही चाहिये। देश की परिस्थिति और अपनी जिम्मेदारी को भी सर्वोपरि स्थान देना ही चाहिये।

इसी दृष्टि से हम सुभाष बाबू और उनके साथियों के अलग होने को एक दुःखद घटना समझते हैं। एक ध्येय और एक लगन के पुजारियों का एक ओर इतनी बड़ी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले कर, दूसरी ओर ऐसी भूलें करना या ऐसे छोटे कारणों पर ऐसी स्थिति पैदा करना कदापि वांछनीय नहीं हो सकता और हमें आशा करनी चाहिये कि दोनों ही पक्ष इस भूल को जितनी जल्दी हो सुधार लेनेकी चेष्टा करेंगे।

पुरातन पन्थी

पुरातन पन्थियों का नाटक भी दर्शनीय रहा। एक ओर अद्वैत में सहयोग और विश्वास के गीत गाये गए और दूसरी ओर कांग्रेस में प्रायः सब नए प्रस्तावों का डट कर विरोध किया गया। यद्यपि गत वर्ष सर्कार को अन्तिम चेतावनी देने में वे भी शामिल थे। सब के साथ उन्हों ने भी प्रतिज्ञा की थी कि यदि दिसम्बर तक औपनिवेशिक स्वराज्य न मिला, तो हम पूर्ण स्वतन्त्रतावादी हो जायेंगे। किन्तु अपने स्वभाव के अनुसार ज्यों ही बातें बनाने का समय खतम हो कर लोहा लेने की घड़ी आई कि वे अलग हो बैठे। आज वे, भाषणों की प्रशंसा करते हुए भी प्रस्तावों की निंदा करते हैं—अपनी बुद्धिमानी का ढोल पीटते हैं और जिन महात्मा जी को कल तक वे जवाहर लाल जी की जगह राष्ट्रपति के पद पर बिठाने को तयार थे, उन्हीं को बार बार हिमालय जैसी राजनैतिक भूलें करने वाले प्रमाणित करने को तयार हैं।

संक्षेप से कहें, तो उनकी बातें और दलीलें इस प्रकार हैं:-

(१) अभी गोल मेज़ परिषद् से लाभ होने की आशा है। समझौते

के सारे प्रयत्न व्यर्थ नहीं हुए। सरकारी घोषणा नाकाफ़ी होने पर भी बिल्कुल सार हीन नहीं है। अतः जब तक सरकार कुछ भी देने से स्पष्ट इनकार न कर दे, तब तक न गोल मेज़ परिषद् के आमन्त्रण को अस्वीकार करना चाहिये था न पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा करनी चाहिये थी।

(२) आर्थिक क्रांति को व्यावहारिक रूप दिये जाने के देश के प्रायः सभी दल विरुद्ध हैं।

(३) आज संग्राम की सफलता में सहायता पहुंचाने वाले कारण मौजूद नहीं हैं और इस लिये सहयोगी दल और पूर्ण स्वतन्त्रतावादी दल मिल कर भी राष्ट्रीय संग्राम को उतनी सफलता पूर्वक नहीं चला सकेंगे। कारण, आज (क) इस संघर्ष के पक्ष में असहयोग के समय के पुराने दो तीन नेताओं को छोड़ कर और कोई भी नहीं है। (ख) असहयोग के समय पंजाब के मार्शल ला के कारण जनता में जोश था, वह आज नहीं है।

(ग) उस समय खिलाफत के कारण मुसलमान जिस प्रकार सरकार के विरुद्ध थे इस प्रकार आज नहीं है (घ) उस समय लोग बंधे उपायों से ऊबे हुए थे, और इस लिये असहयोग के रूप में एक नया अस्त्र देख कर उनका आशावाद जग उठा था। [ङ] जनता द्वारा वायसराय पर फेंके हुए बम की निंदा के प्रस्ताव का कड़ा विरोध होना इस बात का प्रमाण है कि लोग हिंसात्मक उपायों की ओर झुक रहे हैं और इस लिये किसी भी समय किसी कोने से आग उठ खड़ी होने से आन्दोलन को बन्द कर देंगे।

इन में से पहली बात नरम मनोवृत्ति की पुष्टि न जाएवाद है। उन्हें जब तक होती रहे सभी आशा मृगी के, वे उस की मरीचिका में लटकते रहेंगे। वे जीभ निकाल कर उसके और ताकते रहेंगे और कुछ विरोधी बिना कुछ दिये, केवल प्रलोभन दिखा २ कर उन्हें इच्छानुसार चलाते रहेंगे। यही सदा हुआ है। और आज हो रहा है। यही कारण है कि भारत के क्या संसार के इतिहास में कभी आराम तलब नीतियों ने इतिहास का निर्माण नहीं किया। वे कर नहीं सकते। वे स्वभावतः इस के लिये अयोग्य हैं। उन के लिये "यस्मिन कुले त्वमुत्पन्ना गजस्तत्र न हन्यते" की उक्ति अक्षरशः चरितार्थ होती है। अन्यथा कोई पूछे कि सर्कार के स्पष्ट इंकार करने में किस बात की कमी रही है? क्या पार्लियामेंट की बहस ने यह स्पष्ट नहीं कह दिया है कि वह सब एक चाल थी? क्या दमन की गति में रत्ती भर भी अन्तर पड़ा है। क्या किसी बात का स्पष्ट विश्वास दिलाया गया है? क्या भारत विरोधी प्रचार बंद हुआ है? यदि नहीं तो, क्या ऐसी दशा में सरकार के चरण चाटने वाला देश मनुष्यों का देश कहा जायगा? स्वाभिमानी राष्ट्र गिना जायगा? और वैसी दशा में गोल मेज़ परिषद् को स्वीकार कर लेने वालों की स्थिति भी श्वानों से क्या अच्छी होती? बुलाने वालों के दिल में भी उन के लिये इस से अधिक इज्ज़त होती क्या?

दूसरी बात भी ऐसी ही है। हमारे ये मित्र अपने समर्थन में दलीलें देते समय यह भूल जाते हैं कि आज का संग्राम उन कई लाभों से युक्त है, जिन से असहयोग आंदोलन वंचित था और इस लिये यदि भावी संग्राम वांछित रूप में छिड़ गया तो वह असफल हो ही नहीं सकता। निःसन्देह मार्शल ला, खिलाफत और असहयोग का नया अस्त्र ये तीनों ही असहयोग आन्दोलन के बल और आधार थे, पर इन में से पहिले दो कृत्रिम थे और इन्हीं को बदौलत वह असफल हुआ। पहिले दोनों के मूल में कोई निश्चित उद्देश्य या सिद्धान्त न था। चाहे गांधी जी ने इन्हें एक नीति की तरह राजनैतिक लाभ उठाने के लिये नहीं, सिद्धान्त की ही भूमि पर खड़ा किया, पर साधारण जनता का योग उस में विभिन्न धर्म जैसी धारणाओं से ही हुआ था। इसी लिये, जब ये कारण दूर हो गए, तभी विरोधियों को हमारे दलों में फूट डालने का अवसर मिल गया। इस के अतिरिक्त उस समय बहुत से भावुक लोग पहले तो प्रवाह वश खिंच आए थे, पर जब उन का ध्यान असहयोग के आर्थिक पहलू पर गया, तब वे पीछे हट गए और उस का फल वही हुआ जो ठीक बीच संग्राम में से किसी भी कारण वश किसी सिपाही के भागने का होता है। उस समय उस के भागने के कारण की कोई जांच पूछ नहीं करता। केवल उसे भागते देख लोग साहस खो बैठते हैं।

इस बार का कार्यक्रम इस दोष से मुक्त है और हम चाहते हैं कि उसे ऐसा रखने के लिये काफी सावधानी रक्खी जाय। इस बार के संग्राम में पहले ही आर्थिक और राजनैतिक पहलू स्पष्ट रूप से सामने रख दिये गये हैं। फलतः पूंजीवादी और सत्तावादी पहले ही उस से अलग रहेंगे और जो उसके स्पष्ट उद्देश्यों को समझ कर आवेंगे, वे फिर पीछे न हटेंगे

रही बड़े २ नेताओं की बात, सो वे पहले भी केवल नाम के ही बड़े हैं। त्याग और सहन जब कभी देश के लिए किया गया है, युवकों ने ही किया है। बलिदान जितना हुआ है, देश के युवकों का हुआ है। देश की वास्तविक शक्ति भी देश के गरीब और क्रान्ति के मतवाले एवं कष्टों से भिड़ने के आदी हुवा हैं, न कि आराम कुर्सियों पर पड़े २ बातें बनाने वाले और मच्छर के काटने पर ऑपरेशन कराने फिरने वाले। अतः यदि हमारे संग्राम में देश की शक्ति हमारे साथ हो, तो बड़े २ नेताओं का घर बैठे रहना उस के लिये कुछ भी हानिकर नहीं है। बल्कि क्या, ऐसा होना उपयोगी है। क्योंकि एक छोटे से ध्येय के पक्के दल की एक के बाद दूसरी सफलताएँ या बलिदानों की ज्योति से जगमगाती हुई विफलताएँ, उन बड़े २ सेना नायकों और महाभास्तों से हज़ार गुनी श्रेष्ठ है, जो एक ही मोरचा लेने के बाद, लूट के माल या अन्य कारणों से आपस की फूट से खतम हो जाते हैं।

यही तत्कालता का प्रश्न, सो प्रथम तो दूसरे देशों के युवकों ने जो कुछ किया है, और कर रहे हैं, वह ही किसी भी देश के युवाओं को आगे बढ़ाने को काफी है किन्तु वह कम हो तो भी असहयोग के साथ नवीन संघर्ष करना का आदर्श मिल कर जिस मनोहर चित्र और शक्ति को जन्म देता है, उस से अधिक और स्थायी आशावाद को जन्म देने वाली दूसरी बात हो ही नहीं सकती। वह स्वयं ऐसी वस्तु है कि जो उसे समझ लेगा, सदा के लिये उस का मतवाला हो जायगा।

पर अन्तिम बात में तो सरासर शरारत है। कोई आवश्यक नहीं है कि जो हिंसावादी हों, वे ही वायसराय पर फेंके गए बम की निन्दा का विरोध करें। देश में बहुत से ऐसे लोग हैं जो यह देख कर ही ऐसी बातों का विरोध करते हैं कि नौकरशाही अपने पुर्जों के नीच से नीच व्यवहारों की निन्दा नहीं करती। दूसरे भी, चाहे वे धार्मिक अहिंसावादी न हों, इतने मूर्ख कदापि नहीं हैं कि अपनी क्षुद्र मनस्तुष्टि के लिये देश व्यापी संग्राम को हर्जाने पहुँचाने का काम करें। उन में भी हमारे बहुत से बड़ों से भी अपने देश का प्रेम कहीं अधिक गहरा है और त्याग का बल कई गुना बढ़ा हुआ है।

किन्तु हम तो पुरानी शक्तियों का भी लाभ इस संग्राम में युवकों के साथ होते हुए देखते हैं; वे साथ रह कर और साथ दे कर ही देश को स्वतन्त्रता दिलाने के अभिलाषी हैं और इस प्रकार आगे चलने वाली भावी समाज-रचना में वे चाहा परिवर्तन करा सकते हैं। इसी में उन का कल्याण है और इसी में देश का हित। अन्यथा जो शक्ति बढ़ती है, संसार भर में बढ़ रही है, वह तो हर अवस्था में बढ़ती ही। प्रकृति को जो कुछ करना है वह करेगी ही। न होगा तो केवल उन का नाम, जो अब तक प्रत्येक विजय के समय लोगों की ज़बान पर रहते थे।

सामयिक समस्याएँ

हैदराबाद की उन्नतिशीलता

अधिक समय नहीं हुआ, जब वायसराय ने हैदराबाद के सुशासन के गीत गाए थे। पर नौकरशाही की भाषा में राज्यों में सुशासन का क्या अर्थ है, यह हैदराबाद में पिछले दिनों निकले सार्वजनिक सभाओं सम्बन्धी फरमान से साफ़ प्रीति स्पष्ट हो जाता है। यह फरमान नं० ५३ फाइल नं० ११० सन् १३३८ फसला, ऐक्ज़िक्यूटिव कौंसिल ने निकाला है। उस में कहा गया है कि 'हैदराबाद राज्य की प्रजा का कोई भी व्यक्ति यदि सभा करना चाहे तो हैदराबाद खास के निवासियों को पुलिस कमिश्नर की और ज़िलों के निवासियों को वहां के तअल्लुकेदार की मंजूरी लेनी पड़ेगी। इन अधिकारियों को सभा का कार्यक्रम ही नहीं, आवश्यकता हो तो वक्ताओं के नाम और उनके भाषणों को मसौदे, सभा बुलाने वालों के नामों सहित मांगने का अधिकार होगा। इस पर

यदि सभा का राजनैतिक होना पाया जायगा तो उसके लिये सरकार से मंजूरी लेनी पड़ेगी और सरकार यदि आवश्यक समझे तो ज़मानत तक माँग सकेगी।"

क्या इसी प्रकार के शासन के आधार पर मि० बैन राजाओं को अपनी प्रजा के सच्चे प्रतिनिधि मानते हैं?

बहावलपुर भी

बहावलपुर राज्य (पंजाब) भी ऐसे दशा में क्यों पीछे रहने लगा? उसने सरदार जसवन्तसिंह दानबलिया, अस्थायी प्रेसीडेन्ट पंजाब रियासती प्रजा-मण्डलको अपने राज्य में आने से रोक दिया है। इन बातों का परिणाम यह है कि देशी राज्यों के सम्बन्ध में ऐसे विचार वालों की संख्या बढ़ती जाती है, जो राज्यों को मिटा देने के पक्ष में हैं। पर क्या राजा लोग इस अवस्था और उस के परिणामों का कभी विचार करते हैं?

सहयोगी 'रियासत' विपत्ति में

दिल्ली के सहयोगी 'रियासत' के पीछे कुछ राज्य हाथ धो कर पड़े हैं। पटियाला की ओर से और सबूर में तो सहयोगी पर दो मुक़द्दमे चल ही रहे हैं, अब भूपाल ने 'प्रिवेज-प्रोटेक्शन-ऐक्ट' के अधीन एक और मुक़द्दमा उस पर होशंगाबाद के रेलवे मजिस्ट्रेट की अदालत में चलाया है। अभी मुक़द्दमे के अनुकूल या विरुद्ध कुछ कहना मुश्किल है। परन्तु मुक़द्दमा चलाने के ढंग को देख कर अवश्य इस सन्देह को गुंजाइश है कि मुक़द्दमे का ध्येय केवल न्याय नहीं अभियुक्त को हैरान करना भी है। इस से काम होशंगाबाद जैसी सुदूर जगह में मुकदमा चलाने के लिये कोई समुचित कारण जनता के सामने नहीं रखा गया है।

फिर जैसा कि सरदार दीवान सिंहजी सम्पादक 'रियासत' ने अपने वाइसराय को दिये हुए मेमोरियल में लिखा है, इस में और भी असुविधाएँ हैं। उदाहरण के लिये इस अदालत की अपील किसी हाईकोर्ट या स्वतन्त्र अदालत में न हो कर भूपाल के पोलिटिकल एजेंट के यहां होगी और अन्तिम अपील इन्दौर-स्थ मध्यभारत के ए. जी. जी. के यहां। सरदार साहब को इस पर यह कहना बिल्कुल ठीक है कि कि मुकद्दमे की मंजूरी दिलाने में सम्मिलित होने के कारण, ये दोनों जज होने के लिये क़ानूनी दृष्टि से अयोग्य हैं। फिर इनके सामने इनेगिने वकील ही पैरवी कर सकते हैं।

ये सब ऐसे कारण हैं जिन की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसका यह अर्थ नहीं है कि हम राज्यों के सम्बन्ध में अनर्गल प्रकाशन के पक्षपाती हैं, प्रत्युत यह कि न्याय को सर्वोपरि स्थान मिलना चाहिये और यदि सरकार का ध्येय वास्तव में न्याय है तो वह सरदार साहब के उचित उज्रों पर ध्यान देने को बाध्य है।

लाहौर में क्या क्या हुआ?

ता० २६ दिसम्बर सन १९३६ को लाहौर में लाजपतराय नगर में ४४ वीं राष्ट्रीय महासभा का अधिवेशन बड़ी धूमधाम के साथ प्रारम्भ हुआ। कांग्रेस के मनोनीत सभापति पं० जवाहिरलाल नेहरू ठीक १० बजे लाजपतराय नगर में पधारे। लग भग एक लाख जन समूह के गगन भेदी जयघोष द्वारा आपका स्वागत किया गया। सब से प्रथम आपने राष्ट्रीय झंडा फहराया। सेनापति सर्दार मंगलसिंहने आपको इस प्रकार प्रणाम किया जैसे कि सम्राटोंको किया जाता है। पश्चात राष्ट्रपति ने स्वयं सेवकों को सम्बोधन करते हुए एक प्रभावशाली वक्तृता दी।

स्वागताध्यक्ष डा० किचलू ने कांग्रेस के विशाल पण्डाल में लगभग १२ हजार प्रतिनिधियों और दर्शकों का स्वागत करते हुए कहा कि हमारा भविष्य का कार्यक्रम संघर्षण और युद्धों से परिपूर्ण होना चाहिये। सर्वदल सम्मेलन से देश को कोई लाभ नहीं हो सकता। दो वर्ष के असहयोग आन्दोलन ने ही अंग्रेजी शासन की जड़ को हिला दिया था।

आप के भाषण के पश्चात कांग्रेस के सभापति पं० जवाहिर लाल नेहरू का प्रभावशाली और ऐतिहासिक भाषण हुआ, जो अन्यत्र दिया गया है। आपने अपने भाषण के अन्त में कहा "क्रान्ति चिरजीवी हो।" इस के बाद शहीद यतीन्द्रदास और फुंगी यू- विजाया के बलिदान की प्रशंसा की गई तथा उनके परिवारों के साथ सहानुभूति प्रगट की गई। इसके अतिरिक्त पं० गोकरण नाथ मिश्र, प्रो० परांजपे आदि की मृत्यु पर शोक प्रगट किया गया। इस के बाद कांग्रेस को उस दिन की कार्यवाही समाप्त हुई। ता० ३० दिसम्बर को विषय निर्धारणी समिति की बैठक होती रही। ता० ३१ को कांग्रेस की कार्यवाही पुनः प्रारम्भ हुई। अनेक प्रस्ताव पास हुए। सर्वत्र महात्मा गांधी का ही बोलबाला दिखाई पड़ता था। आपने एक प्रस्ताव पेश किया जिस में वायसराय की गाड़ी पर बम फेंके जाने की निन्दा करते हुए उन को तथा उन के साथियों को बाल २ बच जाने के लिये बधाई दी। इस प्रस्ताव पर बड़ी चख़ २ रही, गरमा-गरम बहसें हुईं और लोगों ने बड़े रोष के साथ इस का विरोध किया। स्वामी गोविंदानन्द ने महात्माजी के इस प्रस्ताव का विरोध करते हुए कहा कि कांग्रेस का अहिंसा का सिद्धान्त केवल कांग्रेस वालों ही के लिये है। डा० आलम ने प्रस्ताव का विरोध करते हुए कहा कि यहां पर प्रश्न हिंसा-अहिंसा का नहीं है बल्कि मैं इस प्रस्ताव को अनुचित, अनावश्यक और हानिकारक समझता हूं। इसी लिये मैं महात्मा गांधी से अनुरोध करता हूं कि वे अपना प्रस्ताव लौटा लें। क्या हम में स्वाभिमान बिल्कुल भी नहीं रहा? क्या पुलिस द्वारा जब लालाजी पर लाठियां पड़ीं और जिसके कारण उन की मृत्यु हो गई, तब सरकार ने भी कोई सहानुभूति प्रदर्शित की थी? इतना ही नहीं इस घटना की जांच के लिये एक कमेटी नियुक्त करने की हमारी प्रार्थना तक को ठुकरा दिया गया था! ऐसी दशा में कांग्रेस को इस प्रस्ताव की कभी भी पास न करना चाहिये। मौलाना हसरत मोहानी ने प्रस्ताव का समर्थन किया। डा० अन्सारी ने प्रस्ताव का समर्थन करते हुए फरमाया कि संसार के इतिहास में किसी भी देश को बम फेंक कर स्वाधीनता प्राप्त नहीं हुई। इस पर धिक्कार २ की आवाजें आईं। श्री. पुरुषोत्तमदासजी टण्डन ने प्रस्ताव का समर्थन किया। बाबा गुरुदत्तसिंह ने प्रस्ताव का विरोध करते हुए कहा कि केवल सरकार को प्रसन्न करने के लिये इस प्रस्ताव को कांग्रेस से क्यों पास किया जाय? क्योंकि इस के पास करने से हम अपने अनेक नौजवानों को असन्तुष्ट कर बैठेंगे। कांग्रेस को उन लोगों के कार्य की निन्दा करने का कोई अधिकार नहीं है जो कांग्रेस में नहीं हैं। इसके बाद महात्माजी ने एतराज़ों का उत्तर दिया। फिर सभापति ने प्रस्ताव पर वोट लिये, जो ७६४ के विरुद्ध ६४२ बहुमत से पास हो गया।

इस के बाद महात्माजी ने कांग्रेस के सामने अपना मुख्य प्रस्ताव इस प्रकार रक्खा :—

"यह कांग्रेस कार्य कारिणी कमेटी के इस कार्य का समर्थन करती है जो कि उसने ३१ अक्टूबर को वायसराय की घोषणा के उत्तर में सर्व दलों के नेताओं की औपनिवेशिक स्वराज्य की मांग के वक्तव्य के सम्बन्ध में किया तथा वायसराय ने हमारे स्वराज्य प्राप्ति के राष्ट्रीय आन्दोलन सम्बन्धी प्रश्नों के निबटारे के लिये जो उद्योग किया उस का सराहना करता है।

"लेकिन यह कांग्रेस तब से जो घटनायें घटी हैं तथा वायसराय से महात्मा गांधी और पं० मोतीलालजी आदि नेताओं की जो बातें हुई हैं, उन सब पर विचार करते हुए यह निश्चय करती है कि वर्तमान परिस्थिति में कांग्रेस के राउण्ड टेबल कान्फरेन्स में भाग लेने से देश को कुछ भी लाभ नहीं हो सकता। इस लिये यह कांग्रेस कलकत्ता कांग्रेस के निर्णय के अनुसार यह घोषित करती है कि कांग्रेस विधान के प्रथम नियम में स्वराज्य शब्द का अर्थ पूर्ण स्वाधीनता समझा जाय। और साथ ही यह भी घोषित करती है कि नेहरू रिपोर्ट को रद्द किया हुआ माना जाय तथ यह आशा करती है कि सारे कांग्रेस वादी अब अपनी पूर्ण शक्ति पूर्ण स्वाधीनता की प्राप्ति में ही लगायें। पूर्ण स्वाधीनता की प्राप्ति के लिये प्रथम उपाय जो काम में लाया जाय और जो कांग्रेस के ध्येय के अनुकूल हो वह यह है कि सारा व्यवस्थापिका सभाओं का बहिष्कार किया जाय और उन कमेटियों का भी बहिष्कार किया जाय जिन्हें गवर्नमेंट नियुक्त करे या बुलावे। और भविष्य में कांग्रेसमैन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष-रूप से किसी भी चुनाव में भाग न लें। साथ ही आज कल कांग्रेसी

जो अवैध व्यवस्थापिका सभाओं के हैं उन को आदेश करे कि वे तुरन्त अपनी मरजी से व्यवस्थापिका सभाओं से स्तीफा दे दें।

यह कांग्रेस देश से अनुरोध करती है कि रचनात्मक कार्यक्रम को पूर्ण रूप से कार्य रूप में परिणित करे और आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी को इस बात का अधिकार देती है कि वह जब कभी उचित समझे तब सत्याग्रह—जिस में कर का न देना भी शामिल हो—का प्रारम्भ कर दे। फिर चाहे वह इस सत्याग्रह को कुछ चुने हुए स्थानों में प्रारम्भ करे अथवा जैसा उचित समझे वैसी सावधानी रखते।"

इस प्रस्ताव पर महात्माजी हिन्दी में बहुत थोड़ी देर तक ही बोले। इस प्रस्ताव का समर्थन पण्डित मोतीलालजी नेहरू ने बड़े ज़ोरदार शब्दों में किया। आपने कहा कि मेरा कौंसिलों का यह लम्बा अनुभव है कि कौंसिलों द्वारा देश का कुछ भी हित नहीं किया जा सकता। बल्कि इससे उल्टी यह हानि होती है कि इन व्यवस्थापिका सभाओं के कारण हजारों आदमी फंसे जाते हैं जो यदि बाहर रहें तो देश को स्वतन्त्र करने के काम में हाथ बटा सकते हैं। अदालतों के बहिष्कार के बारे में आपने कहा कि हमारा पिछला अनुभव है कि हम वकील लोगों को इनके जीवन—व्यापार के एक-दम परिवर्तन को छोड़ देने के लिये कह कर सफल नहीं हो सकते। रहा मेरी अपनी बात; सो मैं तो अब वकालत करने जा नहीं रहा हूं।

पं० मदन मोहन मालवीय ने इस प्रस्ताव का विरोध करते हुए अपना एक नया प्रस्ताव ही कांग्रेस के सामने रख दिया। उस का आशय था कि कांग्रेस के सभापति को यह अधिकार दे दिया जाय कि वह सर्वदल सम्मेलन की एक बैठक देहली में मार्च या अप्रल मास में बुलावें जो राउन्ड टेबल कान्फरेन्स सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करे और तब तक के लिये कांग्रेस का ध्येय-परिवर्तन संबंधी प्रश्न स्थगित कर दिया जाय। आपने अपने भाषण में यह भी कहा कि सन् १९२८ में राउण्ड टेबल कान्फरेन्स बुलाने की हमारी राष्ट्रीय मांग थी। और तब से अब तक वही मांग बराबर बनी हुई है। बटलर कमीशन के सम्बन्ध में आपने कहा कि उसकी नियुक्ति इस लिये की गई थी कि वह देशी नरेशों और अंग्रेजी प्रजा को लड़ावे। इसके बाद मि० केलकर ने भी मूल प्रस्ताव में इसी आशय का संशोधन पेश किया कि कांग्रेस का सभापति सर्वदल-सम्मेलन की बैठक बुला कर कांग्रेस के ध्येय परिवर्तन सम्बन्धी प्रश्न को तय करे। पंजाब के मि० अफ़ज़ल-हक़ ने कहा कि आगामी ३० अप्रेल तक या इसी के आस-पास को कोई तिथि तक जिसे का. का. कमेटी तय करे, इस प्रस्ताव पर विचार न किया जाय। आपने यह भी फर-माया कि तीनों बहिष्कार पहले भी असफल रहे। आप की समझ में कौंसिल बहिष्कार की उपयोगिता न आई और न आप यह ही समझ सके कि अहिंसात्मक उपायों से पूर्ण स्वराज्य किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है।

इसके पश्चात् मि० सुभाष बोस ने अपना संशोधन पेश किया। [illegible] कांग्रेस का ध्येय पूर्ण स्वतन्त्रता और साथ ही साथ अपनी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना। आपके प्रस्ताव में युवक संप्रदाय, किसान और मजूरों के संगठन की बात भी थी। साथ ही, कौंसिलों, बोर्डों और अदालतों के बहिष्कार का भी उल्लेख था। आपने अपने भाषण में कहा कि मेरी समझ में यह नहीं आता कि बिना राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के हमें कैसे पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त हो सकती है। राउन्डटेबिल कान्फरेन्सके सम्बन्ध में आपने कहा कि क्या आप लोगों का यह पूरा विश्वास है कि इस कान्फरेन्स में जाते ही हमें पार्लियामेंट अवश्य मान लेगी। मैंने सुना है कि देशी नरेश और अंग्रेजी व्यापारी-संघ भी अपने २ प्रतिनिधि इस कान्फरेन्स में भेजेंगे। क्या इसका अर्थ यह है कि आज कल अंग्रेज़ों और देशी नरेशों या अंग्रेज़-व्यापारियों और अंग्रेज़ जाति में कोई युद्ध हो रहा है? क्या आजकल राज-भक्तों और अंग्रेज़ी सरकार में कोई युद्ध हो रहा है? यदि नहीं तो राउन्ड टेबिल कान्फरेन्स में इनके प्रति-निधि क्यों बुलाये जा रहे हैं? इसके बाद डाक्टर आलम ने अपना संशो-धन पेश किया कि मूल प्रस्ताव से 'वाइसराय के कार्य्य की सराहना' शब्द को निकाल दिया जाय। आप के इस संशोधन पर विषय निर्धारिणी कमेटी में महात्माजी केवल एक वोट से जीते थे। इस के बाद मि० एच. डी. राजा ने अपना संशोधन पेश किया। इस पर किसी सदस्य ने आपत्ति की कि मि० राजा तिथानुसार प्रतिनिधि नहीं हैं। इस पर सभापति महोदय ने कहा कि इस विषय पर मैं अपना निर्णय बाद में दूंगा। आपने मि० राजा को बोलने की आज्ञा दे दी। मि० राजा ने देहली से प्रकाशित हुई नेताओं की विज्ञप्ति के समर्थन सम्बन्धी क्लिकरे को निकाल देने के लिये कहा और लोकल बोर्डों के बहिष्कार पर भी ज़ोर दिया। साथ ही मजूरों को संगठित कर के आम हड़ताल की बात भी मूल प्रस्ताव में जोड़ देने की राय दी। मि० माधव नैयर ने कौंसिल बहिष्कार सम्बन्धी बात को मूल प्रस्ताव से निकाल देने को कहा। आपने कहा कि मद्रास में कौंसिल बहिष्कार की बात बहुत कात सुनी जायगी। मि० गोविन्दा चार्य्य ने संशोधन पेश किया कि बहिष्कार उन सारी कमेटियों का भी किया जाय, जिन को सरकार बुलावे या नियुक्त करे। आपने अकेले कौंसिल बहिष्कार के स्थान पर तीनों बहिष्कारों की बात कही। मि० सत्यमूर्ति ने संशोधन पेश किया कि मूल प्रस्ताव से राउन्ड टेबिल कान्फरेन्स में भाग न लेने वाली बात को निकाल दिया जाय। मि० प्रकाशम् ने कहा कि यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि पं० मोतीलालजी और महात्माजी ने अपनी देहली की विज्ञप्ति सम्बन्धी भूल को स्वी-कार कर लिया, जिसमें राउन्ड टेबिल कान्फरेन्स में सम्मिलित होने की बात थी। मि० अय्यर ने कांग्रेस के ध्येय परिवर्तन सम्बन्धी प्रश्न को बिना कांग्रेस तक स्थिगित करने के लिए संशोधन पेश किया। और साथ ही राउन्ड टेबिल कान्फरेंस में सम्मिलित होने की बात भी कही। आपने कहा कि यदि कान्फरेन्स में कांग्रेस का अच्छा प्रतिनिधित्व हो गया तो सारे राजनैतिक कैदी छूट जायँगे और औपनिवेशिक स्वाधीनता की स्कीम भी कान्फरेंस के सामने रख दी जायगी। मौलाना ज़फ़र अली ख़ां ने पूरी टक्कर और संघर्ष वाले प्रस्ताव को रखने का संशोधन पेश किया। आपने कहा कि जब तक मैं कांग्रेस में रहूंगा तब तक पूरा अहिंसावादी रहूंगा। आपने कांग्रेस से तीनों बहिष्कारों को अपनाने का अनुरोध किया। मि० मेहता ने कहा कि मूल प्रस्ताव अंशतः अच्छा, बुरा और न बुरा-न-अच्छा है। कौंसिल बहिष्कार के सम्बन्ध में आपने कहा कि मिश्र, आयर्लैंड और रूस ने भी कौंसिलों का बहिष्कार नहीं किया था। आप की सम्मति में कौंसिलों में जाना पूर्ण स्वाधीनता के सिद्धान्त के विपरीत बात नहीं है। आपने कहा कि मि० हाजो का लोकल बिल बड़ी व्यवस्थापिका सभा में आने को है। इसके पास हो जाने से देश को करोड़ों रुपये का लाभ होगा।

इस के पश्चात महात्मा गांधी सब के प्रतवालों का उत्तर देने के लिए उठे और अपना भाषण हिन्दी में आरम्भ किया। फिर कुछ अंग्रेज़ी में भी बोले। आपने कहा कि यह प्रस्ताव तो पूर्णतः एक है। इस का तीन भागों में नहीं बांटा जा सकता। आपने आगे चल कर कहा कि पूर्ण स्वाधीनता का ध्येय रख कर ऐसी कान्फरेन्स में जाना, जिस में औप-निवेशिक स्वराज्य की बात पर बहस हो, असंगत है। अब से आगे कांग्रेसवादी उसी कान्फरेन्स में सम्मिलित हो सकेंगे जिसमें पूर्ण स्वाधीनता की बात पर विचार हो। (हर्ष ध्वनि और बन्देमातरम् की ध्वनि) आगे चल कर आपने कहा कि वायसराय के कार्य्य को सराहना वाली बात को मूल प्रस्ताव से निकाल देने के संशोधनों के उत्तर में मैं इतना ही कहता हूं कि मैं और पण्डित मोतीलालजी नेहरू देश के आदेशानुसार देश के प्रतिनिधि का हैसियत से वाइसराय से मिलने गये थे। वहां से लौट कर हम आप से यह कहते हैं कि वाइसराय ने एक मनुष्य के नाते हमारी सहायता के लिये पूरा उद्योग किया है। मेरी सम्मति में स्वतन्त्र होने की इच्छा रखने वालों का सभ्यता को तिलां-जलि न दे देना चाहिये। वास्तव में सच्चे बहादुर तो वही हैं जो सदैव उदार रहते हैं, और वह भी अपने प्रतिद्वन्दी के प्रति। हम दोनों ने वाइसराय की सचाई का आपको सबूत दिया है। अगर आपको हमारी बात का विश्वास है तब तो वाइसराय के कार्य्य की सराहना अवश्य करनी चाहिये; अथवा हमारी बात को झूठ माननी चाहिये। हम आपकी ओर से गये थे। इस लिये

(शेष पृष्ठ ११ वें में)

क्रिया-शीलता

जिन में काम करने की शक्ति है, बस वही सच्चे अमीर हैं और जिनके अन्दर वह शक्ति नहीं है क्या वे सचमुच ही अपनी चीजों के मालिक हैं?

काम करने की शक्ति ही मनुष्य का वास्तविक धन है, क्यों कि दौलत हमेशा नहीं रहती, एक न एक दिन चली ही जायगी।

धन्य है वह पुरुष जो काम करने से पीछे नहीं हटता। भाग्य लक्ष्मी उसके घर की राह पूछती हुई जाती है।

पौधे को सींचने के लिये जो पानी डाला जाता है, उसी से उसके फूल के सौन्दर्य का पता लग जाता है। ठीक इसी प्रकार आदमी का उत्साह उसकी भाग्य शीलता का पैमाना है।

जोशीले आदमी शिकस्त खाकर भी पीछे नहीं हटते, हाथी के जिस्म में जब दूर तक तीर घुस जाता है, तब वह और भी मजबूती के साथ जमीन पर अपने पैरों को जमाता है।

अनन्त उत्साह-बस यही तो शक्ति है। जिनमें उत्साह नहीं, वे और कुछ नहीं, केवल काठ के पुतले हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि उनका शरीर मनुष्यों का सा है।

आलस्य में दरिद्रता का वास है, मगर जो आलस्य नहीं करता उसके परिश्रम में कमला बसती है।

टाल मटूल, विस्मृति, सस्ती और निद्रा—ये चार उन लोगों के खुशी मनाने के बड़े हैं कि जिनके भाग्य में नष्ट होना बदा है।

अगर भाग्य किसी को धोखा दे जाय तो उसमें कोई लज्जा की बात नहीं, लेकिन वह अगर जानबूझ कर काम से जी चुरा कर हाथ पर हाथ रख कर बैठा रहे तो यह बड़े शर्म की बात है।

जब तुम पर कोई मुसीबत आ पड़े तो तुम हंसते हुए उसका मुकाबला करो। क्यों कि मनुष्य को आपत्ति का सामना करने के लिये सहनता देने में मुसकराने से बढ़कर और कोई चीज नहीं है।

अनिश्चतमना पुरुष भी मन को एकाग्र करके समानता करने को खड़ा होता है, तो आपत्तियों का लहराता हुआ सागर भी थम कर बैठ जाता है।

आपत्तियों को आपत्ति नहीं समझते, वे आपत्तियों को ही आपत्ति में डाल कर वापिस भेज देते हैं।

भेड़े की तरह हर एक मुसीबत का सामना करने के लिये जो जी तोड़ कर कोशिश करने को तैयार है, उसके सामने विघ्न बाधा आयगें, लेकिन निराश होकर, अपना सा मुंह लेकर वापिस चले जायगें

आपत्तियों की एक समस्त सेना को अपने विरुद्ध सुसज्जित खड़ा देख कर भी जिसका मन बैठ नहीं जाता, बाधाओं को उसके पास आने में खुद बाधा होती है।

सौभाग्य के समय जो खुशी नहीं मनाते क्या वे कभी इस किस्म की शिकायत करते फिरेंगे-कि हाय! हम नष्ट हो गये।

बुद्धिमान लोग यह जानते हैं कि यह जिस्म तो मुसीबतों का निशाना है—तख्त-ये-मश्क है, और इसलिये जब उन पर कोई आफत आ पड़ती है तो वे उस की कुछ परवाह नहीं करते।

देखो, जो आदमी ऐशो आराम को पसन्द नहीं करता और जो जानता है कि आपत्तियां भी सृष्टि नियम के अन्तर्गत है, वह बाधा पड़ने पर, कभी परेशान नहीं होता।

सफलता के समय जो हर्ष मग्न नहीं होता, असफलता के समय उसे दुःख भोगना नहीं पड़ता।

देखो, जो मनुष्य परिश्रम के, दुःखी दबाव और आवेग को सच्चा सुख समझता है, उस के दुश्मन भी उसकी प्रसन्शा करते हैं।

'तामिल वेद'

प्रलय संगीत

[कवि—विशिख]

धधकती प्रलय- चिता विकराल,
उमड़ती अनल-शिखा घनघोर।
रहो रण-मद के छींटे डाल,
विश्व में यहाँ वहां सब ओर॥

उफनता दृश्य देख हुत्ताल,
कड़क उठती डमरू की ताल।
विषम तप से होकर विह्वल,
उचट उठता प्रकाए का व्याल?

तन तना जाता नस का जाल,
नसों में आता किंचित बल।
रक्त में आता एक उबाल,
भाल भर पड़ता छल छल छल!

चण्डिका रण प्रांगण में मुक्त,
सुनाने को है भीषण तान।
अलक्षित समर भाव-संयुक्त,
छेड़ने को प्रलयंकर गान?

झिड़क मत हो कर व्यर्थ अधीर,
स- साहस तो हो धर के ध्यान॥
हृदय कर अचल नितान्त शरीर,
देख कैसा है दृश्य महान!

छिड़ेगा आज प्रलय का गान,
साम्य का होगा नव दर्शन।
पाशविकता का है अवसान,
मनुजता का नूतन नर्तन।

स्वप्न होगा दर्शक! मतिमान,
देख ले मनोयोग से आज।
अनय होता है अन्तर्ध्यान,
सज रहा मानवता का साज।

"सुकवि"

कुछ इधर उधर की

सुना है, जोधपुर में 'कोट छलेंडा' (अशालती भाषा) अंग्रेजी बनाई जाने वाली है।

तो भाई आश्चर्य की कौन सी बात है। इंग्लैंड में पैदा हुए आजी महाराजा तो आखिर अंग्रेजी में काम करेंगे ही।

\+ + + +

कुछ लोगों ने एक 'प्रजातन्त्रीय दल' डिमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना की है।

ठीक ही है, जब कांग्रेस प्रजातन्त्रीय नहीं रही, तो उन्हें ऐसा करना ही पड़ा!

\+ + + +

मगर कुछ लोग इस पर बिगड़ते हैं। पर संस्कृतानन्द का कहना है कि ऐसे लोग प्रजातन्त्र शब्द का अर्थ नहीं जानते। प्रजा—अर्थात 'श्रेष्ठ प्राणियों का समूह'—तन्त्र शासन—स प्रजातन्त्रः! समझे? यह घास खुदती है।

\+ + + +

कल एक साहब ज्योंही लाहोर से आए कि उन के पिता मौलवी मुहम्मद को उन का सिर दीखने लगे! लोगों ने कारण पूछा तो बोले 'भई, लाहोर कांग्रेस में फूट हो गई सुनी है। देखता हूं, बच्चे का सर तो नहीं फूट गया है!

ठीक है, अभी तो कामिल आज़ादी लेनी है? इतनी होशियारी तो बिल्कुल जरूरी है।

\+ + + +

बिचारी सरकार ने कितने ही युवकों को पकड़ा, पर फिर भी पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा हो गई!

क्या किया जाय भई, भावी ऐसी ही थी!

× + + +

उधर नरमों को कांग्रेस की इस कड़ाई से पसीना आ रहा है। आराम कुर्सी का नीतिज्ञ दल एक दम चौंक कर पूछ रहा है—अब क्या होगा? भई, "इब्तदाए इश्क है, रोता है क्या? आगे आगे देखना होता है क्या?"

\+ + + +

लोग पूछते हैं कि २६ ता० के बाद क्या होगा?

भाई, २७ तारीख होगी, और क्या होगा! खास कर हम से आप से!

(अनघड़ कवि)

—

ARCHIVES OF INDIA

युवा राष्ट्र-पति की गर्जना

स्वतंत्रता के लिये खुले षड्यंत्र करो

पं० जवाहिर लाल नेहरू का पूरा भाषण

बन्धुओ !

यह राष्ट्रीय महासभा आज ४४ वर्ष से भारत को स्वतन्त्र करने के लिये पल रही है। इस जमाने में उस ने धीरे २ ही सही, इस देश में राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत किया है और राष्ट्रीय प्रगतियां संगठित की हैं। अतः यदि आज हम अपने भाग्य निर्णय के प्रश्न के गोलमाल में पड़ जाने के अवसर पर भी अपनी कमज़ोरियां और अपनी शक्ति को जानते हुए और अपने भविष्य के बारे में आशंका और आशाओं का ताना तनते हुए यहां एकत्र हो सके हैं, तो इसके लिये सबसे प्रथम हमारे पूर्वजों के वे बलिदान हैं, जो बिना किसी फल की आकांक्षा के इस विचार से कर्तव्य पर कुर्बान हो गए कि हमारे अनुगामी हमारे बलिदान के फल से विजयी होंगे और उस विजय का सुख भोगेंगे। आज राष्ट्रीय जीवन का निर्माण करने वाले वे लोग मृत्यु हो चुके हैं और हमारे जैसे पिछली पीढ़ी के व्यक्ति, उनके बनाए हुए महत्वपूर्ण स्थानों पर खड़े होकर, बहुधा उन्हीं के कार्यों पर विरुद्ध फैसला देते हैं। यही दुनियां का ढंग है। फिर भी आप में से कोई भी उनके उन विशाल कामों को नहीं भूल सकता जो उन्हों ने भारत की स्वतन्त्रता की नींव रखने के लिये किये हैं। न ही हम में से कोई उन गौरवमान वीर, किन्तु अधीर बने हुए युवाओं और युवतियों के सपनों को भूल सकता है, जिन्हों ने बिना परिणाम की परवाह किये अपनी युवावस्था को ब्रेडिंग अत्याचार का विरोध करते हुए, फूल की तरह कर्तव्य की वेदी पर चढ़ा दिया, या जेल के कष्टों के सुपुर्द कर दिया। ऐसे बहुत से वीरों के आज हम नाम तक नहीं जानते। कारण, उन्हों ने अपने कर्तव्यके लिये चुप चाप कष्ट सहन किये थे। न उन्हों ने उसके बदले में तालियां बजवाने की इच्छा की थी न कीर्ति पाने की। इस प्रकार अपने हृदय का रक्त सींच २ कर उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता के इस पौधे को बड़ा किया। यही नहीं, जब २ हम में से बहुत से अपने विरोधियों से समझौता करने को तैयार हो गए अथवा टुकड़ों के लालच में आ गए, तब २ वे उनसे अलग खड़े होकर जनता की स्वतन्त्रता के लिये अड़े एवं लड़े और यह साबित कर दिया कि भारत में इस गिरी हुई अवस्था में भी जीवन और साहस की ज्योति है और इसी लिये वह गुलामी और अत्याचार के सामने झुकने से इन्कार करता है। इस प्रकार एक २ बलिदान और साहस की ईंट द्वारा भारतीय राष्ट्रीय जीवन की इमारत बनी है। यही नहीं, कई बार भारत को अपने वीर पुत्रों की लाशों पर पैर रख कर रण क्षेत्र में आगे बढ़ना पड़ा है। इसी लिये यद्यपि आज पुराने भीष्म हमारे साथ नहीं है, पर उन का साहस है और यही कारण है कि आज भी भारत जतीन्द्र एवं विज़ाया जैसे शहीदों को जन्म दे सकता है।

यह बलिदानों और त्याग की माला, हमारी पैतृक सम्पत्ति है और यह एक यशस्वी सम्पत्ति है। आज आप इसी सम्पत्ति का अमानतदार मुझे बना रहे हैं। पर मैं यह भी जानता हूं कि यह पद मुझे आप की योजना की अपेक्षा, संयोगों के कारण ही विशेष रूप से प्राप्त हुआ है। आप इस देश के एक सब से महान व्यक्ति को चुनना चाहते थे और यदि आप उन्हें चुनते तो यह सब से अधिक बुद्धिमानी का काम होता। किन्तु संयोग से वह व्यक्ति और भाग्य दोनों ही मिल बैठे और उन्हों ने षड्यन्त्र कर के, मेरी और आप की इच्छा के विरुद्ध इस भयानक जिम्मेदारी का बोझ मेरे सिर डाल दिया। क्या अपने को इस भूल-भूलैयां में फँसाने के लिये मैं आपको धन्यवाद दूं ? हां, एक बातके लिये मैं आप का अवश्य धन्यवाद दूं। वह है आपका मेरे ऊपर उतना विश्वास जितना स्वयं मुझे अपने उपर भी नहीं है।

एक गम्भीर प्रश्न

आज आप के सामने बहुत से गंभीर और जटिल प्रश्न हैं और बहुत संभव है कि आपके निर्णय भारत के राष्ट्रीय जीवन की दिशा ही बदल दें। किंतु संसार में यह दशा अकेले आपही के सामने नहीं है। आज संसार स्वयं एक जटिल एवं नया कुछ है और प्रत्येक देश किंकर्तव्य विमूढ़ है। श्रद्धा का युग अपने साथ आने वाले सुखों और स्थायित्व के साथ ही विदा हो चुका है। आज तो प्रत्येक बात की समालोचना की जाती है। प्रत्येक के बारे में प्रश्न पूछे जाते हैं। फिर चाहे वे परम पवित्र हों, चाहे अनादि मानी जाती हों। जिधर देखिये आज शंकाओं और बेचैनी की भरमार है। सर्वत्र वर्तमान राज्य-व्यवस्था और समाज—रचना की जड़ें हिल रही हैं। इन्हें नया रूप दिया जा रहा है। स्वतंत्रता, न्याय और सम्पत्ति सम्बंधी ही नहीं, कुटुम्ब-प्रथा सम्बन्धी पुराने विचारों पर भी आक्रमण किया जा रहा है। परिणाम क्या होगा- यह भविष्य के गर्भ में है, किंतु यह निश्चय है कि हम एक तोड़ फोड़- आमूल क्रांति के युग को पार कर रहे हैं, जिसके फल स्वरूप एक नवीन सृष्टि का जन्म होगा।

भविष्य—एशिया के साथ

यह ठीक ठीक कोई नहीं कह सकता कि भविष्य क्या होगा ? पर यह विश्वास के साथ कहा जासकता है कि एशिया ही नहीं, भारत भी संसार भर के भविष्य निर्णय और निर्माण पर महत्व पूर्ण प्रभाव डालेगा। योरोपियनों के प्रभुत्व के थोड़े से दिन बहुत जल्दी खतम होने वाले हैं। आज योरोप संसार की दृष्टि का आकर्षण केन्द्र नहीं रह गया है। मन गढ़न्त और अधूरे इतिहासों ने हम में से कुछ के हृदय में यह बात बिठा दी थी कि योरोप के लोग सदा से दूसरों पर शासन करते आए हैं। (यहां भी राजपूत आदि जातियों के लिये यही भाव पैदा कर दिया गया था। सं०) एशिया ही बार २ योरोप की इन बातों को प्रतिध्वनि कर फिर बिखर—मग्न होता रहा है। हम यह भूल गए थे कि लाखों वर्ष तक योरोप पर एशिया ने अधिकार रक्खा है और वर्तमान योरोप की अधिकांश जनता उन एशिया के शासकों की सन्तान है। हम यह भूल गए कि वह भारत ही था जिस ने सिकन्दर को सैनिक शक्ति को ध्वंस किया था। वास्तव में एशिया, विशेषतः भारत अपनी सभ्यता और अपने विचारों के लिये ही नहीं, अपनी कर्मण्यता और वीरता के लिये भी सदा से प्रसिद्ध रहा है। किन्तु इस का यह अर्थ नहीं है कि हम फिर एशिया पर योरोप का, या योरोप पर एशिया का प्रभुत्व देखना चाहते हैं। प्रभुत्व का खेल तो हम काफी देख चुके हैं।

भारत संसार के साथ है

भारत भी संसार का एक भाग है। और नई सृष्टि—रचना में तो चीन, टर्की, और इजिप्ट ही नहीं, रूस और पश्चिम के दूसरे देश तक भाग ले रहे हैं। तब भारत इस प्रगति से अलग कैसे रह सकता है। जैसे संसार के और अन्य देशों के सामने प्रश्न हैं, वैसे ही जटिल और ऐतिहा प्रश्न हमारे सामने भी हैं। हम इन प्रश्नों की उपेक्षा कर के विश्व व्यापी प्रश्नों की ओट में नहीं बच सकते। किंतु साथ ही संसार व्यापी प्रश्नों से दूर रहना अपने नाश को आमन्त्रण देना है। वर्तमान सभ्यता किसी एक व्यक्ति की उत्पत्ति नहीं हुई अथवा बपौती नहीं है। उसके निर्माण में सब देशों का भाग है। सब देशों ने एक दूसरे से अच्छी बातें लेकर अपनी आवश्यकतानुसार अपने यहां प्रचलित की हैं। और यदि भारत संसार को कुछ नया सन्देश देता है-और मेरा विश्वास है कि वह दे सकता है-तो उसे संसार से लेना और सीखना भी पड़ेगा।

आश्चर्यजनक स्थिरता

इस प्रकार जब सारा संसार परिवर्तन हो रहा है, तब भारत के लम्बे इतिहास का ध्यान रखना स्वाभाविक और आवश्यक है। भारत की सामाजिक व्यवस्था, जो बड़ी से बड़ी आंधियों में बराबर स्थिर रही है, उपेक्षा योग्य नहीं है। उस की इस स्थिरता का रहस्य जानने योग्य है। वह यही है कि भारत ने सदा प्रत्येक नई आंधी की विशेषताएँ स्वीकार करने और उस के प्रति सहिष्णुता दिखाने की नीति रक्खी है। उसका उद्देश दूसरी सभ्यताओं से अछूती रहना नहीं, उनके साथ अपना सामांजस्य स्थापित करना रहा है।

यही कारण है कि यहां, क्या आर्य, और क्या अनार्य–सब साथ मिल कर रहते रहे और एक दूसरे को सभ्यता का स्वतन्त्र अधिकार मानते रहे! पारसी जैसे बाहरी समुदायों का भी यहां स्वागत हुआ और उन्हें यहां की सामाजिक व्यवस्था में अपनों का सा स्थान मिला। मुसलमानों के आने पर इस स्थिति में कुछ धक्का पहुँचा, किन्तु भारत ने शीघ्र ही अपनी पहली स्थिति प्राप्त करने की चेष्टा शुरू की और वह उस में बहुत कुछ सफल हुआ। हम पूर्णतः सफल हो जाते, किंतु भाग्य चक्र घूमा और अंग्रेजों के पदार्पण के साथ हमारी राजनैतिक व्यवस्था त्रस्त व्यस्त हो गई।

समानता का प्रश्न

पर इतनी अच्छी व्यवस्था और सभ्यता होते भी इस देश का पतन क्यों हुआ? क्यों बार २ इसे पिसने के अवसर आए? इसका कारण था। कारण भी काफ़ी बड़ा था। यही वजह है कि इतनी उन्नति करने पर भी यह बार २ गिरा और गिर रहा है। वह यही था कि इस देश के समानता के प्रश्न को पूर्णतः कभी हल नहीं किया गया। भारत ने जानबूझ कर इस प्रश्न की उपेक्षा की और अपनी सामाजिक व्यवस्था, असमानता की भित्ति पर स्थापित की। इसी का फल है कि आज हम करोड़ों देश-बन्धुओं को दलित अवस्था में पड़े और विकास के कोई साधन न पाते हुए देख रहे हैं।

जब योरोप में धर्म युद्ध चल रहे थे और वहां धर्म के नाम पर क़त्लेआम हो रहे थे, तब भारत सहिष्णुता में सर्वोपरि था। अफ़सोस है कि आज वह सहिष्णुता बहुत कम मात्रा में देखी जाती है। अस्तु,

एक सीमा तक धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद, योरोप ने राजनैतिक स्वतन्त्रता और राजनैतिक एवं क़ानूनी समानता प्राप्त करने का प्रयत्न आरम्भ किया। किन्तु इन्हें प्राप्त कर लेने पर उसे अनुभव हुआ कि बिना आर्थिक समानता के ये प्रायः सब व्यर्थ हैं। यही कारण है कि वहां आज राजनीति का स्थान विशेष महत्वपूर्ण नहीं रहा है। वहां आज सब से प्रधान स्थान आर्थिक समानता का है।

भारत को भी इस प्रश्न को हल करना पड़ेगा। जब तक वह इसे हल न करेगा, तब तक उस की सामाजिक व्यवस्था स्थायी नहीं हो सकती। इसके लिये यह आवश्यक नहीं है कि भारत किसी दूसरे देश की नक़ल ही करे। पर यदि उसे जीवित रहना है तो उसे अपनी बुद्धिशीलता, सभ्यता और विचार शक्ति के आधार पर इस प्रश्न को हल करना ही होगा। जब वह इसे हल करने का कोई मार्ग ढूंढ़ लेगा, तब आज जाति २ की फूट और मत-भेदों के काग़ड़े हमारी आज़ादी में बाधक हो रहे हैं, वे स्वतः अदृश्य हो जावेंगे।

भय, अविश्वास और संदेह

वास्तव में मत-भेद तो बहुत कुछ दूर हो चुका है। केवल पारस्परिक भय, अविश्वास और सन्देह बने हैं और ये ही सब बखेड़ों को जन्म देते हैं। इस प्रकार प्रश्न हमारे सामने मत-भेदों को दूर करने का नहीं है। वे तो ख़ुशी से बने रह सकते हैं। और हमारे भिन्न २ सभ्यताओं के समुच्चय को वृद्धि कर सकते हैं। प्रश्न है भय और सन्देहों को दूर करने का। गत वर्ष इस दिशा में सर्वदल परिषद् ने एक हार्दिक प्रयत्न किया था। पर हमें अफ़सोस के साथ यह स्वीकार करना हो चाहिये कि उस प्रयत्न को सफलता ने अपना मुकुट नहीं पहनाया। हमारे बहुत से सिक्ख और मुसलमान भाई उसका विरोध कर रहे हैं और जन संख्या आदि के आंकड़ों की आड़ में लोगों को भड़का रहे हैं। किंतु बात यह है कि भय और अविश्वास दलीलों के अस्त्र से दूर नहीं किये जा सकते। केवल पारस्परिक विश्वास और उदारता से ही उन्हें दूर किया जा सकता है। मैं केवल यह आशा कर सकता हूं कि शीघ्र ही इस देश के भिन्न २ समुदाय काफ़ी पारस्परिक विश्वास और औदार्य को अपनावेंगे। कारण, यदि हम सभी गुलाम बने रहे, तो हम अपने समुदाय के लिये क्या प्राप्त कर सकेंगे? और यदि हम सब मिल कर देश के बंधनों को तोड़ डालें एवं स्वतन्त्रता के वायु-मण्डल में प्रश्वास लें, तो हम क्या खो देंगे? क्या हम उन विदेशियों से अपने छोटे २ अधिकारों और सुविधाओं की रक्षा चाहते हैं जो हमें स्वतन्त्रा देने से इन्कार कर रहे हैं और गुलाम बना कर रक्खे हुए हैं? वास्तव में न कोई दृढ़ निश्चयी अल्प मत— बहु मत द्वारा पीसा जा सकता है और न किसी अल्प-मत की व्यवस्थापिका सभा में कुछ और बैठकें मिलने से काफ़ी रक्षा हो सकती है। हमें ध्यान रखना चाहिये कि आज संसार में प्रायः सर्वत्र एक छोटा सा दल ही धन और सत्ता पर अधिकार जमाए है। सब त्र प्रबल बहु मत गुलाम है।

उदारता ही नीतिज्ञता है

मुझे धार्मिक कट्टरता और अन्धश्रद्धा से प्रेम नहीं। जातिवाद को भी मैं किसी भी रूप में प्रेम दृष्टि से नहीं देखता। मेरी समझ में ही नहीं आता कि क्यों किसी समुदाय के अधिकार जाति वा धर्म के आधार पर होने चाहिये। मैं प्रत्येक के अपने धार्मिक विचारों और सभ्यता की स्वतंत्रता का अर्थ समझ सकता हूं और भारत के लिये,–जिस ने सदा इन अधिकारों की स्वतन्त्रता को माना है, इन्हें मान देना कुछ कठिन न होना चाहिये। पर इस के लिये हमें कोई मार्ग ढूंढना पड़ेगा। एक परतन्त्र राष्ट्र की राजनीति का आधार भय और सन्देह ही होते हैं। और हम तो पीढ़ियों से परतन्त्र हैं। अतः हमारा पिंड इन से आसानी से नहीं छूट सकता।

मैं एक हिंदू के घर में पैदा हुआ था; किंतु मैं नहीं जानता कि मेरा अपने को हिंदू कहना, या हिंदुओं की तरफ़ से बोलना कहां तक उचित है। किंतु इस देश में जन्म से अधिकार अब भी माना जाता है और उसी अधिकार से मैं हिंदुओं से कहता हूं कि उदारता दिखाने में पहला क़दम आप को आगे बढ़ाना चाहिये। उदारता एक अति उत्तम नैतिक गुण ही नहीं है, एक उत्तम राजनीति और बहुधा बुद्धिमत्ता पूर्ण समय सूचकता भी होती है। और यह बात तो मेरी कल्पना ही में नहीं आ सकती कि स्वतन्त्र भारत में कभी हिंदू शक्ति हीन रहेंगे। जहांतक मेरा सम्बन्ध है, मैं तो अपने सिक्ख और मुसलमान भाइयों को मुंह मांगे अधिकार दे दूंगा। न कोई दलील दूंगा न विरोध करूंगा। कारण, मैं जानता हूं कि वह समय आ रहा है, जब हमारा संग्राम आर्थिक समानता की भित्ती पर शुरू होगा। तब धर्म और जाति के नामों का बहुत कम मूल्य रह जायगा। तब तक मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि हमारा आपसी समझौता किस भित्ति पर हो रहा है, बशर्ते कि वह हमारी भावी उन्नति में बाधक न हो।

सर्वदल रिपोर्ट

वास्तव में अब समय आ पहुँचा है, जब हमें सर्वदल परिषद की रिपोर्ट को एक ओर रख देना चाहिये और निर्बाध अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिये। आप को याद होगा कि गत वर्ष एक प्रस्ताव द्वारा राष्ट्रीय महासभा ने एक वर्ष सर्वदल परिषद् की रिपोर्ट स्वीकार किये जाने के लिये शान्ति का रक्खा था। वह वर्ष अब प्रायः समाप्त हो चुका है और अब यह इस कांग्रेस का काम है कि वह पूर्ण-स्वतन्त्रता की घोषणा करे और उसे प्राप्त करने के लिये उचित कार्य क्रम तय करे। कारण, इस वर्ष ने हमें औपनिवेशिक-स्वराज्य नहीं दिया। उल्टा इस में हमें घनघोर दमन और कष्टों से संग्राम प्राप्त हुआ है। हमारी राष्ट्रीय और मज़दूर प्रगतियां दबाई गई हैं। आज हमारे सैकड़ों साथी, विदेशी सर्कार द्वारा हम से ज़बरदस्ती दूर रख रक्खे गए हैं। उन में से कितने ही विदेशों में निर्वासित भोग रहे हैं। उन्हें आने की आज्ञा और सुविधाएँ नहीं दी जातीं। सेना सदा अपने फौलादी पंजे में जकड़े रहती है और मालिकों का कोड़ा दम में से सब से अच्छे और जरा भी शिर उठाने वाले के लिये हर दम तैयार रहता है। कलकत्ते के प्रस्ताव को यही स्पष्ट और निश्चित उत्तर मिला है।

शान्ति की मरीचिका

पिछले दिनों शान्ति कामना का प्रस्ताव हुआ था। वायसराय ने सरकार की तरफ़ से घोषणा की थी कि भारतीय लोकमत के नेता भारत के भावी विधान के सम्बन्ध में सलाह

करने को बुलाये जायंगे। वायसराय ने तो यह सचमुच ही दिल से किया था और इसी लिये उन की भाषा शान्ति की भाषा थी। किन्तु हमारे सामने जो कठिन और जटिल अवस्था उपस्थित है उस में बेचारे वायसराय की सदेच्छा और मधुर शब्दावली क्या कर सकती थी? हम अंग्रेजों की कूटनीति का काफी अनुभव कर चुके हैं और इस लिये हम स्वभावतः उन से सजग रहे। सरकार ने जो कुछ वादा किया वह बिलकुल गोलमाल था। न उस में कोई बात स्पष्ट कही गई थी न उसे व्यावहारिक रूप देने का वचन दिया गया था। यह केवल बहुत अधिक कल्पना करने पर ही कहा जा सकता था कि यह कलकत्ता कांग्रेस के प्रस्ताव का उत्तर है। पर चूंकि भारतीय नेता शांति चाहते थे, अतः विभिन्न राजनैतिक दलों के अग्रगण्यों ने उसकी अधिक से अधिक उदार व्याख्या की। वे समझौता करने को तयार थे। हां, ऐसा करने के लिये जो अनिवार्य शर्तें थीं, वे उन्हों ने संयत और नम्र भाषा में सरकार के सामने रख दीं। निस्सन्देह उन में से बहुत से पूर्ण स्वतन्त्रता में ही विश्वास करते थे और उन का विश्वास था कि ये घोषणायें और आश्वासन केवल हमें पथ भ्रष्ट करने तथा हमारे ऐक्य को तोड़ने के लिये हैं। इसी लिये उन्हें इस से बड़ा दुख हुआ और उन के मन में अनेक शंकायें पैदा हुईं। इसके विपरीत बहुत से लोगों का यह ख़याल हुआ कि एक सम्मान पूर्ण समझौता हो सकता है, तब व्यर्थ ही राष्ट्र को एक संग्राम में फंसाना क्या बुद्धिमानी का कार्य होगा? इस प्रकार सभी तरह की बातों को सामने रख कर काफी विचार के बाद हम ने राष्ट्रीय घोषणा पर हस्ताक्षर किये। आज मेरे लिये यह कहना कठिन है कि हम लोगों ने यह उचित किया या अनुचित। किन्तु यह निश्चित है कि इस के बाद ही पार्लियामेंट में जो भाषण हुए, उन से जो रहे सहे सन्देह थे वे भी दूर हो गए। सब यह समझ गए कि इन घोषणाओं प्रतिघोषणाओं का क्या उद्देश्य था। फिर भी कार्यकारिणी समिति ने समझौते की बात-चीत का रास्ता इस कांग्रेस तक खुला रखना उचित समझा।

व्यवहार में स्वराज्य

पिछले कई दिन से इंगलैंड के हाउस आफ कामन्स में एक और प्रश्न पर बहस हो रही है। उस के अनुसार भारत मन्त्री ने हमें यह समझाने की कोशिश की है कि प्रत्येक पार्लियामेंटरी सरकार भारत के प्रति इंगलैंड की सचाई को प्रमाणित करने के लिये व्यावहारिक रूप से काम करती आई है। हमें मि० बेज बुड बेन की भारत के लिये कुछ कर सकने और इस के लिये भारतीयों की सहानुभूति प्राप्त करने की उत्सुकता अवश्य स्वीकार करनी चाहिये। परन्तु उन का भाषण और पार्लियामेंट में दी गई दूसरी वक्तृताएं हमें वास्तव में एक क़दम भी आगे नहीं ले जातीं। "व्यवहार में औपनिवेशिक स्वराज"—जिस की ओर उन्होंने हमारा ध्यान खींचा है, हमारे लिये सदा से एक फन्दा रहा है। उस ने भारत की लूट में कुछ भी कमी नहीं की है। वास्तव में भारतीय जनता पर इस व्यावहारिक औपनिवेशिक स्वराज की बदौलत ही और बोझ बढ़ गया है। पिछले दश वर्षों के कहे जाने वाले बेध सुधारों ने हमारी दशा और भी बिगाड़ी है। क्योंकि हम राष्ट्र संघ में प्रतिनिधि या छोटे लाटों के पद और हाई कमिश्नर आदि के ओहदे नहीं चाहते। हम तो भारत के ग़रीबों का लूटना रोकना चाहते हैं और असली शक्ति एवं सत्ता लेना चाहते हैं, न कि उस की छाया। मि. बेज बुड बेन ने ब्रिटिश शासन से सम्बन्ध रखने वाले कुछ लाभों का उल्लेख किया है। वे ऐसे लाभों में जलियानवाला बाग़ की गोला बारी, पंजाब के मार्शल ला और भारत की उस लूट का भी उल्लेख कर सकते थे जो व्यावहारिक औपनिवेशिक स्वराज से जारी रही है। हां, उन्हों ने हमें किसी अंश में यह भी बता दिया है कि औपनिवेशिक स्वराज क्या होगा? उस का अर्थ दूसरे शब्दों में यह है कि इस देश की लूट—पाट की सत्ता कुछ मुट्ठी भर लोगों के हाथ में आ जाय! ग़रीब अधिक लूटे जांय और उन पर अधिक दमन हो!

ऐसी दशा में यह कांग्रेस क्या करेगी? सहयोग की जो शर्तें हमने पेश की थीं, वे पूर्ण नहीं की गई हैं। हमें स्वतन्त्रता देने की कोई गारंटी नहीं दी गई है। क्या ऐसी दशा में हम सहयोग कर सकते हैं? क्या, जब कि हमारे साथी जेलों में पड़े हैं और दमन चक्र जारी है, तब हमारा सहयोग करना शोभावह है? क्या उस समय तक सहयोग करने का कोई अर्थ हो सकता है, जब तक कि शान्ति के लिये सरकार हृदय से इच्छुक न हो? शान्ति कभी संगीनों की नोक से पैदा नहीं होती और यदि हमारे ऊपर विदेशियों का अधिकार बना रहना है तो कम से कम हमें उसे अपने सहयोग द्वारा स्थिर न रखना चाहिये।

हमारा ध्येयः पूर्ण—स्वतंत्रता

यदि कलकत्ता का प्रस्ताव ठीक है तो हमारा एक ही ध्येय हो सकता है। वह है-पूर्ण—स्वतन्त्रता! वैसे आज संसार में पूर्ण-स्वतन्त्रता कोई अच्छा शब्द नहीं गिना जाता। इस का अर्थ सब से अलग रहना लिया जाता है। पर मानवी सभ्यता संकीर्ण और सापेक्ष जीवन खेल भी काफी देख चुकी है। अतः हम जो 'पूर्ण स्वतन्त्रता' शब्द का व्यवहार करते हैं, वह किसी भी दशा में संसार के विशाल आदर्श का विरोधी नहीं है। हमारे लिये पूर्ण—स्वतन्त्रता का अर्थ है, ब्रिटिश परतन्त्रता और ब्रिटिश साम्राज्य वाद से पूर्णतः छुटकारा पा लेना। जब हम इस प्रकार स्वतन्त्र जांयगे, तो तब हमें इस में कुछ भी सन्देह नहीं है कि भारत संसार के सहयोग की सारी कोशिशों का स्वागत करेगा और आवश्यकता होगी, तो सारे संसार के हित के लिये अपनी स्वतन्त्रता के भी कुछ भाग का बलिदान प्रसन्नता पूर्वक कर देगा।

ब्रिटिश साम्राज्य ऐसा स्वतन्त्र दल नहीं है। वह ऐसा उस समय तक हो भी नहीं सकता, जब तक वह संसार के कई भागों के लाखों प्राणियों को गुलामी में जकड़े है। दूसरे शब्दों में, जब तक ब्रिटिश साम्राज्य का आधार साम्राज्यवाद और उस की स्थिरता का साधन दूसरों की व्यापारिक लूट है, तब तक वह एक जन-तन्त्र नहीं हो सकता। इसमें सन्देह नहीं कि आज धीरे २ ब्रिटिश साम्राज्य भी राजनैतिक परिवर्तन का शिकार हो रहा है। उस की स्थिति अस्थिर है। उसके उपनिवेशि भी कुटुम्ब के सन्तुष्ट सदस्य नहीं हैं। दक्षिणी अफ्रिका, आयर्लैंड और इजिप्ट, सभी असन्तुष्ट हैं। भारत का तो कहना ही क्या? वह तो इंग्लैंड के साम्राज्यवादी रहते कभी बराबर का भागीदार हो ही नहीं सकता। अतः जब तक इंग्लैंड साम्राज्यवाद और उसके अंगों-पांगों से रहित नहीं हो जाता, तब तक भारत को निश्चित रूप से गुलाम रहना पड़ेगा और उसकी लूट जारी रहेगी। इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्य का सम्बन्ध एक भयानक वस्तु है। यह सम्बन्ध या आलिंगन परस्पर प्रेमवश किये गए आलिंगन की तरह जीवनदाता नहीं हो सकता। वह तो, जैसा कि अब तक रहा है, मृत्यु के आलिंगन के समान ही हो सकता है।

शांति की बकवास

संसार व्यापी शांति के लिये भी बातें बनाई जा रही हैं। पैक्ट बनाए जा रहे हैं। किंतु एक ओर पैक्ट हो रहे हैं और दूसरी ओर शस्त्रास्त्रों का निर्माण बढ़ रहा है। शांति के लिये व्यावहारिक रूप से यदि कुछ किया जाता है तो वह केवल बातें बनाने से नहीं युद्ध के कारण दूर होने ही से आ सकती है। जब तक एक देश का दूसरे पर आधिपत्य रखना जारी है, तब तक उस आधिपत्य को उखाड़ फेंकने के प्रयत्न भी जारी रहेंगे ही। सार यह कि साम्राज्यवाद और पूंजीवाद में से शांति का जन्म हो ही नहीं सकता। और चूंकि बृटिश साम्राज्य की बुनियाद ही इन दोनों बातों पर लगी है और वह गरीबों को लूट कर जीता है, अतः हमारे लिये उस में सन्तोष-जनक स्थान नहीं है। हमारे लिये कोई भी चुनाव और प्लान उस समय तक उपयोगी नहीं हो सकता जब तक कि हमारे देश के ग़रीबों का बोझ हलका न हो। इतने बड़े साम्राज्य का बोझ उठाना हमारे देश के ग़रीबों की शक्ति के बाहर है। वे अब तक उसे घसीटते रहे यही आश्चर्य है। पर अब तो इस बोझ से उन की पीठ झुक गई है। उन का आत्म—विश्वास प्रायः नष्ट हो चुका है। ऐसे लोग किस प्रकार एक साम्राज्य के भागीदार बन सकते हैं, जब कि उनका लुटना जारी रहे?

भीतर भी हमें बहुत से प्रश्नों में से जिस एक बड़े प्रश्न का सामना करना है, वह है समुदाय गत हितों का, जिसे सब से अधिक ब्रिटिश सर्कार ने प्रोत्साहन दिया है। उदाहरण के लिये-देशी राजाओं के अधिकार, अंग्रेज अधिकारियों के अधिकार, अंग्रेज पूंजीपतियों के अधिकार, एवं बड़े २ ज़मीदारों के अधिकार आदि, जो हम पर जबरदस्ती लादे जाते हैं और जिनकी रक्षा के लिये, ये [illegible] रहे हैं। [illegible] जिन करोड़ों अभागों के संरक्षण की ज़रूरत है, वे कुछ हैं—बोल भी नहीं सकते। उन की ओर से बोलने वाले भी इने-गिने हैं। जब तक बृटिश साम्राज्य

(28) (29)

का पंजा इस देश में किसी भी रूप में जमा हुआ है, तब तक यह बराबर, इन समुदायों को मजबूत बनाती रहेगी और इन में से प्रत्येक हमारे मार्ग में एक रोड़ा प्रमाणित होगा और यह आवश्यकता हो तो सरकार दमन पर निर्भर कर सकती है। इस प्रकार के शासन का ही चिन्ह स्वरूप, अपने घृणास्पद एवं निन्दनीय भड़काने वाले पर्चों, मुखबिरों और भेदिया गवाहों के गुप्तचर विभाग है।

औपनिवेशिक स्वराज्य
बनाम
पूर्ण स्वतन्त्रता

इधर पूर्ण स्वतन्त्रता और औपनिवेशिक स्वराज्य के बारे में भी खूब बहस रही है। हम शब्दों पर झगड़ते रहे हैं; किन्तु हमारा ध्येय है सत्ता अपने हाथ में लेना। फिर चाहेउसे कुछ भी नाम दिया जाय। मैं नहीं मानता कि किसी भी रूप में दिया हुआ औपनिवेशिक स्वराज्य भारत को सच्ची सत्ता दे सकता है। कारण, वास्तविक सत्ता दे देने की परीक्षा तो यह होगी कि यहां से अंग्रेजी सेना सारी की सारी विदा होजाय अंग्रेजी अधिकारी भी न रहे। अतः हमें इन दो बातों पर ही अपनी सारी शक्ति लगानी चाहिये शेष सब बातें स्वतः हो जायगी।

इसी लिये हम आज भारत के लिये पूर्ण-स्वतन्त्रता प्राप्त करने के व्रती बन रहे हैं। इस कांग्रेस ने न कभी पहले अंग्रेजों के हमें किसी मार्ग पर चलाने का अधिकार स्वीकार किया है, न वह आगे करेगी। हम पार्लियामेंट से अपील भी नहीं करते। हम यदि किसी से अपील करते हैं, तो संसार भर की जनता के न्याय निष्ठ हृदय से-जगत जनार्दन से-और मुझे आशा है कि भारत शीघ्र ही यह घोषित कर सकेगा कि "वह अब किसी विदेशी शासन को सिर झुकाने को तैयार नहीं है!" हम अपनी शक्ति को भी जानते हैं, और कमजोरी को भी। आज हम चाहे काफी सशक्त न हों, किंतु किसी को भी-विशेषतः इंग्लेण्ड को हमारे इस निश्चय के बल का कम मूल्य न लगाना चाहिये। मुझे दृढ़ आशा है कि हम इस व्रत को एक पवित्र धार्मिक व्रत की तरह ग्रहण करेंगे और फिर उस से पीछे न हटेंगे। एक महान राष्ट्र सदा नहीं दबाया रक्खा जा सकता-विशेषतः

(पृष्ट ६ का शेष)

या तो आपको हमारी बात सच माननी चाहिए अथवा नहीं।

आप लोग यह कह सकते हैं कि वाइसराय अंग्रेज और है एक विदेशी सरकार का एजेन्ट है। ऐसी दशा में उसने हमारे भले के लिये कुछ किया होगा इस पर विश्वास कैसे करें? परन्तु आप को या तो हमारी बात सही माननी चाहिये या फिर नहीं। यह भी कहा गया है कि वाइसराय के कार्य्य की सराहना करना कायरता है। लेकिन मैं कहता हूं कि अपने सच्चे भावों को प्रगट न करना भी कायरता है।

स्कूल कालेज और अदालतों के बहिष्कार में भी मेरा पूर्ण विश्वास है। लेकिन मैं देश की नाड़ी को भली प्रकार देखता रहा हूं। मैं, पं० मोतीलालजी तथा कार्यकारिणी कमेटी तीनों ही पिछले अनुभव के आधार पर इसी नतीजे पर पहुंचे हैं कि स्कूलों और अदालतों के बहिष्कार को अभी देश के सामने न रक्खा जाय। हमारा पिछला अनुभव है कि बहुत कम वकील इस देश में ऐसे हैं जो अपने पेशे को छोड़ कर देश का काम करते हुए अपना गुजारा कर सकते हैं। लेकिन हमारा विश्वास है कि देश जरूर २ इन दो बहिष्कारों के लिये भी तैयार हो जायगा।

जब कि वह अपना पथ स्पष्ट देख कर दृढ़ व्रती हो चुका हो। यदि आज हम असफल होते हैं, और कल सफलता नहीं मिलती, तो परसों निश्चय ही हम आगे बढ़ेंगे और अपने लक्ष्य पर पहुचेंगे।

हम लोग झगड़े-टण्टों से तंग आ गए हैं। हम शान्तिपूर्वक अपने देश के लिये रचनात्मक काम करने को उत्सुक हैं। सोचिये, क्या हम अपने घरों को तोड़े जाने और अपने युवाओं को जेलों में जाते या सूली चढ़ते देख कर प्रसन्न हो सकते हैं? क्या किसी मज़दूर को निरर्थक हड़ताल करना और जो कुछ रूखा सूखा

(अपूर्ण)

— लन्दन ता० २८ दिसम्बर का समाचार है कि योरोप और अफ्रीका के बीच पहाड़ काट कर सीधा मार्ग निकालने का काम जनवरी मास से आरम्भ हो जायगा। इस के लिये स्पेन की सर्कार ने खर्च की और मंजूरी दे दी है।

प्रस्ताव के तीसरे भाग में जो सत्याग्रह का जिक्र है। सो मैं तो सत्याग्रह के लिये ही घूमता और जोता हूं। हिंसा कर के स्वराज्य पाने की बात को तो मैं सोच ही नहीं सकता। मेरे लिए तो सत्याग्रह ही उसकी प्राप्ति का एक मात्र शस्त्र है सुभाष बाबू के मुकाबिलेमें राष्ट्रीय सरकार का स्थापना वाली बातके लिये आपने कहा कि मैं इसका हृदय से स्वागत करता हूं। यह तो मेरे हृदयकी बात है परन्तु मेरा ख्याल है कि देश अभी इस के लिये तैयार नहीं है। भारतवर्ष सात लाख गांवों में आबाद है जहां पर प्रत्येक गांव में किसी न किसी रूप में सरकार के दो प्रतिनिधि अवश्य मौजूद हैं। परन्तु सहस्रों गांव ऐसे हैं जहां कांग्रेस का कोई नाम तक भी नहीं जानता। इस लिये जब तक कि सब लोग कांग्रेस को जान लें और हमारा सरकार और सरकार प्रेमी गांव से न रहने लगे तब तक राष्ट्रीय सरकार की बात नहीं सोची जा सकती। और यह केवल इसी लिये कि अभी हम उसके योग्य नहीं हैं। राष्ट्रीय सरकार की स्थापना कोई हंसी खेल नहीं है और न यहां पर प्रस्ताव पास करना डिबेटिंग क्लब के प्रस्ताव के समान है। अतः हम जो कुछ करें वह भली प्रकार सोच समझ कर अपनी शक्ति को देख कर करें।

महात्माजी के भाषण के पश्चात् उन के प्रस्ताव में जो १४ संशोधन पेश किये गए थे, वे वोट लेने पर एक एक करके सब के सब गिर गए। इन संशोधनों के ऊपर वोट देने के बाद सभापति जब उसके फल को बताते थे तब जय घोष के मारे सारा पण्डाल गूंज उठता था। डा० आलम के संशोधन पर लोगों में बड़ी उत्तेजना दिखाई पड़ती थी, लेकिन उनका संशोधन भी १२ वोट के बहुमत से गिर गया।

३१ ता० के कार्यवाई के समाप्त होने के बाद सभापति महोदय ने लोगों को नये वर्ष के प्रथम दिन को स्वतंत्र भारत देखने के लिये बधाई दी। पहली जनवरी को तीन प्रस्ताव पेश हुए। पहले प्रस्ताव में श्रीमती सरोजनी नायडू को उन के अफ्रीका जा कर भारतीयों के कष्ट निवारण के उद्योग करने के लिये बधाई दी गई। दूसरे प्रस्ताव में श्री रंगलाल वाला तथा योरोप में पड़े हुए अन्य भारतीयों को भारत आने के लिये पास पोर्ट न देने पर सरकार की निंदा की गई। और तीसरे प्रस्ताव में भारत सर्कार द्वारा लिये गए ऋणों को अस्वीकार कर दिया गया। इस के बाद डा० सत्यपाल का यह प्रस्ताव भी बड़े वाद-विवाद के बाद पास हो गया कि कांग्रेस का आगामी अधिवेशन कराची में दिसम्बर मास में न होकर मार्च में हो

इस प्रकार यह राष्ट्रीय महापर्व बड़े जोशो खरोश के साथ मनाया गया। विदेशों से कांग्रेस की सफलता के लिए शुभ कामना के अनेक सन्देश आये थे उन में से रूसी सरकार, साम्राज्य विरोधी संघ जापान प्रवासी रास बिहारी बोस और राजा महेन्द्र प्रताप के नाम उल्लेखनीय हैं। आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक में बंगाल के चुनाव के प्रश्न पर बड़ा झगड़ा खड़ा हो गया था। परन्तु सुभाष बाबू के क्षमा प्रार्थना पर सब झगड़ा तय हो गया। कांग्रेस के प्रधान मन्त्री श्री प्रकाश जी तथा डा० अंसारी चुने गए। कार्यकारिणी कमेटी के सदस्यों के चुनाव पर कुछ लोग बहुत ही रुष्ट हो गए। फल यह हुआ कि मालवीय जी, श्री सुभाष बाबू तथा स्वामी गोविन्दानन्द जी आदि ५० से ऊपर सदस्य आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक से रुष्ट हो कर बाहर चले आये।

नौजवान सभा कान्फरेन्स

सदा की भांति इस वर्ष भी राष्ट्रीय महासभा के अवसर पर लाहौर में अनेक सभायें और कान्फरेन्सें हुई। उन में से २६ ता० को श्रीमती सुवाशिनी देवी के सभापतित्व में नौजवान भारत सभा का अधिवेशन हुआ। उपस्थिति लगभग १५ हजार के थी। देश के भिन्न २ भागों से कोई ५०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे इस सभा के स्वागताध्यक्ष श्री रामकृष्ण जी दिल्ली बम्ब दुर्घटना के सम्बन्ध में गिरफ्तार कर लिये गए थे इस लिये आपका भाषण श्रीमती राजकुमारी जी ने पढ़ कर सुनाया। सभापति महोदया ने पूर्ण स्वराज्य के लिये जोर दिया और लाहौर षड़यन्त्र केस की सहायता के लिये ५०० रु० की सहायता सभा की ओर से दी गई।

लालाजी की मूर्त्ति का उद्घाटन

ता० २५ दिसम्बर को महात्मा गांधी ने पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की मूर्ति का उद्घाटन किया।

अखिल भारतवर्षीय दलित कान्फरेन्स

ता० २५ दिसम्बर को महात्मा गांधी के सभापतित्व में अखिल-भारत वर्षीय दलित पास हुए। पहले प्रस्ताव कान्फरेंस हुई जिसमें तीन प्रस्ताव में दलित जातियों के लिये सारी सार्वजनिक संस्थाएं, सड़कें, कुए, और सरकारी नौकरियां इसी प्रकार खुली रखने के लिये जोर दिया गया, जैसा कि अन्य जातियों के लिये है। दूसरे प्रस्ताव में मि० जयकर के छुआ-छूत निवारक बिल का हृदय से समर्थन किया गया। तीसरे प्रस्ताव में अछूतों को अपनी जाति के उत्थान के निश्चय में डटे रहने पर बधाई दी गई। सभा में उपस्थिति अच्छी थी। उपस्थित सज्जनों में डा० किचलू तथा पुरुषोत्तमदासजी टंडन के नाम उल्लेखनीय हैं।

सीमा प्रान्तीय पंजाब हिन्दू सभा

सीमा प्रान्तीय पंजाब हिन्दू सभा का अधिवेशन मि० केलकर के सभापतित्व में ता० २५ दिसम्बर को हुआ। स्वागताध्यक्ष थे राजा नरेन्द्रनाथ एम० एल० सी० स्वागताध्यक्ष के भाषण के पश्चात् मनोनीत सभापति का प्रभाव शाली भाषण हुआ। अनेक महत्व पूर्ण प्रस्ताव पास हुए।

भारतवर्षीय राष्ट्रीय सामाजिक कान्फरेन्स

रायसाहब हरबिलासजी शारदा एम.एल.ए. के सभापतित्व में भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक कान्फरेन्स बड़े समारोह पूर्वक हुई। आपका भाषण बड़ा सारगर्भित हुआ। हिन्दू समाज में प्रचलित बुराइयों और रूढ़ियों की भली प्रकार धज्जियां उड़ाई गई। अपने भाषण के अन्त में आपने नौजवानों से अपील की कि जात-पांत के बन्धनों को तोड़ फेंको। अनेक महत्व पूर्ण प्रस्तावों के बाद कान्फरेन्स समाप्त हुई।

अखिल भारतवर्षीय जात-पांत तोड़क सभा

ता० २८ दिसम्बर को श्री रामानन्द चटर्जी के सभापतित्व में अखिल भारत वर्षीय जात-पांत तोड़क कान्फरेन्स हुई। स्वागताध्यक्ष थे डा० गोकुलचन्दजी एम० ए० बैरिस्टर एट-ला। डाक्टर साहब और श्री चटर्जी महोदय ने जात-पांत के ढकोसले को तोड़ डालने की जोरदार अपील की। अनेक महत्व पूर्ण प्रस्ताव भी पास हुए।

अखिल भारतीय ईसाई कान्फरेन्स

ता० ३० दिसम्बर को रेवरेंड वी० ए० नाग एम० एल० सी० के सभापतित्व में अखिल भारतीय ईसाई कान्फरेन्स हुई। सभापति ने अपने लम्बे भाषण में कहा कि ईसाई लोग राउन्डटेबिल कान्फरेन्स का हृदय से स्वागत करते हैं। कुछ प्रस्तावों के पास होने के पश्चात् कान्फरेन्स समाप्त हुई।

खिलाफत कान्फरेन्स

अन्य कान्फरेन्सों की भांति लाहौर में इस अवसर पर खिलाफत कान्फरेन्स भी हुई। स्वागताध्यक्ष सर जुल फिकार अली खां थे। स्वागत समिति के सदस्यों में सर मुहम्मद इकबाल, सर सफी मि० सईदुद्दीन और मलिक फिरोज खां के नाम उल्लेखनीय हैं।

किसान मजदूरों का कांग्रेस पर हमला

ता० २६ दिसम्बर को लगभग तीस हजार किसान मजूरों ने कांग्रेस पंडाल में अचानक घुसने के लिये हल्ला बोल दिया। परन्तु फाटक पर ही स्वयं सेवकों ने बड़ी दृढ़ता से इनका सामना किया। इसी कारण वहां लाठियां भी खूब चलीं और फल स्वरूप तीन स्वयं सेवक बुरी तरह घायल हुए। यह समाचार तुरन्त ही नेताओं के पास पहुंचा। और डाक्टर सत्यपाल तथा डा० किचलू घटना स्थल पर पहुंच गए। पश्चात पं० जवाहरलालजी भी वहां जा पहुंचे और लोगों को समझा-बुझा-कर शान्त कर दिया। कहा जाता है कि झगड़ा प्रवेश टिकटों पर था। कांग्रेसने उन्हें एक सौ टिकट मुफ्त दिये थे और ये लोग ५०० टिकट चाहते थे पं० जवाहरलाल जी ने उन्हें विश्वास दिलाया कि वे जो कुछ कर सकते हैं सो उन के लिये करेंगे। सरदार तेजसिंह उन्हें समझा-बुझा कर वहां से हटा लेगया।

खादी प्रदर्शिनी

सदा की भांति इस अवसर पर भी प्रदर्शनी हुई। प्रदर्शनी का उद्घाटन किया सर पो० सी० राय ने। प्रदर्शिनी के मंत्री ने नेताओं से सरकार के असहानुभूतिपूर्ण व्यवहार का जिक्र करते हुए कहा कि हमने देशी राज्यों और भारतीय सरकार से भी प्रदर्शिनी में सहयोग देने के लिये प्रार्थना की थी परन्तु दोनों में से एक ने भी सहयोग नहीं दिया! प्रदर्शिनी में प्रत्येक वस्तु स्वदेशी थी।

विदेशी समाचार

—गत ता०३ जनवरी को लंदन से प्रिंस आफ वेल्स अफ्रिका की यात्रा के लिये रवाना हो गये। आप केप टाउन होते हुए जांयगे। अफ्रीका में जाकर आप शिकार खेलेंगे।

— लन्दन का समाचार है कि साइमन कमीशन की रिपोर्ट मार्च के आरम्भ में तैयार हो जायगा। कहा जाता है कि साइमन कमीशन केन्द्रीय व्यवस्थापिका के निर्माण और उसका भारत सरकार से जो सम्बन्ध रहेगा उस के निर्णय पर पहुंच गया है।

— लन्दन के सिविल एण्ड मिलिटरी गजट का कहना है कि अमेरिकन प्रजा तन्त्र के एक सदस्य इस आशय का प्रस्ताव अमेरिकन प्रजातन्त्र के सामने पेश करेंगे कि प्रजा तन्त्र के सभापति को यह अधिकार दे दिया जायगा कि वह भारत में नयी सरकार के अस्तित्व को स्वीकार कर सके।

— वायसराय पर बम्ब फेंके जाने के कारण लन्दन में बड़ी खल-बली मच गई है। सम्भवतः इसी का फल यह हुआ है कि लन्दन में पढ़ने वाले कुछ भारतीय विद्यार्थियों की बड़ी देख-रेख होने लगी है।

— ता० ३ जनवरी का लन्दन का समाचार है कि पैट्रोल की टंकी फट जाने के कारण पास में खेलते हुए एक लड़के की मृत्यु हो गई।

— लन्दन के "दी टाइम्स" पत्र का कहना है कि बाल्टिक एक्सचेंज के लिए ता. ३ दिसम्बरको दो भारतीयों को सदस्य बनाया गया। अब तक इस संस्था में केवल अंग्रेज ही सदस्य होते थे जिस के कारण भारतीय व्यापारियों के हितों को बड़ी हानि पहुंचती थी। यद्यपि अभी दो ही भारतीय इस संस्था में सम्मिलित किये गए हैं परन्तु इस से भी व्यापारियों को जो लाभ होगा वह थोड़ा नहीं है

— लन्दन का समाचार है कि पैलेस्टाइन में बेकारी बहुतायत से बढ़ रही है।

— लन्दन का समाचार है कि लाहौर कांग्रेस में शरीक होने के लिये मि० सकलतवाला को भारत आने के लिये पास पोर्ट नहीं दिया गया! और मि० कैम्पबेल मेरठ षड़यन्त्र केस की सहायता के लिये भारत आ रहे थे उन्हें भी पास पोर्ट नहीं दिया गया।

— लन्दन का १ जनवरी का समाचार है कि लन्दन के हाउस आफ लोर्ड्स की शाही गैलेरी में आगामी २१ जनवरी को जहाजी सेना के निःशस्त्रीकरण के प्रश्न पर प्रकाश डालने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय कन्फरेंस होगी। सम्राट जार्ज उस में अपना महत्वपूर्ण भाषण देंगे। आपका भाषण ब्राडकास्टिंग द्वारा सुदूरवर्तीय प्रदेशों में भी सुनाई देगा। यह भी खबर है कि स्पेन इस कांफ्रेंस में भाग नहीं लेगा। स्पेन की सरकार ने बृटिश, फ्रांसीसी और इटली की सरकार को यह लिख भेजा है कि यदि इस कांफ्रेंस में मेडीटरेनियन के प्रश्न को उठाया जाये तो स्पेन के हितों पर पूरा २ ध्यान रक्खा जाय। फ्रांस नेभी अपना एक मेमोरेण्डम अंग्रेजी सरकार के पास भेजा है और उस की एक २ कापी अमेरिका, जापान और इटली को भी भेज दी है। इस मेमोरेंडम में कहा गया है कि जहाजी सेना के निशस्त्रीकरण का प्रश्न तो एक आम प्रश्न है जो राष्ट्रसंघ द्वारा ही तै किया जा सकता है। दूसरे जल सेना, थल सेना और हवाई सेना के प्रश्न बिल्कुल स्वतन्त्र प्रश्न हैं। तीसरे फ्रांस की अपनी जहाजों की मांग अपनी आवश्यकता के अनुसार होगी। चौथे जहाजी सेना के निःशस्त्रीकरण के प्रश्न पर बिलकुल स्वतन्त्र रूप से विचार करते समय हर एक देश की रक्षा को भी ध्यान में रक्खा जाय।

— लन्दन में उद्योग-धन्धों में शांति स्थापना के लिये बड़ा यत्न हो रहा है। ट्रेड यूनियन कांग्रेस, फेडरेशन आफ बृटिश इंडस्ट्रीज और फेडरेशन आफ एम्प्लायरस आरगनीजेशन ने मिल कर पारस्परिक सहयोग की बात को स्वीकार कर लिया है। इन का मुख्य काम होगा उद्योग धंधे में बेकारी की समस्या को हल करना।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA



राजस्थानी डाक का थैला

कोटा

"तरुण" के किसी पिछले अंक में 'गर्ल स्कूल में मर्दमास्टर' शीर्षक जो लेख छपा था वह बिल्कुल सत्य था। अब नगर के कुछ प्रतिष्ठित २ सज्जन, जिन की बालिकाएं उक्त कन्या पाठशाला में पढ़ती हैं, महकमा डाइरेक्टरी में एक प्रार्थना पत्र इसके विरुद्ध भेजने की तैयारी कर रहे हैं। कन्या पाठशाला में पुरुष अध्यापक के प्रवेश से सभी लोग असन्तुष्ट हैं। यदि महकमा डाइरेक्टरी के यहां सुनवाई न हुई तो फिर वे लोग श्री० महारानीजी साहिबा की सेवा में अपना प्रार्थना पत्र भेजेंगे। परन्तु हमारा विश्वास है कि डाइरेक्टर साहब बुद्धिमान आदमी हैं, अतः वे इस तनिक सी बात को आगे बढ़ने देने का मौका न देकर अपनी दूरदर्शिता [illegible] चय देंगे। —एक अभिभावक

जच्चाखाने की आवश्यकता

वैसे तो कोटा राज्य ने विवाह-कानून भी बना दिया और विधवा विवाह—सहायक-सभा के प्रयत्न से कई विधवा विवाह भी हो गये, परन्तु इस से कोटा राज्य में विधवाओं द्वारा होने वाली आये दिन की भ्रूण-हत्यायें बन्द नहीं हुई। अब स्थानीय पुलिस को प्रत्येक मास में दो-चार भ्रूण हत्याओं के समाचार मिल ही जाते हैं। न मालूम कितनी ऐसी भ्रूण हत्यायें होती होंगी, जिन की खबर किसी को भी न लग पाती होगी। ऐसी अवस्था में जब कि समाज का इतना पतन हो गया है कि उस की आत्मा इन हत्याओं से कम्पायमान नहीं होती तो राज्य-सत्ता का यह कर्त्तव्य है कि वह इस के लिये दूसरा उपाय करे। और वह है एक "प्रसूती गृह" अर्थात् जच्चा खाने का खोल देना। जिसमें समाज के नराधमों की शिकार बेचारी विधवायें आकर अपने गर्भ की रक्षा कर सकें। प्रत्येक दृष्टि से यह कार्य बड़ा ही महत्व पूर्ण है। क्या हम आशा करें कि कोटा राज्य का ध्यान इस ओर जायगा और श्री महाराज कुमार साहब की शादी में जो लाखों रुपया वह व्यय करने वाला है अतः उस का कुछ भाग इस पुण्य कार्य में भी लगा कर यश और पुण्य का भागी बनेगा? एक राजभक्त

इन्द्रगढ़ मिल की योजना

लग भग दो साल से इन्द्रगढ़ में कपड़े का मिल खोले जाने की योजना लम्बे चौड़े पैमाने पर हो रही है। परन्तु मिल अभी तक नहीं खुल सका। अब खुलेगा भी कि नहीं, इस का भी कोई ठीक समय निश्चय नहीं! इस सम्बन्ध में लोगों को करतूतों पर हम पूरी जांच करके ही प्रकाश डालेंगे। —एक भेदिया

म्यूनिसिपैलिटी का चुनाव

कोटा म्यूनिसिपैलिटी के चेयरमेन के चुनाव के सम्बन्ध में यह निश्चय रहा कि इस वर्ष प० पुरुषोत्तमराव साहब ही बोर्ड के चेयरमैन रहें। परन्तु आगामी जलसे में नया चुनाव फिर होगा। उस में प्रजा अपना चेयरमैन चुन लेगी। लेकिन सुना जाता है कि पंडित पुरुषोत्तमरावजी ने जुलाई तक चेयरमैन रहना अस्वीकार कर दिया है। देखें, और क्या २ होता है?

—एक सम्वाददाता

गोचर भूमि की आवश्यकता

यहां आज कल गायों की बड़ी दुर्दशा हो रही है। इसका करण है उन के लिये उचित प्रबन्ध का न होना। चरागाहें न होने से गायें इधर उधर मारी २ फिरा करती हैं। इन के इस प्रकार फिरने का एक कारण यह भी है कि कुछ नामधारी धर्मात्मा बज़ारों में गायों के लिये चारा डलवा देते हैं। इस कारण गायों के मालिक भी ढील डाले रहते हैं। अकसर है कि इधर म्यूनिसिपलिटी के कुछ कर्मचारी उन लोगों को गायों को कांजी हाउस में घेर कर रख आते हैं तो उन को प्रति मास कुछ भेंट नहीं करते! सेक्रेटरी साहब का भी कुछ प्रभाव नहीं है। अतः प्रबन्ध में बड़ी गड़बड़ी है। इस का एक उदाहरण यह है कि बाजार में चारा न डलवाने के हुक्म पर लोग बिगड़ खड़े होते हैं और इस हुक्म को रद्द कर देने के लिये अर्ज़ियां दे देते हैं। इस का फल यह है कि गायों के साथ २ बकरे और बकरी भी इधर-उधर मारे २ फिरा करते हैं। अभी उस दिन श्री कोटा नरेश ने इस कुप्रबन्ध को स्वयं अपनी आंखों से देख लिया। सारे नगर में गाय-बकरी मारी २ फिरती थीं और तांगे वाले रामपुरे बाजार को रोके खड़े थे! इत्यादि। इस कुप्रबन्ध से लोगों को बड़ी असुविधा होती है। गाय वालों को चाहिये कि वे गायों के लिये चारा का प्रबन्ध करके उन्हें घर पर बांध कर रखें। साथ ही राज्य को भी गायों के चरने के लिये नगर के आसपास ही चरागाह का इन्तज़ाम कर देना उचित है। नगर के धर्मात्मा सेठ लोगों को चाहिये कि वे गायों के लिये बाज़ार में चारा न डलवा कर गौशाला में डलवा दिया करें।

—एक कोटा निवासी

जोधपुर

नागोर में गीता जयंती

स्थानीय श्री गीता जयन्ती की कार्य समिति की ओर से मिति मार्ग शीर्ष ११ गुरुवार को समिति-भवन में श्री गीता जयन्ती मनाई गई। जिसमें निम्न प्रकार से कार्य हुए:-

सवरे १० बजे से १२ बजे तक श्री गीता जी की पुस्तक का पूजन व पठन हुआ, १२ बजे गीता जी की पुस्तक रथ में विराज मान कर के शहर के मुख्य २ रास्तों से सवारी का जलूस निकाला गया, सवारी के साथ दो भजन मंडलियां भी थीं, जिन्होंने धार्मिक व सामाजिक भजन गाये। जुलूस शहर में घूमता हुआ ठीक ५॥ बजे निज स्थान पर पहुंचा। पश्चात् रात को सात बजे से १०॥ बजे तक समिति भवन में श्रीमान वेद भूषण पं० बद्री प्रसाद जी महोदय के सभापतित्व में सभा हुई, जिसमें गीता व धार्मिक विषय पर कई वक्ताओं के व्याख्यान व भजन हुए। उपस्थिति ५०० के लगभग थी। व्याख्यानों व भजनों का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

व्यास भगवती प्रसाद साद
मन्त्री श्री गीता जयन्ती कार्य समिति

मकराना

भैसोदा मण्डी

ता० १-१२-२९ के 'सन्देश' में भैसोदा मण्डी में आम रास्ते पर शराब की दुकान खुलवाने का जो समाचार छपा था उस के फल स्वरूप कस्टम विभाग के सुपरिन्टेण्डेन्ट महोदय ने उस दुकान को आम रास्ते पर से हटवा दिया। आपके इस सुप्रबन्ध से जनता को बड़ी प्रसन्नता हुई और वह उन की बड़ी कृतज्ञ है।

—गश्ती सम्वाददाता

नीमच छावनी में मद्यपान निषेध

पिछले कई दिनों से रविदास जाटव सभा नीमच के कार्यकर्ता श्री धनीरामजी के उद्योग से इन्दौर, रतनीपुर आदि स्थानों में मद्यपान निषेध का प्रचार हुआ। जाटव युवकों की एक महती सभा हुई जिसमें युवक मण्डली की स्थापना हुई। ६ सदस्य बने। १० युवकों ने मद्यपान न करने की प्रतिज्ञा की। सभा में महिलाएं भी थीं। पदाधिकारियों के निर्वाचन के बाद सभा विसर्जित हुई।

—एक जानकार

भरतपुर

जाट युवकों में बेचैनी

ता० १-१२-२९ को आगरे में आंगई के रईस कुं० हुकमसिंहजी एम. एल. सी. के सभापतित्व में जाट नवयुवक सम्मेलन बड़े समारोह से मनाया गया। ७ प्रस्ताव पास हुए। पहले प्रस्ताव में भरतपुर के स्वर्गीय महाराज कृष्णसिंहजी बहादुर तथा स्वर्गीय महारानी साहिबा तथा श्रीमान महाराज रामसिंहजी की अकाल मृत्यु पर शोक प्रगट किया गया, और उन की आत्मा को सद्गति के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई। साथ ही दुःखित राजकुमारों और राजकुमारियों से उन के दुःख में सहानुभूति प्रकट की गई। दूसरे प्रस्ताव में भारतमाता को सपूत, हिन्दू जाति के प्राण तथा शुद्धि और अछूतोद्धार के प्रमुख कार्यकर्ता श्रद्धास्पद ठा० माधवसिंहजी को असामयिक मृत्यु पर महान शोक प्रगट किया गया, उनकी आत्मा की सद्गति के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई तथा उनके दुःखित परिवार के साथ सहानुभूति प्रकट की गई। तीसरे प्रस्ताव में भरतपुर के बालक महाराजा तथा उनके भ्राताओं को विलायत भेजे जाने के समाचार पर घोर असन्तोष प्रकट किया गया और जाट महासभा से प्रार्थना की गई कि राजकुमारों को उनके माता-पिता की वर्षों से पूर्व वापिस बुलाने का प्रयत्न करे। साथ ही यह भी चेतावनी

दी गई कि यदि ऐसा न किया गया तो इस से जाट नवयुवकों में भारी असन्तोष फैलेगा और वे फिर राजकुमारों को वापिस बुलाने में प्रत्येक उचित उपाय काममें लावेंगे। चौथे प्रस्ताव में जाट महासभा से प्रार्थना की गई कि वह भरतपुर की पजा के दुःख दूर करने के लिये भरतपुर में एक जल्सा करें।

—सम्वाददाता

सीतामऊ

के महाराज के नाम खुली चिट्ठी

श्रीमान महाराजा साहब!

सीतामऊ राज्य में प्रजा नाना-प्रकार के कष्टों से पीड़ित है। उसमें भी किसानों को तो सब से अधिक कष्ट है। जिन किसानों के द्रव्य से महाराज ने कुंवर साहब के विवाह में लाखों रुपये खर्च किये, नये २ महल निर्माण कराये, बीकानेर नरेश तथा देवास के महाराज के स्वागत में सहस्रों रुपया व्यय किया, सहस्त्र रुपया आतिश बाज़ी में फूंक दिया और बिजली लगाने में खूब धन व्यय किया उन्हीं किसानों को अपार दुःख सहने पड़ रहे हैं। लगान में एक अन्नी अधिक वसूल की जाती है। [illegible] स्कूल का [illegible] भार भी किसानों के सिर पर है। यद्यपि इस स्कूल में राजकुमार और अहलकारों के लड़के ही पढ़ते हैं। लदुणा में किसानों को तालाब टैक्स, मकान टैक्स और हल पीछे ३॥) रु० अतिरिक्त और देना पड़ता है पिछले वर्ष किसानों से फी घर: एक मन गल्ला वसूल किया गया। दूसरे साल इसी गल्ले को हमें सवाये पर देकर बढ़ाया गया। गत महायुद्ध में बृटिश सरकार ने जो कर्ज राजा-महाराजाओं से लिया था, उसे महाराज ने प्रजा से फी टिकिट ७॥।) रुपये के हिसाब से वसूल किया था। परन्तु लड़ाई समाप्त होते ही बृटिश सरकार ने मय सूद के सब रुपया लौटा दिया। परन्तु महाराज! आपने तो उसे खजाने में रख कर बैंक कायम कर दिया, जिस में किसानों को सूद दर सूद पर रुपया दिया जाता है। इस प्रकार यहां के कृषक-वर्ग को महान दुःखों का सामना करना पड़ रहा है। हमारी श्री महाराज से प्रार्थना है कि वे हमारे कष्टों की ओर ध्यान देने की कृपा करें।

विनीत सरदारसिंह
सीतामऊ स्टेट निवासी

[नोट—हम उपरोक्त चिट्ठी का ओर सीतामऊ के महाराजा का ध्यान आकर्षित करते हैं। महाराजा साहब बड़े शिक्षित और उदार चित्त हैं। उनके समय में कृषक वर्ग का इस तरह पीड़ित रहना आश्चर्य की सी बात है। आशा है महाराज साहब अपने राज्य की पीड़ित जनता के कष्ट दूर करने में कोई बात उठा न रक्खेंगे। सम्पादक]

भोपाल में हिंदू कार्य कर्ताओं की जान खतरे में

भोपाल राज्य में वर्तमान नवाब साहबके शासन कालमें जनताको उतना कष्ट नहीं है जितना कि पहिले था। आपकी नीति सर्वदा निष्पक्ष रही है। परन्तु पिछले दिनों से अशिक्षित मुसलमानों में यह गलत धारणा फ़ैल गई है कि प्रत्येक खादी पहनने वाला आर्य समाजी है। इधर पिछले दिनों में पुराने मुस्लिम पक्षपाती शासन की क्रूरता से जो लोग जबरदस्ती मुसलमान बना लिये गये थे वे अब शुद्ध होने लगे थे। इसी लिये वहां का अशिक्षित मुसलमान दल क्रुद्ध हो उठा और आर्य समाजियों को हर प्रकार से कष्ट पहुँचाने लगा। पुलिस ने भी कान में तेल डाल लिया! जिसका फल यह हुआ कि कुं० विट्ठलदास जैसे प्रतिष्ठित सज्जनों तक पर प्रहार हुआ अब इन गुण्डों का सर और भी उठा है और उन्होंने निम्न लिखित ऐलान प्रकाशित किया है जो अपनी भयंकर कहानी आप ही कह रहा है। हम नवाब साहब का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए पुलिस का इन गुण्डों का पता लगाने के लिये कटिबद्ध हो जाना चाहते हैं। ऐलान नीचे दिया जाता है:—

राकिम सेक्रेटरी अंजुमन औरंगजेब ऐलान

"हमारी अंजुमन कई तरीक से काफिरों को आगाही दे चुकी है, लेकिन अब भी कुफ्फार इस्लाम के खिलाफ कार्रवाइयां कर रहे हैं। हम मामूली ताकत नहीं रखते, हमारी अंजुमन के साथ इस्लाम का बच्चा २ काफिरों को मारने के लिये तय्यार है। विट्ठलदास को पीटे जाने के मामले में हुकूमत कोई कार्रवाई न करे, वरना हम हुकूमत के बिल्कुल खिलाफ हो जायंगे। जेल के अशखास को मारे जाने का हुकुम हमारी कमेटी से सादिर हुआ है। जो कि क़रीब ही मारे जांयगे।

(१) पं० शिवनरायण (२) लक्ष्मण अय्या (३) वक़्काल बृजमोहन (४) मुल्कराज (५) मास्टर लाल सिंह (६) वक़्काल विट्ठल दास (७) वक़्काल राय मूलचन्द (८) खजांची रियासत

इन्दौर

इन्दौर में मोटर दुर्घटना

गत ७—१२—२९ को इन्दौर में भंवर कुआ नाका पर दो मोटरें आपस में टकरा गईं, जिस के कारण ३ मनुष्य मरे और अनेक घायल हुए। लोगों की धारणा है कि यह दुर्घटना मोटर ड्राइवरों की लापरवाही के कारण ही हुई है। आशा है सरकार इस विषय में उचित कार्रवाही करेगी और ऐसी व्यवस्था कर देगी कि भविष्य में ऐसी दुर्घटना होना असम्भव हो जाय। एक दर्शक

रूई पर नया कर

इन्दौर में यह नियम तो पहले ही से था कि प्रत्येक ख़रीददार और बेचने वाले को फी मन चार आना के हिसाब से चुंगी देनी पड़ती थी। फिर चाहे एक ही सौदा कितनी ही बार क्यों न बेचा और ख़रीदा जाय। जितनी बार उस सौदे की खरीद फरोख्त होती थी उतनी ही बार खरीदने और बेचने वाले को ऊपर बताई गई दर से महसूल [illegible] पड़ता था! लेकिन इन्दौर म्यूनिसिपल बोर्ड का इतने पर भी पेट नहीं भरा। अब उस ने एक नया कर लगाया है। उस के अनुसार गांव से आने वाले रुई के बोरों पर, फी बोरा एक आना के हिसाब से, व्यापारियों से और वसूल किया जायगा! इस प्रकार इन्दौर म्युनीसिपलिटी को १०—१२ हज़ार साल की एक नई आमदनी और हो गई। परन्तु इस आय को वे किस सार्वजनिक हित के काम में लगायंगे? इन्दौर की जनता में और विशेष कर व्यापारी-वर्ग में तो इस नए कर के लगा देने से घोर असन्तोष है। क्या युवक महाराजा इस ओर ध्यान दे कर प्रजा के असन्तोष और कष्ट को दूर करने की कृपा करेंगे?

—एक सम्वादाता

जरूरत है।

हर शहरों में एजेण्टों की नियम मंगा कर देखिये।

५००) इनाम

महात्मा प्रदत्त श्वेत कुष्ट (सफ़ेदी) की अद्भुत बनौषधि। तीन दिन में पूरा आराम। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा कर थक गए हों तो इसे लगावें। बेफायदा साबित करने पर ५००) इनाम। जिन्हें विश्वास न हो, वे ≈) का टिकट लगा कर शर्त लिखा लें। मूल्य २)

अखिल किशोर राम नम्बर ३५
पो० कतरी सराय, (गया)

यदि आपको

कम्युनिज्म और ईसाई धर्म का

रहस्य जानना है, तो ये तीन पुस्तकें पढ़िये:—

COMMUNISM and CHRISTIANISM
सजिल्द मूल्य १॥।)

THE BANKRUPTCY of CHRISTIAN SUPERNATURALISM
मूल्य १॥) रु०

[illegible]y Hercey सजिल्द मूल्य ४)

इनके ग्यारह संस्करण कई कई लाख के छप चुके हैं। एक इसी बातसे पुस्तकों का महत्व समझा जा सकता है।

प्रकाशक और विक्रेता—दि ब्रैडफोर्ड-ब्राउन एजुकेशन कम्पनी
Gollion Ohio (U. S. A.)

भारत के सोल एजेण्ट—
"राजस्थान प्रकाशन भवन" अजमेर

करामात

चाहे जिस मृतक पुरुष की आत्मा से बात चीत करके चाहे जैसा गुप्त भेद और तीनों काल का हाल जानने की इसमें सच्ची रीतियों का वर्णन है मूल्य १॥) खर्च सहित। प्राचीन इन्द्रजाल मूल्य २॥) बूटी प्रचार मूल्य १॥) यन्त्र भण्डार १॥) १४ विद्या १।) पंचरत्न १।) रु०

बी० आर पबलिशर (रा) अलीगढ़

श्री. पथिकजी लिखित
'What Are Indian States'

नामक पुस्तक पढ़िये।

यह देशी राज्यों की वर्तमान स्थिति का

नंगा चित्र है,

कुछ सम्मतियां लीजिये :

मैंने आपकी पुस्तक पढ़ी। बड़ी रुचिकर प्रतीत हुई। अब दुबारा पढ़ रहा हूं
बिशप विलियम मार्ण्ट गौमरी ब्राउन डी. डी.
ग्रेलिन ओहियो (अमेरिका)

पुस्तक अध्ययन करने योग्य है।
सम्पादक "दि सण्डे वर्कर" (लन्दन)

पथिकजी ने देशीराज्यों की जिस अवस्था पर से पर्दा उठाया है उसे साधारण अंग्रेज जनता बिलकुल नहीं जानती। इसके प्रचार की आवश्यकता है।
एडवर्ड थाम्पसन
(दि अदर साइड आफ दि मेडल—के लेखक)

पथिकजी की पुस्तक में लिखी बातें ९९ प्रति शत अंग्रेज नहीं जानते। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि इस पुस्तक का खूब प्रचार हो तो राज्यों की प्रजा के पक्ष में प्रबल लोकमत पैदा हो जायगा।
(मन्त्री संगठन [illegible] फ यू.)

यह एक ऐसी पुस्तक है [illegible] को पढ़ना चाहिये। मुझे आशा है कि [illegible] पर अच्छा प्रभाव डालेगी।
(लैबो कोलोनिस्ट के प्रतिनिधि, और वर्कर्स मन्थली के सम्पादक)

आपकी पुस्तक इंग्लैंड में राज्यों के प्रचार का विष अवश्य कम करेगी। दुर्भाग्य वश उसका अधिक प्रचार नहीं हो सका है।
टी. पी. सोन्हा
(इण्डिपेण्डेण्ट लेबर पार्टी के भारतीय सलाहकार)

आपकी पुस्तक बहुमूल्य सूचनाओं से भरी है और मुझे उसे पढ़ कर राज्यों की गरीब प्रजा से गहरा सहानुभूति पैदा हुई है।
ऐलेक्स गौसिप
ऐलेक्स गौसिप
प्रधान मन्त्री, नेशनल अमलगमेटेड प्लं० ट्रेडस ऐसोसियेशन।

\+ + + + +

मूल्य केवल २) है, डाकखर्च अलग

राजस्थान-प्रकाशन भवन अजमेर



इसनोफेल

मेलेरिया और पारी से आने वाले ज्वरों

की शर्तिया दवा। सब केमिस्टों से प्राप्त। सावधान—पीले लेबिल लगे हुए डिब्बे खरीदिये, जिस पर यह भी लिखा हो special formula for India (भारत की समस्या का विशेष उपाय) और उस पर लाल चिन्ह हों। दूसरे लेबिलों की डिब्बी न खरीदिये।
सोल एजेण्ट—मिसर्स गोरियो लिमि० पो० ओ० बाक्स नं० २६६ फोर्ट बम्बई

क्या आप सस्ती और बढ़िया छपाई चाहते हैं?
यदि हां, तो एक बार
"सन्देश मुद्रण कुटीर"
में
आकर परीक्षा कीजिये।

सब प्रकार की किताबों के लिये
दि बिजिनेस हाउस ग्रेन्थम
को लिखिये
एक बार मंगाने पर फिर
आप
दूसरे से न मंगायेंगे।

मज़दूर

क्या आप मजदूर हैं? यदि हां, तो क्या आप यह जानना चाहते हैं कि आपके क्या २ अधिकार हैं? आप की दशा कैसे सुधर सकती है? यदि जानना चाहते हैं तो आज ही मजदूर के ग्राहक बनिये। मूल्य २) वार्षिक।
[illegible]

सब प्रकार के कन्नी

सामान
बर्तन, फर्निचर, आरायश की सामग्री सस्ती और टिकाऊ लेनी हो तो
हमसे पत्र व्यवहार कीजियेः—
ऐलेन ब्रादर्स, बम्बई नं० २

राजस्थान संदेश
में
विज्ञापन क्यों देना चाहिये?

इस लिये कि राजपूताने के घरों में यह सर्वोत्तम पत्र है इसमें विज्ञापन देने से जो लाभ होता है वह दूसरे उपायों से नहीं हो सकता। विशेष बात चीत के लिये मैनेजर से पत्र व्यवहार करिये।
प्रबन्धक
राजस्थान-सन्देश
अजमेर

"गाण्डीव"

गांडीव साहित्य मन्दिर का (गुजराती) बाल साहित्य और दूसरी पुस्तकें रेल्वे स्टेशनों पर वहीलर के बुकस्टालों से मिल सकें, ऐसा प्रबन्ध किया गया है। खंडवा, रतलाम, आकोला, लोणावला, नासिक रोड, पूनादिस्टेशनों पर बिकता है। खंडवादि शहर निवासी जो सज्जन इच्छा रखें वे बिना पोस्टेज स्टेशन से मंगा सकते हैं। गुजराती बन्धु इस प्रयास को उत्तेजना देंगे, ऐसी आशा है।
प्रबंधक—गांडीव साहित्य मन्दिर
सूरत

हेलेन [illegible] कम्पनी, चिकोगो
का
[illegible]

रिंग

मुर्दे को ज़िन्दा बनाता है।
सब दवा फरोशों से
मिलता है।

हजारों अंधों ने नेत्र पाया
किससे?

नेत्र सञ्जीवन

अंजन से

यह अंजन महात्माओं का दिया है। और कठिन से कठिन जाला, पर्दा, मोतिया, ढलका, नजला, कमजोरी आदि सब रोगों को दूर करके चश्मे लगाने वाले का चश्मा छुड़ा देता है। हमारे कारखाने में आकर दिन में दो बार मुफ्त अंजन लगा कर परीक्षा कर सकते हैं। वी. पी. से माल मंगाने से दाम १।) शीशी डाक महसूल अलग। तीन शीशी पर डाक व्यय माफ। आज ही पत्र लिख कर एक या तीन शीशी मंगाइये।
पता—नेत्र संजीवन कार्यालय
नं० ६ पींजरा पोल बम्बई नं० ४

टटका समाचार

"बुढ़ापा" की प्रशंसा !!

कानपुर २७--६--२९

हिन्दी के प्रसिद्ध गल्प लेखक 'मां', 'भिखारिणी" आदि उपन्यासों तथा सैकड़ों गल्पों तथा 'भीष्म' नाटक के रचयिता पण्डित विश्वम्भरनाथजी शर्मा कौशिक ने उस दिन "मधुकरी" उलटने के बाद उसके यशस्वी संग्रह-कर्ता को एक पत्र लिखा और उसमें लिखा—

"...पृष्ठ उलटने लगा, सहसा नेत्रों के सामने बड़े बड़े अक्षरों में "बुढ़ापा" आ कूदा। दो-चार लाइनें पढ़ीं, उँगलियां पृष्ठ पलटने के लिये बेचैन हो रही थीं, परन्तु नेत्रों ने उंगलियोंका साथ छोड़ कर बुढ़ापे को देखना आरम्भ कर दिया। उफ़। उसे देख कर तो मैं सिहर उठा! उग्रजी ऐसा नवयुवक भी बुढ़ापे का ऐसा भयानक चित्र खींच सकता है! सोचा, उग्रजी का शरीर तरुण है परन्तु हृदय के किसी कोने में बुढ़ापे का अङ्कुर प्रस्फुटित हो रहा है। तभी तो बुढ़ापे का इतना सम्पूर्ण चित्र खींचने में सफल हुए...।"

उग्र-लिखित "बुढ़ापा" कहां है ?

इन्द्रधनुष में इन्द्रधनुष में

(मूल्य १॥)

इन्द्रधनुष में इन्द्रधनुष में

इन्द्रधनुष की एक एक रचना में आधुनिक हिंदी के जागरण का जाज्वल्यमान उथल-पुथल है।

उग्र-रचित

अन्य विख्यात, हाहाकार-भरी पुस्तकें

इन्द्रधनुष १॥) बलात्कार १॥) बुधुआ की बेटी ३)
सचित्र, विचित्र उपन्यास) निर्लज्जा १॥) चार बेचारे १॥) चाकलेट १)
चन्द हसीनों के खुतूत ॥।) चिनगारियां १॥) (सरकार द्वारा ज़ब्त!) दिल्ली का दलाल १॥) दोज़ख की आग १॥)

मिलने का पता—बीसवीं सदी पुस्तकालय, गऊघाट, पिर्जापुर, सिटी।

आरोग्य [illegible] का [illegible]र

राजस्थान के प्रख्यात राजवैद्य पं० रामचन्द्र शर्मा अध्यक्ष श्री राजस्थान आयुर्वेदि[illegible] अजमेर, की परम्परागत् प्राप्त, सहस्रों बार अनुभूत, परम लाभकारी और सब के सेवनोपयोगी भारत सर्कार से रजिस्टर्ड पेटेन्ट औषधियां, जिनके रामबाण वत् लाभ के साक्षीभूत राजा-महाराजा सामन्त और उद्भट विद्वानों के हज़ारों प्रशंसा पत्र प्रस्तुत हैं :—

दन्तामृत मञ्जन

यह पायोरिया आदि दांत और मसूड़ों के सब रोगों को नाश करने वाला आयुर्वैदिक वैज्ञानिक विधि से निर्मित, शुद्ध स्वदेशी, मस्त सुगन्धियुक्त दंत मञ्जन है। इसके व्यवहार से दांतों के सब रोग दूर होकर दांत मज़बूत और चमकीले और मुख सुगन्धियुक्त हो जाते हैं। सदा व्यवहार करने योग्य सर्वोपयोगी दंत मञ्जन है। परीक्षा कर लाभ उठाइए।

मूल्यप्रति छोटी शीशी ।)
" " बड़ी शीशी ॥)

केश कल्पद्रुम तैल

आयुर्वेदिक वैज्ञानिक विधि द्वारा निर्मित, मस्तिष्कोपयोगी बादाम काहु, कडू, खोपरा, तिल्ली आदि तैलों से युक्त एवम् ब्राह्मी आंवला आदि मस्तिष्कोपयोगी वनस्पतियों से परिपाचित सुगन्धित मसाले और पुष्पों से सुवासित मस्त सुगन्धियुक्त यह केश-तैल सदा व्यवहार करने में अद्वितीय है। इसके सेवन से मस्तिष्क की क्षीणता तथा तज्जन्य निर्बलता और उसी से उत्पन्न होने वाले अनेकद रोग जैसे शिर दर्द, बालों का असमय पकना व गिरना आदि नाश होते हैं। राजा, महाराजा और सर्व साधारण ने इसे सदा व्यवहार करने को अपनाया है। परीक्षा कर लाभ उठाइये।

मूल्य प्रति शीशी १) रुपया
एक पौंड की बोतल, कीमत ४) रु०

अग्निवर्द्धक चूर्ण

अपाचन के समस्त के समस्त विकार, अरुचि, पेट का दर्द, अजीर्ण, मनन्दाप्त, संग्रहणी आदि सब रोगों को समूल नाश करता है। सेवन से देश विदेश के जल के विकार का डर नहीं रहता है और खाने में बड़ा स्वादु और रुचिकर है।

मूल्य १० तोले की डिब्बी के ॥≈) मात्र

इनके अतिरिक्त इस प्रसिद्ध औषधालय में आयुर्वेद शास्त्र सिद्ध चीनी के बने फलों के शर्बत, मुरब्बे, पाकादि हर समय प्रस्तुत रहते हैं जिनका सूचीपत्र मंगाने पर मुफ्त भेजा जाता है। एजेन्टों के लिये विशेष सुविधायें हैं। पत्र व्यवहार करें।

प्रबन्धकर्ता
श्री राजस्थान आयुर्वेदिक औषधालय
अजमेर

तार का पता
वैद्यराज रामचन्द्र अजमेर

"सन्देश मुद्रण कुटीर" में विजयसिंह पथिक द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA



प्रति अङ्क ।)

इच्छा हो वा कि अनिच्छा हो, हो प्रेम कि इस से द्वेष तुम्हें,
है जीना तो सुनना होगा, नूतन—युग का "संदेश" तुम्हें।

वार्षिक ३।) मूल्य

वर्ष १ अजमेर चैत्र शुक्ला ५ सम्वत १९८६ शनिवार ५ अप्रेल १९३० ईस्वी ४४ वां

६ अप्रेल को कूच का डङ्का बजा दो

ता० ३ अप्रेल को महात्मा गांधी नवसारी पहुंच गये। एक महती सभा में भाषण करते हुए आपने कहा है कि देश भर में ६ ता० से सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया जाय। आगे चल कर आपने कहा कि या तो मैं अपनी इच्छित वस्तु को प्राप्त करके लौटूंगा और या फिर मेरी लाश समुद्र में तैरती हुई मिलेगी।

—बीजागापट्टम से सत्याग्रहियों का पहला जत्था रवाना हो गया।

—भूलवाड़ का समाचार है कि मि० क्लार्क के नेतृत्व में जी० आई० पी० रेलवे के ३२ हड़तालियों ने खंडवा स्टेशन के निकट रेलवे लाइन पर खड़े होने का सत्याग्रह किया। इसके कारण एक माल-गाड़ी बहुत देर तक रुकी रही। पुलिस ने इन सब लोगों को गिरफ्तार कर लिया। ये लोग यूनियन की जय बोलते २ जेल चले गये। अगले दिन एक दूसरा जत्था भी सत्याग्रह करने के लिए जाने वाला था।

जोधपुर में छात्रों की अपूर्व विजय

[हमारे खास संवाददाता द्वारा]

जोधपुर ४-४-३०

जसवंत कालेज के दो विद्यार्थी—मदनमोहन और [illegible] खादी के वस्त्र पहन कर पढ़ने को जाया करते थे। अतः अधिकारियों की आंखों में ये एक मुद्दत से खटकने लगे। कहते हैं कि गत शनिवार को जब ये लोग परीक्षा देने को कालेज में गये, तो मि० काक्स ने इन्हें ऐसा करने के लिए डांटते हुए कहा—"यदि कल ऐसे कपड़े पहिन कर कालेज में आओगे तो परीक्षा भवन से बाहर कर दिये जाओगे!" पर ऐसी निरर्थक बातों को भला ये खादी भक्त कब मानने वाले थे? दूसरे दिन अधिकारियों ने देखा कि करीब २०-२५ विद्यार्थी गांधी कैप और खादी के अन्य वस्त्र धारण किए हुए खड़े हैं। खादी के विरोधियों के हृदय में एक दम हड़कम्प पैदा हो गई और पराजित-हृदय से उन्होंने सब छात्रों को परीक्षा भवन में बैठने की आज्ञा दे दी!!

पुलिस प्रबन्ध का नमूना

पुलिस की बद इन्तजामी का एक नमूना 'सन्देश' के पाठक किसी पिछले अङ्क में पढ़ चुके हैं। अब समाचार मिले हैं कि खास सिटी पुलिस स्टेशन के पास ही पिछले १५-२० दिनों में बीस से ऊपर चोरियां हो चुकी हैं। तिस पर भी दिल्लगी यह कि सन्देह में बेचारे प्रतिष्ठित व्यक्तियों को ही हिरासत में रख कर बेतों से पीटा जाता है।

राष्ट्रीय-सप्ताह।

अजमेर में राष्ट्रीय सप्ताह के लिये नीचे लिखा कार्यक्रम निश्चित किया गया है:—

प्रातःकाल ५ बजे से ६ बजे तक—राष्ट्रीय भजन।

८ बजे से १०॥ बजे तक तथा ४ से ६ तक—कांग्रेस के मेम्बर बनाना तथा सत्याग्रहियों के नाम दर्ज करना।

सायंकाल ८ से १० तक—सभा।

शहर में ८, १० स्थानों पर सभायें होंगी। जो भाई इन भजन मंडलियों में शामिल होना चाहें, वे अपने नाम ता० ५ के दोपहर तक जिला कांग्रेस के दफ्तर में लिखा दें।

नोट—अन्य स्थानों में भी लोग अपनी विशेष सुविधा के अनुसार इसी प्रकार का कार्यक्रम रख लें।

प्रीति-भोज

श्री हेमानन्द जी दहत के उद्योग से तारीख २ को अजमेर के विद्यार्थियों की एक विराट सभा रोज वाले को धर्मशाला में हुई। श्री मनहर ब. जी के संगीत के बाद फिर सहभोज हुआ। विद्यार्थियों में बहुत उत्साह था।

स्थानिक और प्रादेशिक

कारखानों में रिश्वत

यहां के रेलवे कारखानों में लोको और कैरिज शाप में करीब १०, १२ हजार आदमी मुलाजिम हैं। उनमें से कितने खुशहाल हैं और कितने ही मुसीबत में पड़े हुए हैं। कितने दलुआ पूड़ी खा खा कर, या पुलाव जर्दा उड़ा कर मोटे ताजे बने हुए हैं और कितनों को रोटी भी मुश्किल से नहीं होती। यह सब क्यों हो रहा है? जरा सोचिये! आप देखेंगे कि इन सब की बुनियाद हमी खुद हैं। आप लोगों ने अपनी तरक्की का जरिया यही समझ रक्खा है कि दे लेकर अपना काम चलालो। करीब करीब हर इलाके में किसी न किसी ढंग से रिश्वत चलती ही रहती है। इसी की बदौलत आज आप में से कितने ही, जिनको हथौड़ा पकड़ने तक का शऊर नहीं है, चार्जमैन बन गए और आप पर हुकूमत कर रहे हैं। इस [illegible] लियाकत से कभी काम नहीं पड़ा और एक लाइन भी सही नहीं लिख सकते, आज १६० और दो दो सौ के बाबू बने बैठे हैं। अपने सामने लोगों की इसकी बदौलत इस तरह बढ़ता हुआ देख कर आपके मन में भी लालच समा जाता है और देखा देखी इस बीमारी में आप भी फंसने लगते हैं। लेकिन इस पाप का असर क्या होता है, यह शायद आप नहीं जानते। अतः लीजिये, मैं आपको बताए देता हूं। फर्ज करिये एक आदमी ने कारखाने में भरती होने के लिये किसी फोरमैन को ५००) रु० देने चाहे। बीच में दलाल साहब ने भी १००) रुपये सैकड़ा ले लिये, तब कहीं उसका १) रोज लगा। अब चूंकि शुरुआत में ही भेंट पूजा से काम लिया गया, इस लिये यह टैक्स हमेशा के लिये उस पर लद गया। अब हर बड़े दिन पर उसको डाली देना लाजिम हो गया। और जिस वक्त उसने अपना रुख बदला कि तरक्की बंद और जुर्माना शुरू! दूसरा असर इसका यह होता है कि यह आपको डरपोक बनाती है, काम चोर बनाती है और इन्सान के आगे से निकाल कर गोदड़ बना देती है। चार्जमैन गुरैया, आप समझ गये कि यह भूखा है, कुछ देना चाहिये। फोरमैन ने आंखें निकालीं कि बम्बई से लाने का अर्जी लगो और रुपया मिलते ही फोरमैन साहब को खिदमत में पेश किया गया। सब फोरमैनों और चार्जमैन, मिस्त्रियों की एकसी हालत नहीं है। कुछ बेशक बेदाग और नेकचलन हैं पर ऐसों की तादाद बहुत कम है।

अगर इस रिश्वत के पाप से आप लोग नहीं बच सकते तो आप अपनी मुसीबत से कभी नहीं बच सकते। आप देखते होंगे कि इस जमाने में कायलियत और नेक नियती की कद्र परवाह नहीं करता। दुनियावी तरक्की ऐसी ही नाकिस बुनियादों से होती है। मगर यह आपका फितूर है। जो शख्स परमात्मा या खुदा में श्रद्धा रखता है, वह ऐसे पाप से सदा बचा रहता है। आप से भी मुझे यही उम्मेद है कि आइन्दा इस बीमारी से बचे रहेंगे और अपने भाइयों को भी इससे बचायेंगे।

आप में से एक

आर्य समाज का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज अजमेर का ४७ वां वार्षिकोत्सव ता० २१ मार्च से २ अप्रेल तक बड़ी धूम धाम से मनाया गया। ता० ३०-३-३० को नगर-कीर्तन आर्य समाज भवन से चल कर शहर के मुख्य २ भागों में होता हुआ निकला। मार्ग में अनेकों स्थानों पर दूध, शर्बत इत्यादि चीजों से स्वागत किया गया। शहर के प्रायः सभी प्रतिष्ठित व सभी जाति के महानुभाव उपस्थित थे। जलूस में स्त्रियाँ भी थीं। यह पहिला ही अवसर है कि समाज के नगर कीर्तन में स्त्रियाँ भी सम्मिलित हुईं। अछूत कही जाने वाली जाति के स्वयं सेवक भी वर्दी में थे। जलूस में करीब २० हजार आदमी शामिल थे। जलूस की छटा अपूर्व थी। उत्सव में पूज्य स्वामी सर्वदानन्द जी, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री व आर्य मिशनरी श्री जैमिनी जी महात्मा के मनोहर एवं शिक्षाप्रद उपदेश हुए। ता० १-४-३० को प्रान्तीय आर्ययुवक सम्मेलन श्रीयुत पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री के सभापतित्व में हुआ। जिसमें प्रान्त के मुख्य २ स्थानों से प्रतिनिधि आकर शामिल हुए थे। प्रथम डा० निश्चानन्द जी स्वागताध्यक्ष व बाद को पं० धुरेन्द्र जी के उत्साहवर्धक व मार्मिक भाषण हुए। सम्मेलन में भरतपुर राज्य में मुसावर समाज पर राज्य की ओर से उपस्थिति की गई बाधाओं का घोर विरोध किया गया और इन बाधाओं के कारण जिन २ आर्य भ्राताओं को कष्ट सहना पड़ा है, उनको बधाई दी गई और आर्य युवकों से अपील की गई कि वे वैदिक सत्याग्रह के लिये, जिस के होने की शीघ्र सम्भावना प्रतीत हो रही है, तैयार रहें।

ता० २-४-३० को कवि सम्मेलन हुआ जिसमें स्थानीय व बाहर से आई हुई कवितायें पढ़ी गईं। अन्त में कार्यकर्ताओं और सहायता करने वाले सज्जनों का धन्यवाद देकर उत्सव का कार्य समाप्त किया गया। इस उत्सव को सफलता का श्रेय मुख्यकर आर्य समाज के उत्साही कार्यकर्ता पं० जियालाल जी को है।

—एक जानकार

'स्टेट्स वोकली' की शठता

महोदय!

स्थानीय 'स्टेट्स वोकली' के बारे में यह ख़याल किया जाता था कि वह केवल कुछ राज्यों का पत्र है और दूसरे मामलों में वह निष्पक्ष रहता है, पर जान पड़ता है वह स्थानीय मामलों में भी गड़बड़ी और ग़लतफ़हमी फैलाने पर कटिबद्ध है। उदाहरण के लिये उसने डी०ए०यो० के मामले की सारी ज़िम्मेदारी यूथ लीग पर डाली है। हालां कि असलियत यह है कि हम विद्यार्थियों ने खुद यूथ लीग और कांग्रेस से मदद मांगी थी। कुछ भी हो, जनता को ऐसे झूठ का प्रचार करने वाले पत्रों से सावधान रहना चाहिये।

—डी० ए० वो० का एक छात्र।

रावणा राजपूत विद्यालय

मेयो कालेज की जुबली के अवसर पर श्रीमान महाराजा धिराज जोधपुर नरेश ने ५१) और श्रीमान महाराज कुंवर साहब शाहपुरा ने २५) इस विद्यालय को दान किये जिसके लिये श्रीमानों को हार्दिक धन्यवाद है।

मिश्रीलाल वीरावत
मन्त्री रावणा राजपूत सभा
अजमेर

नवें पृष्ठ का शेष—

भ्रमपूर्ण है उतनी ही पैशाचिक भी है। इससे विरोध कम नहीं होता बल्कि बढ़ता है। दमन से त्रस्त लोगों को यह बात और भी अच्छी तरह ज्ञात हो जाती है कि सरकार की निरंकुशता कोई परदे की ओट में रहने वाली चीज़ नहीं है।

सार्वजनिक और लोक-व्यापी असन्तोष लोगों के कष्टों का सूचक है। बुद्धिमान राजनीतिज्ञों के लिए तो यह इस बात का सबूत होगा कि सरकार उन लोगों की मुख्य २ आवश्यकताओं और मांगों को पूरा नहीं कर रही है जिन की पूर्ति करने का भार उसके सर पर है। इतिहास में उच्छृङ्खल और अकारण के विद्रोह का कहीं पता तक नहीं है। प्रत्येक लोकप्रिय विद्रोह का जन्म लोगों की शिकायतों से ही हुआ है।

बड़े-बड़े साम्राज्य और छोटे २ हृदय साथ २ काम नहीं कर सकते। इसी लिए भारतवर्ष की समस्या भी उन लोगों द्वारा पूर्णतः हल नहीं हो सकती जिनकी दृष्टि अपने देश की सीमा से परे नहीं जाती।

परन्तु उस नीति के अनुसरण से क्या लाभ जिससे कि भारतवासियों को सन्तोष न हो?

लोग स्वभावतः अशान्ति नहीं चाहते। भारतवर्ष की अशान्ति और बेचैनी का कारण काल्पनिक असुविधायें और उनके विरुद्ध होने वाला आन्दोलन यद्यपि किसी राजनीतिज्ञ कहे जाने वाले व्यक्ति को शोभा नहीं देता। ऐसे सम्बन्धों में इस प्रकार की बातें करना तो अनुदार दल का स्वभाव है। लेकिन लोगों को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि सार्वजनिक शान्ति अच्छी चीज है। अगर उन्होंने शान्ति भङ्ग करदी, जैसा कि सन १९४२ में इंग्लैण्ड वालों ने कर दी थी, तो इसका एकमात्र कारण यह होगा कि उस शान्ति की शर्तें असह्य हो गई हैं।

भारतवर्ष में केवल शान्ति और व्यवस्था स्थापित करने वाली नीति अपूर्ण सिद्ध होगी। शान्ति और व्यवस्था—हां, वह शान्ति और व्यवस्था जिसका वे लोग सम्मान करते हों जो अपने को स्वतंत्र अनुभव करते हों। वह शान्ति और व्यवस्था नहीं जिस का आधार भय और दमन पर अवलम्बित हो।

अगर सरकार ने इस समय बुद्धिमानी से काम लिया तो इस में सन्देह नहीं कि लोकमत उसके साथ रहेगा।

———

राजस्थान संदेश

वह राष्ट्र नहीं उठता, रहता,
उसका जगमें यश शेष नहीं।
जो स्वतन्त्रताका द्रोही, हो,
सुनता नवयुग 'सन्देश' नहीं।

रविवार चैत्र शु० ५ वि. सं० १९८

६ अप्रैल

६ अप्रैल आ रही है और ज्यों २ यह निकट आती जाती है, त्यों त्यों देशभर में उत्सुकता, उद्वेग और उत्साह की लहरों का ज्वार बढ़ता जाता है। क्यों? इसी लिये कि ६ अप्रैल के दिन और उससे मिलते हुए सप्ताह ने हमारे राष्ट्रीय जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। उसका जन्म जलियांवाला में निर्दोष और निहत्थे लोगों के हत्याकाण्ड से हुआ था और तिलक शहीदी के खून से। दिल्ली की दुर्घटनाओं ने फिर उस पर रंग चढ़ाया था एवं असहयोग के ज्वार ने उसे मुकुट पहनाया था। इसीलिये वह आज हमारी राष्ट्रीय विजयादशमी है। फिर इस बार के पूर्ण स्वराज्य संग्राम का सूत्र पात भी उसी दिन होगा। उसी दिन देश की दीन दशा की मूर्ति के रूप में इस देश का वृद्ध सेनापति बिना किसी अस्त्र के नौकरशाही के सुदृढ़ और सुरक्षित दुर्ग पर आक्रमण करेगा।

ऐसी दशा में स्वभावतः ६ अप्रैल देश भर के लिये एक विशेष स्थान रखने वाला और विचित्र दिन है। उसके साथ न केवल ऊंचे आदर्शों एवं पवित्रतम साधनों से लड़े जाने वाले और लड़े गए राष्ट्रीय युद्धों की स्मृतियां बंधी हैं, प्रत्युत मुर्दों को खड़े कर देने वाली तथा कायरों तक के खून को खौला देने वाली वे घटनाएं भी बंधी हैं, जिनके जन्मदाता डायर और ओडायर थे। जिन्हें स्मरण कर आज प्रत्येक सच्चा भारतीय उनके लिये इस शासन व्यवस्था को कभी क्षमा न करने की प्रतिज्ञा करने लगता है। तेरीअ जिनका ध्यान आज प्रत्येक राष्ट्रीय दल के भारतीय को उस अबोध बच्चे मदन का स्मरण हो आता है। उन सैकड़ों माताओं, पत्नियों और बहिनों के चित्र—सिनेमा की चित्रावली की तरह आखों के सामने घूम जाते हैं, जो उस कांड की बदौलत पल मारते में इस संसार में अनाथ एवं अनाश्रिता बन गई थीं। ऐसी अवस्था में यदि आज ६ अप्रैल की ओर लाखों आंखें लगी हैं, तो इसमें कौन आश्चर्य की बात है? यदि आज सहस्रों सैनिक यह सोच कर उल्लसित हो रहे हैं कि इस बार केवल उपवास और रचनात्मक राष्ट्रीय काय करके ही सन्तोष न करना पड़ेगा, प्रत्युत नौकरशाही से लोहा ले कर अपने शहीदों का सच्चा श्राद्ध करने का भी अवसर मिलेगा।

पर प्रश्न यह है कि राजस्थानी युवा इस अवसर पर क्या करेंगे? अवश्य ही उनमें भी आज चारों ओर चरचा है। सभी वर्तमान स्थिति और अपने कर्तव्य पर कुछ न कुछ बातें करते दिखाई देते हैं। किन्तु उस चरचा में प्रायः कठिनाइयों की ही चरचा अधिक रहती है। उसमें प्रायः निराशा की झलक दिखाई देती है। बहुत कम युवक देश की स्थिति और युद्ध के महत्व को पूरा तौलते दिखाई देते हैं। पर यह तो युवापन का लक्षण नहीं, बुढ़ापे और भीरुता का है। सबसे बड़ी कठिनाई मृत्यु की मनुष्य के साथ बँधी है। वह अनिवार्य है। उसके सामने कोई बहाना नहीं चलता। तब, ऐसे विकट अवसर पर छोटी मोटी कठिनाइयों को अपने मार्ग में खड़ा होने देना क्या एक वीर प्रांत के युवकों के लिए शोभा की बात है। विशेषतः उनके लिये, जिनके सिर पर सौभाग्य से संरक्षक मौजूद हैं। जिन पर आश्रितों का बहुत बड़ा भार नहीं है। जो साहसी और देश प्रेमी हैं। और हम जानते हैं कि ऐसे युवकों की इस प्रांत में कमी नहीं है। यही क्यों, यदि ऐसे सब युवक इस समय कर्तव्य की पुकार को सुन लें तो वे आवश्यकता से अधिक संख्या की पूर्ति कर सकते हैं।

अवश्य ही इस सम्बन्ध में हम निराश नहीं हैं। थोड़े २ कर के भी जिस उत्साह से हमारे पास स्वयम् सेवकों में भरती होने वाले युवाओं के नाम पहुँच रहे हैं, वह इस बात का द्योतक है कि राजस्थानी युवा सर्वथा निर्जीव नहीं हैं। फिर भी उन्हें कितना अपने प्रान्त और उसकी कीर्ति का ख्याल है, उनमें कितना साहस और त्याग है एवं वे अपने पूर्वजों के कितने योग्य वंशज हैं, इन सब प्रश्नों का उत्तर तो उनका व्यावहारिक बलिदान ही देगा। हम तो केवल यह आशा ही कर सकते हैं कि इस प्रांत के युवा राष्ट्रीय सप्ताह में ही प्रांत को युद्ध शुरू करने में समर्थ बना देंगे और संसार को दिखा देंगे कि वे वाग्वीर चाहे न हों, कर्मवीर अवश्य हैं।

सामयिक समस्याएँ

भारत के विचित्र प्रेमी!

ब्रिस्टल से डलमास महाशय नामक के एक अँग्रेज लन्दन से निकलने वाले 'दी टाइम्स' नामक पत्र में महात्मा गान्धी के सत्याग्रह पर अपने विचार प्रकट करने की कृपा करते हैं। उन्हें हम पाठकों के मनोरंजन के लिए यहां ज्यों का त्यों दे देना उचित समझते हैं। आप लिखते हैं:—

"भारतवर्ष के प्रेमी की हैसियत से जहाँ कि मैं सन् १८७२ से १९०५ ई० तक पादरी की हैसियत से रहा हूँ, मैं महात्मा जी के सत्याग्रह के आह्वान की आलोचना करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि महात्मा गान्धी जरा दुनियाँ के अन्य देशों को देखने के लिए तो इधर आवें और फिर देखें कि ऐसा कौनसा देश है जो भारतवर्ष से अच्छी दशा में शासित है। उन्हें चीन और रूस में जाकर वहाँ कुछ थोड़ा सा समय व्यतीत करना चाहिए जहाँ स्वराज्य अपने पूरे जोरों के साथ चल रहा है। क्या मि० गान्धी ने भारतवर्ष में हिन्दुओं के किसी जलूस को गाजे-बाजे के साथ किसी मसजिद के नीचे जाते नहीं देखा? उस का क्या नतीजा होता है? अँग्रेजों की छत्रछाया में भारतवर्ष ने एक मुद्दत तक सुख और शान्ति का उपभोग किया है। अगर भारतवर्ष में ब्रिटेन का शान्ति पूर्ण पंजा न रहे तो उस में अनेक जातियों और धर्मों के होते हुए भय है कि वह भी कहीं रूस और चीन के मार्ग का ही अनुसरण न करे।"

पादरी साहब के उपरोक्त शब्दों में कितना भ्रम और अज्ञान छिपा हुआ है! आपको भारतवर्ष के प्रेमी होने का दावा है। हम पूछते हैं कि आप इस अभागे देश को क्यों प्रेम करते हैं? इसी लिए न कि आपने उसका रक्त चूसा है और अब यह चाहते हैं कि रक्त शोषण की यह प्रणाली आपकी सन्तति के लिए भी सुरक्षित रहे? महात्मा जी को विदेश आकर यह देखने की आवश्यकता नहीं है कि भारतवर्ष से दुनियाँ का कोई भी देश अच्छी दशा में शासित नहीं है। उनके लिए तो इतना काफी है कि इस देश का शासन पशु बल पर अवलम्बित है और उसका प्रयोग प्रायः लोकमत और लोकहित को कुचलने में किया जाता है। हिन्दू मुसलमानों के दंगे भी इसी नौकरशाही की कुटिलता और उदासीनता का फल हैं। इन उपद्रवों को शीघ्र ही बन्द करने के लिए भी यह आवश्यक है कि हम इस नौकरशाही शासन प्रणाली का अन्त करदें। और वह अन्त हम करना चाहते हैं अहिन्सात्मक सत्याग्रह के अमोघ शस्त्र से। हम पादरीजी से अनुरोध करते हैं कि वे और उनकी जाति इस अभागे देश को प्रेम करने की कृपा (!) न करें और ब्रिटेन का शान्ति पूर्ण पंजा हटा लेने में न हिचकें। हमें इनमें से किसी की भी आवश्यकता नहीं है।

पं० मोतीलाल जी का दान।

हमारे देश की इस अवनतावस्था में भी आज त्यागियों और दानवीरों की कमी नहीं है। भारतवसुन्धरा में आज भी एक से एक रत्न छिपे हुए पड़े हैं। त्यागमूर्त्ति पं० मोतीलाल नेहरू भी उन्हीं में से एक हैं। आपने असहयोग के दिनों में सबसे पहले अपनी लाखों की आमदनी पर लात मारी थी, अर्थात् वकालत छोड़ी थी। प्रांत के गवर्नर के मतानुसार आपका रहन-सहन नरेशों का सा था। लेकिन अब आपने देश के लिए सब कुछ त्याग दिया है। यहाँ तक कि अपने रहने का महल, जो कि 'आनन्द भवन' के नाम से प्रसिद्ध है, कांग्रेस को दे डाला। उसमें अब अखिलभारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी का दफ्तर रहा करेगा। यह बात कितनी मर्मस्पर्शी है? पं० जवाहरलाल जी जब से मास्को से लौटे हैं तबसे उन्हें इस महलमें रहना अखरता था। एक ओर देश की ग़रीबी और उनके टूटेफूटे झोंपड़े और दूसरी ओर उनका महल में रहना एक ऐसी बात थी जिसे उन दोनों का हृदय सहन न कर सकता था। इसी लिए

उन्होंने उसका परित्याग कर दिया। अब 'आनन्द भवन' 'क्रीड़ा भवन न रहेगा। उसमें किसी व्यक्ति विशेष के आनन्द की बात नहीं बल्कि देश के आनन्द की बात सोची जायगी और इस प्रकार पं० मोतीलालजी का यह 'आनन्द भवन' देश का 'आनन्द भवन' बनेगा। हम इस दान को देश के लिए बड़ा मंगल दायक समझते हैं।

फिर मोतीलाल तेजावत

श्री मोतीलाल तेजावत के मुकदमे के सम्बन्ध में विचित्र समाचार आए हैं। कहा जाता है कि उनके अल्पज्ञान से लाभ उठा कर गिरवा हाकिम चुपचाप उनके मुकदमे की कार्यवाही कर रहे हैं। उन पर डकैती, चोरी आदि जैसे अभियोग लगाए गए हैं। फिर दिल्लगी यह कि उनके बचाव की कोई व्यवस्था नहीं। न कोई योग्य वकील दिया गया है न उनकी पसन्द का कानूनी सलाहकार। यदि ये बातें सच हैं, तो कहना पड़ेगा कि मेवाड़ राज्य में अधमता की हद होने लगी है। क्या हम आशा करें कि उच्च अधिकारियों का ध्यान इस अन्धाधुन्धी की ओर जायगा?

जागीरदारों में हलचल

[illegible] काल में ही हमने जागीरदारों को बटलर कमेटी की कार्यवाही के फलों से सावधान किया था। कुछ जागीरदार बुलाए भी थे, पर अफीमची की पीनक की तरह उन की वह जागृति क्षणिक ही रही। प्याले-निवाले और मारवाड़ी मन्सूबों में फंस कर वे फिर जहां के तहां सो गए। अब जब फलों का सूत्रपात होने लगा तब फिर उनकी झपकी भागती सी दिखाई देने लगी है। जयपुर राज्य में ज़कात का अधिकार और मेवाड़ में १६ सर्दारों को छोड़ कर शेष का कलाली, सायर आदि का अधिकार हड़प किया जाने वाला है। इससे इन दोनों जगहों के जागीरदारों में कुछ खलबली मची है। पर परिणाम क्या होना है? उन्हें तो वही पुराने हथियारों का प्रयोग आता है और वे इस जमाने के लिये निरर्थक हैं।

बुलन्द शहर की घटना

सर माल्कम हेली के पदार्पण का जो बुलन्द शहर निवासियों को पुरस्कार मिला है, वह सर हेली के ही योग्य है। कहा जाता है कि कुछ युवक काले झंडे लेकर रास्ते पर खड़े थे और उन्होंने "गवर्नर गगो बैक" के नारे लगाए थे। बस इसी पर पुलिस और उसके गुर्गों ने लड़कों पर लाठियों से आक्रमण कर दिया। आक्रमण ख़ासा पशुता का दृश्य था। दर्जनों युवक घायल हो गए। प्रश्न यह है कि जिस नौकरशाही में इतनी पशुता और हिंसा भरी है और जो इस प्रकार कानून को हाथ में लेती है, क्या उसे यह कहने का हक है कि कानून भंग से शांति भंग होने का डर है? देखना है, बुलन्दशहर जैसा सदा का क्रांतिकारी प्रदेश इस अनीति का क्या उत्तर देता है?

बर्बरता का तांडव नृत्य

गत पहिली मार्च को कलकत्ते में कुछ बैल गाड़ी वालों और पुलिस में एक बड़ा भारी दंगा हो गया। जिस के फल स्वरूप दोनों ओर के अनेक आदमी बुरी तरह घायल हुए। और जनता के पक्ष के कोई ६ आदमी पुलिस की गोलियां खा कर दुनिया से ही चले बसे! इन गोली खाकर मरने वालों में एक बूढ़ा बंगाली भी था। वह अपनी दूकान पर बैठा था। वहीं उसके गोली लगी और वहीं उसका ढेर भी हो गया। इस दंगे का कारण यह बताया जाता है कि बैल गाड़ी वाले लोगों के विरुद्ध एक नया नियम बनाया गया, था जिसमें इन लोगों को दिन में, जब कि बाजार में खासी भीड़ हो, अपनी गाड़ी लेकर निकलने की मनाही की गई थी। ये लोग इस नियम के विरुद्ध प्रदर्शन करने के लिये एक जलूस निकाल रहे थे कि पुलिस ने उन्हें रोका। जब ये लोग न माने तो पुलिस वालों ने गोली चला दी। बंगाल की पुलिस की बर्बरता, पशुता और रक्तपिपासा का इस से अच्छा और कौनसा उदाहरण हो सकता है? निहत्थे गाड़ी वालों को इस प्रकार गोलियों से भूनना और गोली इतने अन्धे होकर चलाना कि जिस से दूकान पर बैठे हुए आदमी तक मर जांय कितनी पशुता और मदान्धता है? हम इस सम्बन्ध में और कुछ न कह कर पुलिस की पीठ ठोंकने वाली सरकार से यह कह देना चाहते हैं कि इन निर्दोषों के खून से वह लहर और भी बढ़ेगी जिसे दबाने के लिए ऐसे कुकृत्य करने में भी पुलिस को शरम नहीं आती। शान्त और गरीब लोगों को सताना, उसके विरुद्ध उन्हें बोलने तक न देना और जब वे बोलें तो इस प्रकार भून डालना कौनसी बहादुरी है? हमारी समझ में गरीबों को सताना ठीक नहीं है। क्योंकि यह बात भूल न जाना चाहिए कि मरी हुई खाल की सांस से लोहा तक भस्म हो जाता है, सो ये लोग तो जीवित प्राणी हैं। इनकी आहें तो आसमान को हिला देंगी और उससे बड़े २ अत्याचारियों और साम्राज्यवादियों का नाश हो जायगा।

बड़ी धारासभा में वाकआउट

बड़ी धारा सभा में टेरिफ बिल पर बड़ी बहस और बड़ी आलोचना के बाद पं० मदनमोहन मालवीय अपने दल के ३५ सदस्यों सहित धारा-सभा-भवन से उठ कर चले आये! और फिर अपनी २ मेम्बरी से त्याग पत्र भी दे दिया। पं० मदन मोहन मालवीय से पूर्व अनेकबार कांग्रेसी सदस्यों ने भी इसी प्रकार वाक आउट और मेम्बरी से स्तैफा देकर अपने विरोध का परिचय दिया था। उस समय नरम दल और [illegible] नलिस्ट कहे जाने वाले दल [illegible] लोगों ने कांग्रेसी सदस्यों के [illegible] कार्य्य की भरपूर निन्दा की थी परन्तु वही वर्जित कार्य आज वे स्वयं ही कर रहे हैं! हम इसके लिए उन्हें बधाई देते हैं! क्यों न दें? अब देश की राजनैतिक प्रगति के साथ साथ हमारे नेशनलिस्ट भाई भी कुछ आगे बढ़े हैं और यदि उनकी प्रगति का यही हाल रहा तो फिर कांग्रेसी सदस्यों को कौंसिलों में जाकर अपना समय बरबाद करने की कभी न सूझेगी। वे बाहर रह कर देश का काम करेंगे और कौंसिलों में उनका काम ये लोग करेंगे। वे वाक आउट करेंगे-अड़ंगे लगायेंगे और बजट को ठुकरायेंगे। इस प्रकार भीतर ये लोग और बाहर कांग्रेस वाले अपनी संगठन शक्ति तथा घनघोर आन्दोलन से नौकर शाही को नाक चने बिनवायेंगे, इसी लिये हम मालवीय जी और उनके साथियों को आज हृदय से बधाई देते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह इनके अन्दर इतना बल दे कि ये लोग सदैव मौका पड़ने पर सरकार के निंदनीय कार्य्यों का इसी प्रकार क्रियात्मक रूप से विरोध किया करें।

राजस्थानियों को शुभ सन्देश

राजस्थानी सेवादल की स्थापना

पिछले सप्ताह जिस संस्था के बनाने की सूचना निकली थी, वह इस सप्ताह बन गई। इसका नाम 'राजस्थानी सेवादल' है और इस के उद्देश्य इस प्रकार हैं:—

१—राजस्थान में नशा निषेध, शिक्षा, खादी एवं स्वदेशी प्रचार के लिए काम करना।

२—मजदूरों और अन्य पिछड़े हुए समुदायों के उत्थान के लिये प्रयत्न करना।

३—जाति और धर्म के विवादास्पद भेद भावों से अलग रहते हुए एवं राज्य-प्रजा सब के प्रति मित्र-भाव रखते हुए, सब के पारस्परिक हित-विरोधों को दूर करना।

४—ब्रटिश भारत के राष्ट्रीय कामों में आवश्यकता होने पर राजस्थानियों के सामूहिक सहयोग की व्यवस्था करना।

५—उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये कार्यकर्ता एवं स्वयम् सेवक तय्यार करना और उनसे काम लेना।

नोट— (१) स्वयं सेवकों में १६ वर्ष या उससे अधिक आयुवाला और सदस्यों में १८ वर्ष वा इससे अधिक आयु का कोई भी राजस्थानी इसका सदस्य हो सकता है।

(२) दल की नीति शांति मय और उचित उपायों द्वारा काम करने की होगी।

इस दल के पदाधिकारी निम्न लिखित होंगे:—

सभापति—डाक्टर अम्बालालजी
उप सभापति विश्वम्भर प्रसादजी
प्रधान मन्त्री विजयसिंह जी पथिक
संयुक्त मंत्री अचलेश्वरप्रसाद

देशव्यापी राष्ट्रीय हल-चलें

जब तक 'संदेश' का यह अंक पाठकों की सेवा में पहुँचेगा तब तक देश के कोने २ में नमक सम्बन्धी कानून को तोड़ने का सत्याग्रह शुरू हो जायगा। गत सप्ताह हमने सत्याग्रह संग्राम की तैयारी का जो वर्णन लिखा था, उसके बाद से जो समाचार आये हैं उन से पता चलता है कि देश का प्रत्येक जिला सैनिकों की भर्ती और सत्याग्रह संग्राम के तैयारी में पूर्ण रूपेण लगा हुआ है। प्रारम्भ में कुछ लोगों का अनुमान था कि इस संग्राम में मुसलमान भाग न लेंगे। परन्तु यह बात मानव स्वभाव के विरुद्ध थी। देश की दिन प्रति दिन बढ़ती हुई आग से ऐसा कौन होगा जो न तपे और फिर ऐसे समय में तो बहती हुई गंगा में प्रत्येक जाति और उसका व्यक्ति अपने हाथ धो लेना ही चाहेगा। उस दिन लाहौर में मुसलमान स्वयं सेवकों का एक जलूस शहर के मुख्य २ बाजारों में होकर निकला और लोगों से अनुरोध किया कि वे विदेशी वस्त्र का बहिष्कार करें। पंजाब में तो मुसलमानों को राष्ट्रीय [illegible] जागृत हो गई प्रतीत होती है। अभी अभी इन्हीं दिनों में पंजाब में जो मुस्लिम कान्फरेंस होने जा रही है उसके सभापति चुने गये हैं पक्के राष्ट्रवादी डा० आलम। बंगाल तो अपनी तैयारी में कमी का लगा हुआ है। उस दिन बांकुरा से ३३ स्वयं सेवकों का एक जत्था मिदनापुर जिले में कोन्टाई नामक स्थान में नमक बनाने के लिए रवाना हो गया। लखनऊ में सत्याग्रह की तैयारी बड़े जोरों से हो रही है। स्वयं सेवकों की भर्ती हो रही है। उन्हें ट्रेनिंग देने का भी प्रबन्ध कर दिया गया है। इस संग्राम में स्त्रियां भी पुरुषों से पीछे रहना नहीं चाहतीं। देहली और मेरठ इत्यादि शहरों में पिछले कितने ही दिन से विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के लिए वे अथक परिश्रम कर रही हैं। स्थान २ पर स्वयं सेविकायें भर्ती हो रही हैं जो सत्याग्रह में भाग लेंगी। कानपुर में भी स्त्री स्वयं-सेविकायें धड़ाधड़ अपना नाम लिखा रही हैं। कानपुर के राष्ट्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों की ६ टोलियां देहातों में बराबर भ्रमण कर रही हैं और लोगों को महात्मा जी का सन्देश सुना रही हैं। शहर में नित्य स्वयं सेवक भर्ती किये जाते हैं। और शाम को जलूस राष्ट्रीय गीत गाता हुआ निकलता है। गंटूर में आंध्र प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की एक मीटिंग में श्री वेंकटप्पैय्या को डिक्टेटर बनाना स्वीकार किया था। आंध्र प्रान्तमें भी निश्चित तिथि पर शीघ्र सत्याग्रह शुरू होगा। कलकत्ते में अब तक सैकड़ों स्वयं सेवक भर्ती हो गये हैं और उन्हें सैंदपुर खादी प्रतिष्ठान में [illegible] दी जा रही है। [illegible] खां में २०० स्त्री स्वयं सेविकाएं बन चुकी हैं। अहमदाबाद जिला के मालिक भी महात्मा जी के साथ उन के धर्मयुद्ध में पूर्ण सहानुभूति रखते हैं। तथापि यह बात खुले तौर पर प्रकट नहीं की गई है, परन्तु आशा है कि प्रत्येक मिल मालिक अपने अपने परिवार में से कम से कम एक आदमी सत्याग्रह संग्राम में भाग लेने के लिए अवश्य भेजेगा। इस समय उनकी एक स्पेशल ट्रेन महात्मा जी के दर्शनार्थ रवाना हो रही है। अकोला में युद्ध समिति का निर्माण हो गया है और वह शीघ्र ही सत्याग्रह प्रारम्भ करने की आज्ञा देने वाली है। राजघाट में जमना के किनारे स्वयं सेवकों के ७ कैम्प लग गये हैं। यहां नमक बनाना प्रारम्भ किया जायगा। अलीगढ़ में भी युद्ध समिति बन गई है। खैर नामक गांव में नमक बनाने का काम प्रारम्भ होने वाला है। यहां लगभग १००० आदमी सत्याग्रह करेंगे। इधर आगरे से नमक बनाने के लिए भी यहां से एक जत्था रवाना हो गया है। हुबली से हिन्दुस्तानी सेवा दल के सैक्रेटरी ने सारे प्रान्तीय बोडों को सूचना दी है कि वे भी अपने २ स्थानों में सत्याग्रह के लिए स्वयं सेवक भर्ती करें और स्वयं भी सत्याग्रहियों में अपना नाम लिखावें। देहरादून जिले में बड़े जोरों के साथ सत्याग्रह की तैयारियां हो रही हैं। लायलपुर से २५ स्वयं सेवकों का एक जत्था गुजरान वाला में होने वाली सत्याग्रह कान्फरेंस में भाग लेने के लिए पैदल रवाना हो गया। यह देहातों में प्रचार करता हुआ जायगा। भागलपुर कांग्रेस कमेटी ने चौकीदारी टैक्स के विरुद्ध सत्याग्रह प्रारम्भ करने का निश्चय किया है। पटना में बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने कर न देने के सत्याग्रह का विचार छोड़ कर नमक बनाने के सत्याग्रह करने का ही निश्चय किया है। करनाटक में सत्याग्रह की पूरी तैयारियां हो गई हैं। सत्यदपुर के अभय आश्रम में पं० जीवनलाल जी, जो कि पहले सरकार की ओर से साहब इन्सपैक्टर थे, स्वयंसेवकों को नमक बनाना सिखा रहे हैं। कोलाबा डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस कमेटी ने भी अपनी तय्यारियां करली हैं। पञ्जाब में सत्याग्रह करने के लिए मौलाना अब्दुल-कादिर, श्री सन्तानम, सरदार तारा-सिंह और ला० छबीलदास की एक सत्याग्रह कमेटी बना दी गई है। मद्रास में कोई ५०० स्वयं सेवक नमक कानून तोड़ने के लिए अपना नाम राष्ट्रीय सेना में लिखा चुके हैं। अहमदाबाद में मि० कोठारी के नेतृत्व में सत्याग्रहियों की अनेक टुकड़ियां बना दी गई हैं। नौ केन्द्र कायम किये जा चुके हैं। धोलेरा और अरगोदा से स्वयं सेवक बना हुआ नमक ला कर अहमदाबाद में बेचेंगे। मुरादाबाद में भी युद्ध-समिति का निर्माण हो गया है। स्वयं सेवकों की भर्ती जोरों के साथ जारी है। सिंध में सत्याग्रह प्रारंभ करने का काम जोरों से जारी है। ता० ४ अप्रैल को 'हिंदू' के सम्पादक के नेतृत्व में हैदराबाद से सत्याग्रहियों का पहला जत्था रवाना हो जायगा। डा० चौथराम और जैरामदास बड़े २ केन्द्रों का निरीक्षण करेंगे। अमृतसर से ३० सैनिकों का एक जत्था दल बल कर लाहौर पहुंचा। यह गुजरानवाले में होने वाली सत्याग्रह कान्फ्रेन्स में भाग लेने जा रहा है।

गुजरान वाले में जो सत्याग्रह कान्फ्रेन्स होने जा रहा है वह मौलाना ज़फ़रअली खां के सभापतित्व में होगी। रायबरेली में सत्याग्रह की तय्यारियां बड़े ज़ोरों से शुरू हो गई हैं, जिसे देख कर नौकरशाही भयभीत हो गई है। वहां तो दमन का चक्र जोरों से चलने लगा है। इधर पं० जवाहरलाल नेहरू ने वहाँ जा कर लोगों को खूब उत्साहित किया। अपने एक भाषण में आपने कहा कि मैंने तो इंडियन पैनल कोड के उस हिस्से को, जिसमें राजद्रोह के अपराधों का उल्लेख है, रद्दी की टोकरी में फेंक दिया है। धारवार में भी सत्याग्रह की तैयारियां पूरी हो चुकीं। हुबली, बेलगांव और बंगलौर में नमक बनाने के केन्द्र खुल गये हैं। श्री गंगाधर राव देशपांडे के नेतृत्व में काम प्रारम्भ होने वाला है। सरगोधा और रोहतक में भी तय्यारियां हो रही हैं। खेरी में स्वयं-सेवकों की भर्ती हो रही है। लाहौर से मुस्लिम सेनादल के २५ स्वयं-सेवक गुजरानवाला के लिए पैदल चल पड़े। राजमहेन्द्री से भी सत्याग्रही जत्था निकल पड़ा। अहमदाबाद की लेबर यूनियन ने भी स्वयं-सेवकों की भर्ती शुरू कर दी है। इनके १८ स्वयं सेवकों का एक जत्था साबरमती आश्रम में रवाना हो रहा है। महात्मा जी अपने मंजिले मकसूद पर पहुंचने ही वाले हैं। ता० २५ को आप मेसला से भड़ोच पहुंचे। वहां आपका बड़ा शानदार स्वागत हुआ। यहां पर आपने अपने एक भाषण में कहा कि सत्याग्रही को ईश्वर के नाम पर लड़ना चाहिये और संसार भर के खिलाफ होते हुए भी परमात्मा के आदेश का पालन करना चाहिये। भड़ोच से चल कर आप देहात में ठहरे। यहां पर अपने भाषण में आपने कहा कि जब से नमक पर कर लगाया गया है तभी से बराबर इसका विरोध हो रहा है। कांग्रेस भी प्रारम्भ से ही इसका विरोध करती रही है। परन्तु सरकार ने लोकमत की परवाह नहीं की। नमक कर से सरकार को ६ करोड़ तथा शराब और अफीम से २५ करोड़ वार्षिक की आय होती है। यहां से आप अंकलेश्वर के लिये रवाना हो गए। वहां से सजोद को प्रस्थान किया। यहां पर आपने अपने भाषण में कहा कि अगर हमारा दल डांडी तक पहुँच गया तो मुझे आशा

हमें आशा करनी चाहिये कि जो राजस्थानी राज्यों में कुछ कार्य न होते देख अधीर हो रहे थे, वे अब आगे पैर बढ़ा अपने दल को मज़बूत बनावेंगे और इस प्रकार यह प्रमाणित कर देंगे कि वे केवल बातें बनाने वाले नहीं, सच्चे दिल से देश और राजस्थान की सेवा के लिये उत्सुक युवा हैं।

मन्त्री

है कि हम लोग सर्कार के तीन चार और किलों पर भी धावा बोल सकेंगे। परन्तु हम डांडी पहुंचे या न पहुंचे, नमक कर तो आप नष्ट ही समझिये। धावे के लिये दूसरा किला विदेशी वस्त्र और तीसरा किला शराब का होगा। ता० २६ मार्च को महात्माजी बड़गाम पहुंचे। वहां से संधाल के लिये रवाना हो गए। ता० १ अप्रैल को आप सूरत पहुंचे। वहां पर एक महती सभा में आपका भाषण हुआ। इसमें घोषित किया गया कि सूरत जिले से १७० गांवों के अफसरों ने त्याग-पत्र दे दिये हैं और कोई ३६७ स्वयं सेवक भरती हो चुके हैं। यहां पर आपके दर्शनों के लिये मिल मालिक भी पहुंच गए। आपने उनको धन्यवाद दिया और कहा "आपने यहां आकर जो कष्ट उठाया है उससे आपके प्रेम का परिचय मिलता है तथा इस बात का भी पता चलता है कि इस संग्राम को आपका आशीर्वाद भी प्राप्त है।"

सूरत जिले की यात्रा समाप्त करके महात्मा जी ने अब बड़ौदा राज्य की सरहद में प्रवेश किया है। आप पांच तारीख को अपने निश्चित स्थान पर पहुंच जायंगे और ६ ता० से नमक के अन्याय पूर्ण कानून को तोड़ने के लिए नौकरशाही के किले पर हल्ला बोल देंगे।

सरकार की तय्यारी

महात्मा जी के डांडी (जलालपुर) पहुंचने के पूर्व ही सरकार ने अपनी तैयारी प्रारम्भ करदी है। पुलिस के जवान एक बहुत बड़ी संख्या में वहां पहुंच गए हैं। जिले के असिस्टेण्ट तथा डिप्टी कलक्टर भी वहां जा धमके हैं। और पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट और कलक्टर वहां रोज जाकर निरीक्षण कर आते हैं। डांडी में समुद्र तट पर पुलिस के आदमी तथा कुछ मजदूर भी तैनात कर दिए गए हैं। इन लोगों को समुद्र तट का नमक कष्ट करने की आज्ञा दी गई है। बम्बई के गवर्नर ने आज्ञा निकलवादी है कि नमक बनाने के स्थान ऐसे हैं जहां पब्लिक को जाने का कोई अधिकार नहीं है। जहां नमक बनता है वहां संतरिथी का पहरा है। ये लोग उन लोगों को आगे बढ़ने से रोकेंगे जो नमक सम्बन्धी कानून को तोड़ने के लिए आगे बढ़ेंगे। परन्तु जो आदमी नमक कर न देने का अपराध करेगा वह सन् १८८२ के कानून के अनुसार अपराधी पाया जायगा। उसे ५००) रुपया जुर्माना या ६ मास की सजा का दण्ड दिया जायगा। लेकिन वैसे गुजरात में जो नमक पैदा होता है उसमें से अधिकांश तो मनुष्यों के खाने योग्य होता ही नहीं है। ऐसा नमक खाने से लोगों का स्वास्थ्य भी खराब होगा।

अमन सभायें

देश की स्वाधीनता के शत्रु भी अपने निजी स्वार्थों की सिद्धि के लिए नौकरशाही के तलवे चाटने और देशद्रोह करने पर कमर कसे बैठे हैं। इन्होंने देश हित और जाति हित की दुहाइयां देकर अमन सभायें स्थापित करदी हैं। पिछले दिनों कलकत्ते में भी एक ऐसी ही सभा स्थापित हुई थी और अब पूना से भी ऐसी ही सभा की स्थापना के समाचार आये हैं। इन सभाओं के नेता अव्वल नम्बर के स्वार्थी तथा वे लोग हैं जो आज तक देश हित का कोई भी काम करते नहीं देखे गये। इनमें न स्वाभिमान है और न अपना चरित्र बल सरकार 'माई बाप' के सामने पूंछ हिलाना ही इनका धर्म है। लोग चाहें तो इनके इस कार्य्य को देश सेवा समझ सकते हैं!

दमन

—ता० पहली अप्रैल को रावलपिण्डी में मि० नन्दलाल बुकसेलर की दुकान पर पुलिस ने छापा मारा। कहा जाता है कि यह तलाशी 'बिस्मिल की तड़प' नामक पुस्तक के सम्बन्ध में हुई थी।

—रावलपिण्डी के श्री अर्जुनदास लम्बा दफा १२४ के अनुसार गिरफ्तार कर लिए गए। आप बिस्तरे पर बीमार पड़े थे जब कि आपकी गिरफ्तारी हुई!

—लाहौर का समाचार है कि पंजाब सरकार ने अपनी विशेष आज्ञा द्वारा लाहौर षडयंत्र केस की सुनवाई के लिये तीन जजों की एक विशेष अदालत नियुक्त करने की व्यवस्था करदी है। इसका कारण यह बताया जाता है कि सरकार लाहौर षडयंत्र केस के नाटक को शीघ्र से शीघ्र समाप्त कर देना चाहती है।

—ता० १ अप्रैल को देहरादून में पुलिस ने श्री स्वामी विचारानन्द जी तथा श्री चौधरी हुलास वर्मा के मकान प्रेस और दुकान पर छापा मारा और तलाशी में १ प्रति राष्ट्रीय गीतांजलि तथा ३१७ प्रतियाँ 'क्रान्ति भजनावली' की उठा ले गई।

—कलकत्ते का समाचार है कि बंगाल जूट वर्कर्स यूनियन के मंत्री श्री बकरू अली मिरजा दफा १४४ को तोड़ने के अपराध में पकड़ लिए गए हैं।

—ता० ३१ मार्च को लाहौर में एक सभा में से एक लड़के को पुलिस पकड़ कर ले गई। कारण का अभी ठीक २ पता नहीं लगा।

—ता० २९ मार्च को कलकत्ते में १६ गाड़ी वालों का मार्ग रोकने के अपराध में चालान हुआ। इन पर एक से लेकर ५ रुपये तक जुर्माना हुआ। इन्होंने जुर्माना न देकर जेल जाना पसन्द किया।

—देहरागाजी खां में १४४ दफा लगा देने पर भी कांग्रेस की ओर से ३० मार्च को एक जलूस निकला।

—ता० २८ मार्च को रावलपिण्डी में पुलिस नौजवान भारतसभा के दफ्तर, लक्ष्मी आर्ट स्टीम प्रेस, अमानी सरहद ऐलेक्ट्रिक प्रेस तथा श्री धर्मवीर और श्री जगन्नाथ कोहली के घरों की तलाशी ली। कहा जाता है कि ये तलाशियां किसी जप्तशुदा परचे की खोज में हुई थीं।

—ता० २९ मार्च का कलकत्ते का समाचार है कि स्वामी ज्ञानानन्द जी पर १४४ दफा लगा कर भाषण न करने की मनाही करदी गई है। आप कांग्रेस की ओर से जलपाई गोड़ी और बन्दबिला सत्याग्रह के प्रचार कार्य्य के लिए निकले हैं।

—ता० २८ मार्च को लालाराम सरनदास के राजविद्रोह के मुकदमे की सुनवाई हुई। सफाई के दो गवाहों के बयान हुए। अन्त में मुकदमा ५ अप्रैल के लिए मुल्तवी हो गया।

—रायबरेली में अब तक ४३ स्वयं सेवक पकड़े जा चुके हैं।

—आरा डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस कमेटी के प्रधान श्री भवानीदयाल जी को दफा १२४ ए. के अनुसार गिरफ्तार कर लिया गया है।

—रोहतक जिले के धूलीकावास के १० प्रमुख २ किसानों को जिला मजिस्ट्रेट ने गिरफ्तार करा लिया है।

—मछुआबाज़ार बम केस में, तीन जजों की विशेष अदालत के सामने २७ अभियुक्तों पर जो मुकदमा चल रहा था उसमें २६ अभियुक्तों पर षडयंत्र रचने तथा विस्फोटक पदार्थ रखने के अपराध में ता० २७ मार्च को फतजुर्म लगा दिया गया और श्री कुमारदास को छोड़ दिया गया।

—देहली में पं० 'इन्द्र' पर राजद्रोह का मुकदमा चल रहा है। सरकारी गवाहों के बयान हो रहे हैं।

—फीरोजाबाद कांग्रेस कमेटी के प्रधान श्री श्रीभगवान सेवक तथा मंत्री श्री रामचन्द्र शर्मा पालीवाल को आगरा के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने दफा १४४ भंग करने के अपराध में ६ मास की सजा का दंड दिया था, उन्हें आगरे के डिस्ट्रिक्ट जज ने यह कह कर छोड़ दिया कि मजिस्ट्रेट को स्वयं इन्हें सजा देने का कोई अधिकार नहीं था क्योंकि इन लोगों ने उसी की आज्ञा का तो उलंघन किया था।

—डा० मूलराज पर लाहौर में दफा १२४ ए. के अनुसार मुकदमा चल रहा है। सरकारी गवाहों के बयान हो रहे हैं।

—लाहौर के एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने 'वीर भारत' के सम्पादक की जूरी द्वारा अपने मुकदमे की सुनवाई कराने की दरख्तास्त नामंजूर कर दी।

—मेरठ में पुलिस से मुठभेड़ करने के अपराध में कुछ विद्यार्थियों और कांग्रेस के कार्य कर्त्ताओं पर मुकदमा चल रहा है।

—अमृतसर के एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने सरदार साधुसिंह को २ साल की, सरदार करतारसिंह को २॥ साल की और सरदार किरपान सिंह को एक साल की सख्त कैद का सजा का दण्ड दिया है।

—बिजनौर के मौलाना नसरुल्लाखां, सम्पादक 'मदीना', को दफा १२४ ए. के अपराध में पकड़ लिया गया है।

—कुमिल्ला का समाचार है कि आल बंगाल यूथ ऐसोसियेशन के मंत्री श्री सैलेन्द्र राय को एक भाषण के सबंध में ६ मास का सजा का दण्ड दिया गया है।

(देखो पृष्ठ ११)

"हमें तो वास्तिकताओं से काम है। हमें उन चीज़ों से कुछ मतलब नहीं जो अत्यन्त उज्वल हैं परन्तु वास्तव में हैं केवल ख़याली पुलाव ही।"

'क्या ज्ञान और आनन्द की चीजें झूंठी अर्थात अयथार्थ हैं? वे अच्छी चीजें जो ईश्वर की सारी सृष्टि में सर्वत्र मिलती हैं, वह प्रेम जो मनुष्य को ऊपर उठाता है और वह दया जो मनुष्य की रक्षा करती है, क्या झूठे हैं?"

'अच्छा तो मैं अब समझा? आप शायद पुराने दकियानूसी और भावुक ख्याल के उन आदर्शवादी लोगों में से हैं जो स्वर्ग और देव-दूतों का स्वप्न देखा करते हैं और साथ ही पृथ्वी पर स्वर्ग की स्थापना का ख्वाब भी देखा करते हैं?"

"और तुम सोचते हो कि ये लोग जो सोचते हैं वह सब ग़लत है। तुम! जो गन्दगी और बदमाशी का व्यापार करते हो, ठीक हो? क्या तुमने कभी यह सोचा है कि तुम शैतान का काम करते हो और तुम्हारे सिर पर शैतान सवार रहता है, जो तुम्हारे मस्तिष्क और हाथों पर शासन करता है"?

यह सुन कर वह आदमी उपहास की हंसी हंस उठा और बोला 'मैं तो एक [illegible] धर्माचार्य का उपदेश सुन रहा हूं जो कह रहा है कि 'ईश्वर से डरो और उसकी आज्ञा का पालन करो! क्योंकि यही तो ईश्वरीय आज्ञा है, परन्तु अब हमारे अन्दर भय नहीं रहा और हम सत्य को कहने का साहस रखते हैं।"

"परन्तु सत्य कहते किसे हैं? क्या ईश्वर और इसके दूतों के बारे में जो सुनते हैं वह केवल कपोल कल्पना ही है?'

'इससे हमें क्या मतलब? दुनियां तो इसी लिये भली नहीं है कि ईश्वर तो स्वर्ग में बैठा है! और रही देवताओं की बात सो जब हम किसी सुन्दरी को देखते हैं तो उन्हें ही स्वर्गीय देवियां समझ लेते हैं। परन्तु पंखों वाली परियां तो अब रही नहीं, यदि वे सचमुच किसी समय में थीं तो!"

"तुम ऐसा समझते हो?" मुस्कराते हुए फरिश्ते ने पूछा, और तुरन्त ही अपना असली रूप धारण कर लिया। उसके दमदमाते हुए मुखमण्डल को देख कर सारे मनुष्य मूर्तिवत देखते ही रह गये। फरिश्ते ने चुपचाप अपना रास्ता लिया और कप्तान उसके पीछे २ हो लिया।

खुले मैदान में खड़े होकर जिब्राइल ने कहा:——

"दुनिया में आज कल बहुत बुरे दिन आगये हैं। क्योंकि यहां पर आज कल बुरे लोगों का ही प्राधान्य है। परन्तु कुछ भी हो सत्य और धर्म की अन्त में जय ही होगी। तुम बड़े भंवर में पड़े हुए थे सो तुम्हारा तो उद्धार हो गया। और अब तुम भी शीघ्र ही उस स्थान में पहुंचोगे जहां के लिये तुम से वायदा किया गया था। अर्थात 'स्वर्ग'!"

फरिश्ते ने फारेज के सिर पर हाथ रक्खा। हाथ रखते ही वह विस्मृति में विलीन हो गया। अर्थात मृत्यु को प्राप्त हो गया। जिसके मानी हुए कि वह पुर्नजन्म को प्राप्त हो गया!!

चीन का उद्धार कैसे हुआ

[ले० बनर्जी]

[शेषांश]

किसी प्रकार की आपत्ति से भयभीत न होते हुये सिपाहियों में अपने विचारों का प्रचार किया और शीघ्र ही उन्हें अपनी तरफ़ मिला लिया।

सन् १९०५ से लेकर १९११ तक का समय चीन की सशस्त्र क्रान्ति और विद्रोह का समय है। इस काल में कोई भी वर्ष ऐसा व्यतीत नहीं हुआ जिस में कि एक न एक प्रान्त में इस प्रकार के विद्रोह न उठ खड़े हुए हों। एक बार इन लोगों ने रीजेण्ट के प्राण लेने का भी प्रयत्न किया परन्तु असफल रहे। एक ओर यह हो रहा था तो दूसरी ओर सरकार भी इन विद्रोहियों के कुचल डालने का अपनी शक्ति भर उद्योग कर रही थी। परन्तु सरकार की ओर के सारे प्रयत्न निष्फल हो रहे थे। इसके प्रयत्न से शान्ति होने के बजाय असंतोष की लहर और भी बढ़ी और इसके प्रत्येक उद्योग ने आग में ईंधन का काम किया। इस समय चीन के १८ रहों प्रान्त क्रान्तिकारियों के प्रभाव में थे और इन्हीं की सत्ता को मानते थे। फल यह हुआ कि अन्त में क्रान्तिकारियों ने नव सेना के सिपाहियों की सहायता से १० अक्टूबर सन् १९११ को मंचू सरकार का तख्ता उलट दिया।

मंचू सरकार के सर्वनाश के बाद चीन के इतिहास में एक नवीन युग का प्रदुर्भाव हुआ। अब चीन में प्रजातन्त्रीय राज्य व्यवस्था स्थापित की गई और नानकिंग को चीन की राजधानी बनाया गया। अब चीन का अस्थाई शासन-विधान तैयार किया गया और डा० सनयातसेन को प्रजातन्त्र का प्रेसिडेण्ट चुना। इस प्रकार चीन की गुलामी का अन्त हुआ।

डा० सनयातसेन के विचारानुसार सन् १९११ की क्रान्ति से दो उद्देश्य सिद्ध हुए। एक तो यह कि उससे कोई २६० वर्ष का पुराना कलंक मिट गया और चीन की सब जातियों में परस्पर एकता और समानता स्थापित होगई जिससे आपसी मतभेद और लोगों की कमाई से मौज उड़ाने और लूट खसोट की नीति का नाश हो गया। दूसरे इस से चार हजार वर्ष से भी पुरानी एकतंत्री शासन प्रणाली का नाश हो गया और प्रजातंत्रीय शासन प्रणाली की स्थापना हो गई।

पृष्ठ ६ का शेष—

—अमृतसर से निकलने वाले 'आजाद अकाली' के सम्पादक श्री राजेन्द्रसिंह अताश पर राजद्रोहात्मक लेख लिखने का मुकदमा एक्सट्रा असिस्टेण्ट कमिश्नर की अदालत में चल रहा था सो खतम होगया। अब उन्हें सैशन सुपुर्द कर दिया गया है।

—ता०२ मार्च को लखनऊ के श्री बनवारीलाल नामक कांग्रेस के एक वालण्टियर को झूठी अफवाहें उड़ाने के अपराध में गिरफ्तार कर लिया गया है।

—गुजरान वाला के स्वयंसेवकों पर जो मुकदमा चल रहा था उसका फैसला सुना दिया गया। तीन स्वयं सेवकों को एक २ साल की तथा ४ को ८-८ मास की सख्त सजा का दंड दिया गया है।

—मेरठ षडयंत्र केस की सुनवाई बराबर हो रही है।

—लाहौर षडयंत्र केस की सुनवाई भी बराबर हो रही है। सरकारी गवाहों के बयान हो रहे हैं।

—पेशावर का समाचार है कि 'नौजवान सर फरोश' नामक साप्ताहिक पत्र के सप्त शुदा अंक के लिए पुलिस ने पत्र के दफ्तर की तलाशी ली।

—होशियारपुर के लाला जमनादास को राजद्रोह के अपराध में एक साल की सजा का दण्ड मिला है।

—लाहौर से निकलने वाले 'झंग सियाल' नामक पत्र के सम्पादक पर दफा १२४ ए. के अनुसार मुकदमा चल रहा है।

मजदूर

जी० आई० पी० रेलवे की हड़ताल अभी तक जारी है। गवर्नमेंट अपनी निन्दनीय [illegible] और उनकी बात नहीं मानी। फल हुआ है असंतोष और बेकारी जो किसी भी देश और राज्य के लिए विष तुल्य है। इधर सरकार ने कारखाने के मजूरों में कमी करने की योजना की है। अर्थात् लोग निकाले जायंगे। जो हड़ताली १५ मार्च तक काम पर नहीं लौटे हैं वे तो अलग हैं ही पर जो लौट आए हैं उन्हें भी तब रक्खा जायगा जब कि इस बीच में [illegible] इस स्थिति पर विचार करने के लिए मजदूरों ने मार्ग में लेटने का अपना सत्याग्रह १० अप्रेल तक स्थगित कर दिया है। देखें इन बेचारों की क्या दशा होती है? परन्तु इस समय कुछ भी क्यों न हो जाय, आगे चल कर इनकी यह तपस्या अपना रंग अवश्य लावेगी। इधर सरकारी विज्ञप्ति से पता चलता है कि ५० फी सदी लोगों ने काम पर लौटने की सूचना देदी है। इधर सरकार ने खाली जगहों के लिए आदमियों का चुनाव करने वाली एक कमेटी बिठादी है जो खाली स्थानों पर आदमियों को रक्खेगी और हड़तालियों को एक सप्ताह का नोटिस देकर उनसे क्वार्टर खाली करवा लेगी। मि० रुइकर इत्यादि मजदूर नेता सम्मान पूर्ण समझौते की चेष्टा कर रहे हैं।

——टीटागढ़ जूट मील के बहुत से हड़ताली अपने २ काम पर लौट आए।

राजस्थानी प्रगतियां

पटियाला

पटियाला नरेश के पापों का घड़ा सम्भवतः अब लबरेज़ हो चुका है। यह तूफान तो बहुत दिनों से उठ रहा था परन्तु अब शायद वह फूटना ही चाहता है। पटियाला जांच कमेटी की रिपोर्ट प्रकाशित होने पर देश के सभ्य संसार में एक खलबली मच गई है। इस रिपोर्ट के प्रकाशित होने पर पटियाला के सभ्य लोगों में कुछ साहस भी बढ़ा है। वे अब खुल कर अपने दुख कहने लगे हैं। अभी १–६ अप्रैल को वे [illegible] जा रहे हैं। उस दिन देहली में कोई एक सौ आदमियों का एक डेपूटेशन वायसराय से मिलने के लिए उनके निवास स्थान पर गया। परन्तु उस डेपूटेशन को मि० राबर्टसन ने यह कह कर लौटा दिया कि वायसराय इस समय अत्यन्त ज़रूरी काम में लगे हुए हैं। अतः आप लोग यदि चले जाँय तो आपके सारे दुख मैं वायसराय के सामने रख [illegible] डेपूटेशन लौट गया। इसके विषय में अब पत्रों में समाचार प्रकाशित हुए तो पटियाला राज्य की ओर से एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई जिसमें कहा गया था कि एक सौ आदमियों में से केवल ३० आदमी ही पटियाला की वास्तविक प्रजा है। परन्तु वे भी अपराधी हैं और न्याय के डर से भागे २ फिरते हैं। इस विज्ञप्ति की धज्जियां भी इन लोगों ने उड़ा दीं। अब बाद के समाचारों से पता चलता है कि पटियाला नरेश के हाथ में से शासन की बाग और लेकर अंग्रेज अफसरों के हाथों में दे दी गई है। परन्तु इतने से ही अत्याचार पीड़ितों की पीड़ा नहीं जा सकती और न उनके प्रति किये गए पापों और अपराधों का प्रतिकार ही हो सकता है। इस सम्बन्ध में भारत सरकार को कुछ और भी करना होगा। मज़ा तो सरकार की न्याय प्रियता का तब माना जायगा जब कि राउण्ड टेबिल कन्फरेंस की परवाह न करते हुए सरकार पटियाला नरेश के विरुद्ध उचित कार्यवाही करे।

बूंदी

बूंदी की अवस्था बड़ी ही सोचनीय होती जा रही है। कहा जाता है कि महाराज तो शराब में धुत्त रहते हैं और इसी लिये वे मि० भट्टाचार्य के, जो राज्य के मन्त्री हैं, हाथ की कठपुतली बने हुए हैं। यह भी कहा जाता है कि स्वर्गीय व दी नरेश की बेवा रानियों पर तरह २ के जुल्म हो रहे हैं। इन्हीं के फल-स्वरूप एक बेवा रानी तो बेचारी वृन्दावन में पड़ी २ अपनी किस्मत को रो रही है और अपनी आहों से अत्याचारियों का जी भर कर कोस रही है।

चरखारी

चरखारी राज्य की दशा बड़ी ही सोचनीय है। कहा जाता है कि महाराजा साहब अपना दूसरा विवाह करने जा रहे हैं। आपके घर में इस समय बांदावाड़ा के घराने की एक रानी मौजूद है। यह अत्यन्त रूप वती, गुणवती सुशिक्षित और सभ्य हैं। परन्तु फिर भी इन्हें यह दूर की सूझ रही है।

भोपाल और 'रियासत'

कहा जाता है कि भोपाल राज्य के 'जासूस रियासत' अखबार के कर्मचारियों को लोभ लालच देकर इस बात के लिये तैयार कर रहे हैं कि वे झूंठी शहादत दे दें। क्या इस षड़यन्त्र का नाम ही न्याय प्रियता है?

जोधपुर

जोधपुर में गत होलिकोत्सव पर चांदपोल के बाहर स्थित विद्याशाला के कुछ मास्टरों ने होली के रंग में मस्त(!) होकर राहगीरों पर गोबर मिश्रित पानी आदि फेंकना शुरू किया था। इस पर कहा जाता है कि उधर से श्रीमाली ब्राह्मणों के कुछ लड़कों ने, जो उसी समय स्नान करने को जा रहे थे, उन लोगों को ऐसा न करने को कहा। बस फिर क्या था? मास्टर लोग बिगड़ खड़े हुए और लड़कों को गालियां देते हुए मारने को दौड़े। सब लड़के तो भय के मारे भाग गए पर कहते हैं कि श्री अमृतलाल जी का छोटा भाई मुन्नालाल और एक लड़का दोनों वहीं खड़े रहे। मास्टर लोग इनको जबरदस्ती घसीट कर स्कूल के भीतर ले गए और पहले तो उन्हें कोठरियों में बन्द कर दिया और फिर लाठियों(?) से पीटने लगे। हम नहीं समझते कि ये पैशाचिक कृत्य कहां तक सत्य है। पर यदि ये सब बातें सच्ची हैं तो कहना होगा कि स्कूल वालों ने अक्षमता की हद कर दी है। सुना है कई मास्टर लोग पुलिस वालों की रात्रि के समय सुफ्त में पहरा देने के लिए जाते हैं। उसी तो 'काफ' साहब ने गोबर फेंकने वाले मास्टरों को कोर्ट में हाजिर तक न होने देने की हिम्मत की है!

अन्य समाचार

—जाकोरी केस के कैदियों ने अपनी भूख-हड़ताल तोड़ दी, क्योंकि सरकार ने उन्हें बी' क्लास में ले लिया है।

—ता० १ अप्रैल को लखनऊ में एक मोटर डकैती हो गई। कहा जाता है कि नार्मल स्कूल के दो चपरासी इम्पीरियल बैंक से ३५०० सौ रुपया ला रहे थे कि डाकुओं ने इन पर आक्रमण कर दिया और चपरासियों को बुरी तरह घायल करके रुपया छीन कर मोटर में बैठ कर भाग गये। घायल चपरासियों में से एक के मर जाने की भी खबर आई है।

—बम्बई के गल्ले के एक व्यापारी ने सत्याग्रह में काम करने वाले स्वयंसेवकों के खाने के लिए कांग्रेस द्वारा संचालित चौके का सारा खर्च देना स्वीकार कर लिया है। यह खर्च आप तब तक देंगे जब तक कि वर्तमान संग्राम जारी रहेगा।

—अ० भा० का चरखा-संघ और काशी का गांधी आश्रम मिला कर एक कर दिया गया है।

—हिसार का समाचार है कि बावुरा के ज़मींदारों ने अपने गांव के सारे कुओं पर से चमार और धानुकों को पानी भरने की आज्ञा दे दी है।

—रावलपिंडी में ३० मार्च को शहीद दिवस मनाया गया।

—नासिक में मन्दिर प्रवेश का सत्याग्रह जारी है। ता० २ अप्रेल को मन्दिर के पुजारी अछूत कहलाने वाली जातियों को मन्दिर-प्रवेश की आज्ञा देने वाले थे कि शहर में इसकी खबर पहुंच गई। सनातनी लोगों को जब पता लगा तो वे बहुत बिगड़े और उन्हीं ने सत्याग्रहियों पर पत्थर बरसाये। जिस से अनेक लोग घायल हुए।

—कराची का समाचार है कि सिंध के एक बहुत बड़े पीर के यहां ४० हजार कारतूस, २ रिवाल्वर, २५ राइफिलें और बहुत सी अफीम तथा शराब पकड़ी गई है। कहा जाता है कि इन पीर जी के कोई तीन लाख शिष्य हैं।

—बम्बई से निकलने वाले इंडियन रेली मेल के सम्पादक श्री विल्सन को एक धमकी भरा पत्र मिला है जिसमें लिखा है कि यदि तुमने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की निन्दा करना बन्द न किया तो तुम मारडाले जाओगे। और अगर ६ अप्रेल तक अपने पिछले अपराधोंके लिए माफी न मांगी तो फिर ठीक न होगा।

—ता० २८ मार्च को लाहौर में एक मकान को खाली साफ करते समय एक बक्स मिला जिसमें ७५० नम्बर के कारतूसों की गोलियां थीं।

—मेरठ षड़यंत्र केस के सरकारी वकील श्री लैंग फोर्ड जेम्स निमोनिया से पीड़ित होकर मर गये। इसके शोक में २८ मार्च को अदालत बन्द रही।

—ता० २७ मार्च को रावलपिण्डी में क्रान्तिकारी पर्चे बांटे गये।

—पं० मोतीलाल नेहरू ने पं० मदन-मोहन मालवीय को निम्न लिखित तार भेजा है:—

"कौंसिलशाही के जाल से बच कर निकल आने के लिए हार्दिक बधाई। देश की स्वाधीनता की वास्तविक लड़ाई में आपकी सेवाओं की अत्यन्त आवश्यकता है। यह लड़ाई व्यवस्थापिका सभाओं के माया जाल के बाहर है।"

—कराची में विदेशी कपड़े के व्यापारियों को धमकी भरी इस आशय की चिट्ठियां मिली हैं कि कि यदि उन्होंने विदेशी वस्त्र का व्यापार बन्द न किया तो वे मार डाले जायंगे।



राजस्थानी डाक का थैला

कोटा

ज़क़ात के महसूल की चोरी

अभी हाल ही में सुपरिण्टेण्डेण्ट सा० ज़क़ात जंगल डिविजन दौरा करने गए थे। इस अवसर पर आपके सामने एक महसूल की चोरी का मामला पेश हुआ। यदि अधिकारियों ने ईमानदारी से काम किया तो जनता इस मामले को साबित करके देगी। मामला यों है:—

ख्वाजू खां बटवाल साकिन थाना व्यौपार करता है। कहा जाता है कि इस वर्ष बहुत दिनों से यह लाग रात के समय गाड़ी जोत करके घी को इलाका गैर में, जो कि यहां से केवल तीन मील दूर है, पहुंचाने लगे थे। कुछ लोग कई दिनों से इनके पीछे लग रहे थे। परन्तु उचित अवसर न पाकर [illegible] लोग चुप थे। [illegible] एक दिन [illegible] साथ जाने आने वाले एक कल्लू नौकर ने सारी बातें कह दीं। उसी अवसर पर उसने एक चिट्ठी जो कि ख्वाजू खां ने अपने आढ़तिया किशोरीलाल के पास लिखी थी, लोगों को दिखा दी। इस अकाट्य प्रमाण को पाकर लोगों ने सुयोग पा यह सब सुपरिन्टेण्डेण्ट सा० ज़क़ात के सामने पेश करवा दिया। उनके हुक्म से ख्वाजू खां के खाते बही सब ज़प्त हो गए। अस्तु

अब इन लोगों से ये लोग बहुत नाराज हो गए हैं और हर प्रकार से लोगों को तंग कर रहे हैं और गवाहों को भी डरा धमका रहे हैं। अतः उच्च अधिकारियों से हमारा निवेदन है, कि वे कृपा कर इस मामले की जितनी शीघ्र तहकीकात कर सकें करलें तो हमें कष्ट न उठाना पड़े। और साथ ही मामले को उलटने का अवसर न आवे।

कोटा के राज कुँमार की शादी की तैयारियां बड़ी धूमधाम के साथ हो रही हैं। ऐसा भी सुनने में आया है कि इस उत्सव पर श्री राज कुंवार को गुरु मन्त्र का उपदेश भी कराया जायगा। श्रीमान् कोटा नरेश बड़े बुद्धिमान हैं। पुरानी लकीर को नहीं पीटेंगे और यह कार्य्य किसी विद्वान पण्डित या सन्यासी द्वारा ही करावेंगे।

कोटा के वैश्य सुधारक मंडल की ओर से शादी गमी में कम खर्च करने के बाबत मस्विदा महकमा खास में पेश किया गया था। वहां से वह एक कमेटी के सुपुर्द कर दिया गया। कमेटी ने इसकी ५०० कापी छपवा कर, जनता की राय लेने के वास्ते इलाका में सब जगह भेजी हैं। कोटा शहर में इसके बाबत आम सभाएं भी हो रही हैं। विरोधी दल के लोग ऊधम मचाने के सिवाय कुछ जवाब नहीं देते। परन्तु जनता पर इस ऊधम बाजी का क्या असर पड़ सकता है? अतः [illegible] चाहिये कि सभ्यता पूर्वक अपने अपने पक्ष की बातें लोगों के सामने रक्खें।

सम्वाददाता

उदयपुर

रावण-राज्य का नमूना

रेल मगरा (उदयपुर-मेवाड़) में नायब हाकिम चतुर्भुज सुखवाल का शासन यदि रावण-राज्य कहा जाय तो अनुचित न होगा। रिश्वत के दौर दौरे से प्रजातंग है। झूठे २ मुकदमे बनाए जाते हैं और जेबें भरी जाती हैं। इस पाप की कमाई से दारू पी जाती है, नशे में जो कोई भी सामने आ गया कि मां बहिन की गालियां दे डालीं। इतना ही नहीं, शराब पीकर पनघट पर पहुंच जाना और वहां स्त्रियों को छेड़ने में इन्हें शरम नहीं आती। किसी की इज्जत आबरू का ध्यान नहीं। जुर्माने के नाम से भी लोगों से रुपया ऐंठा जाता है। एक दिन नहाती हुई स्त्रियों को भी छेड़ा गया। उस समय एक भले आदमी ने इन्हें नम्रता से ऐसा न करने के लिये समझाया। इस धृष्टता (?) पर उसे अपनी नौकरी से भी हाथ धोना पड़ा। इस प्रकार यहां पर अनाचार और अत्याचार की कोई सीमा नहीं है। क्या कोई इधर ध्यान देगा?

सम्वाददाता

सैलाना

सैलाना राज्य में साम्प्रदायिकता के भूत से जनता को सुरक्षित रखने के लिए सैलाना नरेश ने अपने जन्मोत्सव पर सर्व धर्म सम्मेलन की स्थापना की है। इस में विभिन्न मतों के व्यक्ति एक ही स्थान पर बैठ कर धर्म चर्चा किया करेंगे और इस प्रकार आपसी वैमनस्य और जाति गत विद्वेष को पृथक ही रक्खेंगे। २५ फरवरी को जब इस सम्मेलन का प्रथम दिवस था उस समय इसमें हिन्दू-मुसलमान तथा ईसाई सभी मतों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। २ मार्च को युवराज महोदय ने पधार कर भाषण दिया था। पहले दिन तो स्वयं सैलाना नरेश ही पधारे थे। आपने इस सम्मेलन की प्रारंभिक सहायतार्थ ५०१ रु० प्रदान किया। इसके अतिरिक्त प्रजा के गण्य मान्य सज्जनों से, बिना किसी प्रयत्न के १०००) रु० और [illegible] बैठक सम्भवतः प्रति सप्ताह हुआ करेगी।

खरवा

इलाका 'खरवा' के ग्राम देवगढ़ निवासी सरदार मगनसिंहजी, डकैती के अभियोग में गिरफ्तार किये जाकर डेढ़ वर्ष के लिये जेल भेज दिये गये थे। उसकी मियाद ता० २४-१-१९३० को पूरी हो जाने पर क़ैद से मुक्त किये जाने पर भी अभी तक आप हवालात में ही बन्द हैं। उनके भाई बन्धुओं ने अफसरों से पूछ ताछ की तो स्पष्ट उत्तर नहीं मिला। अभियुक्त निरपराध है। फिर भी क्यों रोक रक्खा गया है? कमिश्नर साहब को इधर शीघ्र ध्यान देना चाहिये।

एक जानकार

भरतपुर

रिश्वत का गर्म बाजार

भरतपुर की पुलिस तो दीवान और सुपरिन्टेंन्डेंट पुलिस की दुलारी होने के कारण रिश्वत लेने में किसी प्रकार का भय ही नहीं करती है। तिसपर भी इस राज्य के परचे तक फाड़कर बदल देने वाले थानेदार निर्दोष बता कर प्रजा की छाती पर धर दिये गये! भला जब अदालतों तक से सर्टीफिकेट मिल चुका तो फिर भय किस का रह गया? इसलिए पुलिस की रिश्वत तो यहां जायज समझली गई है। दीन प्रजा ने अदालतों की कमजोरी देख कर गिला करना ही छोड़दिया और जैसा अदालतों का रुख है उसी तरह दुःखी प्रजा पुलिस को राजी करके अपना समय निकाल रही है। पुलिस की देखा देखी कहा जाता है कि महकमा मालने भी एक बिना धनी की प्रजा देख रिश्वत पर कमर बांधी है। चूंकि हाकिम माल पंजाबी हैं इसलिये पंजाबी अफसरों की तो पांचों घी में हैं। पटवारियान के स्ट्राइक से ला० बिहारीलाल डिप्टी कलक्टर अपनी गाली गुफ्तार से ठीक हो गये थे। मगर पंजाबी अपनी ऐंठ में अकड़े ही हुए हैं। आजकल चुगलखोरी सब आफतों से बचा लेती है। एक नहीं अनेक शिकायतें सुनी जा चुकी हैं। अफसरान को सोचना चाहिये कि अब मैकेन्जी की धांधली का जमाना गया और आजकल पोलीटिकल एजेंन्ट साहब का जमाना है। हम हैरान हो जाते हैं जब कि अहलकारों की भांति आठ २ आने तक पर किसी अफसर को हाथ फैलाता हुआ सुनते हैं!

क्या हम आशा करें कि राज्य के उच्चाधिकारी इस ओर ध्यान देकर प्रजा की रक्षा करेंगे?

सम्वाददाता—

बगड़ी

ठिकाने में अंधेर

बगड़ी के ठिकाने का नारायणदास नाम का लुहार कोर्ट की बेगारी से तंग आकर काम छोड़ बेकार घर बैठा रहता है। इस बात पर उसे बुलवाया और एक पेड़ पर लटका कर पिटवाने की धमकी दी गई है।

एक गरीब नवयुवक से ६ महिने से जमानत लिखा रक्खी है। कारण अभी तक नहीं बताया गया। इस कारण बेचारा कहीं परदेश या दूसरे गांव में पेट भरने तक को भी नहीं जा सकता।

ठाकुर साहिब की वर्ष गांठ की खुशी में वेश्याओं का झुंड खूब नृत्य कर रहा है।

यहां पर एक सार्वजनिक सभा में एक सेवा मण्डल की स्थापना हुई है जिसका उद्देश्य गरीबों पर होने वाले अत्याचार को मिटाना है।

डाक्टर और पुलिस

अभी यहां पर ता० १०-३-३० को गुलाबपुरा में एक केस होगया। श्री छोगालाल कोठारी नामके एक महाजन की को दस्त हुए और उससे उनकी मृत्यु हो गई। कहा जाता है कि इनका और डाक्टर हंसराजपुरी का कुछ मनोमालिन्य था इस लिए उन्होंने पुलिस में रिपोर्ट करदी कि इस आदमी की मृत्यु जहर खाकर हुई है। इस रिपोर्ट पर पुलिस आगई और लाश को चिरवा कर डाक्टरी करवाई परन्तु विष का कोई चिन्ह न पाया गया। इसके बाद पुलिस ने श्री कुन्दन लाल शर्मा को बुलाया। परन्तु वे नहीं गये और कह दिया कि अदालत का हुक्म आने पर जाऊंगा। देखें आगे चल कर और क्या २ होता है!

एक जानकार

सार सूचनायें

आवश्यकता

एक २६ वर्षीय आर्य युवक के लिये सुशिक्षित बाल विधवा की। विधवा और उसके संरक्षक आर्य समाज के सिद्धान्तों का पूर्णतया पालन करने वाले तथा किसी भी आर्य समाज के सभासद अवश्य हों। पत्र व्यवहार शीघ्र ही निम्न लिखित पते पर करें।

"आर्य"
मार्फ़त मास्टर श्याम सुन्दर लाल जी
डी. ए. वी. हाई स्कूल
अजमेर

हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की वर्त्तमान स्थाई-समिति का एक साधारण-अधिवेशन रविवार मि० चैत्र शु० ८-८७ नदनुसार ता० ६ अप्रैल सन् १९३० ई० को १२ बजे दिन से सम्मेलन कार्यालय में निम्न लिखित विषयों पर विचार करने के लिये होगा। स्थायी-समिति के सदस्यों से निवेदन है कि निश्चित समय पर पधार ने की कृपा करें। जो सज्जन स्थायी-समिति की इस बैठक में सम्मिलित न हो सक वे कृपया पत्र द्वारा इन विषयों पर अपनी सम्मति निश्चित तिथि से पहिले भेज दें।

कार्यक्रम

१. नियमावली के नियम ६४ के अनुसार परीक्षा-समिति का संगठन।
२. साहित्य-समिति का संगठन।
३. मंगला-प्रसाद-पारितोषिक समिति का संगठन।
४. गोरखपुर सम्मेलन में स्वीकृत हुए प्रस्तावों को कार्य रूप में परिणत करने के संबन्ध में विचार।
५ अन्य आवश्यक कार्य।

निवेदक—
कृष्णकान्त मालवीय
प्रधान मन्त्री

'वीरभूमि'

श्रीमान खनियाधाना नरेश [illegible] के सम्पादकत्व में 'वीर भूमि' नामक [illegible] सचित्र और विविध विषय विभूषित मासिक पत्रिका गत वसंत पंचमी से प्रकाशित होने वाली थी वह एक निजी विपत्ति के कारण उस समय नहीं प्रकाशित हो सकी। अब आगामी रामनवमी को अवश्य ही वह प्रकाशित हो जायगी। वार्षिक मूल्य वही ३) रु० होंगे।

निवेदक—
प्रबन्धक

भारतीय ग्रन्थमाला

भारतीय ग्रन्थमाला वृन्दावन, का पन्द्रह वां वार्षिकोत्सव अप्रैल में, ईस्टर की छुट्टियों में स्थानीय कुरुकुल की रजत जयन्ति के अवसर पर होगा। उसमें साहित्य सेवियों का अच्छा समारोह रहेगा। राष्ट्र भाषा में सात्विक और देश कालोपयोगी साहित्य की वृद्धि चाहने वाले सज्जनों को पधार कर समुचित सहयोग प्रदान करना चाहिये। उत्सव में ऐसे साहित्य के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण भाषण होंगे तथा लेख और कविताएं भी पढ़ी जांयगी।

मन्त्री

बढ़िया फोटो न खिचे तो दूने दाम वापिस



३) में हैण्ड केमरा

मूल्य में सस्ता, मगर काम में कीमती कैमरों को मात करने वाला यह निहायत ही खुशनुमा मजबूत कैमरा है, जिससे एक बच्चा भी आसानी से एक मिनट में ४। × ३। इञ्च प्लेट पर चाहे जिस चीज की सुन्दर तसवीर खीच सकता है। तसवीर खींचने की तरकीब मुफ्त। मूल्य ३) तीन रुपया डाक मह० ॥=)

भारतमित्र स्टोर्स, नं० ८ अलीगढ़।

५००) रु० इनाम अगर नकली हो!

काश्मीरी कोकशास्त्र

यदि आप सैंकड़ों प्रकार के कोकशास्त्र मंगवा कर अपना रुपया खराब कर चुके हैं, और असली पुस्तक कहीं भी नहीं मिली तो (श्रीमान् पण्डित कोकाजी महामन्त्री महाराजा काश्मीर रचित) सरल हिन्दी अनुवाद सहित असली, सचित्र, प्राचीन, काश्मीरी कोकशास्त्र आप हमसे मंगाइये, इसमें पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी, चारों प्रकार की स्त्री व पुरुषों की पहचान, ८४ आसनों का मनहर (दिल चस्प) हाल तथा स्त्री पुरुषों की ८४ रंगीन तसवीरें (फोटो) वशीकरणमन्त्र, गर्भ में पुत्र व पुत्री की परीक्षा, बांझ स्त्री का इलाज, [illegible] हो तो अवश्य को [illegible] किस्म की नामर्दि[illegible] का शर्तिया इलाज और भी बहुत ऐसी सी २ बातें लिखी गई हैं कि जिनका लिखना यहां उचित नहीं। यह वही पुस्तक है जो कि सैंकड़ों रुपये खर्चने पर नहीं मिलती थी, सुन्दर जिल्द मूल्य ३॥) डाक खर्च माफ अपना और हमारा पता साफ हिन्दी व अंग्रेज़ी में लिखें।

पता—हिन्दीरत्नाकर पुस्तकालय नं० २
लुधियाना (पंजाब)

टैंडर की आवश्यकता

शहर तथा शहर के आस पास के मुहल्लों से कूड़ा कर्कट मोटर लौरियों द्वारा ठेके पर उठाने के लिये टैंडरों की आवश्यकता है। ठेका लेने वाले सज्जनों को चाहिये कि वे अपने अपने टैंडर चेयरमैन म्यूनिसिपल कमेटी के पास मंगलवार ता० १५ अप्रैल सन् १९३० ई० को शाम के ४ बजे तक भेज दें। इस विषय में विशेष जानकारी और इकरारनामें का शर्तें सेक्रेटरी म्यूनिसिपल कमेटी से मुफ्त में मंगा सकते हैं।

'सन्देश' के युवकांक पर "राजस्थान महिला" की राय!

प्रस्तुत अंक अपने ढंग में एक दम अनूठा है, आज तक किसी पत्र ने अभी तक ऐसा उपयोगी अंक निकालने का सराहनीय प्रयत्न नहीं किया है। पथिक जी ने आज की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए 'युवकांक' निकाल कर वास्तव में युगान्तर उपस्थित किया है।

इस अंक का साहित्य बहुत ही उच्च कोटिका है—एक२ लेख युवकों के हृदय में स्फूर्ति और जीवन का संचार किये बिना नहीं रहता।

बनारसी साड़ी व कस्तूरी कपड़े

लेने हों तो
आज ही सूचीपत्र के लिये लिखिये।
कस्तूरी का भाव २०-२५-३०
भरी तोला।
राधा किशन मानियार
ठठेरी बाजार बनारस
BENARES.

जरूरत है

तारबाबू व स्टेशन मास्टरी का काम सीखने वाले उम्मेद वारों को। रेल किराया तथा सार्टिफिकेट आदि बातों की जानकारी के लिए लिखो।
इम्पोरियम टेलग्राफ कालेज
नई सड़क देहली

बवासीर
का
[illegible] इलाज
एक सप्ताह में पूरा [illegible] होता है। पूरे हाल के लिये हमें लिखिये:—वैद्य भूषण यति शिखर-मल जैन अध्यक्ष-मध्यभारत आयुर्वेदिक औषधालय नारायणगढ (इन्दौर) बाया नीमच।

सब प्रकार के फेन्सी
सामान
बर्तन, फर्निचर, आरायश की सामग्री सस्ती और टिकाऊ लेनी हो तो
हमसे पत्र व्यवहार कीजियेः—
ऐलेन ब्रादर्स, बम्बई नं० २

"गांडीव"

गांडीव साहित्य मंदिर का (गुजराती) बाल साहित्य और दूसरी पुस्तकें रेल्वे स्टेशनों पर वहीलर के बुकस्टालों से मिल सकें ऐसा प्रबन्ध किया गया है। खंडवा, रतलाम, आकोला, लोणावला, नासिक रोड, पूनादिस्टेशनों पर बिकता है। खंडवादि शहर निवासी जो सज्जन इच्छा रखें वे बिना पोस्टेज स्टेशन से मंगा सकते हैं। गुजराती बन्धु इस प्रयास को उत्तेजना देंगे, ऐसी आशा है।
प्रबंधक—गांडीव साहित्य मन्दिर
सूरत

हेलेन एण्ड कम्पनी, चिकेगो
[illegible]
हेजिंग
मुर्दे को जिन्दा बनाता है।
सब दवा करोशों से
मिलता है।

नये वर्ष की खुशी में
मुफ्त लीजिये

सदा कि भांति इस वर्ष भी ३१ मार्च तक 'हिन्दू संसार, क नये वर्ष का उपहार देगा। जिसमें 'केनिया में हिन्दुस्थानी' नामक पुस्तक—जिसकी १॥) कीमत है और जो प्रवासी भाइयों के सम्बन्ध में अपने ढंग की एक ही और अनोखी पुस्तक है, २७८ पृष्ठों में समाप्त होती है—३ महीने और उससे भी ऊपर होने वाले ग्राहकों को ३१ मार्च तक मुफ्त मिलेगी। हिन्दू संसार का मूल्य १ वर्ष का मूल्य १२) तथा ६ महीना ६) रुपया है।

केवल १०) में।

प्रति वर्ष अनेकों संस्थाओं और विद्यार्थियों के आर्थिक कठिनाई के कारण हमारे पास कम मूल्य में 'हिन्दू संसार' भेजने के पत्र आते हैं। इनका काठनाइयों का ध्यान रख कर हमने इस बार ३१ मार्च तक ऐसे विद्यार्थियों और संस्थाओं को केवल १०) रु० वार्षिक में 'हिन्दू संसार, देने का निश्चय कर लिया है अतः ऐसे

अपूर्व और सुलभ अवसर

से इन्हें अवश्य लाभ उठाना चाहिये। समय बीत जाने पर उनके ऐसे पत्रों क कोई मूल्य नहीं रह जायगा। शीघ्रता कीजिये और समय से लाभ उठाइये।
मैनेजर
'हिन्दू संसार' नया बाजार दिल्ली।

५०) वेतन पर एजेन्टों की ज़रूरत है।

सचित्र स्वास्थ्य शिक्षा

भूमिका लेखक प्रो० राममूर्ति नायडू इन्डियन हरक्यूलीज। ३०० पृष्ठ ११८ रंग बिरंगे चित्र, १०२ स्वर्ण उपदेश, १०० दवाइयां, सैंडो, गुलाम, रामा, ताराबाई, कल्लु जिबस्को आदि जगत विख्यात बीसियों पहलवानों का सचित्र जीवन चरित्र, ५० प्रकार के खेल और व्यायाम जैसे सैन्डो डम्बल्स लकड़ी, मुगदर, हारजेन्टलबार्स, पेरेललबार्स, कुश्ती हाकी, फुटबाल, क्रिकेट, ४०० बातें शरीर रचना; स्वास्थ्य और कामशास्त्र-सम्बन्धी सचित्र समझाई गई हैं। यह वही पुस्तक है जिस पर आल इन्डिया हिन्दी साहित्य सम्मेलन में फर्स्ट क्लास सार्टिफिकट मोल चुका है। जो स्कूलों में पढ़ाई जाती है तथा यू० पी० टेक्स्टबुक कमेटी ने विद्यार्थियों के इनाम तथा लाइब्रेरियों के वास्ते मंजर फरमाया है। समाचार पत्र पत्रिकाओं ने तथा प्रतिष्ठित सज्जनों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। नापसन्द होने पर मूल्य वापिस। एजेन्सी नियम पुस्तक के साथ। मूल्य १॥)

पताः—जयपुर प्रिंटिंग वर्क्स चौड़ा रास्ता
जयपुर सिटी (राजपूताना)

श्री. पथिकजी लिखित
'What Are Indian States'
नामक पुस्तक पढ़िये।
[illegible] राज्यों की [illegible]

नगा चित्र है,

कुछ सम्मतियां लीजिये :

मैंने आपकी पुस्तक पढ़ी। बड़ी रुचिकर प्रतीत हुई। अब दुबारा पढ़ रहा हूं
बिशप विलियम माण्ट गौमरी ब्राउन डी. डी.
टैलिन ओहियो (अमेरिका)

पुस्तक अध्ययन करने योग्य है।
सम्पादक "दि सण्डे वर्कर" (लन्दन)

पथिकजी ने देशीराज्यों की जिस अवस्था पर से पर्दा उठाया है उस साधारण अंग्रेज जनता बिलकुलनहीं जानती। सके प्रचार की आवश्यकता है।
एडवर्ड थाम्पसन
(दि अदर साइड आफ दि मेडल—के लेखक)

पथिकजी की पुस्तक में लिखी बातें ९९ प्रति शत अंग्रेज नहीं जानते। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि इस पुस्तक का खूब प्रचार हो तो राज्यों की प्रजा के पक्ष में प्रबल लोकमत पैदा हो जायगा।
एच. एफ. विग,
(मन्त्री संगठन विभाग, ब्रटिश कारपोरेशन आफ यूथ)

यह एक ऐसी पुस्तक है जिसे प्रत्येक अंग्रेजी पढ़े लिखे को पढ़ना चाहिये। मुझे आशा है कि न्याय-बुद्धि सम्पन्न अंग्रेजों पर यह अच्छा असर डालेगी।
(लन्दन कोलोनिस्ट के प्रतिनिधि, और वर्कर्स मन्थली, के सम्पादक)

आपकी पुस्तक इंग्लैंड में राज्यों के प्रचार का विष अवश्य कम करेगी। दुर्भाग्य वश इसका अधिक प्रचार नहीं हो सका है।
टी. पी. सीन्हा
(इण्डिपेण्डेण्ट लेबरपार्टी के भारतीय सलाहकार)

आपकी पुस्तक बहुमूल्य सूचनाओं से भरी है और मुझे उसे पढ़ कर राज्यों की गरीब प्रजा से गहरी सहानुभूति पैदा हुई है।
ऐलेक्स गौसिप
ऐलेक्स गासप
प्रधान मन्त्री, नेशनल अमलगमेटेड फ्लं० ट्रेडस ऐसोसियेशन।

मूल्य केवल २) है, डाकखर्च अलग

टटका समाचार

"बुढ़ापा" की प्रशंसा!!

कानपुर २७--६—२९

हिन्दी के प्रसिद्ध गल्प लेखक 'मां', 'भिखारिणी" आदि उपन्यासों तथा सैकड़ों गल्पों तथा 'भीष्म' नाटक के रचयिता पण्डित विश्वम्भरनाथज शर्मा कौशिक ने उस दिन "मधुकरी" उलटने के बाद उसके यशस्वी संग्रह-कर्ता को एक पत्र लिखा और उसमें लिखा:—

"...पृष्ठ उलटने लगा, सहसा नेत्रों के सामने बड़े बड़े अक्षरों में "बुढ़ापा" आ कूदा। दो-चार लाइनें पढ़ीं, उंगलियां पृष्ठ पलटने के लिये बेचैन हो रही थीं, परन्तु नेत्रों ने उंगलियों का साथ छोड़ कर बुढ़ापे को देखना आरम्भ कर दिया। उफ़! उसे देख कर तो मैं सिहर उठा! उग्रजी ऐसा नवयुवक भी बुढ़ापे का ऐसा भयानक चित्र खींच सकता है! सोचा, उग्रजी का शरीर तरुण है परन्तु हृदय के किसी कोने में बुढ़ापे का अङ्कुर प्रस्फुटित हो रहा है। तभी तो बुढ़ापे का इतना सम्पूर्ण चित्र खींचने में सफल हुए...।"

उग्र-लिखित "बुढ़ापा" कहां है?

इन्द्रधनुष में इन्द्रधनुष में

(मूल्य १॥)

इन्द्रधनुष में इन्द्रधनुष में

इन्द्रधनुष की एक एक रचना में आधुनिक हिंदी के जागरण का जाज्वल्यमान उथल-पुथल है!

उग्र-रचित

अन्य विख्यात, हाहाकार-भरी पुस्तकें

इन्द्रधनुष १॥) बलात्कार १॥) बुधुआ की बेटी ३)

सचित्र, विचित्र, उपन्यास) निर्लज्जा १॥) चार बेचारे १॥) चाकलेट १)

चन्द हसीनों के खुतूत ।॥) चिनगारियां १॥) (सरकार द्वारा ज़ब्त!) दिल्ली का दलाल १॥) दोज़ख की आग १॥)

[illegible] मिर्ज़ापुर, सिटी।



आरोग्यता प्राप्त करने का अपूर्व अवसर

राजस्थान के प्रख्यात राजवद्य पं० रामचन्द्र शर्मा अध्यक्ष श्री राजस्थान आयुर्वैदिक औषधालय अजमेर, की परम्परागत् प्राप्त, सहस्रा बार अनुभूत, परम लाभकारी और सब के सेवनोपयोगी भारत सर्कार से रजिस्टर्ड पेटेन्ट औषधियां, जिनके रामबाण वत् लाभ के साक्षीभूत राजा-महाराजा सामन्त और उद्भट विद्वानों के हज़ारों प्रशंसा पत्र प्रस्तुत हैं:—

दन्तामृत मञ्जन

यह पायोरिया आदि दांत और मसूड़ों के सब रोगों को नाश करने वाला आयुर्वैदिक वैज्ञानिक विधि से निर्मित, शुद्ध स्वदेशी, मस्त सुगन्धियुक्त दंत मञ्जन है। इसके व्यवहार से दांतों के सब रोग दूर होकर दांत मजबूत और चमकीले और मुख सुगन्धियुक्त हो जाते हैं। सदा व्यवहार करने योग्य सर्वोपयोगी दंत मञ्जन है। परीक्षा कर लाभ उठाइए।

मूल्य प्रति छोटी शीशी।
" " बड़ी शीशी ॥)

केश कल्पद्रुम तैल

आयुर्वेदिक वैज्ञानिक विधि द्वारा निर्मित, मस्तिष्कोपयोगी बादाम काहु, कद्दू, खोपरा, तिल्ली आदि तैलों से युक्त एवम् ब्राह्मी आंवला आदि मस्तिष्कोपयोगी वनस्पतियों से परिपाचित सुगन्धित मसाले और पुष्पों से सुवासित मस्त सुगन्धियुक्त यह केश-तैल सदा व्यवहार करने में अद्वितीय है। इसके सेवन से मस्तिष्क की क्षीणता तथा तज्जन्य निर्बलता और उसी से उत्पन्न होने वाले अनेकद रोग जैसे शिर दर्द, बालों का असमय पकना व गिरना आदि नाश होते हैं। राजा, महाराजा और सर्व साधारण ने इसे सदा व्यवहार करने को अपनाया है। परीक्षा कर लाभ उठाइये।

मूल्य प्रति शीशी १) रुपया
एक पौंड की बोतल, कीमत ४) रु०

अग्निवर्द्धक चूर्ण

अपाचन के समस्त के समस्त विकार, अरुचि, पेट का दर्द, अजीर्ण, मनन्दाप्त, संग्रहणी आदि सब रोगों को समूल नाश करता है। सेवन से देश विदेश के जल के विकार का डर नहीं रहता है और खाने में बड़ा स्वादु और रुचिकर है।

मूल्य १० तोले की डिब्बी क ॥≈) मात्र

इनके अतिरिक्त इस प्रसिद्ध औषधालय में आयुर्वेद शास्त्र सिद्ध चीनी के बने फलों के शर्बत, मुरब्बे, पाकादि हर समय प्रस्तुत रहते हैं जिनका सूचीपत्र मंगाने पर मुफ्त भेजा जाता है। एजेन्टों के लिये विशेष सुविधाएं हैं। पत्र व्यवहार करें।

प्रबन्धकर्ता
श्री राजस्थान आयुर्वेदिक औषधालय
अजमेर

तार का पता
वैद्यराज रामचन्द्र अजमेर

"सन्देश मुद्रण कुटीर" में विजयसिंह पथिक द्वारा सम्पादित और मुद्रित प्रकाशित।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

...पादक—श्री पथिक जी [जेल में] संचालिका—श्रीमती जानकीदेवी.



...तिमङ्ग ।)

इच्छा हो वा कि अनिच्छा हो, हो प्रेम कि इस से द्वेष तुम्हें,
है जीना तो सुनना होगा, नूतन—युग का "संदेश" तुम्हें।

वार्षिक मूल्य ३॥)

...र्ष ६] अजमेर वैशाख कृष्णा १२ सम्वत १९८७ शनिवार २६ अप्रैल १९३० ईस्वी [अंक ४७

...शावर में भीषण दंगा; बर्बरता का नंगा नाच !

...पेशावर से २२ अप्रैल को भीषण ... के समाचार आये हैं। ... हुई कि पेशावर कांग्रेस ... के प्रमुख कार्य कर्त्ता श्री ...गफ्फार खां आगा सैय्यद ... प्यारोखां की गिरफ्तारी ... नगर में तुरन्त हड़ताल ... और हड़ताल होते ही लोगों ... बड़ा भारी जलूस शहर में ... निकला। लोगों के जोश ... को ... तथा ... कि और सत्ता की अवहेलना ... नौकरशाही ने सेना को ... किया। कहा जाता है कि ... जनता में मुठभेड़ हुई। ... जनता की ओर कोई तीस ... चुरी तरह घायल हुए। ... जाता है कि भीड़ ने उन ... को घेर लिया था जिन में

१२ भारतीयों का खून !!

एक अंग्रेज मारा गया ?

गिरफ्तार शुदा लोग बन्द थे। पुलिस ने इन लोगों को हटाने में अपने को अशक्त पाया तो गोरखा पल्टन बुलाई गई। इधर कहा जाता है कि उत्तेजित भीड़ ने गाड़ियों पर पेट्रोल (?) छिड़क कर आग लगा दी। जिसके कारण दोनों ड्राइवर मारे गये। आग लगने के बाद ही फौज ने गोली चला दी और फिर नगर के फाटक बन्द कर दिये गये ताकि सीमा प्रान्त के लुटेरे आक्रमण न कर बैठें। इस दंगे में डिप्टी कमिश्नर तथा असिस्टेंट पुलिस सुपरिंटेंडेंट के भी चोटें आई हैं। दो फौजी गोरे भी मारे गये। एक दर्जन आदमियों के मारे जाने तथा अनेकों के घायल होने की भी ख़बर है। यह भी कहा जाता है कि ख़ान अबदुल गफूर खां १००० आदमियों को लेकर सत्याग्रह के लिए आ रहे थे कि उन्हें मार्ग में ही पकड़ लिया गया।

देहली में पुलिस का गुण्डापन।

गत २२ अप्रैल को देहली में एसेम्बली भवन के ठीक सामने ७ स्वयंसेवकों के एक जत्थे ने नमक बनाया। कहा जाता है कि जिस समय ये लोग नमक बना रहे थे उस समय कोई एक दर्जन पुलिस वाले इन पर टूट पड़े और उनके वे बर्त्तन इत्यादि छीनने लगे जिनमें कि नमक बनाया जा रहा था। इस छीना-झपटी में कितने ही स्वयंसेवक जल गये! पुलिस ने एक स्वयंसेवक के चांटे भी लगाये। परन्तु वीर लोग शान्त रहे और अपने बर्त्तन पुलिस को न लेजाने दिये।

अजमेर में नमक सत्याग्रह रङ्ग ला रहा है!

वीरभूमि राजस्थान ने भी अपनी शान रखली। देश में जगह-जगह नमक कानून टूटने की खबरें आ रही थीं, पर राजपूताने में अभी तक ऐसा न हो सका था। आखिर २० अप्रैल को वह शुभ दिन हुआ कि अजमेर ने भी हजारों भाई बहनों की उपस्थिति में, बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ, सार्वजनिक रूप से नमक कानून को तोड़ दिया। क्या उत्साह पूर्ण वह दृश्य था, जब कि राजस्थान के प्रतिनिधि-स्वरूप छः भाइयों की राष्ट्रीय सेना अपने तपे हुए और कसे हुए अगुआ श्री हरिभाऊजी उपाध्याय के नायकत्वमें अजमेर के हजारों नर-नारियों के उत्साह एवं प्रेम के बीच नगर भ्रमण करके अन्त में रामगंज के मैदान में खुले आम नमक बना कर नमक सम्बन्धी अन्यायी कानून का भंग किया।

पुलिस भी घटना स्थल पर मौजूद थी। पहले तो वह दूर खड़ी रही, परन्तु जब नमक बन गया तो वहाँ आधमकी और नमक बनाने के बर्तन इत्यादि लेकर चम्पत हुई। पुलिस की उपस्थिति में ही श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने बने हुए नमक का नीलाम किया। एक तोले नमक की पहली पुड़िया श्री जोतमलजी लूणियां ने १०१) रु० में खरीदी। दूसरी पुड़िया का नीलाम एक वैश्य बन्धु ने ३१) रु० में खरीदा। और तीसरी पुड़िया का नीलाम १०।) रु० में श्री रामगोपाल ने खरीदा।

जलूस का दृश्य अभूतपूर्व था। लोगों का उत्साह इस नगर में जीवन दायिनी शक्ति के पैदा हो जाने का सूचक था। नगर में जलूस का जगह जगह जो स्वागत हुआ उससे पता चलता था कि इस आंदोलन के साथ जनता की कितनी सहानुभूति है। जलूस का नगर में जहाँ २ स्वागत होता जाता था। वहाँ २ श्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्रीमती उपाध्याय तथा श्रीमती कृष्णा देवी के व्याख्यान होते जाते थे। रामगंज में जब जलूस पहुंचा तो वहां के निवासियों ने उसका बड़ा शानदार स्वागत किया। और साथ ही ५१) रु० की थैली भी भेंट की।

केसरगंज, नयाबाजार में हजारों की भीड़

सत्याग्रहियों ने प्राणों की बाजी लगाकर अपना व्रत निबाहा

दूसरे दिन कैसरगंज के चक्कर में हजारों की भीड़ में फिर नमक बनाया गया। आज भी पुलिस मौजूद थी पर बोली नहीं। और न अगले दिन की तरह बर्त्तन भांडे लेकर चम्पत ही हुई। तीसरे दिन नये बाजार में फिर नमक बनाया गया। दोनों दिन नमक बना कर पहले दिन की भांति नीलाम किया गया। अब नगर में स्वयंसेवक बना हुआ नमक बेचते फिरते हैं। व्यावर के लिये भी यहां से एक टुकड़ी सत्याग्रह करने के लिए रवाना हो गई है। इससमय की अवस्था देख कर निश्चत रूप से कहा जा सकता है कि यह प्रान्त देश के किसी प्रान्त से भी इस युद्ध में पीछे न रहेगा।

ता० २३ को घसोटी में और ता० २४ की शराबगी मोहल्ले में नमक बनाया गया। लोगों में अपूर्व जोश था। पुलिस पासतक नहीं फटकी। लोग गिरफ्तार होना चाहते हैं। परन्तु यहां के अधिकारी उन्हें शहीद बनाना पसंद नहीं करते। इसलिए कांग्रेस के सरकिल में एक हलचल मची हुई है। वे अब कोई शायद और तरकीबें सोच निकालें जिससे कि सरकार को उन्हें पकड़नाही पड़े।

अनाथालय का चुनाव

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय का चुनाव हो गया। कहा जाता है कि इस चुनाव में सदस्यों की जितनी उपस्थिति थी उतनी शायद आज-तक इस अनाथालय के किसी चुनाव में नहीं देखी गई। इसका कारण था दलबन्दी। प्रारम्भ में कुछ तू-तू मैं रही। लोग चाहते थे कि अनाथालय के गवर्नर पं० कन्हैया लाल के विरुद्ध कुछ बातें उसी सभा में कहें और उनसे उन बातों का उत्तर मांगे, परन्तु ऐसा करना ठीक न समझा गया। क्योंकि इतनी बड़ी सभा किसी भी मामले की जज नहीं हो सकती। अतः ३आदमियों की एक कमेटी बनादी गई जो पं० कन्हैयालाल जी पर लगाये गये दोषों की जांच करके अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करेगी। अनाथालय का चुनाव इस बार इतना अच्छा रहा कि इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। अनाथालय के प्रधान हो रहे वयोवृद्ध रा० सा० मिट्ठन लाल जी ही परन्तु सर्व सम्मति से [illegible] जी। और गवर्नर के पद का चुनाव तो और भी अच्छा रहा। प्रो० देवकीनन्दन जी जैसे साधु स्वभाव तथा सच्चे आदमी गवर्नर बनाकर अनाथालय ने अपने मान और प्रतिष्ठा को बढ़ाया है। उपमन्त्री श्री विद्याराम जी चुने गये हैं दुःख है कि अनाथालय के पुराने, सच्चे और वयोवृद्ध निस्पृह सेवक श्री जगरूप जी ने कोई पद स्वीकार नहीं किया। अनाथालय के लिए यहएक प्रकार से अमंगल कारी हुआ।

एक जानकार

श्री नित्यानन्दजी का मुकदमा

श्रीयुत नित्यानन्दजी नागर २२ अप्रैल की सुबह को घूसीलालजी की बगीची में नमक बनाते हुए अचानक पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए गये। उस समय नित्यानन्दजी वहां अकेले ही थे। उनके साथ के सैनिक जलूस में भाग ले रहे थे। फिर भी उन्होंने कढ़ाई देने से इन्कार कर दिया और जब पुलिस ने इन्हें गिरफ्तार कर लिया तभी वह कढ़ाई पर कब्जा कर सकी। नागरजी जब गिरफ्तार करके मोटर द्वारा हवालात में लाये गये तो वह बड़े प्रसन्न थे, उत्साह से उछल उछल कर लोगों को वन्देमातरम् कह रहे थे। नागरजी ऐसे प्रसन्न थे जैसे उनकी मन मांगा मुराद पूरी हुई हो। उनकी पुत्रवधू श्रीमती सत्यभामा जो व्यावर कांग्रेस कमेटी की सेक्रेटरी हैं जब उनसे मिलने गईं तो उन्होंने कहा, "इस तरह क्या आयी हो? मिलना है तो मेरी तरह कैद होकर आओ।"

अदालत में श्री नित्यानन्दजी ने कार्यवाही में भाग लेने से इन्कार कर दिया। मजिस्ट्रेट साहब श्रीयुत किशनलालजी ने जब बार बार उनसे पूछा तो उन्होंने कहा—'मैं क्या कहूं? एक ओर सरकार है और दूसरी ओर हैं हम लोग। यदि कोई तीसरी पार्टी होती तो उससे मैं अपनी बात कहता। आप वैसे तो हमारे भाई हैं पर आप सरकार की कुर्सी पर बैठे हैं इसलिए सरकार के हैं और इस सरकार से हमें न्याय की आशा नहीं है। [illegible] नित्यानन्द जी ने कहा—"सरकार के राक्षसी कानून को तोड़नाही मेरा पेशा और मेरा धर्म है।' यह मुकदमे क्या थे वास्तव में नीरस प्रहसन मात्र थे। अभियुक्तों को सरकार में विश्वास न था पर मजिस्ट्रेट साहब सरकार के सकल अधिकार वैभव से अभिभूत होकर रोब डालने की इच्छा रखने वाली गम्भीर मुद्रा के साथ अपना महान् और पवित्र कार्य पूरा कर रहे थे! नित्यानन्द जी एक जत्थे को लेकर नमक तोड़ने की घोषणा करते हुए अजमेर से पैदल चलकर व्यावर पहुंचे थे और उन्होंने घोषणा करके नमक कानून को तोड़ा था। फिर भी पुलिस के अधिकारियों का यह कहना था कि उन्हें यह पता नहीं कि नमक बनाया गया। इसलिए नमक कानून तोड़ने के अपराध में नहीं प्रत्युत कानून तोड़ने की तरगीब देने के अपराध में उन्हें गिरफ्तार किया गया है। यह पुलिस की कर्मण्यता की प्रमाणिकता और सरकार की धांधल बाजी का एक प्रकाश्य प्रमाण था। आपको एक साल की सख्त कैद की सजा दी गई है।

———

राजस्थान संदेश

वह राष्ट्र नहीं उठता, रहता,
उसका जग में यश शेष नहीं।
जो स्वतन्त्रताका द्रोही, हो,
सुनता नवयुग 'सन्देश' नहीं॥

अजमेर, शनिवार व०कृ०१३ वि.सं०१९८७

बर्बरता और हम

देश में स्वतंत्रता संग्राम अब पूरे बल और वेग के साथ चल रहा है। देश भर में गिरफ्तारियां और सज़ायें हो रही हैं। नमक कानून तो टूट ही गया। उसका वजूद अब केवल कानून की किताबों में ही रह गया है, क्योंकि देश में अब तक लाखों नहीं करोड़ों आदमी नमक बना चुके हैं और इस प्रकार इस अनीतिपूर्ण कानून को क़ब्र में दफ़ना चुके हैं। लेकिन हमारा यह संग्राम नमक कानून के विरुद्ध ही नहीं है। यह तो शासन की सारी अनीति और अन्याय के विरुद्ध है। इसे लड़ने के लिए हमें बड़े त्याग और तपस्या की ज़रूरत है। इसमें हमें बड़े से बड़े बलिदान करने पड़ेंगे, अनेक कष्ट भोगने होंगे, जेल की नारकीय यातनायें सहनी होंगी और इससे भी बढ़कर अपने और अपने निकट वर्तियों के प्राणों को भी होम देना होगा। इतना होगा, तब कहीं स्वतंत्रता का सुख भोगने को मिलेगा। वह भी सम्भवतः हमें नहीं, हमारी संतति और हमारे पीछे रहने वालों को। क्योंकि हम तो इस धर्म युद्ध में बलिवेदी पर चढ़ जायंगे। स्वतंत्रता के सैनिकों के लिए तो यह और भी विकट समय है। इस समय हमारी नीति है अहिंसात्मक रहना। हम पर चाहे कितना ही अत्याचार क्यों न हो, परन्तु हमें पूर्ण शान्त रहना है। इसी में हमारी शक्ति है। यदि हमने उत्तेजना में आकर अपने अहिंसा के वृत को छोड़ दिया तो समझ लो कि हम उसी समय हार गये। दूसरे दुश्मन के उत्तेजित करने पर यदि हम उत्तेजित हो उठते हैं तो इसके साफ़ मानी यह हैं कि हम उससे कमज़ोर हैं। हमारी ताक़त तो इसी में है कि हम वह काम कभी न करें जो हमारा प्रतिद्वन्दी हम से कराना चाहता है, बल्कि वह करें जिसे करने के लिए हमने बड़ी शान्ति से सोच विचार कर करने का निश्चय किया है। आज नौकरशाही हमारे अहिंसा और शान्ति के वृत को भंग करा देना चाहती है। वह चाहती है कि हम अपने वृत से डिगें जिससे कि उसे अपनी रक्त पिपासा शान्त करने का मौक़ा मिल जाय। कराची का गोली काण्ड, देहली में स्वयंसेवकों पर हुई मार पीट, बंगाल में स्वयंसेवकों पर हुए नृशंस अत्याचार और गुजरात में वालंटियरों से नमक छीनते समय किये गये पुलिस के ज़ुल्म हमारे इस कथन के स्पष्ट प्रमाण हैं। चूंकि इतनी उत्तेजना मिलने पर भी शान्त युद्ध के सिपाई शान्त रहे इसीलिए शान्ति और व्यवस्था के नाम पर उसे खून का फाग खेलने का मौक़ा नहीं मिला और यदि लोगों ने इसी प्रकार शांति रखी तो हमें विश्वास है कि उसे आगे भी अपने उद्देश्य में कृतकार्य्य होने का मौक़ा न मिलेगा।

लेकिन एक बात और है। इस बार महात्मा गांधी यह घोषित कर चुके हैं कि एक क्या अनेक चौरी चौरा बन जायं परन्तु यह संग्राम बन्द न किया जायगा। यह तो ठीक है। परन्तु महात्मा जी की इस घोषणा से हमें अपने आवेश पर संयम न रखने की छुट्टी नहीं मिल जाती। बल्कि इससे तो हमारे ऊपर एक और ज़िम्मेदारी आ जाती है कि हम और भी अधिक शान्त तथा अहिंसक रहें। यह ठीक है कि पुलिस की कमीनी हरकतें लोगों को उत्तेजित करती हैं, उनका खून खौला देती हैं। पुलिस की यह बेलगामी ही कलकत्ते में एक यूरोपियन महिला पर भीड़ द्वारा पत्थर फैंके जाने की ज़िम्मेदार है। पुलिस ने, कलकत्ते के विद्यार्थियों की एक भरी सभा में, उनपर अत्यन्त घृणित और पाशविक अत्याचार किये। परन्तु इन अत्याचारों से हमें किसी महिला पर अत्याचार करने की छुट्टी नहीं मिल जाती। अगर पुलिस अपनी स्वाभाविक नीचता पर उतारू है और नौकरशाही अपने कमीने पन को तिलांजलि देने को तैयार नहीं है तो हमें भी अपनी भलाई और सभ्यता को न छोड़ देना चाहिए। और वह भी उस समय जब कि ऐसा करना देश के लिए अपघात सिद्ध हो रहा हो। अतः हमें चाहिए कि चाहे हम कलकत्ते के गाड़ी वानों की तरह चनों की भांति ही क्यों न भून डाले जायं, कराची की भांति मक्खी और मच्छरों की तरह क्यों न पीसडाले जायं, परन्तु हमें टस से मस न होना चाहिए। हम न तो अपनी जगह से हिलें ही और न अपना हाथ पैर ही उठावें। परन्तु साथ ही मैदान छोड़कर भी न भागें। यद्यपि यह बात अक्षरशः सत्य है कि इस देश में अंग्रेज़ी सरकार का अस्तित्व पशु बल पर ही अवलंबित है। परन्तु इस पशुबल को हमें निकम्मा और निरर्थक बना देना है। वह भी अपने आत्मबल, शक्ति और अहिंसा से। क्योंकि पशु-बल का एक मात्र उद्देश्य लोगों को भयभीत कर देना ही तो है। परन्तु जब लोग उससे डरना छोड़ देंगे और उसका मुकाबिला पशु बल से नहीं बल्कि आत्मबल से करेंगे तो अत्याचारी हिंसक को बता देंगे कि तेरे डंडे तेरी बन्दूक, तेरी मशीनगन और तेरे बम्ब के गोले हमें डराने के लिए काफी नहीं हैं। तो फिर वह स्वयं ही भयभीत हो जायगा। क्यों कि जिसे मौत का डर नहीं है उसका सामना करने में अत्याचारी और पापी कब ठहर सकता है?

एक बात और है। सरकार को चेतावनी देना और उससे शान्ति और व्यवस्था की आशा करना भूल है। यह आशा दुराशा है। हमारा ख्याल है कि वह ऐसा नहीं चाहती। यदि चाहती तो पुलिस के गुंडेपनको अवश्य लगाम देती। परन्तु वह ऐसा क्यों करने लगी? कारण कि उसका विश्वास तो आतंक में है! ऐसी स्थिति में हमें क्या करना है? यही कि आतंक और गुंडेपन के सामने अपने प्राणों की बाज़ी लगा कर उनको मिटादें। इन्हें मिटाने के लिए न तो आतंक से काम चलेगा और न भयभीत होने से। इसलिए पुलिस की बर्बरता, गुंडेपन और कमीने पन को हम दयाशीलदृष्टि से देखेंगे, उन्हें हँसते२ सहेंगे और इस प्रकार शान्ति किन्तु दृढ़तापूर्वक अपना संग्राम जारी रखते हुए अपने लक्ष्य-पूर्ण स्वतंत्रता-तक पहुंचने में प्रयत्नशील रहेंगे।

सामयिक समस्याएं

श्री सेनगुप्त को सजा

बंगाल में दमन नीति का तांडव नृत्य जारी है। जान पड़ता है कि बंगाल की सरकार इस सम्बन्ध में अन्य सारी प्रान्तीय सरकारों से बाज़ी मार लेने का निश्चय किये बैठी है। परन्तु हमारे ख्याल से देश में यदि कोई ऐसा प्रान्त है जहां खुल्लम खुल्ला आन्दोलन को न दबाया जाय तो वह बंगाल ही है। परन्तु जान पड़ता है, कि बंगाल की सरकार अपने पैर में स्वयं ही कुल्हाड़ी मार रही है। श्री सुभाषबाबू और श्री सेनगुप्त बंगाल के सार्वजनिक जीवन के प्राण हैं। उन्हें जेल में ठूंस देना बंगाल के हृदय पर वज्राघात करना है। बंगाल का युवक समुदाय इस चोट से विह्वल हो उठेगा, और हमारी समझ में वह नौकरशाही का नंगा नाच बर्दाश्त न करेगा। इसी लिए तो श्री सेनगुप्त की दुबारा गिरफ्तारी पर कलकत्ते में दंगा तक होगया। परन्तु शक्ति और सत्ता के मद में चूर नौकरशाही इसकी परवाह भला कब करने लगी? न करे, हम भी नहीं करते। परन्तु इतना कह देना चाहते हैं कि इस दमन का परिणाम निकलेगा क्रान्ति, अशान्ति और विद्रोह। यह हमारे देश के लिए हितकर न होगा। परन्तु मदमस्तों को हमारे देश के हित से क्या? उन्हें तो अपने दिल के गुबार निकालने हैं और पीसना है जीभर के उन लोगों को जो उनकी सत्ता की अवहेलना करते हैं। परन्तु इस खिसियाहट से लाभ क्या निकल सकता है? होगा वही जो होना है। जैसा बीज बोया है वैसा ही फल भी मिलेगा।

श्री जिन्ना की देश भक्ति

पाठकों को यह पढ़ कर दुख होगा कि बड़ौदारा सभा में टेरिफ बिल पास हो गया। और वह पास होगया श्री जिन्ना के बिल के पक्ष में रायदेने से! यह बिल देश के व्यापार के लिए बड़ा ही हानिकर है। इसके पास हो जाने से भारत में आनेवाले विदेशी माल पर जो ड्यूटी लगेगी उससे ५ प्रतिशत कम ड्यूटी लगेगी इंगलैण्ड से आये हुए माल पर। इस प्रकार इंगलैंड की रक्त शोषण नीति को सुरक्षित रक्खा गया है! यह भारत के घायल हृदय एक नयी चोट है। परन्तु हमें दुख तो इस बात का है कि श्री जिन्ना जैसे आदमी ऐसे निकृष्ट बिल के पक्ष में हो गये। यह ३ शियोवाले बिल के पक्ष में भी थे। उस बिल के पास होजाने से भारतवर्ष को करोड़ों रुपये साल का नुकसान हुआ है। क्या मि० जिन्ना की यही देश भक्ति है? अब हम इन्हें क्या समझें? क्या देश का इतना अहित करके भी वे देश भक्त कहलाने का साहस कर सकते हैं?

मानव रक्त की पिपासा

यूरोप और अमेरिका के सारे देश अपने को सभ्य समझते हैं। परन्तु उन्हीं की सभ्यता की जो कसौटी है, क्या वे उस पर पार उतर सकते हैं? नहीं, कदापि नहीं। इसका प्रमाण हमें इंगलैण्ड में हुई नौ-सैना परिषद से मिलता है। यह परिषद हुई थी दुनियां के प्रधान राष्ट्रों की सैनिक शक्ति को इतना घटा देने के लिए कि जिससे भविष्य में महा संग्राम एक दम असम्भव हो जायं। परन्तु जहां सद्भावना न हो, सच्चाई न हो वहां से भलाई की आशा करना सरासर मूर्खता है। हमें तो पहले ही संदेह था कि चालाक राष्ट्रों का यह एक प्रकार का जाल सा है. जिसमें वे अपना एक गुट बनाकर अन्यराष्ट्रों को अपने आधीन करने का षड्यंत्र रचेंगे। हमारा यह सन्देह पक्का निकला। इस कांफरेन्स में अमेरिका इंगलैण्ड और जापान का एक गुट बन गया। फ्रान्स और इटली से ठीक समझौता नहीं हो सका। इस परिषद का प्रारम्भ से अन्त तक जो ढंग रहा उससे यह बात स्पष्ट है कि यूरोपीय राष्ट्रों की मानव-रक्त पिपासा अभी शान्त नहीं हुई। वह एक बार से अधिक बार फिर खुल कर खेलना चाहती है। और इस प्रकार यूरोपीय राष्ट्र अपने असली जंगलीपन का नमूना पेश करके सभ्यता का नकली जामा उतार कर फेंक देने का अवसर ताक रहे हैं।

बन्दी बीर से भेंट

गत रविवार को श्री पथिक जी और बाबा जी से अजमेर नगर तथा कांग्रेस के प्रतिष्ठित २ व्यक्तियों ने भेंट की। आप लोगों से जेल में चक्की पिसवाई जाती है। खाने को ऐसा खाना मिलता है जैसा कुत्तों को भी नहीं दिया जाता। पहनने के कपड़ों का तो कहना ही क्या है। पहले इन सब को अलग २ रखा गया था। परन्तु जब इन लोगों ने ४८ घंटे खाना न खाया तब जाकर साथ २ रखे गये। श्री बाबा जी को जेल सुपरिंटेंडेंट को सलाम न करने पर काल कोठरी में बन्द कर दिया गया है और आगे के लिए कह दिया गया है कि यदि सलाम न किया तो बेंत लगेंगे। परन्तु बाबा जी ने नौकर शाही के प्रतिनिधि को सलाम करने से इन्कार कर दिया है। देखें आगे क्या २ होता है? अनुमान है कि अजमेर जेल में शीघ्र ही राज नैतिक क़ैदियों की भूख हड़ताल प्रारम्भ हो जायगी।

श्री पथिक जी के मित्रों से–

श्री पथिक जी के अनेक मित्रों के उनकी गिरफ्तारी तथा सज़ा पर बधाई के अनेक पत्र तथा तार आये हैं। कार्य की अधिकता से हम उनका पृथक २ उत्तर न देकर श्री पथिक जी की धर्म पत्नी की आज्ञानुसार उन सब महानुभावों की शुभ कामना तथा बधाई के लिए हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं और उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे पथिक जी के पीछे 'संदेश' पर उसी प्रकार कृपा दृष्टि बनाये रखें।

राजपूताने के शेर

'सन्देश' के गतांक में हम राजपूताने के दो शेरों का पकड़ा जाना और जेल की चहार दीवारी के अन्दर नारकीय यातनायें भोगने की बात बता चुके हैं। हमारे ये केहरी आज पिंजड़े में बन्द हैं। मदान्ध नौकरशाही समझती है कि उसने इन्हें पकड़ कर इनकी और इस प्रान्त की आत्मा को कुचल डाला है। उसी तो उसका एक अदनासा एजेन्ट आज बाबा नरसिंहदास से जेल में कहता है कि "तब मैं तुम्हारे सामने आऊं तब उठकर मेरी ताज़ीम करो"। परन्तु शेरों की आत्मा पिंजड़े में बन्द होकर कहीं मर थोड़े ही जाया करती है। नहीं वह तो और भी उमड़ती है। वह अपनी अदम्य आत्म शक्ति के सम्मुख संसार की प्रबल से प्रबल शक्ति को तुच्छ समझती है। यही उसकी वीरता का लक्षण है। जो शत्रु की शक्ति का अनुमान करके आगा पीछा सोचते हैं वे शूर वीर नहीं होते। बाबा नरसिंहदास की आत्मा अदम्य है। उसमें एक नया जीवन है और अपने उद्देश्य पर मर मिटने की एक प्रबल भावना है। वे टेढ़ी मेढ़ी बातें करना नहीं जानते। उनका मार्ग सीधा है और उनका ध्येय स्पष्ट है। वे अंग्रेजी सरकार को नहीं मानते। अपने मुक़दमे में उन्होंने इस सरकार को देश का दुश्मन बताया था और अपना काम बताया था उसका मुक़ाबिला करना! जिनकी बातें इतनी स्पष्ट हों, जिसका ध्येय इतना सुनिश्चित हो, जिसकी आत्मा इतनी अदम्य हो और जो इस प्रबल शक्ति शाली सरकार के अस्तित्व को मानने से ही इन्कार करता हो, वह भला उसके एक एजेन्ट की सत्ता के सामने कब सर झुका सकता है? उसने सर नहीं झुकाया और न झुकावेगा। जो उससे ऐसी आशा करें वे अपने को धोखा देते हैं और वे ज्ञान शून्य हैं। इसी भ्रम और अज्ञान के वश आज बाबा नरसिंह दास को काल कोठरी में बन्द कर दिया है। अब सम्भवतः उनके बेंत भी लगें, बेड़ी डन्डा और हथकड़ियों में जकड़ कर उन्हें टांग भी दिया जाय, पर उस केसरी का सर न झुकेगा। सख्तियां उसकी आत्मा को और भी उभाड़ेंगी और इतना उभाड़ेंगी कि वह प्राणों को बाजी लगा देगा। नौकरशाही उसकी परीक्षा करले। अब तक उसने भारतीय राजभक्ति की परीक्षा की है। अब भारतीय विद्रोह की परीक्षा भी करले। उसने अमरशहीद यतीन्द्र की परीक्षा भी की थी और अब बाबा नरसिंहदास की परीक्षा भी करले। यह नरसिंह ऐसी एक परीक्षा क्या सैंकड़ों परीक्षाओं को पास कर सकने में समर्थ होगा। हम तो इस मौक़े को ग़नीमत समझते हैं। उस पर किया जाने वाला अत्याचार इस प्रान्त की निद्रा को भंग करेगा और उसकी एक एक हड्डी बीजि की हड्डियों का काम करेगी। फिर यह उस नर शेर की परीक्षा का समय न होकर हमारी परीक्षा का समय होगा। हम उसके लिए अभी से तैयार बैठे हैं और नौकरशाही को करारा जवाब देने को चुनौती देते हैं।

अजमेर की पुलिस

गत २० अप्रैल को अजमेर में कोई ५ हज़ार आदमियों की भीड़ में, नमक क़ानून तोड़ डाला गया सरकार का प्रतिनिधि पुलिस की आंख के सामने। पुलिस आई और दूर खड़ी २ देखती रही। जब नमक बन गया तो, वह आगे बढ़ी और नमक बनाने के सारे बर्तन उठा लेगई! परन्तु उसका व्यवहार इतना अच्छा था कि जिसे पुलिस का व्यवहार न कह कर यदि भले और सभ्य आदमियों का व्यवहार कहा जाय तो ठीक होगा। इसे हम यहां की पुलिस और नौकरशाही की बुद्धिमत्ता भी कह सकते हैं। यदि उनका व्यवहार विपरीत रहा होता तो लोगों के हृदय पर उसका बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता। परन्तु उसके इस सद् व्यवहार ने लोगों के हृदय को जीत लिया। क्या ही अच्छा होता, यदि सारे देश की पुलिस ने इसी सभ्यता और भलमनसाहत से काम लिया होता। परन्तु जो स्वभाव से ही क्रूर और ओछा हो उससे ऐसी आशा रखना भूल है।

शोक समाचार

जलालपुर का समाचार है कि श्री त्रिलोकदास नाम के जिन स्वयंसेवक को पेड़ के नीचे दब कर चोट आ गई थी उनकी मृत्यु ता० २३ अप्रैल को बनारसी के सिविल हस्पताल में हो गई! आपकी मृत्यु से प्रत्येक देश प्रेमी के हृदय में चोट लगी है, और वह मृतक आत्मा की सद्गति तथा उनके संतप्त परिवार को सांत्वना देने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है।

देशव्यापी राष्ट्रीय हल-चलें

देश भर में सत्याग्रह की धूम

बिहार

देश में स्वाधीनता संग्राम बड़े प्रबल वेग से चल रहा है। प्रत्येक नगर में नमक बनाया जा रहा है। अकेले चम्पारन जिले में तो कोई ५ सौ स्थानों पर नियमित रूप से नमक बनाया जा रहा है। संक्षेप में सारा बिहार इस समय नमक कानून को तोड़ रहा है। पटना तो सत्याग्रहियों और पुलिस के संघर्ष का अड्डा बन गया है। दोनों ही दल अपने २ पौरुष और गुणों को दिखा रहे हैं। पुलिस अपनी बर्बरता और गुंडेपन का नंगा प्रदर्शन कर रही है तो सत्याग्रही अपनी अहिंसक मनोवृत्ति धैर्य और साहस का परिचय दे रहे हैं। बृजभूमि मथुरा भी देश के किसी जिले से पीछे रहना नहीं चाहती। उस दिन श्री हकीम दुन्नूलाल इत्यादि नेताओं की गिरफ्तारी पर नगर में तुरन्त हड़ताल हो गई। रेवाड़ी में भी नमक बनाया जा रहा है। उस दिन एक सभा में नमक बनाकर १०३२ रु० का नीलाम किया गया। देश के इस स्वाधीनता संग्राम में सभी वर्ग के स्त्री, पुरुष अपनी शक्ति भर योगदान कर रहे हैं। अनेक स्थानों के बार एसोसियेशन खादी पहिनने का निश्चय कर चुके हैं। कोकोनाड़ा के बार एसोसिएशन ने भी कुछ ऐसा ही निर्णय किया है। विदेशी वस्त्र बहिष्कार के साथ २ वहाँ के एसोसिएशन के सदस्यों ने स्वाधीनता संग्राम में लड़ने के लिए अपनी आमदनी का दो फी सदी भाग देना निश्चय किया है। बुलन्दशहर में सत्याग्रह बड़े जोरों के साथ चल रहा है। बुलन्दशहर और खुरजा में सात २ हजार आदमियों की उपस्थिति में नमक बनाया गया। पुलिस ने स्वयं सेवकों की मुट्ठियों से नमक छीनते समय उनके हाथों को दांतों से चबा डाला!

कराची

कराची के गोली काण्ड के बाद से तो वहाँ एक प्रकार की आग सी लग गई है। उस दिन कोई २५००० हजार आदमियों ने नमक कानून को पैरों तले कुचल डाला। इस विशाल जन-समूह ने समुद्र के किनारे जा कर नमक उठाया और १०००० मन उठा कर ले आए। इस भीड़ में कोई १००० स्त्रियां भी थीं।

अमृतसर में इंडियन मेडिकल एसोसियेशन की एक बैठक में यह निश्चय हुआ है कि इंगलैण्ड की बनाई हुई न तो कोई औषधि ही मंगाई जाय और न वहां के बने हुए औजार ही।

बम्बई में सत्याग्रह बड़ा भयंकर रूप धारण कर गया है। सहस्त्रों स्त्री पुरुष और बच्चे तक नित्य समुद्र का पानी लेने दौड़े जाते हैं और नमक कानून तोड़ते हैं। ता० २ को फोर्ट एरिया में जहां २ नमक बनाया जा रहा था वहां २ पुलिस ने छापा मारा और नमक बनाने के बर्तन आदि सब नष्ट कर डाले। बम्बई नगर को बार कौंसिल ने बड़ी तादाद में नमक बनाने के लिए फैक्टरियां भी खोलदी हैं जहां पर सैकड़ों मन नमक बन रहा है। मैनपुरी में भी नमक कानून तोड़ा जा रहा है। वहाँ पर पुलिस ने स्वयं सेवकों से नमक छीनते समय उन्हें खूब पीटा। और एक के ऊपर तो गरम पानी भी डाल दिया। अनेक स्वयं सेवकों के सख्त चोटें भी आई हैं। भिवानी में वस्त्र बहिष्कार का काम जोरों पर चल रहा है। रोज नमक बना कर बेचा भी जा रहा है। इधर देहातों में किसान आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा है।

दहली में विदेशी वस्त्र बहिष्कार का आन्दोलन खूब तेजी से चल रहा है। विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना जारी है। एक सत्याग्रही आश्रम भी खुल गया है। महाराष्ट्र में केलकर जी के नेतृत्व में नमक कानून तोड़ा जा रहा है। देहरादून में भी सत्याग्रह प्रारम्भ होगया। लखनऊ में सत्याग्रहियों द्वारा बनाया हुआ नमक बेचा जा रहा है। महिलायें भी खूब उत्साह के साथ काम कर रहीं हैं। अकोला में तो कोई १२००० हजार आदमी नमक कानून तोड़ चुके हैं। बरात के कपड़े के व्यापारियों ने एक साल तक विदेशी कपड़े न मंगाने का निश्चय कर लिया है और पहले के भेजे हुए आर्डरों को कैंसिल कर दिया है। विदेशी वस्त्र बहिष्कार के आन्दोलन में श्री मालवीयजी का उद्योग प्रशंसनीय है। महात्मा गांधी ने श्री टंडन जी के तार के उत्तर में कहा है कि विदेशी कपड़े के उन व्यापारियों की दुकानों पर भी धरना दिया जाय जिन्होंने कि विदेशी कपड़ा न मंगाने की प्रतिज्ञा की है। परन्तु इससे कानपुर के कपड़े के व्यापारियों में बड़ी सनसनी फैल गई है। वे लोग यट चाहते हैं कि जब हमने आगे के लिए विदेशी कपड़े का आर्डर न देने का निश्चय कर लिया है तो कांग्रेस को हमारे बचे हुए माल को बेचने में बाधा न डालनी चाहिए।

बंगाल के बार एसोसियेशन ने अपनी एक सभा में वर्तमान सत्याग्रह आन्दोलन के साथ सहानुभूति प्रदर्शित की है और निश्चय किया है कि कांग्रेस जब आज्ञा दे तभी सब लोग अपनी २ वकालत छोड़ दें। अमृतसर में बराबर नमक बनाया जा रहा है। जैसोर में स्त्रियां विदेशी कपड़े की दुकानों पर धरना दे रही हैं। ढाका में शराब की दुकानों पर धरना देने में इतनी सफलता मिली है कि शराब की बिक्री एक प्रकार से बिलकुल ही बन्द हो गई है। मद्रास में एक ओर सत्याग्रह और दमन का दौर दौरा है तो दूसरी ओर विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन सफलता प्राप्त करता जा रहा है। लखनऊ के आस पास की देहात में प्रचार काम हो रहा है। कटक में धड़ाधड़ नमक बनाया जा रहा है। हरद्वार में गुरुकुल का सत्याग्रही जत्था नमक बनाकर बेच रहा है। देहली बार एसोसियेशन के सारे सदस्यों ने खादी पहिनना आरम्भ कर दिया है। देश में राष्ट्रीय आन्दोलन की इस भीषण लहर को देख कर दुश्मनों के दिल बैठे जा रहे हैं। नौकरशाही ने अपने दमन का पंजा और भी अधिक फैला दिया है। वह गिरफ्तारियों पर इतना ध्यान नहीं देती जितना कि मारपीट और आतंक जमाने पर ध्यान देती है। परन्तु इस से वह काम और भी अधिक बढ़ रहा है। जिसे रोकने के लिए उसने अपनी दया, शरम न्याय बुद्धि और मनुष्यता की भावनाओं को भी तिलांजली दे दी है।

सांभर के नमक का बहिष्कार

महात्मा गांधी के नमक सत्याग्रह का प्रभाव कितना सर्वव्यापी हो रहा है, इसका अनुमान सांभर में बने हुए सरकारी नमक के बाजार की चिंतनीय स्थिति से सहज ही में लगाया जासकता है। इस स्थिति की गुरुता को अनुभव करने के लिए हमें स्मरण रखना चाहिये कि समस्त भारत के सरकारी नमक का लगभग ३० प्रतिशत नमक सांभर ही में बनता है। इस आन्दोलन के परिणाम स्वरूप सांभर के व्यापारियों ने सरकारी नमक का सर्वथा बहिष्कार कर दिया है। इधर कुछ दिनों से सांभर के व्यापारी बराबर अपनी मांग घटा रहे थे और अब स्थिति यहां तक आगई है कि उन्होंने केवल भविष्य में नमक न लेने से ही इन्कार नहीं कर दिया अपितु पहिले की गई क्रय-आज्ञाओं को भी रद्द कर दिया है। उपरोक्त स्थिति का एक कारण देहली के नमक-व्यापारियों का सांभर से नमक को मंगाने से इन्कार करना भी है। उपरोक्त व्यापारी कुछ दिन हुए देहली के नमक-कमिश्नर के यहां जाकर भविष्य में नमक मंगाने की अपनी असमर्थता की सूचना दे आये हैं। उनका कथन है कि सरकारी नमक की मांग दिन-दिन घट रही है तथा बाजार में आवश्यक्ता से अधिक नमक मौजूद है। अभीतक यह नियम था कि व्यापारी अपने करार किये हुए नमक को लेने के लिए थैले भेज दिया करते थे किन्तु इधर कुछ दिनों से उन्हों ने थैले भेजना बन्द कर दिया है। साधारण स्थिति में नमक विभाग के अधिकारी व्यापारियों के थैले न आने पर स्वयं निश्चित नमक भेज कर उसका मूल्य वसूल करते थे, किन्तु वर्तमान अवस्था में वे ऐसा करने से डर रहे हैं, और किसी प्रकार व्यापारियों से समझौता करने का प्रयत्न कर रहे हैं। नमक के बाजार के गिरने की उपरोक्त घटना तथा सरकारी नमक के निर्माण में भयंकर घटती महात्मा जी की सफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

श्री सेनगुप्त और सुभाषबाबू पर मार।

अलीपुर सेन्ट्रलजेल से आये हुए समाचारों से ज्ञात होता है कि अलीपुर सेन्ट्रजेल के राजनैतिक कैदियों को जेल के नराधमों ने खूब ही पिटवाया तथा स्वयं भी पीटा है। मछुआ बाजार बम केस के कैदियों ने तीन जजों की विशेष अदालत के सामने कहा है कि हम को जेल सुपरिंटेंडेंट, जेलर, यूरोपियन वार्डर्स तथा पठान कैदी और सशस्त्र सिपाहियों ने खूब ही मारा है। मार-पीट में लाठियों तथा बन्दूक के कुन्दों से भी खूब मार मारी गई। जिसके फलस्वरूप श्री निर्मलचन्द्र दास के सर में इतनी चोट आई कि वे बेहोश हो गये। और श्रीनिरंजन सेनगुप्त के हाथ की तो हड्डी भी टूट गई! इसके अतिरिक्त अन्य लोगों के भी गहरी चोटें आई हैं। मि०जे०एम० सेनगुप्त और श्री सुभाषबाबू के बीच बिचाव करने के उद्योग में उनपर भी खूब मार पड़ी। सरकारी रिपोर्ट का कहना है कि मछुआ बाज़ार बम केस के कैदियों को हवालाती गाड़ी में से उतारा जा रहा था तो वे लोग उतरने से इन्कार कर रहे थे। उस समय उन्हें जबरदस्ती जेल के भीतर ले जाने का प्रयत्न किया गया। इसी कशमकश में जेल में ख़तरे का घंटा भी बजा दिया गया। इस पर अन्य राजनैतिक कैदी भी घटना स्थल पर आ पहुंचे और जेल सुपरिंटेंडेंट मेजरदत्त के कहने पर भी अपनी २ कोठरी में नहीं गये। परन्तु इनलोगों ने एक न माना। इस पर राजनैतिक कैदियों और जेल अधिकारियों में कुछ कहा-सुनी हो गई। इसी कहा-सुनी में मेजर दत्त के किसी राजनैतिक कैदी ने चांटा मार दिया। अन्त में राजनैतिक कैदी जबरन उनकी कोठरियों में बन्द कर दिये गये।

अब कलकत्ते से निकल ने वाले पत्र 'लिबर्टी' का कहना है कि इस झगड़े के फल स्वरूप मेजरदत्त ने अपनी नौकरी से स्तैफ़ा दे दिया। यह भी कहा जाता है कि श्री सुभाषचन्द्र बोस के इस मार-पीट में इतनी चोट लगी कि वे तीन घंटे तक तो बेहोश रहे और इस समय उन्हें बड़े ज़ोर का बुखार आ रहा है।

राजस्थानी वीरों को चुनौती!

अजमेर के अधिकारियों ने श्री पथिक जी (सभापति प्रान्तिक कांग्रेस कमेटी) और बाबा श्री नृसिंहदास जी अग्रवाल (मन्त्री ज़िला कांग्रेस कमेटी, अजमेर) को २-२ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा देकर राजस्थान की वीरता, देशभक्ति और स्वतंत्रता-प्रेम को ज़ोर की चुनौती दी है। देश और प्रान्तों में जहां कि हज़ारों लोग ग़ैर कानूनी नमक बनाते हैं, बेचते हैं, ख़रीदते हैं और खाते हैं, और लाखों की सभाओं में नमक बनाने का उपदेश दिया जा रहा है, थोड़ी सजायें दी जा रही हैं। पर हमारे प्रान्त में दो-दो साल की सख़्त सजायें देने का यही उद्देश्य है कि राजस्थान के वीर युवक उससे डर जायँ और दब जायँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अजमेर-मेरवाड़ा का ही नहीं, बल्कि राजपूताना और मध्यभारत का बच्चा-बच्चा सरकार की इस चुनौती का वीरोचित उत्तर दिये बिना न रहेगा और जब तक नमक कानून न उठ जाय तब तक नमक सत्याग्रह के लिए और जब तक पूर्ण स्वराज्य न मिल जाय तब तक स्वतंत्रता संग्राम के लिए सैनिकों की कमी न रहने देगा। यह अवसर है कि राजस्थानी युवक, जिनको ज़रा भी आत्माभिमान है, जिन्हें ज़रा भी देश के मान और गौरव का ख़याल है, जिन्हें ज़रा भी आज़ादी से प्रेम है, वे उछल-उछल कर संग्राम के लिए घर से दौड़ पड़ें और जोखिम को जोखिम न समझें। अपने घर बार, बीबी-बच्चे, ऐशो-आराम, सब को लात मार कर सच्चे वीरों और सपूतों की तरह अपनी मातृभूमि की पुकार पर मतवाले हो घर से निकल पड़ें। आज राजस्थान की वीरता, आत्म बलिदान, देश-भक्ति की कड़ी परीक्षा हो रही है, उसे एक गहरी चोट पहुंचाई गई है। दुनियां देखना चाहती है कि प्रताप, दुर्गादास, भामाशाह, विक्रम, मीरा, पद्मिनी की सन्तान, इसका क्या उत्तर देती है? राजस्थान की युवक आत्मा उठ, खड़ी हो! और दौड़ पड़ो!! परमात्मा तेरे साथ है!!!

—हरिभाऊ उपाध्याय।

कल अजमेर में।

सत्याग्रही दल की हुई है जीत कल अजमेर में,
तोड़ डाला है नमक कानून कल अजमेर में।
प्रोसेसन की भीड़ में यह खूब परिचय मिल गया,
वक्त पक्का हो गया आज़ाद कल अजमेर में।
देश भक्ति के नशे में मस्त होके नौ जवान,
क़ौमी नारे बोलते जाते थे कल अजमेर में।
देवी स्वागत कर रहीं, पुरुषों में अति उत्साह था,
यह मनोहर दृश्य था पहला ही कल अजमेर में।
नमक जिस दम बन चुका तो पुलिस ने धावा किया,
लेकिन घड़ा फूटा मिला था उसको कल अजमेर में।
अब दमन इस क्रान्ति का सरकार करना चाहती,
शेर दो हैं क़ैद देखो आज कल अजमेर में।
अब समय है शीघ्र ही हम काम को पूरा करें,
जैसा नेता चाहते हैं आज कल अजमेर में।
तुमको सच्ची सच्ची "शीतल" नज़्म गर सुनायगा,
तो इसे भी देख लेना जेल कल अजमेर में।

—श्रीयुत शीतल

दमन

—पटना का समाचार है कि सुलतानगंज थाने के निकट पुलिस ने नमक सत्याग्रही जत्थों का राष्ट्रीय झण्डा छीना। प्रथम जत्थे की गिरफ्तारी के बाद लगातार तीन, चार जत्थे नमक कानून तोड़ने के लिये गए तथा वीरता-पूर्वक घुड़सवारों व फौजी सिपाहियों से घिरे रहने पर भी आगे बढ़ते गए। पुलिस ने प्रत्येक बार उनसे राष्ट्रीय झंडा जबर्दस्ती छीन कर जाने दिया!

—पटना शहर के अन्दर जगह जगह खुले आम नमक सत्याग्रह हो रहा है और आशा है कि शीघ्र ही यह आन्दोलन प्रान्त भर में फैल कर सर्वव्यापी बन जावेगा। चम्पारन जिले में दो दिन के अन्दर ३११ स्थानों पर नमक बनाया जावेगा। चार स्वयम्सेवकों के अतिरिक्त सुलतानगंज के निकट पकड़े गए सब सत्याग्रहियों को छोड़ दिया गया। बाबू राजेन्द्रप्रसाद तथा आचार्य कृपलानि जनता को बराबर उत्साहित कर रहे हैं।

—शापुर का समाचार मिला है कि श्री जमनादास मेहता भूतपूर्व एम. एल. ए. जिन्होंने अभी हाल नमक सत्याग्रह में भाग लेना प्रारम्भ किया था, थाना डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के वारंट पर ये गिरफ्तार कर लिये गए, वहां पर वे व्याख्यान देने के लिये गए हुए थे।

—कोकोनाडा के डिक्टेटर श्री० साम्यमूर्ति सत्याग्रह 'कैम्प' के लीडर श्री सत्यनारायण, स्वराज्य दल के नेता श्री डाक्टर सुब्रह्मण्य तथा श्री वेंकट राव आदि प्रसिद्ध सत्याग्रही नेता पकड़ लिये गए।

—कलकत्ते का समाचार है कि पुलिस ने अनेक स्थानों पर एक ही साथ बड़ी सरगर्मी के साथ तलाशियां लीं। बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस आफिस कार्मीसंघ, तथा कालीघाट तरुण संघ, के अतिरिक्त उन स्थानों की भी तलाशी ली गई जहां कि कुछ भूतपूर्व नजरबन्द रहते थे। कहा जाता है कि श्री जतीन्द्रनाथ दास गुप्त कालीघाटी कांग्रेस कमेटी के मन्त्री आदि कई लोग गिरफ्तार कर लिये गए हैं। महिसवथन, चम्पाहाटी तथा कालिकापुर से भी गिरफ्तारियों के समाचार आये हैं।

(देखो पृष्ठ ११)

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

कुछ इधर उधर की

अजमेर में भी नमक क़ानून टूट गया ! परन्तु पुलिस ने गिरफ्तार किसी को भी नहीं किया !

करता कैसे ? क्या वह नमक नहीं खाती ?

और फिर ऐसे समय में वह ही अपने नमक की वफ़ादारी क्यों न दिखावे !

\+ + + +

सुना गया है कि लार्ड इर्विन की सरकार नमक कानून का हठा लेने की सोच रही है ?

भई, इसमें ताज्जुब की कौनसी बात है ? उसने भी तो भारतवर्ष का नमक खाया है !

\+ × × +

आज कल राजपूताने के नेता श्री हरिभाऊजी उपाध्याय बड़े जोरों पर हैं। इस वे सरकार के पीछे बुरी तरह पड़ गये हैं।

भई, अपने राम को तो ऐसा जान पड़ता है कि वे अजमेर मेरवाड़ा प्रान्त के चीफ़ कमिश्नर बनने के इच्छुक हैं।

\+ × × ×

अगर ये चीफ़ कमिश्नर बन गये तो ये सत्याग्रही स्वयं सेवक क्या बनेंगे ?

बनेंगे क्या ! पुलिस और फौज के सिपाही बनेंगे।

लेकिन, पुलिस और फौज के सिपाही तो ये अब भी बन सकते हैं, फिर इन खुराफ़ातों से क्या लाभ !

\+ + + +

यहां के चावर लोग भी बड़े चतुर हैं। उन्होंने राजनैतिक क़ैदियों के साथ चोर डाकुओं का सा व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया है।

लेकिन, इसमें आश्चर्य्य की कौन सी बात है ? ये लोग जो सरकार के राज्य को ही छीन लेना चाहते हैं, डाकू न सही तो लुटेरे तो हैं ?

\+ × × ×

फिर भला ऐसा कौन सा मूर्ख होगा कि जो अपने दुश्मनों के साथ भलमनसाहत का बर्त्ताव करे। सांप को दूध पिलाना कौनसी बुद्धिमानी है ?

× × × ×

राजस्थान !

[श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी']

(१)

ऐ तूफ़ान, ख़बरदार, अंधड़, अरे प्रलय के गान !
भारत की घाटी-घाटी में, छिड़ी तुम्हारी तान !
लाल दिवस, वह रक्त-पताका, वह पागल बलिदान !
वह युद्धों का खेल भयंकर, औ, वह तीक्ष्ण कृपाण !
उस गौरव की क्षणिक याद भी
पुलकित करती प्राण !
राजस्थान, तुम्हारे जैसी
किस की होगी शान !!

(२)

बच्चों के दर चिनगारी थे, युवकों के तूफ़ान !
ज्वालामुखी वृद्ध सैनिक थे, बालायें अभिमान !
आफ़त थी, जाने क्या थी तब यही अग्नि-सन्तान !
जौहर की वह लाल चितायें, अहो, निराली शान !
उस गौरव की क्षणिक याद भी
पुलकित करती प्राण !
राजस्थान, तुम्हारे जैसी
किसकी होगी शान !

(३)

कैसी थी वह रक्त निशानी कैसा था वह काल !
जब होड़ की लपट लहर में होते लाल विशाल !
जब तलवार तुम्हारी उगलती देती था यम ताल !
जब मुण्डों के ढेर अवनिका भर देते थे थाल !
राजस्थान कौन तुम जैसा
हो सकता है लाल ?
उस गौरव की क्षणिक याद से
होता हृदय निहाल !

(४)

हिमगिरि-सा उन्नत होकर जो कभी न झुकता भाल !
स्वाभिमान के शिखर उच्चतम अन्यायी को काल !
सदा काटते रहे साहसी तुम स्वार्थों के जाल !
प्रलयंकर के रूप भयंकर, अबलाओं की ढाल !
राजस्थान, कौन तुम जैसा
हो सकता है लाल ?
उस गौरव की क्षणिक याद से
होता हृदय निहाल !

(५)

ऐ तलवार, अरी रजपूती, भूली अपनी प्यास !
ऐ वीरों के पागल साहस, कैसा सत्यानाश !
अरे सिंह, पिंजरे के बन्दी ऐ बेहोश, निराश—
एक बार फिर से यौवन की गूंज उठे उल्लास !
ऐ सम्राट, आज चरणों के
नीचे तेरा वास !
भूला भैरव तान भयंकर
भूला रण का रास !

बलवान बनने के उपाय

(गतांक से आगे)

आसानी से खड़े हो जाइये। बांया पैर आगे बढ़ाकर उस पर सारे शरीर का बोझ डाल दो, गहरी श्वास भीतर खींचो और हाथों को पीठ की ओर ले जाकर नीचे की ओर खूब जोर से तानों और साथ ही सर को पीठ की ओर झुका कर ऊपर की ओर तानना चाहिये। थोड़ी देर ऐसी स्थिति में रह कर फिर अपनी साधारण स्थिति पर आ जाओ और श्वास को बाहर निकाल दो।

अपने कमरे में या जहां कसरत करो एक थके हुए व्यक्ति की तरह सब अंगों को खूब ढीला छोड़ कर पांवों को घिसटते हुए इधर उधर थोड़ी देर तक चलना चाहिये।

ज़मीन पर लेट कर इधर उधर खूब लुढ़कना चाहिये। इससे समस्त शरीर की मालिश हो जाती है और सब अंगों पर बराबर ज़ोर पड़ता है। इससे थकावट दूर होकर शरीर में एक प्रकार की नवीन स्फूर्ति सी मालूम पड़ने लगती है।

इन क्रियाओं के अलावा कुछ देर तक केवल दीर्घ श्वास प्रश्वास भी करना चाहिये। केवल इससे भी महान् लाभ होता है और करीब २ ऊपर के सभी फायदे संभव हैं।

अबरही तीसरी बात यानी प्राण शक्ति का अपव्यय। कसरतों से इस विषय में भी सहायता मिलती है वह यह कि इनसे हमें कम से कम शक्ति का व्यय कर अंग संचालन करना आ जाता है। मानसिक व्यायाम के विषय में सिद्धान्त यह होना चाहिये कि उत्तेजना, चिंता या किसी किस्म का तनाव का अनुभव कभी नहीं होना चाहिये, इसमें शक्ति का अपव्यय होता है। व्यर्थ की बातों में न फँसना चाहिये। अपव्यय के लिये लाख रुपये की बात यह है कि जो कार्य हम करें उसको इस ढंग से करें कि उसमें कम से कम शक्ति लगाना पड़े और अधिक से अधिक लाभ हो।

यदि वास्तव में आपको सुख तथा समृद्धिशाली जीवन बनाना है, शक्तिशाली तथा प्रभावशाली व्यक्ति बनना है, इस जीवन में कुछ आशा कार्य करने हैं तो आज ही से आप ऊपर की बातों के अनुसार अपना

भारत में अंग्रेज़ों का प्रवेश

[लेखक—श्री शिवचरणलाल शर्मा]

२४ अक्टूबर सन् १५७१ का वह काला और नाशकारी दिन था जिसे याद कर हमारे हृदय में वेदना और रोष की एक ऐसी मिश्रित भावना पैदा हो जाती है जिससे हृदय व्यथित हो जाता है और हाथ मलकर रह जाने के अलावा और कोई चारा ही नज़र नहीं आता। यह वही दिन है जिस दिन पहली बार एक अंग्रेज़ के चरण भारत की इस पवित्र भूमि पर पड़े थे। उस दिन किसी को क्या पता था कि आज का दिन भारत को दासता पाश में जकड़ने वाली जंज़ीर को गढ़ने का प्रथम दिन है? उस दिन कोई क्या जानता था कि आज ही से भारत के दासत्व का गाँव पड़ रही है। उस समय किसी को क्या सन्देह था कि व्यापार के लिए आये हुए ये विदेशी आगे चलकर इस देश के लिए अभिशाप सिद्ध होंगे यहां की धन-सम्पत्ति का अपहरण करेंगे, ऐश्वर्य और वैभव का नाश करेंगे, मानमर्यादा को मिटावेंगे, यहां की प्राचीन संस्कृति को समूल नष्ट करेंगे, व्यापार और उद्योग-धन्धे को मिटावेंगे और धोखाधड़ी से अंगुली के बाद पहुंचा पकड़ कर इस देश को ही हड़प जायँगे?

अंग्रेज़ व्यापारियों से भी पूर्व यहां पर पोर्चुगीज़ आगये थे। इन के बाद डच और डचों के बाद फ्रांसीसियों ने यहां पदार्पण किया था। जब अंग्रेज़ यहां आये थे उस समय यहां पर इन से पूर्व के आये हुए पोर्चुगीज़ और डच व्यापारियों का व्यापार धड़ाके से चल रहा था। इन लोगों की इस समय तक समुद्र के किनारे कितनी ही फैक्टरियां बन गई थीं जो भली प्रकार अपना काम कर रही थीं। अंग्रेज़ व्यापारी इन लोगों के दिन प्रति दिन बढ़ने वाले व्यापार तथा फैक्टरियों को देखकर जलने लगे। इसी ईर्षा और डाह से प्रोत्साहित तथा प्रभावित होकर इन्होंने अपना काम शुरू किया। सब से पहले तो इन्होंने अपना माल रखने को गोदाम बनाने के लिए ज़मीन प्राप्त करने का यत्न किया। लेकिन जब डच व्यापारियों से इनकी प्रतिस्पर्धा ज़्यादा बढ़ गई तब तो इन्हें शीघ्र ही कोई सुरक्षित स्थान प्राप्त कर लेने की चिन्ता और भी बढ़ी। परन्तु कर क्या सकते थे? अपने घर को लिखा और इंग्लैण्ड के तात्कालिक राजा जेम्स पंचम ने अपने 'तेजस्वी भाई' मुग़ल बादशाह को पत्र लिखा और प्रार्थना की कि अंग्रेज़ व्यापारियों की हिन्दुस्तान में रक्षा की जाय। बेचारे मुग़ल बादशाह को उस समय क्या पता था कि वह इनकी रक्षा करके उस सांप की रक्षा कर रहा रहा है जो आगे चलकर अपने रक्षक की संतति को ही डस जायगा? मनुष्य भविष्य का ज्ञाता नहीं होता। उसकी दृष्टि भविष्य के अन्धकार को पार करके नहीं देख सकती। वह सोचता कुछ है और हो जाता है कुछ और ही। यही बात यहां पर भी हुई। मुग़ल बादशाह ने जिन्हें आश्रित समझा था वे आस्तीन के सांप निकले। उसने इन लोगों को सूरत खंभात और अहमदाबाद में रहने की आज्ञा दे दी। इतना ही नहीं सन् १६१३ में एक फ़रमान के द्वारा उनको इन स्थानों में अधिकार भी दे दिये। बस फिर क्या था? अंग्रेज़ व्यापारियों के भी पैर यहां जम गये।

पहला काम

जब तक मनुष्य की स्थिति डांवाडोल रहती है तब तक उसका हौसला, साहस और पौरुष आधा भी नहीं रहता। लेकिन पैर जमाते ही उसके अन्दर नवीन शक्ति और नई आशाओं का संचार होने लगता है। उसका हौसला बढ़ जाता है, साहस खुल जाता है और उसमें दृढ़ता आ जाती है। उसके दिल में उमंगें उठती हैं और महत्वाकांक्षा बढ़ती है। महत्वाकांक्षा वैसे कोई बुरी चीज़ नहीं है, यदि महत्वाकांक्षा उसे पूरी करने के लिए उचित अनुचित सभी उपायों को काम में नहीं लाता। यदि ऐसा नहीं है तो फिर उसका हृदय ईर्षा द्वेष की भट्ठी बन जाता है और उससे प्रेरित होकर वह धर्म अधर्म और उचित अनुचित किसी बात को भी परवाह नहीं करता। अंग्रेज़ों के साथ भी ऐसा ही हुआ। उन्हें पोर्चुगीज़ और डच व्यापारियों से ईर्षा हुई। अब वे इन लोगों को यहां से बाहर निकाल फेंकने का स्वप्न देखने लगे। लेकिन चूंकि पोर्चुगीज़ अंग्रेज़ों से पहले आये थे इसलिए इनकी ताकत उनसे बढ़ी चढ़ी थी। लेकिन इससे क्या था? ईर्ष्या तो आदमी को अन्धा बना देती है। इसलिए ईर्षाग्नि से जले हुए अंग्रेज़ व्यापारियों ने पोर्चुगीज़ तथा डचों से अनेक बहाने बनाकर घमासान युद्ध किये इन युद्धों का फल यह हुआ कि बेचारे डच तो यहां से सर्वदा के लिए चले गये परन्तु पोर्चुगीज़ अब यहीं हैं। यह इसलिए नहीं [illegible] यहां अब तक रहने में समर्थ हो सके बल्कि यह कि उनके साथ, उन्हें यहां बने रहने की, मेहरबानी की गई है। पोर्चुगीज़ पर अंग्रेज़ों की इस विजय का एक कारण यह भी था कि उस ज़माने में पोर्च्युगाल को स्पेन ने अपने में मिला लिया था और उन दिनों स्पेन यूरोपीय महायुद्धों में व्यस्त था। इसी कारण पोर्चुगीज़ व्यापारियों के साथ इस युद्ध में स्पेन से कोई सहायता नहीं मिली।

फ्रांस की महत्वाकांक्षा और पराजय

जिस समय स्पेन वाले पश्चिम में फंसे हुए थे, ठीक उसी समय फ्रांसीसियों को पूर्वी समुद्र में धन, यश और एशियाई साम्राज्य प्राप्त करने का स्वप्न दिखाई देने लगा। अंग्रेज़ लोग पहले तो कुछ समय तक इन सबके मुकाबिले में लाभ और यश की दौड़ में कुछ फिसड्डी से दिखाई देते रहे। क्योंकि एक तो इनको औरों से पीछे आने के कारण कुछ असुविधा रही और दूसरे उस समय इंग्लैण्ड की सरकार घरेलू और आन्तरिक झगड़ों के कारण निर्बल तथा डांवाडोल थी। इसलिए वह इन अंग्रेज़ व्यापारियों को कोई सहायता न दे सकी। अतः इंग्लैण्ड में स्टुआर्ट वंश के गद्दी पर बैठने के समय से लेकर उसके हटाये जाने के समय तक अंग्रेज़ों को यहां पर हिन्दुस्तान के राजा और प्रजा दोनों की कृपा पर कुछ लाभप्रद सौदा करके ही सन्तुष्ट रहना पड़ा। उनकी महत्वाकांक्षा मजबूरन दबी पड़ी रही। उसे खुल खेलने का अवसर न मिला।

उपर्युक्त विकट परिस्थितियों और असुविधाओं के कारण हिंदुस्तान में अंग्रेज़ व्यापारियों को धन, यश प्राप्त करने तथा अपनी सत्ता जमाने में भलमनसाहत, सच्चाई और वीरता की अपेक्षा मक्कारी, चालबाजी और फ़रेब से ही अधिक काम लेना पड़ा।

मनुष्य-स्वभाव बड़ा विचित्र है। एक बार यदि वह अपने क्षणिक लाभ के लिये अनीति से काम ले ले तो उसे फिर चस्का लग जाता है। और यदि वह एक बार की गई अनीति की पुनरावृत्ति कर डाले तब तो समझिये कि वह [illegible] धीरे २ अनीति पर आचरण करने का मनुष्य आदी बन जाता है। फिर उसे अनीतिपूर्ण आचरण करने में पहले-जैसा संकोच और झिझक नहीं रहती। उसका वह स्वभाव, यदि छोड़ न दिया जाय तो, वन्श परम्परागत बन जाता है। उसकी झलक आप आगे आने वाली संतान में भी देखेंगे। यही कारण है कि प्रथम आए हुए अंग्रेज़ व्यापारियों ने जो अन्याय किये वे उनके उत्तराधिकारियों में भी बने ही रहे। उनकी बुराइयां वन्शानुगत हो गईं।

फ्रान्स तो अंग्रेज़ों का बहुत पुराना शत्रु है। आज परिस्थितिवश यदि अंग्रेज़ों से उसकी मैत्री है तो इसके मानी यह नहीं कि फ्रान्सीसी अंग्रेज़ों की पिछली बातों को भूल गए। फ्रान्स के स्वातन्त्र्य युद्ध में, अंग्रेज़ों ने फ्रान्स की प्रजा-पीड़क निरङ्कुश सत्ता का साथ दिया था और उसके बाद इस घृणित कृत्य का बदला लेने की नेपोलियन ने भरसक कोशिश की। सम्भवतः इसीलिये भारतवर्ष में अपने प्रतिद्वन्द्वी इंगलैंड को धन, सत्ता और यश प्राप्त करता देख फ्रान्स भी यहां पर आ धमका। ये दोनों लड़े

जीवन बनाओ। थोड़े ही दिन में आपको विचित्रता मालूम पड़ने लगेगी। और यदि अदम्य उत्साह तथा सच्ची लगन से आप इसमें लगे रहेंगे तो आपको अवश्य ही आशारूप सिद्धि प्राप्त होगी। प्रमाण प्रत्यक्ष संसार में दीख पड़ते हैं। "शुभश्चशीघ्रम" के अनुसार कार्यारम्भ कर दीजिये।

खुली चिट्ठी।

—:o:—

मारवाड़ी नवयुवकोंके नाम।

प्यारे भाइयो,

यह बात आपसे छिपी हुई नहीं है कि गत ६ अप्रैल सन् १९३० से, जो जलियानवाला हत्याकाण्ड के स्मृतिदिवस। राष्ट्रीय सप्ताहका प्रथम दिवस माना जाता है, महात्मा गांधी ने स्वाधीनता के निमित्त सत्याग्रह संग्राम का शंख फूंक दिया है। इसका निनाद अटक से कटक तक और काश्मीर से कुमारी अन्तरीप-तक गूंज उठा है और नवयुवक नामको सार्थक करनेवाले युवकगण अहिंसात्मक सत्याग्रहसंग्राममें प्रवृत्त होने के लिये माया, ममता अथवा भय का परित्याग कर सन्नद्ध होगये हैं।

आत्माभिमानी नवयुवकों के लिये यह अवसर अनोखा है। यह सत्याग्रह-संग्राम तो भारतीय नवयुवक-शक्तिकी कठोर परीक्षा है। इसकी सफलता के साथ भारतकी सफलता है और असफलता के साथ हमारी आशाओंका विलय है, यानी आज मनसा, वाचा, कर्मणा अहिंसात्मक रहते हुए, अपनी माता के दूधकी लाज रखने के लिये, हमें निजस्वदेशानुराग, शक्ति सामर्थ्य और क्रियाशीलताकी परीक्षा देनी है।

राजस्थान के गौरव अग्रसेन वंशज, वश्यवीर सेठ जमनालालजी बजाज निज कर्तव्य पालन करते हुए दो वर्ष के लिये बम्बई सरकार के महमान हुए हैं। आप बिलेपारलेकी सत्याग्रही छावनी के संचालक थे। हे मारवाड़ी नवयुवको, यह समाचार सुनकर भी क्या आपके शरीर में चैतन्य नहीं पैदा होता? बजाजजीने कृष्ण मंदिर में पधारते समय जो मार्मिक संदेश भेजा है, उसपर क्या मारवाड़ी युवकोंने विचार किया है? उनका संदेश है—"राजपूताना निवासियो! पूर्ण स्वतंत्रता के धर्म युद्ध में सब प्रकार से भाग लेने के लिये जागृत पैदा करना। राजपूताना निवासी किसी भी प्रान्त से पीछे न रहने पावें!"

इस समय भारत में यदि स्वराज्य प्राप्ति के उद्योग में कोई पीछे है तो, कहना पड़ेगा कि मारवाड़ी समाज ही है। हे मारवाड़ी युवक मण्डल के युवको! क्या आप अकर्मण्य ही बने रहना उचित समझते हैं? इन पंक्तियों के लेखककी स्मृति शक्ति में भूल न हो तो बम्बई के मारवाड़ी युवक मण्डल में विजय सिंहजी मोहता जैसे युवक मौजूद हैं। आपसे आशा थी कि मारवाड़ी युवकोंको शिथिल न रहने देंगे। पर, यह आशा अभी तक पूरी नहीं हुई। यह तो स्पष्ट है कि मारवाड़ी सम्मेलन कुंभ कुर्णीय घोर निद्रामें सोया पड़ा है। क्या हो गया यदि बम्बईके [illegible] हालमें एक सभा हो [illegible] यो, कार्य ऐसा होना चाहि[illegible] वाड़ी समाज का गौरव श्रेष्ठि के लिये कायम रहे।

इस मौके पर मारवाड़ी नवयुवक मंडल के नवयुवकों में जागृतिकी लहर दौड़ जाना चाहिये। स्वाधीनता सदृश प्राणप्यारी वस्तु के लिये यदि राजस्थानीय नवयुवकोंमें प्राणों की बाजी लगाने का उत्साह पैदा न हुआ तो वीरभूमि राजस्थानके लिये कोई गौरवकी बात न होगी। युवको! क्या तुम्हें घरोंमें बैठे रहना शोभाप्रद मालूम होता है? वीर प्रसविनी आर्यजननी के सपूत चुप रहने वाले नहीं हैं। देखो, नौकरशाही ने दमनका शंख फूंक दिया है। यह नितान्त आवश्यक है कि हम अपने रक्तकी एक एक बूंद देने के लिये प्रतिक्षण तैयार रहें। इस समय तो देशकी सभी शक्तियां एक ही ध्येय और उद्देश्यकी सिद्धि के लिये प्रयत्नशील हैं। भारतवर्ष के युवकोंपर देशकी संपूर्ण आशा और भरोसा अवलम्बित है। क्या राजस्थानीय वीरजन इस सत्य ग्रही शांतिमय युद्ध में इसी प्रकार पीछे बने रहेंगे? क्या वे जननी के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन न करेंगे?

—मूलचन्द्र शर्मा

और खूब लड़े। सन् १७५४ से १७६३ तक इन दोनों में बराबर युद्ध ही होते रहे। इन युद्धों में इंगलैंड से फ्रान्स प्रायः तगड़ा ही पड़ता रहा। मद्रास का फ्रान्सीसी गवर्नर अंग्रेजों के लिये अविजेय हो गया था। अतएव उसे विजय करने के लिये अंग्रेजों ने अचूक शस्त्र अर्थात् धोखे से काम लिया। जब वे उस वीर को ये लोहे की तलवार से काबू में न कर सके तो इन्होंने उसपर चांदी के जूतों का वार किया।

(क्रमशः)

साहित्य की गति विधि



महाकवि अकबर और उनका उर्दू काव्य—लेखक श्री उमरावसिंहजी करुणिक बी. ए. प्रकाशक चौधरी शिवनाथसिंह शांडिल्य, ज्ञान प्रकाश मंदिर, पोस्ट छपरा, जिला मेरठ। पृष्ठ संख्या २४३, साइज २०×३०, १६ पेजी, कागज व छपाई सुन्दर। मूल्य १।=)।

भारतवर्ष की उन्नति के इस युग में दर्जनों नहीं सैकड़ों और हजारों कवि आज साहित्यिक जगत में उस प्रकार दिखाई पड़ रहे हैं जैसे बरसात में मेंडक। जिसकी कविता में तनिक सी भी रुचि हुई, जो जरासा भी इस दिशा में कुछ समझने लगा कि कवि बन गया। कहीं से कुछ [illegible] लिया और कहीं से कुछ उड़ाया। झट कविता बना डाली। सुनने वाले और दाद देने वालों की भी कमी नहीं है। बहुत से पत्र भी ऐसे हैं जो किसी प्रकार की भी सड़ी गली चीज प्रकाशित कर देने में अपना सौभाग्य समझते हैं। परन्तु न यह कवितायें हैं और न इनसे मानव समाज को स्फूर्ति दायिनी शक्ति ही मिलती है। हमारी समझ में कवि बना नहीं करते पैदा हुआ करते हैं। जिनकी भाषा, और भावों में स्वाभाविकता है, जिनकी रचनायें उनके हृदय के और अन्तरात्मा के उद्गार हैं, जिनमें कृत्रिमता और बनावट का नाम नहीं, वास्तव में वही कविता और वही कवि सर्व श्रेष्ठ हैं। कवि हृदय संकीर्णता से परे होता है। यह किसी धर्म या जाति विशेष की सम्पत्ति नहीं होते। वे तो सारे विश्व के होते हैं और सारा विश्व होता है उनका। उनका हृदय पीड़ितों के दुख से परिपूर्ण होता है। वे अन्याय को नहीं सह सकते। सच बात कहने से दुनिया की कोई भी ताकत उन्हें नहीं रोक सकती। जिनमें ये गुण हैं वे ही सच्चे कवि हैं, और जिनमें इनका अभाव है, वे विद्वान हो सकते हैं, तुकड़ हो सकते हैं, पर कवि नहीं।

हमारे महाकवि अकबर भी ऐसे ही एक कवि थे। वे सरकारी नौकर थे। समाज में उनका स्थान ऊँचा था। परन्तु इसके साथ ही उनका हृदय मानव कल्याण की उच्चतम भावनाओं से परिपूर्ण था। उन्होंने जो कुछ लिखा, उसके प्रत्येक शब्द में इसी बात की छाप है। लोगों के चित्र का वास्तविक चित्रण करने में उन्होंने अपने निकट से निकटवर्ती सम्बन्धियों तक को नहीं छोड़ा। सरकारी नौकर थे, बाद में पेन्शन पाते थे। परन्तु सरकार की भी वह चुटकियां लीं कि दंग रह जाना पड़ता है।

प्रस्तुत पुस्तक में उनके जीवन चरित के अतिरिक्त धर्म, तत्वज्ञान और उपदेश, प्रेम, हास्य, सामयिक घटनायें, पश्चिमी सभ्यता, समाज-सुधार तथा आधुनिक शिक्षा, राजनीति तथा हिन्दू मुस्लिम एकता इत्यादि विभिन्न विषयों पर उनकी रचनाओं का अभूतपूर्व संग्रह है। अकबर की कविता में हास्य रस तो है ही परन्तु उनकी शिक्षाप्रद चुटकियां और खरी एवम् निष्पक्ष आलोचना लोगों पर अपना गहरा प्रभाव डाले बिना नहीं रहती। इसलिये हमारी सम्मति में उनकी रचनाओं का यह संग्रह कवि तथा जन साधारण सभी के लिये एकसा उपयोगी है। क्यों कि अकबर की शायरी जहां एक ओर लोगों की आंखें खोलती है वहां दूसरी ओर अपनी खरी बात कहने का ढंग भी बताती है। पुस्तक में राजा महेन्द्र प्रताप की लिखी भूमिका भी है। इसने पुस्तक का मूल्य और भी बढ़ा दिया है। पुस्तक में उर्दू शब्दों का जो अर्थ दिया गया है उसका ढंग हमें नहीं जचा। हमारी समझ में प्रत्येक पृष्ठ के हाशिये पर शब्दों पर नम्बर देकर उनके अर्थ होने चाहियें थे। क्यों कि वे हिन्दी जानने वाले जो उर्दू नहीं जानते हैं, उनके लिये कुछ २ कठिनाई पड़ सकने की सम्भावना है। आशा है प्रकाशक अगले संस्करण में इस कमी को पूरी कर देंगे। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहनीय है।

महात्मागांधी के उद्गार।

अग्नि की लपटें

"सत्याग्रही का पंथ प्रेम का पंथ है। वैर-भाव की उसमें बू नहीं। कठोर हृदय के दुश्मन को भी प्रेम से जीत लेना, सत्याग्रही की महत्वकांक्षा है। वैर भाव को अग्नि की लपटों की उपमा दी जा सकती है। वैर या दुश्मनी के भाव दूसरों को जलाते हैं, प्रेम अपने आपको जलाता और दूसरों का शुद्ध करता है। जब प्रेम ऐसा उग्र स्वरूप धारण करता है तब वह भले ही किसी को ज्वाला के समान प्रतीत हो पर यह निश्चय ही समझिये बाद में उसकी शीतलता का परिचय हुए बिना नहीं रहता। यह जत्था जो आज चल पड़ा है, केवल दिखावटी नहीं है। कुछ समय का आडम्बर नहीं है। यह धरकर भी अपनी टेक को साबित कर बतायेगा —यदि मरना ही पड़ा तो। आखिर [illegible] करना ही पड़ेगा कि वे सत्याग्रही सत्य और अहिंसा के उपासक थे। और अगर इस जत्थे के लोग मर मिटें तो फिर कहना ही क्या? अगर वे मर मिटे तो उनके दावे पर मुहर लग जायगी। एक सत्याग्रही की हैसियत से मरने की हम में ताकत है या नहीं, सो तो आज हममें से कोई दावा नहीं सकता। गुस्से में आकर किसी के पेट में खंजर भोंक देना या मन ही मन क्रोधित होते हुए भी शर्म के मारे जाहिरा तौर पर अहिंसक बने रह कर मरना, सत्याग्रही की मृत्यु नहीं कही जा सकती।

\+ + + +

भगवान मारने वाले का भला करे

"सत्याग्रही के हृदय में मरते समय भी क्रोध न पैदा होना चाहिये, बल्कि उसकी भावना यह हो, प्रार्थना के वे उद्गार हों—"हे भगवान् इस मारने वाले का तू भला करना!" इस तरह मृत्यु का जो आलिंगन करता है, वह सत्याग्रही की मौत मरता है। और तभी मरने वाले की टेक सधी हो सकती है। इस सम्बन्ध में मैं खुद अपने लिये भी किसी प्रकार का आश्वासन नहीं देसकता। इसकी परीक्षा तो मौत के बाद ही दूसरे लोग कर सकते हैं।" मैंने कई जगह कहा है कि इस बार मैं धन की भीख माँगने नहीं निकला हूँ। पैसे के लिये हाथ पसारना मैं जानता हूँ। पर यह लड़ाई पैसों की नहीं है। यह तो बगैर पैसे लिये चलने वाली लड़ाई है! आज सवेरे ही देखते २ बम्बई के सूत के व्यापारी २५०१) दे गये। डायमंड असोशिएशन ने दो हजार रुपये भेज दिये। यदि मैं आपसे धन के लिये अपील करूं तो गुजरात और हिंदुस्तान रुपये पैसों की बरसात बरसा दें। और उस धन के भार से मैं इतना दब जाऊं कि फिर मेरे लिये जलालपुर तक पहुंचना भी मुश्किल हो पड़े। मैं तो आप से एक महा भिक्षा मांगने आया हूँ। आप लोग पाटीदारों की—चरोतर नाक हैं। पाटीदार समुद्र में आप [illegible] अपना नमकीनपन छोड़ दे तो उसे कैसे नमकीन बनाया जाय? नमक में गुड़ या शक्कर से भी ज्यादा मिठास है। गुड़ या शक्कर से पीलिया भी हो सकता है, लेकिन थोड़ा सा नमक भोजन को स्वादिष्ट बना देता है। आनन्द अपना मिठास छोड़ दे, पाटीदार के बहादुरी आदि जिन गुणों की तारीफ है इस समय आनन्द में उनका परिचय न मिले तो और कहां मिल सकता है?"

\+ + + +

"अगर भारत का कोना-कोना सुलग उठे, सारा भारत सविनय अवज्ञा में शामिल हो जाय, तो तीस करोड़ मर्द औरतों को एक लाख अङ्गरेजों के पंजे से—दबाव से-मुक्त होने में कितना समय लगेगा? इस त्रिराशि का हिसाब स्कूलों में पढ़ने वाले लगा सकते हैं। आज देश में ७० हजार गोरों की सेना है, और कुछ दूसरे पठान, गुर्खे, और मरहठे हैं। यह सेना हमारे दोनों कन्धों पर चढ़ी बैठी है। फिर वह भले ही मेरठ की छावनी में ही क्यों न पड़ी हो। आज इस वर्तमान शासन और कानूनी भार से हम सब जो दबे जा रहे हैं, उसका कारण सिर्फ इस सैनिक आतङ्क के और कुछ नहीं पाया जाता। इस सेना की ताकत पर ही अङ्गरेज मदारी हम बंदरों को नचा रहा है।

\+ × × ×

'यदि तुम अपने मन में यह सोचते हो कि इस आदमी ने यह सब ढोंग फैला रखा है; महीने भर बाद सारी बकवास बन्द करके चुपचाप बैठ जायगा और हिमालय से भी ऊंचे किसी पहाड़ की ओर—अगर वह हुआ तो—हाथ उठा कह देगा कि मैंने इतनी बड़ी भूल की है और फिर साबरमती के किनारे प्रतिष्ठित बन कर पड़े जायगा, तो मैं लाचार हूँ। लेकिन अगर तुम में से किसी के ये ख्याल न हों तो निश्चय समझो कि मेरे और तुम्हारे लिये यह आखिरी फैसला है। और वह इसकी शान्तिमय कानून-भंग आदि ही है।

× + + ×

मैं राज-द्रोह का गुनहगार हूँ। इस राज्य का द्रोह करना मेरा [illegible] है। और यह धर्म मैं लोगों को सिखा रहा हूँ। जिस राज्य [illegible] का आधार न हो, जिस राज्य में गरीब और अमीर दोनों पर नमक-जैसी चीज के लिये एक सा कर लगाया जाता हो, जिस राज्य में दरबान पुलिस और फौज पर लाखों नहीं, करोड़ों का खर्च होता हो, जिस राज्य का सब से बड़ा हाकिम रिआया की औसत आमदनी से पांच हजार गुनी तनखाह लेता हो, जिस राज्य में अफीम और शराब आदि से २९ करोड़ की आमदनी खड़ी की जाती हो, और ६० करोड़ का कपड़ा विदेशों से आता हो और जिस राज्य में करोड़ों स्त्री-पुरुष बेकार बैठे रहते हों, उस राज्य का नाश करना धर्म है, उसका करना धर्म है; और प्रतिक्षण यह प्रार्थना करना कि इस राजनीति का सत्यानाश हो, धर्म है। इस धर्म युद्ध में स्त्रियां भी शामिल हो सकती हैं। वर्तमान धर्म-युद्ध में किसी का बाल भी बांका नहीं हो सकता। हम स्वयं कष्ट सहकर सरकार को सचक सिखलायेंगे और विश्व की सहानुभूति प्राप्त करेंगे। और अन्त में शासकों का हृदय परिवर्तन कर देंगे। उन्हें अपनी राजनीति को बदल देने को मजबूर कर देंगे! लेकिन आज तो सरकार जुल्म पर आमादा हो गई है।'

\+ + + +

सरकार की भक्ति पर

"एक ज़माना था जब मैं इस सरकार का पूरा वफ़ादार था और लोगों को भी यही सिखाता था। लेकिन आखिर मेरी आंखों से पर्दा हटा, मेरा मन दूर हुआ। मैंने समझा कि यह सल्तनत वफादारी के काबिल नहीं है। इस राज्य की वफादारी का तकाजा इसका भला चाहना है, दूसरे शब्दों में, हिंदुस्तान के करोड़ों आदमियों का बुरा चाहना है। इस शासन-प्रणाली को मानना ईश्वर से द्रोह करने के समान है। अब हम थक चुके हैं। हमें इस राज्य के पंजे से मुक्त हो जाना चाहिये। स्वराज्य लेना हमारा धर्म है, अधिकार है। चूंकि राज-द्रोह धर्म है, मैं इस युद्ध को धर्म-युद्ध मानता हूं। इस राजनीति का मैं प्रतिक्षण नाश चाहता हूं। हम [illegible] को जरा भी कष्ट नहीं देना चाहते, पर साथ ही उन्हें सलाम करना—उनके आगे झुकना हमें मन्जूर नहीं। इस तरह हम कड़ा असहयोग कर डालें कि फिर शासन चलाया ही नहीं जा सके! उस हालत में सरकार राज चलाने के लिये गोली चलायेगी, जेल ले जायगी, फांसी पर लटकायगी, लेकिन कितनों को? तीस करोड़ मनुष्यों को फांसी पर चढ़ाने के लिये एक लाख अंग्रेजों को कितना समय लगेगा? इसका हिसाब आप लगालें। लेकिन वे इतने बेरहम नहीं हैं। वे भी हमारे जैसे आदमी हैं। आज वे हमारे साथ जैसा सलूक कर रहे हैं, शायद उनकी सी स्थिति में हम भी वैसा करने लगें। मनुष्य में समय का विरोध करने की ताकत नहीं होती, परन्तु समय उसके चरित्र का निर्माण करता है। इसलिये मैं आज उन्हें अधिक दोषी नहीं मानता। पर तो भी यह राजनीति मुझे इतनी कड़वी मालूम होती है कि हो सके तो आज ही मैं इस का नाश कर डालूं। करोड़ों के दुःख का नाश करने के लिये मेरे साष्टांग नमस्कार भी कारगर न हो सके। लेकिन जब विवेक और विचार किससे भी काम न बना तब अब मैं बागी बन गया हूं। और अपने आपको 'बागी' पुकार ने में शान्ति का अनुभव करता हूं।"

चटगांव में भीषण दंगा!

तार काट दिये, २० मील लाइन उखाड़ दी

(छठे पेज का शेष)

—नीला की स्थिति दिन दिन चिन्ताजनक हो रही। स्वयं सेवकों पर १४४ धारा लगादी गई है तथा १५० सशस्त्र गोरखे शान्ति रक्षार्थ नियुक्त किये गए हैं।

—काशी विद्यापीठ के श्री भगवंत सिंह हिन्दुस्तानी सेवादल के श्रीयुत श्यामसिंह तथा श्री अम्बिकाप्रसाद जी रायबरेली के निकट 'पालिया' में लोगों को नमक कानून तोड़ने के लिये उभारने के अपराध में पकड़ लिये गए हैं। अभी तक पकड़े गए २१ सत्याग्रहियों के साथ साधारण कैदियों का सा व्यवहार किया जा रहा है। उन्हें राजनैतिक कैदियों को मिलने वाली विशेष [illegible] नहीं दी गई।

—अमृतसर में ता० १७ [illegible] रात्रि के दो बजे लगभग एक दर्जन गिरफ्तारियां की गई हैं। इनमें से अधिकांश विद्यार्थी तथा नौजवान भारत सभा के सदस्य हैं। २१ ता० को उनके मुकदमे की सुनवाई होगी।

—छपरामऊ के सत्याग्रही नेता श्री ठाकुर देवपालसिंह जी को सत्याग्रह की तैयारी के लिये जाते समय फर्रुखाबाद की पुलिस ने पकड़ लिया तथा नमक कानून के अनुसार छः मास का कठिन कारावास तथा ११७ धारा के अनुसार अठारह महीनों का कठिन कारागार का दण्ड भी दे दिया गया।

—सूरत कांग्रेस कमेटी के प्रधान श्री कल्याणजी वी. मेहता कोषाध्यक्ष श्री छोटू भाई मारफतिया भारतीय दंड विधान की ११७ वीं धारा के अनुसार गिरफ्तार किये गए हैं। श्री मेहता पर दो तथा श्री मारफतिया पर तीन जुर्म लगाये गए हैं।

—बनारस के तीन स्वयं सेवकों पर नमक कानून तोड़ने के अपराध में कारावास के अतिरिक्त २००-२०० रु० जुर्माना भी किया गया है। श्री० भगवानदासजी, श्री प्रकाशजी तथा आचार्य नरेन्द्रदेवजी उनसे जेल में मिलने गए थे। जनता में बड़ा उत्साह है।

—हुबली का समाचार है कि उत्तरी कनारा के कलक्टर ने सत्याग्रह आफिस अकोला का घेर लिया तथा स्वयंसेवकों के आफिस को खाली करने से इन्कार करने पर पुलिस एक्ट की ५४ धारा के अनुसार लगभग १६ मनुष्यों को गिरफ्तार कर लिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा शिव स्वामीजी को भी ४७ धारा के अनुसार पकड़ लिया गया है।

—मेरठ में देहली नमक सत्याग्रह कमेटी के मन्त्री पंडित शिवदयालु की गिरफ्तारी से लोगों में बड़ी उत्तेजना है। तीन अन्य सज्जन भी पकड़े गए हैं। श्री गुलाम सिफीकी अन्य सत्याग्रहियों के साथ गावों में जोरों से [illegible] हैं।

[illegible] दशहरा [illegible] में पकड़े गए छः अभियुक्तों में से एक की गवाही के आधार पर पुलिस ने एक टूटे फूटे तथा एकान्त व ऊजड़ मकान में से अनेक बम, रिवाल्वर्स तथा अन्य शस्त्र बरामद किये हैं।

—वायसराय की स्वीकृति पर बंगाल मार्डिनेन्स का काला कानून फिर जारी कर दिया है।

—कलकत्ते का समाचार है कि राजशाही कान्फरेन्स से लौटते समय सरस्वती प्रेस के सञ्चालक श्री अरुण चन्द्र गुह, स्वामी विवेकानन्द के भाई डाक्टर भूपेन्द्रनाथदत्त तथा बंगाल प्रान्तीय कान्फरेंस के मंत्री श्री हरिकुमार चक्रवर्ती सियालदाह स्टेशन पर रेलवे पुलिस द्वारा पकड़ लिये गए।

—मेरठ तथा गाजियाबाद में श्री ज्योतीप्रसादजी, तथा श्री चौधरी नारायणसिंहजी आदि लगभग एक दर्जन स्थानीय नेता गिरफ्तार कर लिये गए हैं।

—गाजियाबाद में ४६ स्वयं सेवकों को पकड़ लिया गया था किंतु बाद में उन्हें छोड़ दिया गया।

स्वयं सेवक दो दिनों से थाने तथा तहसील के सामने नमक बना रहे थे। अन्त में पुलिस ने उनका नमक तथा नमक बनाने के बर्तन आदि छीनना चाहा, इस घर पकड़ में कई स्वयं सेवकों के चोट आगई तथा कइयों के वस्त्र फट गए। पुलिस ने २५ स्वयं सेवकों को एक छोटी सी कोठरी में, जो कि ५, ६ मनुष्यों के लिये भी पर्याप्त न थी कई घण्टों तक बन्द रक्खा और इसी प्रकार अन्य २१ सत्याग्रहियों को [illegible] ऐसी ही एक कोठरी में बन्द कर [illegible] की गंध आती थी। छूटने पर वे लोग अपने बर्तन आदि मांगने लगे और पुलिस के इन्कार करने पर रात भर थाने के सामने खुले लेटे रहे। अन्त में हार कर पुलिस ने बर्तन तथा नमक लौटा दिया और फिर सदा के अनुसार नमक बनना प्रारंभ हो गया!

—राजशाही का समाचार है कि बंगाल प्रान्तीय कानफरेन्स के प्रेसीडेन्ट तथा अन्य कानफरेन्सों के सभापति श्री गँगुलि श्री मुखर्जि तथा श्री चक्रवर्ती बिना वारंट के पकड़ लिये गए।

—बम्बई में विलेपार्ले सत्याग्रह कैम्प के नेता श्री स्वामी आनन्द ११७ धारा तथा नमक कानून की ४७ धारा के अनुसार गिरफ्तार कर लिये गए हैं।

—बारकपुर कांग्रेस कमेटी के प्रधान नमक बेचने के अपराध में पकड़ लिये गए।

—कोमिल्ला का समाचार है कि सत्याग्रही नेता श्री जोगेश चक्रवर्ति तथा श्री मुखर्जी पकड़ लिये गए हैं।

दरभंगा के श्री जतीन्द्रचन्द्र चटर्जी १५१ धारा के अनुसार गिरफ्तार किये गए हैं।

अंग्रेजों और पुलिस वालों का खून!!!

ता० १९ अप्रैल को कलकत्ते से जो समाचार चटगांव के मजिस्ट्रेट की रिपोर्ट के आधार पर आये हैं उनसे पता चलता है कि गत १८ अप्रैल को चटगांव में एक भीषण दंगा हो गया। इसे दंगा न कह कर यदि उपद्रव या विद्रोह कहा जाय तो ठीक होगी। कहा जाता है कि रात के १० बजे के करीब कोई १०० आदमियों ने चटगांव में तार काट कर टेलीफून और तार को बेकार कर दिया। सशस्त्र पुलिस के स्थान पर आक्रमण करके उनकी बन्दूकों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया और जला भी दिया। उस समय पुलिस के पास ९० राइफिलें और २०३ लुइस गन थीं। इनमें से अब केवल ६० ऐसी बची हैं जिनसे कि काम किया जा सकता [illegible] वर्तमान समय के सभी शस्त्र अर्थात रिवाल्वर इत्यादि मौजूद थे। इन लोगों के आक्रमण से दो अंग्रेज तथा दो कान्स्टेबिलों की जानें गई हैं। अनेक लोग बुरी तरह घायल हुए हैं। यह भी कहा जाता है कि इन लोगों ने चटगांव से कोई ३० मील दूर तक की लाइन भी उखाड़ दी है। इस उपद्रव के सम्बन्ध में अब तक ५ गिरफ्तारियां हो चुकी हैं।

—हावड़ा में लगभग आठ घरों की तलाशियां ली गईं तथा कई गिरफ्तारियां भी हुईं।

—मैमनसिंह का समाचार है कि भिन्न २ राजनैतिक सभाओं के चार प्रेसीडेन्ट्स १५१ धारा के अनुसार गिरफ्तार कर लिये गए तथा जमानत पर छूटने से इन्कार करने पर हवालत' में रख दिये गए हैं।

—हापुड़ का समाचार है कि पुलिस ने कांग्रेस कमेटी के उप-प्रधान ला० लक्ष्मीनारायण तथा मन्त्री व म्यूनिसिपल कमिश्नर ला० सरजूप्रसाद व कांग्रेस के प्रधान ला० प्यारेलाल को गिरफ्तार कर लिया इस पर शहर में अमित हड़ताल रही।

ब्यावर की अदालत पर पत्थरों की वर्षा !

कहा जाता है कि उपद्रवी पहाड़ों और खाइयों में छिपे २ फिरते हैं। पुलिस इनका पीछा बुरी तरह से कर रही है। यह भी कहा जाता है कि इस उपद्रव में जो चार लारियां इस्तेमाल की गईं थीं वे पकड़ ली गई हैं। इस के अतिरिक्त तलाशी में ५ बन्दूकें भी बरामद हुई हैं। परन्तु ३०३ राइफिलों और २० उन रिवाल्वरों का अभी तक कोई पता नहीं चला जिन्हें कि उपद्रवी लोग उठा ले गए थे। गिरफ्तार शुदा ५ आदमियों में से दो के चोटें भी हैं। इस दुर्घटना के सम्बन्ध में यह आश्चर्य की बात है कि इतनी भीषण दुर्घटना घटी और समाचार इतनी देरी से प्राप्त हुआ। और वह भी सरकारी विज्ञप्ति द्वारा। यह समाचार भी एक बार जो आगया सो आ गया। इस प्रकार समाचारों के न आने से लोगों में बड़ी बेचैनी और गिरफ्तारियों की धूम मच गई है। कितने ही व्यक्ति ऐसे पकड़े गए हैं जो कांग्रेस के प्रमुख कार्य कर्त्ता हैं बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के दफ्तर तक की तलाशी भी ली गई है। मालूम पड़ता है पुलिस ने इस मामले में किसी षड्यंत्र का हाथ समझा है।

——चटगांव से बाद के आए हुए समाचारों से पता चलता है कि विद्रोही सैनिक वेष में थे। उनके नेता को पुलिस के रांतरी ने एडजुटेंट आफीसर समझा। इसीलिये उनके काम में बड़ी सुगमता हो गई। विद्रोहियों ने आसाम बेंगाल रेलवे के अफसर का सर बन्दूक के कुन्दों से चकना चूर कर डाला। मजिस्ट्रेट पर भी गोली चलाई पर वह बाल २ बच गया। लेकिन उसकी मोटर का ड्राइवर और सिपाही मारा गया। नगर में दूसरे दिन हिन्दुस्तानी रिपब्लीकन आर्मी की ओर से लाल पर्चे चिपके हुए पाए गए। शहर में बड़ी सनसनी है। सशस्त्र सैना का पहरा है। अब तक दो यूरोपियन और ९ हिन्दुस्तानियों के मरने की खबर आई है।

अदालत की चिकें जला दी गईं !

जनता और पुलिस में मुठभेड़ !!

पुलिस और जनता के कई आदमी घायल।

—ब्यावर का समाचार है कि ता० २१ को रात के ८॥ बजे वहां की कांग्रेस के प्रमुख नेता श्रीयुत घीसूलाल जी जाजोदिया गिरफ्तार कर लिये गये। आप अजमेर आने के लिए घर से चले थे। जब आप स्टेशन पहुंचे तो वहीं पकड़ लिये गये। आप पर ताज़ीरात हिन्द की ११७ वीं धारा लगाई गई है। जब कल उनके मुक़द्दमे की सुनवाई ब्यावर में हुई तो उस समय अदालत में हज़ारों की संख्या में भीड़ थी, और जनता में काफी जोश [illegible] नमक भी तय्यार किया जा रहा था, उस टुकड़ी के अध्यक्ष श्रीयुत नित्यानन्द जी को गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी गिरफ्तारी के समाचार से जनता में काफी उत्तेजना पैदा हो गई और जनता ने अदालत को क़ौमी नारे व जयघोष से गुंजा दिया। परन्तु पीछे से पुलिस ने जनता पर लट्ठ प्रहार किया, जिससे जनता में बेचैनी पैदा हो गई। इसके फलस्वरूप अदालत पर कंकड़ों और पत्थरों की वर्षा हुई और अदालत की चिक भी जला दी गईं। पुलिस ने जनता को हटाने के लिये हवाई फायर किये। बाद का समाचार है कि जनता और पुलिस की मुठभेड़ में एक सिपाही के हाथ में चाकू की चोट व एक थानेदार का सर फट गया। जनता पक्ष के कई आदमियों को सख्त चोट आई है। शहर में कामिल हड़ताल है। मिल मालिकों व मजदूरों [illegible] में हड़ताल रक्खी। अब शांति है।

ब्यावर से अभी समाचार आया है कि भीखमसिंह [illegible] के [illegible] स्वयं सेवक [illegible] गिर[illegible] [illegible] वाले हैं।

—चटगांव के बलवे के सम्बन्ध में बाद के आये हुए समाचारों से पता चलता है कि फैनीस्टेशन पर जतीन्द्रनाथ रायसानियर दरोगा कुछ सशस्त्र सिपाहियों सहित रेलगाड़ी की तलाशी ले रहा था कि किसी ने उसपर गोली से वार किया। फलतः दरोगा के अतिरिक्त दो सिपाही भी घायल हुए। अपराधी भाग गये। पुलिस और सेना उनका पीछा कर रही है और कहा जाता है कि उन्हें घेर भी लिया है।

वाक्विकासिनी समिति।

(अंक ४५ से आगे)

(१) दर्शक के हृदय पर प्रभाव डाल कर कि ऐसे कर्म करने से ही हम उन्नति कर सकते हैं और इनसे विपरीत करने पर जिस प्रकार उस पात्र की दुर्गति हुई हमारी भी होगी। (२) पात्रों पर उन्हें इस बात का स्मरण दिलाकर कि क्या ऐसे वीरों और महा पुरुषों का अभिनय करने वाले हम छोटी २ आपत्तियों से डर सकते हैं? (३) विपक्ष में अभिनय करने वालों पर यह स्मरण दिलाकर कि जब अन्यायी और अधर्मियों की ऐसी दुर्गति होती है तो अवश्य इन नीच कार्यों से बचना चाहिये। इस नाटक में दो विशेषतायें थीं (१) स्त्री पार्ट का हटा दिया जाना था क्योंकि स्त्री पार्ट के रहने से विद्यार्थियों पर बुरा असर पड़ता है और (२) युवक अभिमन्यु नाटक की सामयिकता। क्योंकि आज-कल ऐसे ही नवयुवकों की आवश्यक्ता है जो देशपर बलिदान हो जायँ। युवक अभिमन्यु के पार्ट में देशभक्ति और वीरत्व का जो आदर्श मिलता है वह अनुकरणीय है। नाटक प्रारम्भमें तो शिथिलता पूर्ण था, किन्तु वही नाटक 'अभिमन्यु की श्रीकृष्ण वंदना और भगवान को उसे दर्शन देने से रुचिकर होता गया। अभिमन्यु के पार्ट में रथ का पहिया चलाने के वक्त की फुरती देखने ही योग्य थी। उसके घायल होकर गिर पड़ने पर पीड़ा से तड़पने का दृश्य सचमुच सत्य मालूम होता था। जयद्रथ का गर्व और उसके अभिमान पूर्ण बयान अभिमानियों के समान ही बोले गये थे कि अर्जुन और श्रीकृष्ण का कहना कि 'अहा विचारा कितना भोला है?' अभी तक कानों में गूंज रहा है। अर्जुन चिता में जलने जा रहा है और कहता है 'जनार्दन तुम रोओ! देवकीनन्दन रोओ' और जयद्रथ से [illegible] गये श्रीकृष्ण मन्द-मन्द [illegible] अहा! यहां तो करुणा [illegible] हास [illegible] मलन हुआ कि समझ में नहीं आता कि क्या किया जाय! फिर सूर्य का यकायक उदय हो जाना और जयद्रथ का स्तम्भित हो कह उठना 'यह क्या?' अत्यंत ही यथार्थता से खेला गया था। अंत में वीरत्व और करुणा का ऐसा विचित्र मिश्रण हुआ कि उसके वर्णन के लिये शब्द नहीं है।

साथ में ही 'वोट का भिखारी' नामक प्रहसन भी खेला गया था। अभिनय उत्तमता से करने के कारण अभिमन्यु का पार्ट करने वाले गणपत लाल को दो रजत पदक, श्री कृष्ण का पार्ट करने वाले फतेहचन्द को जगदीश शरण आशुतोष की ओर से एक रजत पदक, अर्जुन का पार्ट करने वाले विद्यार्थी को गुरु जितेन्द्रसिंह जी की ओर से एक रजत पदक और जयद्रथ का पार्ट करने वाले मनसुखलाल को वाक्विकासिनी समिति की ओर से एक रजतपदक दिया गया।

अवस्था और तैयारी के समय को देखते हुए यह अभिनय आशा से अधिक सफल हुआ। इसकी सफलता का श्रेय बिरजानन्द जी जवाहिरलाल जी और उक्त समिति के अधिकारियों को प्राप्त है। उत्सव के अन्य कार्य भी सफलता पूर्वक समाप्त हुए।—'अणय'



राजस्थानी डाक का थैला

उदयपुर

शिक्षाविभाग का छुप्रबन्ध

स्वर्गीय महाराणा श्री शम्भूसिंह जी ने पण्डित रत्नेश्वरजी के सम्मत्यनुसार स्वधर्म की रक्षा करने के लिये देववाणी पढ़ाना आवश्यकीय समझ कर एक संस्कृत पाठशाला स्थापित की थी। और सुना जाता है कि स्वर्गीय महाराणा श्री सज्जनसिंह जी के समय संस्कृत पढ़ने वालों को मान देने के लिये बनारस गवर्नमेंट संस्कृत कालेज की प्रथमा परीक्षोत्तीर्ण व्यक्ति को राजदर्शन एवं मध्यमा पास व्यक्ति को बैठक मिली थी।

वर्तमान महाराणाजी तथा [illegible] राजकुमार के शासन समय [illegible] उत्तरोत्तर वृद्धि होती आ [illegible] प्रधान व्यक्ति के हाथ में था परन्तु पीछे से एक समिति बनादी गई। आज तक उसी के देख रेख में कार्य चल रहा है। जहां अनेक गुण होते हैं वहां दोषों का भी अभाव नहीं हुआ करता। और वह दोष बूढ़ा अभागिनी संस्कृत भाषा के भाग्य में ही आया है। कुछ समय से संस्कृत विद्यार्थियों के दुर्भाग्य वश श्री हरिप्रसाद नामक एक विदेशी व्यक्ति प्रधानाध्यापक पद पर छः मास के लिये नियत किये गए हैं। ये महाशय श्रीमान वर्तमान महाराणा जी के जन्मोत्सव के समय दान लेने के लिये आए थे।

परन्तु उदयपुर में सर्वत्रपोल समझकर सिफारिश के आश्रित होकर घुस पड़े। परन्तु पण्डितजी की पढ़ाई की तो पोल शीघ्र ही खुल गई। इसके सुप्रबन्ध की प्रार्थना श्रीमान् महाराज कुमार से की। फलस्वरूप भूतपूर्व प्रधानाध्यापक पं० शोभालालजी शास्त्री कुछ दिन के लिये पढ़ाई देखने को स्कूल में आये। इस विषय में उन्होंने क्या अर्ज किया इसका पता नहीं चला। परीक्षा का समय समीप देख सब विद्यार्थी श्रीमान श्री महाराज कुमार तथा सेक्रेटरी साहब शिक्षा विभाग की सेवा में स्कूल छोड़ने की अन्तिम सूचना देकर प्राइवेट अपनी पढ़ाई करने लग गये। परीक्षा होगई और पं० जी के छः मास का भी अन्त हो गया। परन्तु अभी तक कोई सुप्रबन्ध होने की आशा न देख कर एक [illegible] पत्र विद्यार्थियों ने सेक्रेटरी [illegible] विभाग के समक्ष इस [illegible] किया है कि या तो [illegible] चाहिये या [illegible] से स्कूल खुलते ही शान्ति से पढ़ाई होवे।

हेलेन एण्ड कम्पनी चिकागो का [illegible]

दीन विधवा पर धावा

कहा जाता है कि कोई १५ दिन हुए गोवर्धन दवे के सुयोग्य पुत्र पं० हरिप्रसादजी ने एक दीन अनाथ विधवा के ऊपर अपना वीरत्व प्रकाशित किया। अब उस दीन विधवा ने मुकदमा दायर किया है। देखें क्या होता है?

सम्वाददाता

सैलाना

सैलाना का हवालाती

माधवलाल नाम का एक कायस्थ युवक छ माह से सैलाना पुलिस की हवालात में है। कहा जाता है कि बिलपांक तहसील में यह युवक सरिश्तेदार था जहां पर कुछ रुपयों का गबन हुआ, उसी अपराध में इसकी गिरफ्तारी हुई। देशी राज्यों के अन्धेर खाते में प्रायः इस प्रकार की घटनाएं हो ही जाया करती हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। किन्तु जब हवालात की अवधि की ओर ध्यान जाता है, तब बड़ा अफसोस होता है। इतना समय हो जाने पर भी यह निश्चय नहीं है कि अमुक दिन उसके भाग्य का निपटारा हो जावेगा। कम से कम सैलाना जैसे न्याय प्रिय राज्य के लिये यह बड़े शर्म की बात है। ब्रिटिश इंडिया में यदि यह मुकदमा होता तो एक सप्ताह में निपटारा हो जाता। यहां पर इसकी कोई चिन्ता नहीं है यदि न्यायालय से आसामी निर्दोष सिद्ध हुआ तो इतने दिन हवालात में रखने का क्या कारण बतावेगा। आशा है दीवान साहब इस किस्म की पोल पट्टियों को अब राज्य से दूर निकाल फेंकेंगे।

एक जानकार

रूनिजा

गनगोरी मेले का दिग्दर्शन

[illegible] में ठिकाना [illegible] मेला बहुत [illegible] चैत्र शुक्ला [illegible] छ रोज में [illegible] सवारी का [illegible] बकलाम, दर्शकों [illegible] लेता [illegible] मंडल के अध्यक्ष एवं ठिकाने के सुपरिटेन्डेन्ट पं० शिवशंकरलालजी ही मेला कमेटी के भी प्रेसीडेन्ट थे। आपकी प्रबन्ध शैली को देख यह निसंकोच कहा जा सकता है कि दुकानों की सजावट, रोशनी के सुप्रबन्ध में कम खर्च वाला नशीन की युक्ति को आपने चरितार्थ किया। गत वर्ष पंडितजी ने कुछ आतिशबाजी व इनामत अन्नीफन्ड से दिये थे सो जनता के विरोध पर अबकी बार वह कार्य नहीं हो सका। अस्तु।

इस मेले की उन्नति में कुछ बाधाएं अक्सर आया करती हैं। गवालियर गवर्नमेन्ट हर मशहूर मेले बगैरा पर कस्टम ड्यूटी उठा लेती है। मगर दुर्भाग्य से यहां की जनता पर वह लट्ठ इस अवसर पर भी बना रहता है, इसी कारण अन्य स्टेटों के व्यौपारी यहां आने में हिचकते हैं। यदि यह सुविधा होजाय तो मेले की उन्नति में और भी वृद्धि हो। दूसरे 'मान न मना मैं तेरा महमान' बनकर जुआरी लोग अपना अड्डा लगा ही देते हैं। आश्चर्य है कि स्टेट भर में जहां कानूनन जुआ बन्द है, वहां दीन रूनिजा निवासियों का धन खींचने के लिए जुआरियों को मान्यवर डिस्ट्रिक्ट जज साहब तहरीरी हुक्म अता कर देते हैं। जुएबाजी का परिणाम क्या होता है यह बताने की जरूरत नहीं है। साफ शब्दों में प्रजा को लूटने की आम इजाजत देकर राज्य अपनी प्रजा पालक निति का परिचय नहीं देरहा है। आशा है इन पंक्तियों पर राज्य भविष्य में विशेष ध्यान रखेगा।

सम्वाददाता

सार सूचनायें

हल्दीघाटी की यात्रा

हल्दी घाटी नामक प्रसिद्ध स्थान से इतिहास प्रेमी नवयुवक तो अवश्य ही परिचित होंगे। यह इतिहास प्रसिद्ध स्थान मेवाड़ राज्य के अन्तर्गत है। उदयपुर नगर से यह स्थान लगभग बाइस मील की दूरी पर है, जिसका रास्ता कुम्भलगढ़ की [illegible] का गुड़ा के समीप होकर जाता है। इस गांव तक मोटर तांगा आदि वाहन द्वारा यात्री लोग जा सकते हैं। आगे फिर समतल जमीन नहीं है। कहीं ऊंची और निची पर्वत श्रेणियों को पार करके जाना पड़ता है। दूसरा मार्ग नाथद्वारा से गाडी के रास्ते कोई ८ मील की दूरी पर खमनोर नामक गांव है। वहां से १ मील जाने पर हल्दी घाटी शुरू होती है। इस घाटी के पूर्व एक सुन्दर और विस्तृत दर्रा आता है, जहां पर युद्ध के समय सम्राट अकबर का खेमा पड़ा था। उसमें सुन्दर आम जामुन आदि के कई वृक्ष हैं जिनकी वहां पर घनी छाया रहती है। इसके अतिरिक्त वहां पर बादशाही जमाने के गुलाब के पुराने पेड़ अब भी वर्तमान हैं। वहां पर एक निर्मल पानी का नाला बहता है। घाटी की मिट्टी आदि अन्त तक प्रायः हल्दी के समान पीली है। सम्भव है इसी कारण से इस प्रसिद्ध तीर्थ स्थान का नाम हल्दी घाटी पड़ा हो। इसी स्थान पर प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप ने सम्राट अकबर की साम्राज्यवादी नीति को उलट कर राष्ट्रा-

बनारसी साड़ी व कस्तूरी कपड़े

आज ही सूचीपत्र के लिये लिखिये।
कस्तूरी का भाव २०-२५-३०
भरी तोला!
राधा किशन मानयार
ठठेरी बाजार बनारस
BENARES.

जरूरत है

तारबाबू व स्टेशन मास्टरी का काम सीखने वाले उम्मेद वारों की। रेल किराया तथा सार्टिफिकेट आदि बातों की जानकारी के लिए लिखो।
इम्पीरियल टोलग्राफ कालेज
नई सड़क देहली

बवासीर
का
शर्तिया इलाज

कराइये सैकड़ों अनुभव कर [illegible] लिखिये:—[illegible] मल जैन अध्यक्ष मध्यभारत आयुर्वेदिक औषधालय नारायणगढ (इन्दौर) वाया नीमच।

सब प्रकार के फेन्सी

सामान
बर्तन, फर्निचर, आरायश की सामग्री सस्ती और टिकाऊ लेनी हो तो
हमसे पत्र व्यवहार कीजिये:—
ऐलेन ब्रादर्स, बम्बई नं० २

"गाण्डीव"

गांडीव साहित्य मंदिर का (गुजराती) बाल साहित्य और दूसरी पुस्तकें रेल्वे स्टेशनों पर वहीलर के बुकस्टालों से मिल सकें ऐसा प्रबन्ध किया गया है। खंडवा, रतलाम, आकोला, लोणावला, नासिक रोड, पूनादिस्टेशनों पर बिकता है। खंडवादि शहर निवासी जो सज्जन इच्छा रखें वे बिना पोस्टेज स्टेशन से मंगा सकते हैं। गुजराती बन्धु इस प्रयास को उत्तेजना देंगे, ऐसी आशा है।
प्रबंधक—गांडीव साहित्य मन्दिर
सूरत

हेलेन एण्ड कम्पनी, चिकोगो
का
[illegible]

[illegible] को ज़िन्दा बनाता है।
सब दवा फरोशों से मिलता है।

नये वर्ष की खुशी में
मुफ्त लीजिये

सदा कि भांति इस वर्ष भी ३१ मार्च तक 'हिन्दू संसार, के नये वर्ष का उपहार बटेगा। जिसमें 'केनिया में हिन्दुस्थानी' नामक पुस्तक—जिसकी १॥) कीमत है और जो प्रवासी भाइयों के सम्बन्ध में अपने ढंग की एक ही और अनोखी पुस्तक है, २७८ पृष्ठों में समाप्त होती है—३ महीने और उससे भी ऊपर होने वाले ग्राहकों को ३१ मार्च तक मुफ्त मिलेगी। हिन्दू संसार का मूल्य १ वर्ष का मूल्य १२) तथा ६ मासका ६) रुपया है।

केवल १०) में।

प्रति वर्ष अनेकों संस्थाओं और विद्यार्थियों के आर्थिक कठिनाई के कारण हमारे पास कम मूल्य में 'हिन्दू संसार' भेजने के पत्र आते हैं। इनका कठिनाइयों का ध्यान रख कर हमने इस बार ३१ मार्च तक ऐसे विद्यार्थियों और संस्थाओं को केवल १०) रु० वार्षिक में 'हिन्दू संसार, देने का निश्चय कर लिया है अतः ऐसे

अपूर्व और सुलभ अवसर

से इन्हें अवश्य लाभ उठाना चाहिये। समय बीत जाने पर उनके ऐसे पत्रों के कोई मूल्य नहीं रह जायगा। शीघ्रता कीजिये और समय से लाभ उठाइये।
मैनेजर
'हिन्दू संसार' नया बाजार दिल्ली।

५०) वेतन पर एजेन्टों की ज़रूरत है।

सचित्र स्वास्थ्य शिक्षा

भूमिका लेखक प्रो० राममूर्ति नायडू इन्डियन हरक्यूलीज। ३०० पृष्ठ ११८ रंग बिरंगे चित्र, १०२ स्वर्ण उपदेश, १०० दवाइयां, सैंडो, गुलाम, गामा, ताराबाई, कल्लु जिवस्को आदि जगत विख्यात बीसियों पहलवानों का सचित्र जीवन चरित्र, ५० प्रकार के खेल और व्यायाम जैसे सैन्डो डम्बल्स लकड़ी, मुगदर, हार जेन्टलवार्स, पैरेलवार्स, कुश्ती हाकी, फुटबाल, क्रिकेट, ४०० बातें शरीर रचना; स्वास्थ्य और [illegible] सम्बन्धी सचित्र समझाई गई हैं। यह वही पुस्तक है जिस से आल इन्डिया हिन्दी साहित्य सम्मेलन में फर्स्ट क्लास सार्टिफिकेट मील चुका है। जो स्कूलों में पढ़ाई जाती है तथा यू० पी० टेस्टबुक कमेटी ने विद्यार्थियों के इनाम तथा लाइब्रेरियों के वास्ते मंजूर करवाया है। समाचार पत्र पत्रिकाओं ने तथा प्रतिष्ठित सज्जनों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। नापसन्द होने पर मूल्य वापिस। एजेन्सी नियम पुस्तक के साथ। मूल्य १॥)

पताः—जयपुर प्रिंटिंग वर्क चौड़ा रास्ता
जयपुर सिटी (रा० पूनाना)

श्री. पथिकजी लिखित
'What Are Indian States'

नामक पुस्तक पढ़िये।
यह देशी राज्यों की वर्तमान स्थिति
का
[illegible] है

मैंने आपकी पुस्तक पढ़ी। बड़ी रुचिकर प्रतीत हुई। अब दुबारा पढ़ रहा हूं
विशप विलियम माण्ट गोमरी ब्राउन डी. डी.
ग्रैलिन ओहियो (अमेरिका)

पुस्तक अध्ययन करने योग्य है।
सम्पादक "दि सण्डे वर्कर" (लन्दन)

पथिकजी ने देशीराज्यों की जिस अवस्था पर से पर्दा उठाया है उसे साधारण अंग्रेज जनता बिलकुल नहीं जाननी। सके प्रचार की आवश्यकता है।
एडवर्ड थाम्पसन
(दि अदर साइड आफ दि मेडल—के लेखक)

पथिकजी की पुस्तक में लिखी बातें ९९ प्रति शत अंग्रेज नहीं जानते। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि इस पुस्तक का खूब प्रचार हो तो राज्यों की प्रजा के पक्ष में प्रबल लोकमत पैदा हो जायगा।
एच. एफ. विंग,
(मन्त्री संगठन विभाग, बृटिश कारपोरेशन आफ यूथ)

यह एक ऐसी पुस्तक है जिसे प्रत्येक अंग्रेजी पढ़े लिखे को पढ़ना चाहिये। मुझे आशा है कि न्याय-बुद्धि सम्पन्न अंग्रेजों पर यह अच्छा प्रभाव डालेगी।
(लनो कोलोनिस्ट के प्रतिनिधि, और वर्कर्स मन्थली, के सम्पादक)

आपकी पुस्तक इग्लैंड में राज्यों के प्रचार का विष अवश्य कम करेगी। दुर्भाग्य वश उसका अधिक प्रचार नहीं हो सका है।
टी. पी. सीन्हा
(इण्डिपेण्डेण्ट लेबरपार्टी के भारतीय सलाहकार)

आपकी पुस्तक बहुमूल्य सूचनाओं से भरी है और मुझे उसे पढ़ कर राज्यों की गरीब प्रजा से गहरी सहानुभूति पैदा हुई है।
ऐलेक्स गौसिप
ऐलेक्स गौसिप
प्रधान मन्त्री, नेशनल अमलगमेटेड प्ल० ट्रेडस ऐसोसियेशन।

\+ + + + +

मूल्य केवल २) है, डाकखर्च अलग